NARINDER NAGPAL

KAALII

An Action Packed Suspense Thriller

N2 PUBLICATIONS

Presents

NARINDER NAGPAL'S

Forth Coming Novels

1. Bye Bye Tata — Prequel to Kalli Series
2.Kidney — Prequel to Kalli Serie
3. Naina — Prequel to Kalli Series
4.Water Bomb — Prequel to Kalli Series
5. Gingo — Animal Love story(Horror)
6.Gaganto — Sequel of Gingo (Horror)
7.Double X — Medical Mystery
8Kohinoor — James Bond Thriller
9.panj pyaare — Eye Opener(Thriller)
10.Beauti-9 Crores — Conmen Series
11.Hai Paisa — Conmen Series
12.22nd December — Mystery
13.Hunger Strikes Again — Adventurous Mystery
14.Sofia — Mystery
15.Kill Minister — Eye Opener(Thriller)
16.Main Jinda Hoon — EyeOpener(Terrorism)
17. LuckiRam — Eye Opener(NewRamayana)
18.Namooney — FultooComedyShow
19.I Luv U Maaya — A Unique Love Mystery
20.Bond VS,Bull — James Bond Thriller(Part 1)
21.BondVS.Bull — James Bond Thriller(Sequel)

PLUS MANY MORE>>>>>>>>>>>>

NARINDER NAGPAL

KAALII

An Action Packed Suspense Thriller

PrintedPages :272 (Hard Book) 272

Disclaimer: This book is a work of imagination All characters are fictional and never meant to hurt the feelings of a person whether dead or alive Resemblence to any body is merely coinci dentialDispute, if any,will sort out inDelhi judi-ciary.

Characters Sketches:

Arjun Nagpal:A dare devil spy, licenced to kill, most of the times he overcomes the culprits but often killed by his own destiny.This time he was beaten by a dead kid and killing the innocents.

Naina: loves Arjun from the depth of the heart but there is an opinion difference as she doesn't like his killing instincts.

DevSinghRajput:Once a corrupt cop,changed thoroughly due to friendship,but this time he was supposed to lose his wife Radha and son Zinki as Arjun declared to kill them.

Kaali:The mystery,nobody knows his name,age and appearance but he is moving in the blood of people to avenge his murder.

PanditHari:Arjun's so called father,alike skelton ,this time needs the blood of his son Arjun as he was the murderer of his grandson **Kaali**.

MLA Shankutla:A mysterious lady who does'nt know how many murders are sufficient to be an MP.

वो एक अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर था। मैडिकल साइंस की लेटस्ट ईजाद की गई तमाम सुविधाएं उस ऑपरेशन थियेटर में मौजूद थीं।

'धुक्क...धुक्क' की रहस्यमयी ध्वनि उस ऑपरेशन थियेटर में गूंज रही थी। जो 'ऑपरेशन चेयर' पर बैठे व्यक्ति के दिल की धड़कनों की गूंज थी।

ऑपरेशन चेयर के गिर्द चार डॉक्टर चेहरों पर मास्क लगाए उस मरीज के पास खड़े थे। उनके पास खड़ी चार नर्सें भी काफी खौफज़दा नजरों से उस मरीज को घूर रही थीं।

उन डॉक्टरों की आंखों में भी हल्का-हल्का खौफ स्पष्ट नजर आ रहाच था।

आमतौर पर ऑपरेशन थियेटर में मरीज को ऑपरेशन टेबल पर लिटाया जाता है। फिर उसका ऑपरेशन किया जाता है।

पर यह मरीज आम मरीजों से जुदा था। इसे लेटा होने के बजाय ऑपरेशन चेयर पर बैठाया गया था।

मरीज का सिर ऊपर से घुटा पड़ा था। उसके सिर के ऊपरी सारे बाल उस्तरे से साफ कर दिए गए थे।

मरीज की आंखों के नीचे से एक मास्क ने उसका पूरा चेहरा ढक रखा था। कुल मिलाकर मरीज का ऊपरी सिर एक-चौथाई ही नजर आ रहा था वो भी घुटा हुआ। मानो किसी नाई ने बड़ा-सा कटोरा उलटा रखकर बाल मूंडे हों।

मरीज की दोनों बाहों में कई तरह की ड्रिप लगी हुई थीं। उन ड्रिपों से कई तरह की दवाइयां उसके जिस्म में जा रही थी।

एक कम्प्यूटर स्क्रीन पर मरीज की गंजी खोपड़ी के नीचे का दिमाग स्पष्ट नजर आ रहा था। दिमाग के चारों पहलू बराबर-बराबर बंटे नजर आ रहे थेऔर एक पहलू में कोई काला सा धब्बा नजर आ रहा था।

वो धब्बा कम्प्यूटर स्क्रीन पर ऐसा दिखाई पड़ रहा था जैसे स्याही की छोटी-सी बूंद का छींटा पड़ा हो।

मरीज के ढके चेहरे के नीचे, मुंह पर ऑक्सीजन मास्क लगा था जहां से वो सांस ले रहा था।उसका शरीर निश्चेष्ट पड़ा थायकीनन उसे 'जनरल अनैस्थीसिया' देकर बेहोश कर दिया गया ता ।

कुल मिलाकर ऑपरेशन थियेटर का भीतरी दृश्य बेहद रहस्यमयी नजर आ रहा था।

जिसे और खौफजदा कर रहे थे वहां मौजूद चार कमांडोज। उन चारों कमांडोज के हाथ में स्टेनगन थीं और स्टेनगनों का रुख चारों डॉक्टरों की तरफ था।

उनके चेहरे पर इतने हिंसक भाव थे मानो कभी भी ट्रैगर दबाकर उन डॉक्टरों की जीवन लीला समाप्त कर सकते थे।

इसके अलावा ओ०टी० में तरह-तरह के सिलेंडर पड़े थे। किसी सिलेंडर में ऑक्सीजन भरी थी तो किसी में हाइड्रोजन। बाकियों में भी तरह-तरह की गैसें व कैमीकल भरे थे। कई सिलेंडरों पर 'हाईली इनफलेमेबल' का 'लोगो' लगा था जो साबित करता था कि उन सिलेंडरों में फौरन आग पकड़ने वाली कोई कैमीकल गैस है।

"डॉक्टर!" काफी लम्बी खामोशी के बाद सिक्योरिटी चीफ गुर्राया"देर किस बात की है? ऑपरेशन शुरू क्यों नहीं करते?"

"बस! एक मिनट और रुकना पड़ेगा। 60 सैकेंड। तब मरीज का मस्तिष्क पूरी तरह निश्चेष्ट हो जाएगा। फिर हम इत्मीनान से ऑपरेशन कर पाएंगे।"

"हूं।" सिक्योरिटी चीफ लूका उसी पल ऑपरेशन थियेटर के दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसने ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा खोला और बाहर निकला।

बाहर सूने गलियारे में सफेद लकदक करती साड़ी में एक अधेड़ महिला चहलकदमी कर रही थी। उसकी उम्र कोई 40-45 होगी।

उसके माथे के बाल ऊपर से कंघी हो रहे थे। एक सफेद लट उन काले बालों में फब रही थी। आंखों पर गोल्डन फ्रेम का बाइफोकल चश्मा उसके चेहरे को और रौबदार बना रहा था।

दरवाजा खुलने की आहट सुनते ही वो अधेड़ महिला मुड़ी।

सिक्योरिटी चीफ लूका अदब से उसकी तरफ गया और 'बो' करता सिर झुकाता बोला

"मैडम! ऑपरेशन शुरू होने वाला है। बलबीर शर्मा जी को अनैस्थीसिया दिया जा चुका है। दिमाग सुन्न हो रहा है।"

"हूं।" वो महिला बोली"तुम किससे पूछ कर बाहर आए?"

"व...वो मैडम, अभी ऑपरेशन शुरू होने में 60 सैकेंड का समय है। मैंने सोचा आपको बता दूं कि भीतर का सूरतेहाल क्या है।"

"गो गो" एक उंगली उसकी दिशा में हिलाती महिला बोली"जब तक ऑपरेशन हो न जाए, तब तक बाहर मत आना। ऑपरेशन के बाद ही बताना कि बलबीर के दिमाग में वो काला-सा धब्बा क्या है?"

"जी।" लूका सकपकाता हुआ वापिस चला गया।

तत्काल दरवाजा बंद हुआ और ऑपरेशन थियेटर की लाल बत्ती जल उठी; यानि ऑपरेशन शुरू होने जा रहा था।

अधेड़ महिला उस सूने गलियारे में फिर से चहलकदमी करने लगी, जहां उसके अलावा और कोई न था।

रात के एक बजे ऑपरेशन थियेटर के बाहर होता भी कौन है।

'ठक...ठक...ठक।' तभी वहां पर जूतों की ठक-ठक सुनाई देने लगी।

महिला ने चेहरा उठाकर देखा तो उसे सामने के एक गलियारे से कंधे पर कैमरा उठाए वीडियो फोटोग्राफर आता दिखाई दिया। वो तेज कदमों से कंधे पर वीडियो कैमरा उठाए महिला के पास पहुंचा।

"नमस्कार रानी साहिबा!" वीडियो फोटोग्राफर सिर झुकाता अदब से बोला"माफ कीजिएगा। आने में जरा देर हो गयी।"

"जरा देर! तुम आधा घंटा लेट हो। मैंने तुम्हें 12-30 बजे पहुंचने का हुक्म दिया था।"

"सॉरी रानी साहिबा! रास्ते में कार का टायर बर्स्ट हो गया। इतनी रात गए न कोई पंचर वाला मिला, न ही कोई मैकेनिक। स्टेपनी बदलने का वक्त ही नहीं था...पैदल ही यहां तक पहुंचा।"

"गो गो।" महिला ने उसे भी ऑपरेशन थियेटर में जाने के लिए उंगली दिखाई।

कैमरामैन फौरन ओ०टी० के दरवाजे की तरफ भागा।

"याद है न...तुम्हें अंदर होने वाले ऑपरेशन की वीडियो फिल्म बनानी हैऔर यह बात...।" बाकी शब्द रानी साहिबा ने मुंह में ही रखे।

"किसी को नहीं बतानी है। अपने साए को भी नहीं....ऑपरेशन थियेटर में मैं जो भी देखूं...जो भी फिल्म बनाऊं...वो सब आप ही तक रखना है मुझे।"

"हूऽऽ।" रानी साहिबा ने हुंकारा भरा और चहलकदमी करने लगी।

'ठक...ठक...।' कैमरामैन ने दरवाजा नॉक किया।

लूका ने दरवाजा खोला और कैमरामैन भीतर घुस गया। लूका ने दरवाजा पुनः बंद कर दिया।

अंदर डॉक्टर ऑपरेशन की तैयारियों में जुट गए जबकि कैमरामैन अपने वीडियो कैमरे की लीड बिजली से कनैक्ट करने लगा। 10 सैकेंड बाद ही कैमरे की फ्लैश लाईट सीधा बलबीर नामक मरीज की गंजी टांट पर पड़ रही थीऔर कैमरामैन अपने लिए माकूल

जगह ढूंढकर जम गया।

माहौल और भी रहस्यमयी तथा भयानक नजर आने लगा था।

❑❑❑

❑❑❑

'शूंऽऽ' तभी एक डॉक्टर ने कोई उपकरण उठाया और उसका कोई स्विच दबाया।

तत्काल ही उस उपकरण के नीचे लगी बॉडी में से एक ब्लेड निकला और गोल-गोल घूमता चला गया।

वो हैंड ब्लैंडर (मधानी) जैसा उपकरण था जिसके नीचे लगा ब्लेड चकरी की तरह द्रुत गति से घूम रहा था।

बलबीर नामक मरीज की गंजी खोपड़ी पर एक जगह काले लाईनर से निशान लगा दिया गया था। निशान 2x2 इंच लंबा-चौड़ा था।

मशीन और निशान से साफ महसूस हो रहा था कि खोपड़ी के उस निशान पर 'चीरा' लगाया जाना है। खोपड़ी की हड्डी यूं चीरी जानी है जैसे नारियल के ऊपरी खोल में 2x2 का कोई सुराख करना हो।

'शींऽऽ।' तभी डॉक्टर ने घूमता ब्लेड मरीज की खोपड़ी पर रख दिया।

ब्लेड 'निशान' पर से हड्डी को मलाई की तरह चीरने लगा।

फिर खून के छींटे चारों तरफ खड़े डॉक्टरों के कपड़ों पर पड़ने लगे। हड्डी के ऊपर की चमड़ी कट जाने की वजह से खून उड़ रहा था।

कैमरामैन यह दृश्य रिकॉर्ड करता रहा जबकि डॉक्टर अपना काम करते रहे।

चारो कमांडोज सख्त निगाहों से यह हौलनाक दृश्य देखते रहे।

कैमरामैन तमाम कवरेज खोपड़ी की ही कर रहा था।

शायद पूर्व निर्देश के अनुसार वो वहां खड़े कमांडोज को अपने कैमरे में नहीं उतार रहा था।

पंद्रह मिनट डॉक्टर इसी काम में लगा रहा।

कम्प्यूटर स्क्रीन पर काले धब्बे के ऊपर नजर आती खोपड़ी साफ कटती नजर आ रही थी और उसी से ही पता चल रहा था कि चीरे का काम लगभग पूरा हो चुका है।

'खट' तभी डॉक्टर ने स्विच ऑफ किया तो खून से सना घूमता ब्लेड एक यांत्रिक ध्वनि के साथ अपनी बॉडी में समा गया।

तत्काल दूसरा डॉक्टर आगे आया और ब्लेड वाला पीछे हट गया। उस डॉक्टर ने औजारों की ट्रे की तरफ हाथ बढ़ाया। तत्काल पास खड़ी नर्स ने एक महीन-सा ब्लेडनुमा औजार उस डॉक्टर को थमा दिया।

डॉक्टर ने औजार थामा और खोपड़ी की निचली लकीर में घुसाया।

ब्लेड आराम से नीचे लगे चीरे की लकीर में घुस गया। डॉक्टर ने उसे तनिक ऊपर की तरफ खींचा तो खोपड़ी की हड्डी तनिक बाहर आ गयी। फिर लगभग पूरी ही बाहर की तरफ उठती चली गयी।

तत्काल दूसरे डॉक्टर को एक प्लासनुमा औजार थमाया गया तो उसने वो हड्डीनुमा खपच्ची बाहर की तरफ खींच ली।

जब खोपड़ी में 2x2 की खिड़की-सी बनी थी और नीचे इंसानी मस्तिष्क स्पष्ट नजर आ रहा था।

गुलाबी, लाल रंगत लिए लिजलिजाता इंसानी मस्तिष्क धीरे-धीरे स्पंदन कर रहा था, जिससे तय था कि इस कटिंग से दिमाग की कार्यप्रणाली प्रभावित नहीं हुई है और वो पूर्ववत् स्थिति में ही स्पंदन कर रहा है। दिमाग में खून पहुंचाती कई नसें दिखाई पड़ रही थीं।

डॉक्टरों को छोड़ सभी के कलेजे मुंह को आ गए। ऐसा हाहाकारी दृश्य उन्होंने अपनी जिंदगी में क्या, शायद सपनों में भी नहीं देखा था।

'टक।' उधर डॉक्टर ने कटी हड्डी लोहे की ट्रे में डाली। दूसरे डॉक्टर ने तत्काल हाथ बढ़ाया और मास्क चढ़े मुंह से कुछ बोला।

तत्काल एक नलीनुमा यंत्र नर्स ने डॉक्टर को पकड़ा दिया। उस यंत्र के अग्रिम छोर पर एक इंजैक्शन जैसी निडिल लगी थी। जिसका सिरा इंजैक्शन-निडिल से काफी मोटा था।

डॉक्टर ने उस निडिल की पिछली बॉडी की कोई नॉब घुमाई तो इंजैक्शन की निडल आगे की तरफ बढ़ती पतली होने लगी।

डॉक्टर ने उसी पल उस निडिल को दिमाग की एक मोटी-सी नस में पेवस्त कर दिया।

कम्प्यूटर स्क्रीन के एक कोने पर 'नस' का अंदरूनी दृश्य दिखा जिसके भीतर इंजैक्शन की सुई घुसती चली जा रही थी।

सुई तकरीबन दो इंच भीतर जा घुसी, फिर डॉक्टर ने पुनः वो नॉब खोल दी।

तत्काल ही इंजैक्शन की सूई नस के भीतर ही मोटी होने लगी।

फलस्वरूप दिमाग की वो खास नस फूलने लगी।

उस फूलती सुई की बदौलत नस अपने सामान्य आकार से दोगुनी हो गयी। मानो किसी गुब्बारे में हवा भर दी गयी हो।

कम्प्यूटर पर नजर आता स्थिर काला धब्बा भी हिलने-डुलने लगा।

नस के फूल जाने की वजह से उसकी शांति में भी व्यवधान आया था।

तभी डॉक्टर ने उपकरण की सिरिंज पर लगा एक गोल बटन घुमाया।

तत्काल नस से खून निकलता सिरिंज में भरने लगा। नतीजतन वो काला धब्बा भी आगे की तरफ बढ़ने लगा। ऐसे जैसे आदमी पाइप से पैप्सी पी रहा हो और पैप्सी आदमी के हलक की तरफ खिंचती जा रही हो।

साफ लग रहा था कि काला धब्बा नस की दिशा में ही बढ़ रहा हैऔर खून में हुई हलचल, की वजह से ही बढ़ रहा है।

"डॉक्टर! इतना मोटा स्पॉट, इतनी महीन नस में से बाहर आ जाएगा। अभी तो यह स्पॉट दिमाग के खून में मौजूद है। नस तक पहुंचते ही यह वहां रुक जाएगा। जैसे सीवर लाईन के बाहर कूड़ा जमा हो जाता है।"

"देखते हैं क्या होता है।" यह प्रक्रिया निबटाते डॉक्टर बोला। कम्प्यूटर स्क्रीन पर मस्तिष्क के भीतर होता यह हाहाकारी दृश्य साफ दिखाई दे रहा था।

खून के पूल में काला धब्बा गोल-गोल घूमते हुए, बहता पतली-सी नस की 'नली' की तरफ बढ़ रहा था। साफ लग रहा था कि नस के दहाने पर पहुंचकर ही धब्बे को वहीं रुक जाना था, क्योंकि नस में उसको अपने बहने के लिए मुकम्मल जगह नसीब न होनी थी।

सभी डॉक्टर हैरत से कम्प्यूटर स्क्रीन पर देख रहे थे।

कैमरामैन भी अब कम्प्यूटर स्क्रीन को फोकस में लिए यह दृश्य रिकॉर्ड कर रहा था। उसे ऑपरेशन के दौरान दिमाग का भीतरी दृश्य, भीतरी हलचल, प्रत्यक्ष जो नजर न आ रही थी।

बहरहाल धब्बा उसके दहाने पर पहुंचा और तेजी से गोल-गोल घूमने लगा। जैसे नदी के भीतर आए 'भंवर' के गिर्द कोई चीज तेजी से घूम रही हो।

"सर! अटक गया स्पॉट। अब क्या करें?" एक डॉक्टर बोला।

"हूं।" उपकरण थामे डॉक्टर बोला"कुछ देर और देखते हैं।

नहीं तो मस्तिष्क पंचर करना पड़ेगा। मस्तिष्क में सूराख करके ही यह ब्लैक 'स्पॉट' निकालना पड़ेगा।"

"फिर तो मरीज मर भी सकता है।"

"शायद न भी मरे। लेजर टैक्नीक से स्पॉट निकालेंगे। सूराख जरूर होगा, पर दिमाग में कोई खूनखराबा न होगा। कोई चीराफाड़ी न होगी।"

"यस।" डॉक्टर सहमति में सिर हिलाता संतुष्ट नजर आया।

उधर उपकरण थामे डॉक्टर ने तत्काल सिरिंज के पीछे लगी गोल नॉब पूरी खोल दी। तत्काल खून का बहाव बढ़ गया।

फलस्वरूप कम्प्यूटर पर नजर आता काला धब्बा और तेजी से घूमने लगा।

तभी वो घूमता धब्बा धागे की तरह खुलने लगा। फिर धागे के रूप में ही सीधा होता नस में घुसता चला गया।

"डॉक्टर! ये 'स्पॉट' तो स्प्रिंग निकला। देखो, कैसे खुलकर नस में बहता जा रहा है। है क्या यह?"

"क्या पता। मैडिकल हिस्ट्री में ऐसा स्पॉट पहले कभी नहीं देखा गया। बाहर आए। तभी पता चले कि क्या बला है।"

नतीजतन सभी की दृष्टि कम्प्यूटर स्क्रीन पर टिक गयी।

धागे की तरह नस में घुसता, धब्बा अब स्क्रीन पर दिखाई न दे रहा था।

जाहिर है नस का अंदरूनी दृश्य या तो कम्प्यूटर स्क्रीन दिखा न पा रही है या फिर नस के भीतर अंधेरा होने की वजह से वो धब्बेनुमा धागा नजर न आ रहा था।

फिर सभी की दृष्टि उस पारदर्शी सिरिंज पर आकर टिक गयी, जिसके भीतर खून यूं जमा होता जा रहा था जैसे उबाले खा रहा हो।

फिर उन्हें पतला-सा धागा पारदर्शी सिरिंज में घूमता नजर आया।

"देखा। वी हैव इट।" उपकरण थामे डॉक्टर खुशी से चहका।

"हम कामयाब हुए डॉक्टर! ऑपरेशन कामयाब हुआ!" दूसरा डॉक्टर भी खुशी में घूमा।

उधर सिरिंज में धागा पुनः बल खाने लगा और आखिरकार जलेबी की तरह घूमता फिर से गोल धब्बे में बदल गया।

"ट्रे।"

तत्काल नर्स ने एक ट्रे आगे की।

उधर डॉक्टर ने नस में चौड़ी हो रखी इंजैक्शन-सुई पुनः नॉब

दबाकर पतली की, तो नस अपने सामान्य आकार में नजर आने लगी।

डॉक्टर ने उसी पल इंजैक्शन बाहर खींच लिया।

अब कम्प्यूटर स्क्रीन पर कोई धब्बा नजर न आ रहा था। क्योंकि वो सिरिंज में जो नजर आ रहा था।

उधर सुई निकलने के बाद नस में से खून बहने लगा, तो एक डॉक्टर ने उस जगह पर कोई पाऊडरनुमा दवाई छिड़की। तत्काल ही नस में से बाहर निकलता खून बंद हो गया।

डॉक्टर ने उसी पल सिरिंज में जमा सारा खून ट्रे में डाल दिया।

काला धब्बा खून के भीतर गोल-गोल घूमने लगा।

डॉक्टर ने खून की उस विशिष्ट ट्रे में लगा कोई बटन दबाया तो निचली पर्त एक जाली-सी बन गयी।

तत्काल जाली में खून बहकर निचली सतह पर गिरने लगा। अब तो धब्बा खून में से छनता हुआ स्पष्ट दिखाई देने लगा था। अभी घड़ी भर में ही उसने सबके सामने नजर आ जाना था।

कैमरामैन मुस्तैदी से ट्रे का दृश्य रिकार्ड कर रहा था।

"डॉक्टर पूर्वा! मैडिकल हिस्ट्री में यह पहला केस है। पहला ऑपरेशन है जो दुनिया को बताएगा कि इंसानी मस्तिष्क में ऐसा ब्लैक स्पॉट भी पाया जाता है जो अपनी सहूलियत के हिसाब से धागे की तरह खुलकर लंबा हो जाता है।"

"हां डॉक्टर मैमन! यकीकन इस अनोखे ऑपरेशन की बदौलत हमारा नाम भी मैडिकल इतिहास में शान से लिया जाएगा।"

"ऑफकोर्स! बस जरा पता चल जाए कि आखिर ये है क्या बला।" उधर ट्रे में अब सिर्फ काला धब्बा नजर आ रहा था और निचले तल पर सारा खून जमा हो चुका था।

सभी उस धब्बे को एकटक निगाहों से घूर रहे थे।

सिक्योरिटी चीफ लूका भी अब तक करीब पहुंच चुका था। तभी वो धब्बा बिना खून के सूखने लगा और दाएं-बाएं फड़फड़ाने लगा।

"खून में रहने की आदत है न। अब खून नहीं है न पास में, तभी फड़फड़ा रहा है।" एक डॉक्टर हंसा।

"यस।"

"नोऽऽऽ।" एकाएक एक चींख गूंजी।

"इम्पॉसिबल।" दूसरा डॉक्टर चीखा।

"बचाओऽऽ।" दो नर्सें यकायक कानों पर हाथ रखते चीखीं।

'फा...फड़...फड़' कैमरामैन के कंधे पर रखा वीडियो कैमरा खड़खड़ाया। टांगे कांपीं।

"माई गॉड!" लूका चिंघाड़ा"ये क्या है डॉक्टर?"

जवाब किसी की जबान ने न दिया पर आंखे जान चुकी थीं। आंखें देख रही थीं।

ट्रे में काला धब्बा खुलता हुआ, ऊपर की तरफ गर्दन उठाए खड़ा था। उसका पिछला हिस्सा बिच्छू की तरह विपरीत दिशा में मुड़ रखा था।

वो एक गिजबिजाता कीड़ा था, जिसके धागेनुमा लंबे हो रखे जिस्म के दाएं-बाएं 'डंक' जैसे सींग निकले हुए थे। उसका चेहरा डॉक्टरों की तरफ खड़ा लहरा रहा था और पूंछ विपरीत दिशा में हिल रही थी।

वो इतना बारीक था कि सबको ताज्जुब था कि वो अपना वजन किस शक्ति की बदौलत संभाले खड़ा है।

उसका रंग गहरा बैंगनी था।

सभी को झुरझुरी आ गयी। आंखें सिकुड़ गईं।

तभी उस कीड़े ने सिर पटका और ट्रे में फैल गया।

धीरे-धीरे वो ट्रे में ही पानी की तरह गलने लगा और अंततः बैंगनी रंग का खून बनता निचली जाली से टपक कर, नीचे जमा खून में शामिल हो गया।

"कमाल है! ब्रेन वर्म (दिमाग में कीड़ा)। जो खून में ही पनपता है और खून में ही विलीन हो जाता है।"

"हां...हां...।" लूका तत्काल यह खबर रानी साहिबा को देने बाहर की तरफ भागा।

"डॉक्टर! वो ब्रेन वर्म मरा नहीं है।" तभी एक नर्स चीखी।

"व्हाट!" डॉक्टर पूर्वा उछला।

सभी ने नीचे ट्रे के जमा खून में देखा। धागे की तरह बैंगनी रंग की लकीर लाल खून में हलचल मचाती जा रही थी।

फिर धीरे-धीरे वो बैंगनी धागा जलेबी की तरह रोल होता जा रहा था।

"नो-नो!" दोनों डॉक्टर चीखे"यह ब्रेन वर्म खून से ही बनता है। खून में ही घुलता है और खून में ही खुलता है।" एक डॉक्टर भय से फुसफुसाया।

"सर! इस हिसाब से इसका कोई ईलाज नहीं। इसे मारा ही नहीं जा सकता। मरीज को इसके प्रकोप से बचाया ही नहीं जा सकता।" एक नर्स ने दिमाग लड़ाया।

"शायद।" डॉक्टर मैनन ने सहमति जताई।

"मैनन! फिर तो यह भी मुमकिन है कि इस मरीज में और भी ऐसे कीड़े हों।"

"ऑफकोर्स। क्यों नहीं होंगे।"

"माई गॉड! इस मरीज का दिमाग है या कीड़ों की खान।"

"क्या करें अब?"

"फिलहाल खोपड़ी पैक करो इसकी। टांके लगाओ।"

अगले ही पल तीन डॉक्टर वो खोपड़ी की उतारी 2x2 इंच की हड्डी दोबारा लगाने की तैयारी करने लगे।

❑❑❑

"वहाट!" ओ०टी० के बाहर खड़ी रानी साहिबा ने जब यह सारी हकीकत लूका के मुंह से सुनी तो उसका हाथ हैरत की अधिकता की वजह से अपने ही होठों पर ढक्कन की तरह आ चिपका। वो मरे-मरे से स्वर में बोली"येये क्या कह रहे हो लूका...बलबीर के दिमाग में कीड़ा...!"

"मैंने जो देखा। वही बताया मैडम! आप चाहे तो खुद भी देख सकती हैं।"

"नहींऽऽ! नहींऽऽ!" रानी साहिबा एकाएक फुसफुसाई।

"आगे क्या हुक्म है?"

"यह राज किसी और के कान तक नहीं पहुंचना चाहिए।"

"मतलब?" लूका ने असमंजसभरी निगाहों से रानी साहिबा को देखा।

रानी साहिबा ने बहशी अंदाज में हाथ एक झटके से हिलाया।

"जी।" लूका सिर झुकाता ओ०टी० के भीतर चला गया। जहां उनकी मर्जी से गन प्वाईंट की बिनाह पर, ऑपरेशन फिलमाया जा रहा था।

रानी साहिबा नर्सिंग होम से बाहर निकल गईं।

❑❑❑

लूका अन्य कमांडोज के कानों में कुछ खुसर-फुसर करने लगा।

"राईट सर।" तत्काल तीनों कमांडोज ने एड़िया ठोंकी और एकाएक ही उनकी गनों का रुख डॉक्टरों की तरफ हो गया।

"सॉरी डॉक्टर्स!" तभी लूका चिंघाड़ा"आप वाकई ही आज के बाद इतिहास बनने जा रहे हैं।"

'तड़...तड़...तड़।' उसी पल चारों कमांडोज की स्टेनगनें गर्ज उठीं।

"आऽऽ...नहीं...।" डॉक्टर बेचारे गोलियों से छलनी होने लगे।

कमांडोज चारों दिशाओं में नाल घुमाते फायरिंग करने लगे। देखते-ही-देखते डॉक्टर्स, नर्सें, वहां लाशें बनकर गिरने लगे। बलबीर नामक मरीज का भी बेहोश शरीर छलनी हो गया और अपनी कुर्सी पर ही लटक गया।

कैमरामैन पता नहीं मर गया या लड़खड़ाकर कहीं दूर जा गिरा।

'तड़...तड़...तड़...।' ओ०टी० में गोलियां अभी गरज रही थीं।

'सीऽऽऽ' तभी गोली किसी सिलेंडर से कनैक्टिड पाईप में लगी और पाईप फट गया।

फिर फटे पाईप में से 'सी' की करतल ध्वनि निकालती कोई गैस निकलने लगी।

लूका उसी पल अपने तीनों कमांडोज की तरफ घूमा और 'तड़. ..तड़...तड़' उसकी स्टेनगन का रुख अपने ही कमांडोज की तरफ हो गया।

"सॉरी दोस्तों! सबूत कोई नहीं छोड़ना है मुझे...कि कोई ऑपरेशन हुआ था। कोई कीड़ा निकला था। कोई हादसा हुआ था ...वरना रानी साहिबा को इलैक्शन जीतने में मुश्किलें आएंगी। विरोधियों का सामना करना पड़ सकता है। तड़...तड़...तड़।"

'भड़ाम' तभी कोई गोली गैस के पास पहुंची और आग बनी। फिर आग का बादल विकराल रूप लेता लूका की तरफ बढ़ा।

लूका को अपने सामने दरवाजे के पेंट की चमक में आग का लपलपाता बादल अपने पीछे आता दिखाई दिया तो वो भागा।

उसने दरवाजा खोला और बाहर की तरफ भागा।

ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा बंद हुआ और तब तक लूका बाहर खड़ी अंबैसडर के पास पहुंच गया था जिसकी पिछली सीट पर रानी साहिबा आराम से बैठी थी।

"मैडम! काम हो गया। सब मारे गये।"

"चलो।" रानी साहिबा ने कोई दिलचस्पी ही न ली जैसे।

लूका ने ड्राइविंग सीट संभाली और अंबैसडर भागता चला गया।

तभी ऑपरेशन थियेटर का मेन दरवाजा खुला और आग की लपटों में घिरा कैमरामैन नजर आया।

उसके कंधे पर अभी भी लपटों में घिरा कैमरा नजर आ रहा था।

तभी सड़क किनारे एक पेड़ के पीछे से एक काला साया बाहर निकला।

कैमरामैन चीखता-चिल्लाता बाहर सड़क की तरफ भागा।

वो छिपा साया जलते कैमरामैन के सामने आया तो आग की

रोशनी में उसका चेहरा चमक उठा। कैमरा मैन का चेहरा हर पल आग में जलता अपना आकार बदलने लगा। रंग बदलने लगा। गलने-पिघलने लगा।

'धड़ाम!' तभी उसके कंधे से कैमरा गिरा और आगे के शोलों में लड़खड़ाता सड़क के किनारे बने नाले में जा गिरा और पानी में बहता चला गया। पेड़ के पीछे से निकला शख्स फौरन नाले में कूदता चला गया। उधर कैमरामैन मुंह के बल सड़क पर गिरा और मर गया।

नाले में जलता कैमरा बुझ गया और शख्स ने उसमें से रिकॉर्डिड कैसेट निकल ली जो कि सही-सलामत थी।

❑❑❑

पांच साल बाद।

अर्जुन नागपाल अपनी मारुति 800 पर इस समय गुड़गांवा रोड पर था।

उसके होठों पर नेवी कट सिगरेट लगी थी और हाथ पूरी दक्षता से मारुति भगाए चले जा रहे थे।

गाड़ी उस निर्जन सड़क पर 100 किमी० प्रति घंटा की रफ्तार से भागी जा रही थी और पिछले एक घंटे से अर्जुन मारुति पर सवार था।

तकरीबन दस बजे वो ऑफिस पहुंचा था और 10-10 पर उसे एक कॉल आई थी। फोन करने वाली एक युवती थी जिसने अपना नाम राखी शाह बताया था। राखी की हड़बड़ाहट ही बता रही थी कि वो बुरी तरह से खौफज़दा और आतंकित है। उसके मुंह से शब्द टूट-टूट कर निकल रहे थे।

अगले ही पल अर्जुन नागपाल सिगरेट का कश खींचती राखी की उस फोन कॉल के शब्दों की याद में खो गया। अलबत्ता उसका पैर एक्सीलेटर पर चढ़ता चला गया।

राखी के शब्द उसके कानों से टकराने लगे...

'ट्रिन ट्रिन' उसके ऑफिस के फोन की घंटी बजी थी। उसने रिसीवर उठाकर कहा था

"हैल्लो...।"

"अ...अर्जुन जी! आप अर्जुन जी ही हैं न सुपर डिटैक्टिव एजेन्सी?" उधर से राखी शाह बोली थी।

"जी। आप कौन?"

"म...मुझे बचा लो...व वो मुझे मार देगा...प्लीज...मुझे बचा लो अर्जुन जी...व...वो मुझे मार डालेगा।" राखी शाह चीखी थी।

"मैडम, पता तो चले आप कौन हैं, कहां रहती हैं और कौन आपको मार डालेगा?" अर्जुन नागपाल ने अपनी कुर्सी पर पहलू बदला।

"अभी 10-10 हुए हैं। उसने 12-40 का टाईम दिया है। अगर आप 12-40 तक मेरे पास नहीं पहुंचे न...तो फिर मैं नहीं बचूंगी.. .न...नहीं बचूंगी मैं...वो 12-40 पर मेरी हत्या कर देगा।"

"आप किसकी बात कर रही हैं जो 12-40 पर आपकी हत्या कर देगा?"

"म...मैं उसे नहीं जानती। कोई उसे नहीं जानता। पूरे गुड़गांवा में उसका आतंक फैला है। उसका जब दिल करता है किसी को भी फोन कर देता है। उसका मर्डर कर देने का चैलेंज दे देता हैऔर फिर...और फिर" राखी का स्वर जैसे शून्य में से आ रहा था"वो मर्डर कर देता है। वो मेरा भी मर्डर कर देगा। वो सबका मर्डर कर देता है...बड़ा ही अजीब हत्यारा है वो... अजीबो-गरीब विक्षिप्त हत्यारा है वो...।"

"देखिए-देखिए अब आप जानबूझकर टाईम वेस्ट कर रही हैं . ..आप बताइए तो सही वो है कौन?"

"बोला न...उसे किसी ने नहीं देखा...बस उसी ने देखा जो उसका शिकार हुआ। जो उसकी 'दी हुई' मौत मरा। फिर मैं कैसे बताऊं कौन है वो? कैसा है वो?"

"ओफ्फो।" अर्जुन ने दाएं-बाएं सिर नचाया"ऐसा कहीं मुमकिन है कि एक हत्यारा खुलेआम लोगों को फोन करके उनकी हत्या करता फिरेऔर, किसी को पता तक न चले। आप पुलिस के पास...?"

"पुलिस!" राखी शाह के होंठों से निकला"पुलिस ने कुछ करना होता तो कब की कर चुकी होती। अब तक गुड़गांवा में सात जवान लड़कियां मारी जा चुकी हैं...पर पुलिस ने कुछ न किया। और तो और...अखबार वालों ने भी कुछ न किया...किसी अखबार में नहीं छपा कि उन लड़कियों के मरने की असली वजह क्या थी?"

"ये क्या कह रही हैं आप?" अर्जुन चीखा।

"ठीक कह रही हूं मैं। हर अखबार में यही छपा कि फलानी लड़की ने खुदखुशी कर ली? फलानी गर्भवती थी...फलानी ने प्यार में धोखा खाया...और फलानी को उसकी सास ने मार डाला...।"

"यू मीन टू से कि उन लड़कियों को मारने वाला वो विक्षिप्त हत्यारा था जिसे किसी ने नहीं देखा, सिर्फ मरने वालियों ने देखा।"

"यस। आई मीन इट।" राखी शाह पक्के स्वर में बोली।

"और वो विक्षिप्त हत्यारा सिर्फ जवान लड़कियों की हत्या करता है।"

"जी।"

"आप यह बात इतने दावे के साथ कैसे कह सकती हैं?"

"क्योंकि पिछले हफ्ते मरने वाली रीटा शर्मा मेरी खास पहचान वाली थी। उसे भी उसी विक्षिप्त हत्यारे का फोन आया था।"

"क्या कहा गया था उसे फोन पर?" अर्जुन नागपाल ने सिगरेट की एक इंच लम्बी हो चुकी राख एशट्रे में झाड़ी।

"उस 'साईको किलर' (विक्षिप्त हत्यारा) ने रीटा को भी फोन किया था और कहा था'रीटा डार्लिंग! छः डार्लिंगें मैं मार चुका हूं और तू सातवीं हैऔर आज सुबह मुझे भी फोन आया तो उस साईको ने कहा"राखी डियर! सात छोकरियां मैं मार चुका हूं और तू आठवीं है। बचा सके तो बचा ले खुद को...बुला सके तो बुला ले किसी यार को, जो तुझे मेरे कहर से बचा सके।"

"ओह!" अर्जुन नागपाल के होंठ गोल हुए"समझा। जरूर कोई लड़कियों से खता खाया लगता है।"

"अर्जुन जी, यह तय है अब मैं नहीं बचूंगी...यह भी सच है मैंने आपसे पहले पुलिस को भी फोन किया...पर पुलिस ने टालामटोली का जवाब दिया।"

"क्या कहा पुलिस ने?"

"मैडम! ऐसी धमकियां तो सैकड़ों घरों में जाती हैं। हजारों लड़कियों को दी जाती हैं। पुलिस अगर हर जगह पहुंचती फिरे, तो हो चुका काम...कर चुकी पुलिस अपनी नौकरी।"

"ऐसा पुलिस ने कहा!"

"ऐसा ही कहालोकल थाने के सब-इंस्पैक्टर मनीराम शंकर ने ही कहा।"

"हूंऽऽ।" अर्जुन नागपाल गोल होठों को उंगलियों से सहलाता सोच में पड़ा।

"अर्जुन जी! मैं जानती हूं आप मुझे नहीं बचा पाएंगे अब...फिर भी फोन इसलिए किया कि हो सके तो मेरे बाद मरने वाली उन लड़कियों को बचा लीजिएगा, जिनका मेरे बाद नंबर हजै। अब तक की जानकारी से आप इतना तो समझ ही गए होंगे कि उस विक्षिप्त हत्यारे की बाबत पुलिस सब कुछ जानती है पर जानबूझकर खामोश रहती है। उस विक्षिप्त हत्यारे की सूरत सिर्फ वो लड़की देखती है जो हत्या द्वारा खामोश कर दी जाती है। इसलिए अगर कुछ कर सकें तो

जरूर कीजिएगा। फोन रखती हूं।"

"अपना पता बोलिए।"

"वैशाली अपार्टमैंट्स। 616, नालापुर।"

"मैं पहुंच रहा हूं मैडम! अभी आपका कत्ल होने में पूरे ढाई घंटे का समय है और मुझे गुड़गांवा पहुंचने में सिर्फ घंटा भर ही लगेगा। हद से हद डेढ़ घंटा अगर ट्रैफिक जाम मिला तो। यकीन रखिए... मैं बारह-पौने बारह तक आपके दरवाजे पर होऊंगा।"

"सच!" उधर से राखी शाह ने किलकारी मारी।

"...मैं भी तो देखूं उस विक्षिप्त कातिल को, जिसकी बाबत पुलिस खामोश है। अखबारें चुप हैं और न्यूज चैनल गूंगे हो गये हैं। बड़ी तुख्म शख्सियत का होगा यह साईको किलर, जिसे लड़कियों को बाकायदा चैलेंज देकर, फोन करके, मर्डर करने का जुनून सवार रहता है...जरा अपने घर की लोकेशन समझाइए।"

राखी शाह उसे आसानी से अपने घर तक पहुंचने का रूट समझाने लगी।

"मैं हाजिर हुआ मैडम।" अर्जुन नागपाल राखी के शब्द पूरे होने के बाद बोला"बस अभी घंटे-डेढ़ घंटे में हाजिर हुआ।"

"थैंक्यू अर्जुन जी! थैंक्यू वैरी मच।"

अर्जुन ने उसी पल रिसीवर रखा और कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। फिर ऑफिस बंद कर वो पार्किंग में पहुंचा। अगले ही मिनट वो अपनी मारुति गुड़गांवा की दिशा में भगाए जा रहा था।

उस साईको किलर के मर्डर-स्टाइल ने उसका दिमाग कुंद कर दिया था। उस किलर की शख्सियत में ऐसा कोई रहस्यमयी पेच था जिसका खुलना शायद गुड़गांवा पुलिस को गवारा नहीं था। ऊपर से भी कोई ऐसा दबाव था जिसकी बदौलत अखबारों तथा न्यूज चैनलों तक उस किलर द्वारा की जा रही हत्याएं पहुंचाई ही न जा रही थीं। उन्हें वारदातें, हादसे बनाकर पेश किया जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

बहरहाल अर्जुन नागपाल इन्हीं ख्यालों में गुम गाड़ी गुड़गांवा रोड पर भगाए जा रहा था कि...

'धडाक्' की आवाज गूंजी और उसकी कार के आगे एक 14-15 साल का लड़का टकराया और उसका शरीर हवा में उड़ता चला गया।

अगले ही पल लड़का सड़क पर गिरा और गतिमान मारुति उसके ऊपर चढ़ती चली गयी।

"नहींऽऽ" अर्जुन की जोरदार चीख निकली। उसने अगले ही पल ब्रेक पैडल दबा दिया।

'चींऽऽ' की जोरदार ध्वनि के साथ पहिए रुकने की कोशिश में असंतुलित हुए और डगमगाए।

मारुति सीधा दूसरे लेन में घुसती चली गयी।

'धड़ाक' की दूसरी आवाज गूंजी और सामने से आता एक ट्रक अर्जुन की खिलौना मारुति को हवा में उड़ाता चला गया।

'हिच्च' की हिचकी के साथ अर्जुन नगपाल का शरीर स्टेयरिंग से टकराया और हवा में ही मारुति के साथ उड़ता चला गया।

'छनाक्' की आवाज से शीशे टूटे और उसकी किर्चें छर्रों का रूप अख्तियार करती उसकी खोपड़ी में घुसती चली गयीं।

उसने खुद को मारुति में उल्टे-सीधे उछलते महसूस किया।

उसका चेहरा लहूलुहान हो गया था और पसलियां दाएं-बाएं डगमगा रही थीं।

'धड़ाक' से उसका माथा स्टेयरिंग पर जा गिरा और हॉर्न बजता चला गया'टूंऽऽ।'

अगले ही पल बेहोश होकर वो मारुति में ही गिरा कि मारुति की छत सड़क पर आ गिरी।

'धड़ाक' की जोरदार आवाज के साथ छत भीतर की तरफ से पिचकती चली गयी और अर्जुन का अचेत शरीर उसमें फंसता चला गया। मारुति के पहिए आसमान की दिशा में घूमने लगे।

"एक्सीडेंट...च...च...च" आजू-बाजू के वाहन चालक चिल्लाते अफसोस जताते अपनी गाड़ियां भगाते चले गये।

वो ट्रक चालक भी फरार हो गया।

उस हाइवे पर दौड़ते वाहनों ने रुकना मुनासिब न समझा, पता नहीं उनके पास टाईम न था या फिर हाईवे पर हादसे देखना उनकी आदत में शुमार हो चुका था।

अगले ही पल ट्रैफिक सामान्य गति से दोनों लेनों पर दौड़ने लगा।

हर वाहन घटनास्थल पर दो घड़ी अपनी गति धीमी करता 'च...च...च!' करके अफसोस प्रकट करता और आगे निकल जाता।

हाईवे पर ऐसा ही होता है।

मारुति द्वारा कुचला छोकरा एड़ियां रगड़ रहा था। उसका चेहरा शिनाख्त के काबिल न रहा था और प्राण बस कभी भी निकल सकते थे। अर्जुन अपनी उल्टी पड़ी डिब्बा बनी मारुति में कुछ इस कदर

पैक हो रखा था कि पता नहीं निकलता भी या नहीं...पता नहीं बेहोश था या मर ही चुका था।

कोई नहीं जानता था कि उस दुर्घटना में कसूर किसका था, उस लड़के का जो यकायक ही मारुति के आगे आ गया या अर्जुन का, जो अपने ही ख्यालों में गुम गाड़ी तूफान की गति से भगाए चला जा रहा था?

बहरहाल हालातों की रू में अर्जुन ही कसूरवार था, पर चूंकि वो भी इस एक्सीडेंड की चपेट में आ गया था सो उसे भी इस कसूर की काफी सजा मिल चुकी थी और बाकी सजा...भविष्य में मिलने जा रही थी।

होनी ने एक बार फिर ऐसा करिश्मा कर दिखाया था जो होनी सिर्फ अर्जुन नागपाल के ही साथ करती थी। उसके मुकद्दर के साथ ही करती थी। होनी ने जब भी अनहोनी करनी होती थी तो उसे सिर्फ एक ही बकरा नजर आता थाऔर वो बकरा था अर्जुन नागपाल।

इस बार होनी ने अपने बकरे को ही कसाई साबित करने में कोई कसर न छोड़नी थी।

देखेंआगे क्या होता है।

बकरा कसाई बनता है या दुनिया ही कसाई बनकर इस बकरे को हजम कर जाती है?

'टूं...टूं...टू' तभी दूर से आती फ्लाईंग स्कवैड की जिप्सी घटनास्थल पर पहुंचने लगी।

शायद किसी फर्ज परस्त वाहन चालक ने गश्ती पुलिस को एक्सीडैंट की सूचना दे दी थी।

'चींऽऽ' अगले ही पल जिप्सी रुकी और कई पुलिस कर्मी घटनास्थल की तरफ भागे।

❑❑❑

❑❑❑

शकुंतला शर्मा उर्फ रानी साहिबा।

नालापुर विधानसभा की विधायिका थी जो इस घड़ी सफेद सूती साड़ी में अपने कक्ष में चहलकदमी कर रही थी। उसकी आंखों पर कीमती गोल्डन फ्रेम का बाइफोकल चश्मा था और बाल उसके सन की तरह सफेद हो रखे थे जिनके बीच एक मोटी-सी लट काले बालों की थी। इस वजह से उसकी पर्सनलटी इतनी जोरदार लगती थी कि अक्सर उसके सामने खड़ा आदमी बोलती बंद करके ही बोलता था।

यहीं वजह थी कि गहन चिंता में चहलकदमी करती शकुंतला

शर्मा के सामने खड़ा, सब-इंस्पैक्टर मनीराम शंकर चुप ही खड़ा था।
वो शकुंतला शर्मा को देख रहा था। फिर एकाएक ही शकुंतला शर्मा का चेहरा उसकी तरफ घूमा।
तत्काल ही मनीराम शंकर ने गर्दन झुका ली और पलकें नवा लीं, फिर इधर-उधर गर्दन नवाता झेंपने लगा।
शकुंतला शर्मा दो घड़ी मनीराम शंकर को घूरती रही फिर धीमे मगर सर्द लहजे में बोली
"कितनी रकम चाहिए?"
मनीराम शंकर उसी पल गर्दन इंकार में हिलाता चला गया, पर उसकी हिम्मत न पड़ी कि शकुंतला शर्मा से निगाहें मिलाकर बात कर सके।
"मनीराम! मेरी तरफ देखो।"
मनीराम ने सकपकाते-झेंपते उसकी तरफ गर्दन उठाई और नजरें मिलाने की कोशिश की।
पर साहस न कर सका और अंततः गर्दन झुकाता बोला।
"सॉरी मैडम! इस बार यह काम रकम से नहीं होगा। ऊपर से ऑर्डर है...मैं कुछ नहीं कर सकता।"
"ऊपर कौन है तुम्हारे...एस०एच०ओ० देवी दयाल...उसके ऊपर डी०सी०पी० कालरा और उसके ऊपर है कमिश्नर संगरूर बख्शी... इससे ऊपर तो कोई नहीं है न... सब की कीमत बोलो... कितनी रकम चाहिए?"
"नो मैडम! इस बार दिल्ली के होम मिनिस्टर ने जवाब मांगा है कमिश्नर साहब से... जवाब क्या बल्कि ऑर्डर दिया है कि अगली बार गुड़गांवा में किसी जवान लड़की की मौत हुई तो तबादला नहीं होगा...सीधे बर्खास्तगी होगी...।"
"कमाल है!" शकुंतला शर्मा ने तीखे स्वर से कहा"मौतें भी भला कहीं टलती हैं। कौन टाल सकता है मौत को...कौन टाल सका है...जो होम मिनिस्टर टालना चाहते हैं मौत को!"
"माफ कीजिएगा मैडम... मैं मौत की नहीं उन जवान लड़कियों की हत्याओं की बाबत बात कर रहा हूं जो आपके बेटे काली शर्मा द्वारा की जा रही हैं?"
"जानती हूं।" शकुंतला शर्मा ने उच्च्व आवाज में मनीराम शंकर को रोका"मेरा बेटा काली शर्मा कुछ जालिमों को मौत दिए जा रहा है। पर यह बात दिल्ली में बैठे होम मिनिस्टर तक पहुंची कैसे?"
"मतलब?" मनीराम शंकर ने सकपकाकर निगाहें उठाई।

"मनीराम! काली एक विक्षिप्त मरीज है। चलोहम उसे विक्षिप्त हत्यारा ही कहते हैं...यह बात मैं जानती हूं या आपके पुलिस डिपार्टमैंट के चंद ऑफिसर ही जानते हैं...आखिर होम मिनिस्टर तक यह बात कैसे पहुंच गयी?"

"अब मैं क्या कहूं इस बारे में?"

"कमाल है, जिस राज के सिर्फ दो राजदार होंऔर बावजूद इसके राज किसी तीसरे के कान तक पहुंच जाए तो क्या मतलब हुआ इसका?"

"आप कहना क्या चाहती है?"

"यही कि किसी पुलिस वाले ने ही यह खबर होम मिनिस्टर तक पहुंचाई है।"

"आप हम पर आरोप लगा रही है।"

"तो क्या मैं जाकर बता आई होम मिनिस्टर को?"

"मैं क्या कहूं...।"

"खामोश।" उसके शब्द पूरे होने से पहले ही शकुंतला शर्मा दहाड़ती-चिंघाड़ती उसके नजदीक पहुंची"साफ-साफ कहाकितनी रकम बढ़ाना चाहते हो इस बार?"

"हर सौदा रकम से नहीं होता मैडम।"

"तो?"

"मेरा आपसे यही निवेदन है कि इस बार आप अपना चढ़ावा मां वैष्णो के चरणों में रखें या फिर मां काली के चरणा में डालें। फिर उन देवियों से अपने बेटे काली शर्मा के प्राणों की भीख मांगे...उसकी विक्षिप्तता का छुटकारा मांगे। अगर इस बार काली शर्मा कोई खून कर बैठा तो उसकी जान बचाना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा। यकीन रखिएइस बार कानून और पुलिस आपका वो साथ न दे पाएगा जो अब तक देता आया है। कमिश्नर बख्शी ने साफ-साफ अल्टीमेटम दे दिया है कि अगर इस बार काली शर्मा के हाथों कोई हादसा हुआ तो...तो...तो।" तो के बाद मनीराम शंकर यकायक हकला गया।

"तो?" शकुंतला शर्मा उसे घूरते हुए गुर्राई।

"तो मजबूरन कानून को आपके बेटे की बलि लेनी होगी...।" चेहरा झुकाए मनीराम एकाएक ही यह शब्द बोल गया।

"मनीरामऽऽऽ।" शकुंतला शर्मा की चिंघाड़ उस आलीशान हवेली में गुंजायमान होती चली गयी।

"सॉरी मैम!" तनिक साहस बटोरता मनीराम बोला"मुझे जो

कहने को बोला गया था...वो मैंने कह दिया।"

"कमिश्नर संगरूर बख्शी की इतनी मजाल कि शकुंतला शर्मा को धमकी भेजे।"

मनीराम शंकर ने जवाब देना उचित न समझा और गर्दन लटकाए खड़ा रहा।

"कल तक मेरे दरवाजे पर तलवे चाटने वाला कमिश्नर आज मेरे ही बेटे की बलि लेने पर उतारू है।"

"माफ कीजिएगा मैडम!" गर्दन की घंटी, कसम खाने की मुद्रा में पकड़ता बोला मनीराम शंकर"कानून की इस धमकी का यह मतलब नहीं है कि कानून काली शर्मा को सच में ही मारना चाहता है।"

"तो क्या मतलब है तुम्हारा?"

"यही कि जितना जल्दी हो सके आप काली शर्मा का ईलाज करवाएं। उसे किसी मानसिक चिकित्सक को दिखाएं। अगर हो सके, तो उसे ठीक करवाएं। अगर हो सके तो उसे किसी मानसिक चिकित्सालय में भर्ती करवाएं या फिर किसी पागलखाने में...।"

"मनीराम! औकात में।। औकात में रहो अपनी...मत भूलो तुम किसके सामने खड़े हो। किसके रूबरू हो।"

"गुस्ताखी माफ मैडम! मेरी बातों का उल्टा मतलब हरगिज न निकालें। आप आज एम०एल०ए० हैं। अगले चुनावों में आप लोकसभा का इलैक्शन लड़ने जा रही हैं। आप दिल्ली की संसद में एम०पी० की कुर्सी संभालना चाहती हैंऔर आपकी शोहरत आपको इस कुर्सी तक पहुंचा भी देगी...अगर इलैक्शन से पहले ही यह राज दुनिया के सामने खुल गया कि आपका इकलौता बेटा काली शर्मा ही वो विक्षिप्त हत्यारा है, जो अब तक न जाने कितनी ही लड़कियों का खून कर चुका है...सोचिए...तब क्या होगा?...क्या आप इलैक्शन जीत पाएंगी...क्या आप एम०पी० बन पाएंगी...।"

"तुम मुझे मत समझाओ कि कल क्या होगा...कल जो होगा देखा जाएगा...अब कहो कि अब क्या करना चाहते हो?" शकुंतला शर्मा उसकी तरफ देखती फुंफकारी।

"बस! कमिश्नर साहब का संदेशा लाया था। आपको दे दिया. ..और एक बात और...आज 12-40 पर आपके लाल काली शर्मा ने किसी राखी शाह का कत्ल करने की धमकी दी है।"

"क्याऽऽ।" शकुंतला शर्मा का मुंह खुला।

"जी! और राखी शर्मा का फोन मुझे ही आया था। तब तो मैंने

राखी शाह को टाल दिया। फिर कमिश्नर बख्शी से बात करने की सोच ही रहा था कि कमिश्नर बख्शी का ही फोन आ गया। वो पहले से ही उखड़े पड़े थे।"

"क्यों?" शकुंतला शर्मा की आंखे फटीं।

"कथित राखी शाह ने अपने कत्ल की खबर दिल्ली पुलिस के कंट्रोल रूम को भी दी थी। वहीं से ही यह खबर दिल्ली पुलिस कमिश्नर नारंग के पास पहुंची। नारंग ने उसी पल गुड़गांवा के कमिश्नर बख्शी को फोन किया और जवाब मांगा। जवाब में कमिश्नर बख्शी टाल गए। नतीजा, दोनों कमिश्नरों में कहा-सुनी हो गयी। फिर अपने-अपने अधिकार और कार्यक्षेत्र की आचारसंहिता आड़े आ गयी। नतीजाकमिश्नर नारंग ने चिढ़कर सीधे गृहमंत्री से ही हाट लाइन पर बात कर डाली। नतीजागृहमंत्री जी ने सीधा हमारे कमिश्नर बख्शी को वो लताड़ लगाई...वो लताड़ लगाई कि मामला उनकी बर्खास्तगी की सीमा तक आ पहुंचा...इधर मैं कमिश्नर बख्शी से राखी शाह के बारे में बात करना चाहता था...उधर कमिश्नर साहब मुझसे काली शर्मा के बारे में बात करने के लिए नंबर मिला रहे थे...और नतीजा आपके सामने यह है कि कमिश्नर बख्शी के अल्फाज मैंने आपको अक्षरशः सुना दिए हैं। अब आप इसे सलाह समझें, निवेदन समझें या धमकी समझें...कानून को इससे कोई लेना-देना नहीं।"

"हूंऽऽ।" हुंकारा भरती शकुंतला शर्मा मनीराम के सामने से मुड़ी और पीठ करती बोली"चलो ये तो अच्छा हुआ कि दिल्ली के कमिश्नर नारंग को बख्शी ने नहीं बताया कि जवान लड़कियों की हत्याएं काली शर्मा कर रहा है।"

"कमाल है! आपको हमारी फिक्र नहीं...अभी भी काली शर्मा की ही फिक्र है।"

"काली शर्मा मेरा बेटा है और तुम...तुम्हारी फिक्र करने की मुझे क्या जरूरत है...खुद करो अपनी फिक्र।"

"हूंऽऽऽ।" मनीराम शंकर ने चेतावनी के रूप में जैसे हुंकारा भरा। सहमति में सिर हिलाया।

"एक बात याद रखना मनीराम!" तभी शकुंतला शर्मा उसकी तरफ बांह लम्बी करती मुड़ी"अगर मेरे काली को कुछ हुआ न तो कसम से...खून पी जाऊंगी मैं तुम्हारा और तुम्हारे कमिश्नर का।"

"हूं। आपसे और उम्मीद भी क्या की जा सकती है।"

"दफा। दफा!" उसने एक हाथ बाहरी दरवाजे की तरफ बार-बार नचाया।

"जी।" मनीराम शंकर मुड़ा और बाहरी दरवाजे की तरफ बढ़ा"वाकई विक्षिप्तों का खानदान है आपका...देख रहा हूं संसद में पहुंचने के ख्वाब देखने वाली मिनिस्टर अपने विक्षिप्त बेटे से भी ज्यादा विक्षिप्त है।"

"खामोश यू बास्टर्ड...गेट आऊट।" शकुंतला शर्मा के मुंह से झाग निकलने लगा।

मनीराम ने दरवाजा खोला और बोला

"अपना तो जो होगा देखा जाएगा...पर याद रखिए अगर आपका काली शर्मा आज की तारीख में राखी शाह के पास भी फटका न. ..तो कसम से...आज उसका आखिरी दिन होगा।"

"हूं।" जहर भरा हुकारा भरती, सीना ठोंकती शकुंतला शर्मा फुंफकारी"मनीराम! मत भूलो अब तक काली शर्मा को हत्या करते किसी ने नहीं देखा...किसी ने नहीं पहचाना...फिर तुम और तुम्हारा कानून क्या पहचानेगा...क्या ढूंढेगा...ये तो मैं हूं मैं...जिसने कानून को बता रखा है कि इन हत्याओं का जिम्मेदार मेरा विक्षिप्त बेटा काली शर्मा है...न बताती...तो कानून तो उम्र भर ढूंढ़ता ही रहता उस हत्यारे को...मैं हूं मैं जो अपने ही बेटे को हत्यारा घोषित करती हूं और बाद में उसे कानून से बचाने की बाकायदा फीस भरती हूं। रिश्वत देती हूं। घूसखोरों को घूस खिलाती हूं...मैं...।"

"अ...आपका इशारा किस तरफ है?" दरवाजे पर खड़े मनीराम के नेत्र सिकुड़े।

"मनीराम, जरूरी नहीं मेरा काली शर्मा ही वो विक्षिप्त हत्यारा है। वो कोई और भी हो सकता है। जिस दिन काली शर्मा को रंग हाथ पकड़ोउस दिन बेहिचक उसे गोली मार देना।"

"क्या?" मनीराम का मुंह खुला तो बंद न हुआ।

"हां मनीराम...अब तक सात हत्याएं हो चुकी हैं। आठवीं हत्या राखी शाह की होने जा रही है। फिर भी कानून के पास कोई सुराग नहीं, कोई सूत्र नहीं कि उन लड़कियों का हत्यारा कौन है? ये तो मैंने अपने काली शर्मा का हत्याएं करने का अनुमान क्या जताया कि कानून ने उसे सच में ही विक्षिप्त हत्यारा मान लिया।"

"यानि आपके हिसाब से काली शर्मा हत्यारा नहीं है...कोई और विक्षिप्त हत्यारा हो सकता है।"

"हो भी सकता है।"

मनीराम इन शब्दों में उलझकर रह गया। वो अनुमान न लगा सका कि हो भी सकता है, काली शर्मा हत्यारा न हो। या हो भी सकता

है कि काली शर्मा ही हत्यारा हो।

वो दरवाजे पर खड़ा शकुंतला शर्मा को अजीबो-गरीब नजरों से देखने लगा।

शकुंतला शर्मा होठों पर एक विषाक्त मुस्कान लिए, दोनों हाथ पीठ पीछे बांधे हुए, उसकी तरफ इठलाती हुई बढ़ी फिर कह उठी।

"मनीराम, औरत और गिरगिट में यही फर्क होता है। गिरगिट जरूरत के हिसाब से रंग बदलती है। और औरत रंग के हिसाब से जरूरत बदल लेती है।"

"कहना क्या चाहती है आप?"

"यहीं कि मैंने जानबूझकर तुम पुलसियों को घूस खिलाई। जानबूझकर अपने काली को सात मासूम लड़कियों का हत्यारा बताया ताकि तुम और तुम्हारा कानून कूदकर इसी नतीजे पर पहुंच जाओ कि वाकई काली शर्मा ही वो विक्षिप्त हत्यारा है।"

"इससे आपको क्या फायदा होना है?"

"फायदा नंबर एककाली शर्मा के कानून के हाथों मरते ही मैं इकलौती इस सारे एम्पायर की।" उसने हाथ हवेली की तरफ नचाए"मालकिन हो जाऊंगी। ये सारी जायदाद, धन-दौलत मेरी होगी। "

"व्हाट?" मनीराम उसी पल चिहुंका।

"...मेरे रास्ते का इकलौता कांटा...मेरी कोख से उपजा आखिरी वारिस बाकायदा कानून के हाथों खत्म कर दिया जाएगा।" वो ठठाकर हँस पड़ी।

"नहींऽऽ।" मनीराम के दोनों हाथ कानों पर पहुंचे।

"हां-हा-हा।" जवाब में शकुंतला शर्मा कहकहा लगाती कक्ष में मंडराने लगी।

"ये नहीं हो सकता...कोई मां इतनी जालिम नहीं हो सकती कि अपने ही कोख जाए बेटे को हत्यारा साबित करे! उसकी मौत की तमन्ना रखे...उसे कानून के हाथों मरवाने की साजिश रचे!"

"राजनीति में सब जायज है। सियासत के खेल में सब चलता है। सबजंचता है। मुझसे पहले भी एक राजनेता पर आरोप लगा था कि उसने अपनी कुर्सी बचाए रखने के चक्कर में अपने बेटे को मरवा डाला...ताकि कहीं उसकी जगह उसका बेटा न ले जाए...।"

"झूठ है...मैं नहीं मानता...आप अवश्य नई साजिश को जन्म दे रही हैं।"

"साजिश कभी भी नई या पुरानी नहीं होती...साजिश ही होती

है...हां ये जरूर होता है कि कई बार मोहरे बदलने पड़ते हैं। पासे नए फैंकने पड़ते हैं...ताकि साजिश वही रहे...पर दुनिया उसे कुछ और समझती चली जाए।"

"मुझे नहीं पता, आप क्या-क्या कहे जा रही हैं। कल तक जो औरत अपने बेटे को जिंदा रखने के लिए पूरा निजाम खरीदने की तमन्ना रखती थी, आज वही औरत अपने बेटे की मौत की तलबगार नजर आ रही है। जरूर कोई बात है। कोई गहरा राज है।"

"और उस राज की तह तक तुम कभी न पहुंच पाओगे...अब जाओ।" अंततः पुचकारते हुए उसे बाहर का रास्ता दिखाया गया।

मनीराम शंकर उस पहेलीनुमा अधेड़ा को दो पल को तो घूरता ही चला गया।

"बेवकूफ आदमी! तुम जानते हो, मेरा बेटा काली शर्मा पिछले छः महीने से गायब हैतो क्यों गायब है?"

"क्यों गायब है?"

"शायद मैंने ही काली शर्मा को गायब कर दिया हो?"

"यानि?" मनीराम की आंखें कटोरियों में फटीं।

"शायद मैंने ही काली शर्मा को मार डाला हो और कानून की नजर में उसे जिंदा रखने की खातिर ही उसे वो विक्षिप्त हत्यारा घोषित करती जा रही होऊं। साथ ही तुम बेवकूफों की जेबें भरती जा रही होऊं।"

"नहींऽऽ। ये नहीं हो सकता।"

"औरत चाहे तो कुछ भी हो सकता है। भगवान ने तो सिर्फ एक ही औरत बनाई थी और घबराकर बैठ गया...पर देखो उस एक औरत ने कितनी औरतें बना दीं...पूरी दुनिया ही बसा दी। फिर भला-चट-चट-चट।" वो चुटकियां बजाती हँसी"एक आदमी की क्या औकात है?...क्या औकात है काली शर्मा की...।"

"मैडम वो आपका बेटा है।" मनीराम शंकर फटे गले से चीखा।

"हूं...।" शकुंतला शर्मा हँसी"वो बेटा था। अब नहीं है... 'था' समझते हो न 'था'। वो बेटा था।"

"यू मीन। आपने काली शर्मा की हत्या कर दी है।"

"हो भी सकता है।"

"ओह गॉड! फिर गुंजल।" मनीराम शंकर दोनों हाथों में खोपड़ी जकड़ता चला गया।

"शाबाश अब जाआ..." उसने पुचकारा"और जरा सोचो... जब काली शर्मा सात महीने से गायब ही है...या गायब कर ही दिया

गया है तो कैसे भला वो सात हत्याएं कर सकता है जो पिछले दो महीने में की गयी है।"

"आप कहना क्या चाहती है?"

"यही कि अब तक मैं जिस काली शर्मा को बचाने की खातिर आपको घूंस खिला रही थी दरअसल वो काली शर्मा छः महीने पहले ही मारा जा चुका है...आई मीन गायब कर दिया गया है...पहले आपको यह बात इसलिए न बताई क्योंकि अगर बताती तो आप काली की हत्या का शक मुझी पर करते...लिहाजा शक की सुई अपने पर से हटाने के लिए ही मैंने कानून का सहारा लिया। जानबूझकर काली को जिंदा बताया और बाकायदा उसे सात लड़कियों की हत्या का विक्षिप्त हत्यारा बताया...जबकि असलियत तो यही है कि वो सात लड़कियां अपनी ही आई मौत मरीं। दुर्घटनावश या संयोगवश मरीं। उन्हें किसी विक्षिप्त हत्यारे ने नहीं मारा।"

"ओह शटअप। शटअप!" मनीराम शंकर दहाड़ता चला गया।

"तमीज से। तमीज से...।" शकुंतला शर्मा ने दांत पीसे"कमीज से बाहर जाओगे तो सलीब पर टांग दिए जाओगे।"

"देखिए मैडम!" पहली बार मनीराम शंकर ने उंगली तानी शकुंतला शर्मा पर"मैं नहीं मान सकता कि आपने अपने सगे बेटे की हत्या की है। या उसे गायब किया है।"

"मत मानो। मैं कब चाहती हूं कि तुम मानो। ऐसा ही मनवाना होता तो क्यूं काली शर्मा को जिंदा घोषित करती...क्यों उसे सात हत्याओं का हत्यारा घोषित करती?"

"आप पैंतरा बदल रही हैं। काली शर्मा को कानून से बचाने के लिए...बचाए रखने के लिए आपने उसे अब मरा घोषित कर दिया है...और उसकी की गई हत्याओं को हादसों और दुर्घटनाओं का नाम दे दिया है ताकि कानून का ध्यान उस विक्षिप्त हत्यारे से हटे...पर मत भूलिए मैडम...राखी शाह ने साफ-साफ फोन पर मुझे बताया है कि उसे किसी ने मार डालने की धमकी दी है...बाकायदा आठवें कत्ल की चुनौती दी है...इससे साफ जाहिर है कि हत्यारा कहीं न कहीं मौजूद है और वो आपका लख्तेजिगर काली शर्मा ही है।"

"मनीराम! कहावत है हाथ कंगन को आरसी क्या पढ़े-लिखे को फारसी क्या...अभी राखी शाह मरी नहीं है...तुम फौरनउसे दबोचो. ..अभी पौने ग्यारह बजे है। राखी के मरने में दो घंटे बाकी है। उसका हत्यारा जो कोई भी हुआ...सामने आ ही जाएगा। फौरन निकलो और राखी शाह को बचाओ। और मेरी बला सेराखी को मारो या उसे

मारने वाले को मार गिराओ। भले ही वो काली शर्मा हो...या कोई और...नाओ। मूव।"

"हूंऽऽ" मनीराम शंकर शकुंतला शर्मा को घूरता चला गया। उसका आत्मविश्वास कह रहा था कि वाकई वो नागिन अपने संपोले काली को खा चुकी है तभी इतनी आश्वस्त नजर आ रही है।

"अब तुम खुद जाओगे...या धक्के देकर निकलवाऊं।"

"ठीक है। आज ही दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जाएगा। काली शर्मा राखी के पास पहुंचा तो गया हमारें हाथों। अगर नहीं पहुंचा तो आप गई हमारे हाथों।"

"मैं किसलिए?" शकुंतला शर्मा मासूमियत से मुस्कुराई।

"वो इसलिए कि तब साबित हो जाएगा कि काली की हत्या आपने ही की है? फिर कानून आपको दबोचेगा और तब बन चुकी आप एम०पी०...।"

"अगली बार आना तो मेरे खिलाफ सबूत लेकर आना। नहीं तो चुल्लू भर पानी में डूब मर जाना...अंडरस्टैंड? अब दफा! दफा।"

मनीराम शंकर गुस्से में भरता, सिर हिलाता, दरवाजा खोलता दरदनाता हुआ बाहर निकला और शकुंतला शर्मा उसकी पीठ घूरते गुर्राई।

"इतना तो कानून जानते ही होगे तुम कि एक अदने से पुलिस वाले के सामने हत्या कबूल करने वाली एम०एल०ए०, हत्यारिन साबित नहीं हो जाती...अगली बार पूरे कानूनी कुनबे के साथ आना. ..पहले काली शर्मा की लाश लाना...फिर मेरे खिलाफ सबूत लाना. ..तब कहीं जाकर मुझे अपना मुंह दिखाना।"

"साली अजीब औरत है।" मनीराम बड़बड़ाता जा रहा था"पहले कहती रही काली शर्मा जिंदा है...वही हत्यारा है...मुंह बंद रखने के वास्ते नोट देती रही...फिर कहने लगी अगर वो हत्या करते पकड़ा जाए तो उसे गोली मार देना...अब कह रही है कि काली शर्मा जिंदा ही नहीं है...वह खुद ही उसकी हत्या कर चुकी है...पता नहीं क्या घुंडी है...क्या हकीकत है?" अगले ही पल इंस्पैक्टर मनीराम शंकर हवेली से बाहर निकलता अपने बाल नोचता जीप की तरफ बढ़ रहा था।

"काली के बच्चे।" भीतर बिफरती शकुंतला शर्मा दनदना रही थी"तू एक बार हाथ लग मेरे...तुझे खुद ही खा जाऊंगी मैं...तेरे जैसी औलाद से तो मैं बे-औलाद अच्छी थी...कमीने जब पैदा हुआ तो बाप खा गया। अब दाढ़ी-मूंछ क्या आने लगी कि लड़कियां खाने

लगा...एक दिन तू मुझे भी खा जाएगा। मुझे भी खा जाएगा...इससे पहले कि वो दिन आए...मुझे ही नागिन का फर्ज निभाना होगा...मुझे ही तुझे खाना होगा कमीने...मुझे ही तुझे मिटाना होगा...अच्छी फंसी इन वहशी-विक्षिप्तों के खानदान में मैं...अच्छी बहू बनकर आई मैं, जो धीरे-धीरे खुद ही नागिन बनती जा रही हूं...।" अगले ही पल वो फुंफकारतीं हुई कक्ष से बाहर तेज कदमों से निकली और बड़े से हॉल में बनी सीढ़ियां चढ़ने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

उसके कदमों में बला की फुर्ती थी और आंखों में जमाने भर की वहशीयत थी।

वो सीढ़ियां चढ़ती पहली मंजिल के कोने पर बने एक दरवाजे के बाहर पहुंची।

दरवाजे पर जंग लगी सांकल चढ़ी थी। जंग बता रहा था कि वो दरवाजा कभी-कभार ही खोला जाता है। या कभी-कभार भी नहीं खोला जाता।

वो सांकल खोलने लगी।

'चींऽऽचींऽऽ' की आवाज से जंग लगी सांकल खुलने लगी तो यह कर्कश आवाज उस हवेली को और भी रहस्यमयी व डरावनी बनाने लगी।

'धड़ाक' सांकल खुलने के बाद उसने दरवाजे के दोनों पल्ले भीतर की तरफ खोले।

भीतर दीवारों पर मकड़ी के जाले इतने लंबे हो रहे थे जैसे सदियों से ही कमरे की सफाई न हुई हो। फर्श धूल से अटा पड़ा था।

वो दरवाजा लांघती भीतर पहुंची तो उसने खुद को मकड़ी के ही एक बड़े से जाले के भीतर पाया।

जाला दोनों हाथों से तोड़ती वो आगे पहुंची।

सामने दीवार पर 4 तैल चित्र लगे थेआदमकद।

पहले तैल चित्र में एक दस वर्षीय किशोर नजर आ रहा था जिसके नीचे लिखा थाकाली शर्मा।

दूसरे तैल चित्र पर बड़ा-सा हार टंगा था और तैल चित्र में नजर आती तस्वीर के नीचे लिखा थास्वर्गीय बलबीर शर्मा जी।

तीसरा तैल चित्र एक युवक का था। उस पर भी हार टंगा था। नीचे लिखा थादेवी शर्मा। वो भी अब इस दुनिया में नहीं था।

चौथा तैल चित्र एक कृशकाय वृद्ध का था। जिस पर हार नहीं

टंगा थाऔर उस कृशकाय वृद्ध का नाम लिखा थापंडित हरी नारायण शर्मा।

तात्पर्य यह कि हरी नारायण शर्मा का बेटा बलबीर शर्मा था जो आज की तारीख में जीवित नहीं था। बलबीर शर्मा और शकुंतला का पुत्र काली शर्मा था जिसकी दस साल की उम्र वाली तस्वीर बता रही थी कि चित्र कई साल पहले बनाया गया थाऔर वही काली शर्मा आज की तारीख में लापता था।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यही निकलता था कि हरी नारायण शर्मा काली और देवी का दादा था जो आज की तारीख में अर्जुन नगपाल का पड़ौसी था और उसी को ही अपना मुंह बोला बेटा मानता था।

और वो तैल चित्र बनाने का हुनर भी पंडित हरी नारायण शर्मा में ही था जिसने कभी उस कमरे में अपने, अपने बेटे तथा पौतों के तैल चित्र बनाए थे।

बहरहाल सूरतेहाल से यही लगता था कि पंडित हरी नारायण शर्मा आज की तारीख में अपने पूरे परिवार से नाता तोड़े बैठा थाऔर बाकायदा जिंदगी दिल्ली में गुजर कर रहा था। उसने अपनी बीता जिंदगी तथा विक्षिप्त परिवार की बाबत न तो किसी को कुछ बताया था, न ही अपने परिवार को वो अब खुद याद रखे था।

वो पिछले कई सालों से दिल्ली में ज्योतिषाचार्य का व्यवसाय कर रहा था। लोगों के भविष्य पढ़ रहा था। कुंडलियां बना रहा था, जबकि अपने अतीत और वर्तमान को पंडित हरी नारायण शर्मा ने अपने ही हाथों जमीन में गाड़ रखा था।

बहरहाल शकुंतला शर्मा उस धूल, जाले सने कमरे में भीतर घुसी तो उसकी सफेद चमचम साड़ी पर जाले धागों के रूप में चिपक गए। धूल के भभके उसकी ऊजली साड़ी को पल में ही मटमैला करते चले गए।

शकुंतला शर्मा एक बुकशैल्फ के पास पहुंची। उसने वहीं किताबों में पड़ी एक मोटी-सी फोटो एलबम निकाली और बुदबुदायी

"पंडित हरी नारायण शर्मा! आज पता चलेगी दिल्ली को तेरी हकीकत। आज जानेगा हिन्दुस्तान, कि लोगों का भविष्य पढ़ने वाला, उनका भविष्य, वर्तमान सुधारने वाला पंडित दरअसल वो विक्षिप्त है जिसके वंशज अजीब-सी सनक और विक्षिप्ता ही लेकर पैदा होते रहे हैं...पंडित आज तेरा भविष्य भी चौपट हुआ...आ रही हूं मैं।"

दांत भींचे शकुंतला शर्मा ने वो एलबम निकाली और उस कमरे को सांकल चढ़ाती हवेली से बाहर निकली।

"ड्राइवर!" उसने जोरदार आवाज लगाई।

तत्काल दूर खड़ी एक सफेद अंबैसडर स्टार्ट हुई और हवेली के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ी।

पास बने एक सिक्योरिटी केबिन से चार कमांडोज निकले और स्टेनगनें उठाते शकुंतला शर्मा के पास आ लगे।

"सिक्योरिटी नहीं चाहिए।" शकुंतला शर्मा सर्द स्वर में बोली।

"जी मैडम।" सिक्योरिटी ऑफिसर लूका गर्दन झुकाता बोला।

उधर अंबैसडर शकुंतला के पास आ गयी।

ड्राइवर ने बाहर निकलकर पीछे का दरवाजा अदब से खोला।

"ड्राइवर भी नहीं चाहिए।" शकुंतला शर्मा फौरन ड्राइविंग डोर के पास पहुंची और दरवाजा खोलती ड्राइविंग सीट पर सवार हुई।

ड्राइवर और सिक्योरिटी गार्ड्स एक-दूसरे को हैरानी भरी निगाहों से देखने लगे।

शकुंतला शर्मा गाड़ी पुनः स्टार्ट करती बोली

"तुम सब यही रहोगेऔर किसी को भी नहीं पता चलना चाहिए कि मैं कहीं गयी हूं।"

"पर मैडम! आप जा कहां रही हैं?" एकाएक सिक्योरिटी ऑफिसर लूका अदब से बोला।

"कोई पूछे या पूछने आए तो कह देना कि मैडम की तबीयत खराब है।" शकुंतला शर्मा लूका का प्रश्न नजरअंदाज करते बोली"हवेली में आराम फरमा रही हैं। आज मैं किसी से नहीं मिल सकती। क्लियर?"

"क्लियर।" लूका ने सहमति में गर्दन हिलाई।

शकुंतला शर्मा ने गेयर डाला और अंबैसडर विशाल आयरन गेट की तरफ घुमा ली।

"आज मैडम के तेवर ठीक नहीं लग रहे।" लूका बोला।

"लगता है काली ने और कोई गुल खिलाया है या खिलाने जा रहा है। मैडम उसी की ही चिंता में दिन-प्रतिदिन घुलती जा रही हैं।"

उधर बाहर खड़े वाचमैनों ने विशाल फाटक खोला और दोनों गेट पकड़कर सलाम करने लगे।

शकुंतला शर्मा उनकी तरफ बिना देखे ही अंबैसडर भगाती चली गयी। उसका चेहरा पत्थर की ठोस शिला बना नजर आ रहा था।

तभी कहीं छिपी एक ओमनी निकली और अंबैसडर का पीछा करने लगी।

चालक के साथ बैठा युवक किसी को मोबाइल मिलाने लगा।

फिर बोला "मंत्राणी अकेली निकली है। लाश का इंतजाम हुआ?"

❑❑❑

❑❑❑

जानकी दास मैमोरियल हॉस्पिटल।

गुड़गांवा का जाना-माना हॉस्पिटलजिसकी आपातकालीन (एमरजैंसी) लॉबी में अर्जुन नागपाल तथा उस लड़के के घायल जिस्म स्ट्रेचर व्हील कार्ट ट्रॉली पर धकेलते पुलिस कर्मी घुसे।

तत्काल उनकी मदद के लिए हॉस्पिटल के वार्ड ब्वॉय भी आ लगे और दोनों स्ट्रेचर ट्रॉलियों को वार्ड में तत्परता से पहुंचाया जाने लगा।

सब-इंस्पेक्टर जगदीश मुखी अपने तीन कांस्टेबलों के साथ उन दोनों घायलों की तीमारदारी करवाने आया था।

उधर वार्ड में पहुंचते ही चार डॉक्टरों का ग्रुप उठा और दो-दो डॉक्टर दोनों घायलों की तरफ बढ़े।

चार-चार नर्सें भी उनके साथ हो लीं।

"एक्सीडैंट केस है।" एक डॉक्टर अर्जुन की नब्ज थामता बोला।

"जाहिर है।" जगदीश मुखी बोला "वैसे आप दोनों मरीज देखिए। कागजी खानापूर्ति बाद में होती रहेगी।"

"श्योर सर। नर्स! खून बहुत बह गया है।" डॉक्टर अर्जुन का खून भरा चेहरा देखता बोला "मुंह से खून निकल रहा है शायद हलक फटा है बेचारे का...सिर में भी कांच की किरचें धंसी पड़ी हैं...कहीं दिमाग की कोई नस न फटी हो...फौरन मरीज का ब्लडग्रुप चैक करो।"

"यस डॉक्टर।" नर्स उसी पल एक टेबल पर भागी और कांच की एक स्लाईड (शीशे की पट्टी) उठाती अर्जुन के पास पहुंची।

फिर उसने शीशे की पट्टी पर अर्जुन के बहते ब्लड का एक कतरा लिया और दूर बनी लैबोरेटरी टेबल पर भाग निकली।

"सिस्टर!" तभी लड़के का मुआयना करता डॉक्टर बोला "इसकी हार्टबीट (दिल की धड़कन) लो होती जा रही है। फौरन रैसपीरेटर लाओ।"

नर्स फौरन रैसपीरेटर (कृत्रिम सांस देने वाला यंत्र) उठा लाई।

डॉक्टर फौरन रैसपीरेटर लड़के को लगाने लगा।

"डॉक्टर अय्यर! खून इसका भी काफी बह निकला है। इसे भी

खून देना होगा।" दूसरा डॉक्टर बोला।

"कोशिश करने में क्या हर्ज है।" रैसपीरेटर लगाता, डॉक्टर बोला"वैसे उम्मीद नहीं कि यह बचेगा।"

"नर्स! ब्लड सैंपल लो। फौरन।" दूसरा डॉक्टर बोला जिसने उम्मीद अभी भी नहीं छोड़ी थी।

नर्स लड़के का ब्लड सैंपल स्लाईड पर एकत्रित करने लगी।

उधर अर्जुन के सिर पर खड़ा डॉक्टर चिमटी से उसके सिर में धंसी कांच की किरचें निकालने लगा।

तमाम डॉक्टर युद्ध स्तर पर दोनों मरीजों का तत्परता से ईलाज करने लगे।

जबकि एस०आई० जगदीश मुखी दोनों घायलों की जेब से बरामद हुआ सामान टटोलने लगा।

"अरे! यह तो अर्जुन है। अर्जुन नागपाल।" मुखी के होठों से निकला।

"वो जासूस। मुकद्दर का मारा, मुकद्दर से हारा वो जासूसजो जब कुछ नहीं करता तो कानून उसका दुश्मन बन खड़ा होता है। जब कुछ करता है तो कानून उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाता।" एक वार्ड ब्वॉय बोला।

जगदीश मुखी ने घूरकर उस वार्ड ब्वॉय को देखा।

"स...सॉरी सर!" वार्ड ब्वॉय ने गर्दन झुका ली।

"लड़के की जेब से कुछ नहीं मिला। सिवाय दस रुपये की रेजगारी के।" एकाएक जगदीश मुखी बोला"चेहरा भी शिनाख्त नहीं हो पा रहा। कैसे पता लगे कौन है यह?"

"लावारिस ही होगा। जेब में रेजगारी और पोशाक बता रही है कि ये फटेहाल जिंदगी जी रहा थाबेचारा लावारिस ही फूंक दिया जाएगा।" लड़के का उपचार करता, डॉक्टर बोला।

"खामोश।" जगदीश मुखी तीखे स्वर में कह उठा"डॉक्टर होकर आपको ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं।"

"मेरा रोज का काम है। इस खैराती हस्पताल में रोजाना सैकड़ों मरते हैं और दसियों लावारिस ही फूंक दिए जाते हैं।" डॉक्टर लम्बी सांस छोड़ता बोला।

जगदीश मुखी चुप कर गया।

"डॉक्टर!" तभी एक नर्स चीखी"अर्जुन नागपाल का ब्लड ग्रुप बी पॉजिटिव है।"

"फौरन ब्लड बैंक से पता करो।"

वो नर्स ब्लड बैंक की तरफ भागी जबकि दूसरी नर्स लड़के का ब्लड लेकर विशेषज्ञ के पास पहुंची।

"डॉक्टर! लड़के की सांस डूब रही है। रैसपीरेटर काम नहीं कर रहा। धाड़...धाड़।" एकाएक लड़के के पास खड़ा डॉक्टर दोनों बांहें तेजी से लड़के के सीने पर धाड़-धाड़ मारने लगा ताकि उसकी डूबती जा रही सांस शायद लौट आए।

पर लड़के को कोई खास फर्क न पड़ा। उसका लगभग कुचला चेहरा निश्चेष्ट ही पड़ा रहा।

"शॉक थैरेपी।" दोहत्थड़ मारता डॉक्टर चिल्लाया।

उसी पल दो नर्सें बिजली के झटके देने वाली मशीन पहियों पर घसीट कर ले आईं।

फिर उस उपकरण के दोनों हैडफोन लड़के की छाती पर रखे गए और रैगूलेटर ऑन कर दिया गया।

लड़के का शरीर करंट की वजह से स्ट्रैचर पर धनुष की तरह उठताफिर गिर जाता।

फिर यह ट्रीटमैंट लड़के को बार-बार दी जाने लगी।

"यस...यस। लड़के के दिल की धड़कन तेज हुई है।" डॉक्टर हर्षित आवाज में चीखा।

"डॉक्टर! ब्लड बैंक में ब्लड नहीं है।" तभी पहली नर्स लौटी।

"व्हाट!" अर्जुन के उपचार में लगा डॉक्टर चिहुंका

"कोई अपना ब्लड देगा।" तभी डॉक्टर कक्ष में खड़े तमाम मरीजों और सहयोगियों से संबोधित होता चिंघाड़ा"किसी का है बी-पॉजिटिव ब्लड ग्रुप...देखो एक मरीज की जान बच जाएगी...कम ऑन...हैल्प...।"

सभी ने एक-दूसरे का मुंह देखा पर जवाब किसी ने न दिया। बी-पॉजिटिव तो पता नहीं किसी का ब्लड ग्रुप निकलता या नहीं... पर वहां तो कोई अपना खून तक चैक कराने न आया।

"हं।" जगदीश मुखी जहरीली हँसी हँसा"डॉक्टर! यहां मरते पर आंसू बहाने का रिवाज है...खून देकर जान बचाने का नहीं।"

"अ...आप क्या नहीं दे देते खून?" एक अंजान युवक बोला।

"मैं जरूर दे देता, अगर अर्जुन का खून ए-पॉजीटिव होता।" जगदीश मुखी बोला।

युवक समझ गया कि जगदीश मुखी का खून अर्जुन के ग्रुप का नहीं है।

"ओह गॉड! सांस फिर डूब रही है लड़के की। शॉक ट्रीटमैंट बंद

करो। कार्डियक अरेस्ट (हार्ट फेल) हो सकता है।"

नर्सों ने फौरन लड़के पर से शॉक ट्रीटमेंट उपकरण हटा लिया।

"ये मर रहा है डॉक्टर।" डॉक्टर लड़के की नब्ज थामता बोला।

उसकी दृष्टि कम्प्यूटर स्क्रीन जैसी मशीन पर थी जहां लड़के की दिल तथा नब्ज की धड़कनें स्पष्ट रेखांकित हो रही थीं। रक्तचाप भी असामान्य रूप से रेखांकित हो रहा था।

"डॉक्टर!" तभी विशेषज्ञ बोला"लड़के का ब्लड ग्रुप 'ओ' है।"

"ओ" अर्जुन के पास खड़ा डॉक्टर बोला"ओ यानि यूनीवर्सल डॉनर; यानि लड़के का ब्लड अर्जुन को चढ़ाया जा सकता है।"

"व्हाट!" जगदीश मुखी उछला"ये क्या कह रहे हैं डॉक्टर!"

"और कोई चारा नहीं इंस्पैक्टर! लड़का बचेगा नहीं। और अर्जुन को अगर वक्त रहते खून न मिला तो अर्जुन भी मर जाएगा। फैसला तुम्हारे हाथ में है। तुम सबके हाथ में है।" डॉक्टर लोगों की तरफ दोनों हाथ नचाते बोला"ओ ब्लड किसी भी ब्लड ग्रुप वाले मरीज को दिया जा सकता है। इसलिए इसे 'यूनिवर्सल डॉनर' कहते है। अब कहिए आप क्या कहते हैं?"

सभी सोच में पड़ गए।

"देखिए! वक्त सोचने में या बातों में जाया करने का नहीं है। फौरन फैसला कीजिए। एक मरता हुआ बच्चा दूसरे जीवित रह सकने वाले मरीज की जान बचा सकता है। यही सवाल मैं उस बच्चे से करता तो शायद वो भी यही जवाब देता कि डॉक्टर आप मेरा खून अर्जुन अंकल को दे दो...पर लड़का बोल नहीं सकता...इसलिए जवाब हमें ढूंढना है। हमें सोचना है कि हमें क्या करना चाहिए?"

सभी एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने लगे।

"जल्दी-जल्दी! अगर लड़का मर गया तो उसका खून उसी पल से पानी बनना शुरू हो जाएगा और फिर वो किसी काम का न रहेगा।"

"ठीक है डॉक्टर! यहां खड़े लोगों का खून तो पानी ही बना पड़ा है।" जगदीश मुखी बोला"इससे पहले कि लड़के का खून पानी बने. ..आप अर्जुन को उसका खून चढ़ा दीजिए।"

"यसयस। यही ठीक रहेगा।" कोई बोला।

"नर्स, ब्लड ट्रांसफ्यूजन की तैयारी करो।"

अगले ही पल एमरजैंसी वार्ड में अर्जुन को खून चढ़ाने की तैयारियां युद्ध स्तर पर होने लगीं।

मौत की आखिरी घड़ियां गिनता बच्चा अपने ही कातिल को खून देने को तैयार पड़ा था।

कोई नहीं जानता था कि उस खून ने अर्जुन का पूरा वजूद ही भस्म कर डालना था और सैकड़ों कुर्बानियां मांगते हुए अपनी मौत का इंतकाम अर्जुन नागपाल से ही लेना था।

अगले पांच मिनट बाद बच्चे का खून विभिन्न उपकरणों की मदद से अर्जुन के शरीर में डायरेक्ट ही पहुंचाया जा रहा थाऔर एक मीटर बता रहा था कि खून कितनी मात्रा में अर्जुन के शरीर में पहुंचता जा रहा है और कितनी मात्रा अर्जुन को चाहिए।

एकं घंटे बाद बच्चे ने दम तोड़ा जबकि अर्जुन नागपाल के शरीर में हरारत हुई। उसकी पलकें फड़फड़ानी शुरू हुइ।।

अर्जुन के शरीर में दो यूनिट यानि 400 सी०सी० खून उस बच्चे का शामिल हो चुका था।

जगदीश मुखी व्याकुलता से अर्जुन के होश में आने का इंतजार कर रहा था ताकि ब्यान ले सके। दुर्घटना की असली वजह जान सके।

डॉक्टरों की एक आंख में बच्चे की मौत का गम था और दूसरी आंख में अर्जुन की जान बच जाने की खुशी झिलमिला रही थी।

आंसू प्रत्येक आंख में थे। पर खुशी और गमी उनके साथ चमकती नजर आ रही थी।

तभी जगदीश मुखी के हाथ थमा अर्जुन का मोबाइल बजावो मोबाइल उसे अर्जुन के सामान में से बरामद हुआ था।

"एक्सक्यूज मी।" जगदीश मुखी डॉक्टरों से इजाजत लेता वार्ड से बाहर निकल आया।

फिर उसने कॉलिंग स्विच दबाया, और बोला

"हैल्लो।"

"अर्जुन जी...!"

"अर्जुन नहीं हैं...आप कौन?"

"अर्जुन नहीं हैं...कहां गए?"

"आप कौन?"

"मैं राखी! राखी शाह। वो मुझसे मिलने आने वाले थे। मेरी जान बचाने आने वाले थे...कहां चले गए...आप कौन हैं?"

"मैं इंस्पैक्टर जगदीश मुखी...।" फिर इंस्पैक्टर उसे दुर्घटना का ब्यौरा देने लगा। सूरतेहाल बताने लगा।

"ठीक है। मैं हॉस्पिटल पहुंचती हूं।" उधर से राखी शाह ने फोन रखा और अपनी मौत की तरफ पहला कदम बढ़ाया।

वो अर्जुन से मिलने नहीं...बल्कि काली शर्मा की नायाब साजिश के तहत मरने आ रही थी।

रहस्यमयी साजिशों और हत्याओं का सिलसिला शुरू होने जा रहा था।

पर किसके हाथोंयह रहस्य था जिसका पहला पर्दा जल्दी ही खुलना था।

❑❑❑

❑❑❑

राखी शाह अपने अपार्टमैंट की सीढ़ियां उतर ही रही थी कि उसे नीचे एक पुलिसिया मोटरसाइकिल पर नजर आया।

उसने अपनी बुलेट अपार्टमैंट के फाटक के अंदर ली और इमारत के नजदीक जाकर रोकी।

अचानक ही उसकी दृष्टि ऊपर जाती सीढ़ियों पर गयी तो उसे राखी शाह सीढ़ियां उतरती नजर आईं।

राखी शाह ने भी पुलिसिये को अपनी तरफ देखता पाया। फिर वो तेजी से सीढ़ियां उतरने लगी जबकि पुलिसिया मोटर बाइक पर बैठा उसका इंतजार करने लगा।

राखी शाह अपना हैंडबैग कंधे पर डाले निचले साकेट में पहुंची और फिर उसकी तरफ बढ़ी।

'मनीराम शंकर' मन-ही-मन उसने इंस्पैक्टर की नेम प्लेट पढ़ी।

"सुनिए।" मनीराम शंकर बाइक पर बैठा-बैठा बोला"मिस राखी शाह यहीं रहती हैं?"

"मैं ही हूं।" राखी शाह हिकारतभरे लहजे में बोली।

"सॉरी मैडम! आपका जब फोन आया था तब में आपसे वाकई बदतमीजी से पेश आया था। मुझे अपनी गलती का अहसास है... कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"इंस्पैक्टर आपको अपनी गलती का अहसास मेरी वजह से नहीं, बल्कि किसी और की वजह से हुआ है।"

"आई नो। आपने मेरे बाद दिल्ली फोन लगाया था। मामला गृहमंत्रालय तक जा पहुंचा है...मैं आपकी मदद के लिए ही आया हूं।"

"ऐनी हाओ। थैंक्स फॉर नथिंग।" कहती राखी शाह उससे कन्नी काटती निकली।

"कहीं छोड़ दूं आपको?"

"मैं चली जाऊंगी।"

"बाइ दि वे, कहां जा रही है आप?"

"अर्जुन नागपाल के पास।"

"व्हाट!" मनीराम शंकर चिहुंका"आप हमारे होते हुए उस जासूस से मदद मांगने जा रही है। बोला तो...अब गुड़गांवा पुलिस का पूरा डिपार्टमैंट आपके साथ है।"

"फिर भी मुझे आपकी कोई जरूरत नहीं है।" कहती राखी शाह मुड़ी"इज दैट क्लियर?"

"देखिए मैडम! दिल्ली जाते-जाते टाइम लग जाएगा। जब तक अर्जुन नागपाल तक आप पहुंचेंगी...तब तक तो वो विक्षिप्त हत्यारा अपना काम कर जाएगा।" एकाएक कलाई घड़ी पर नजर डाली मनीराम शंकर ने"देखिए। 12-40 होने में कुछ ही समय बचा है।"

"रियली!" राखी शाह मुस्कुराई"आपको मेरी फिक्र है। मुझे खुशी हुई।"

"प्लीज मैडम! गुस्सा थूक दीजिए। जब पुलिस मदद करना चाहती है तो लोग सहयोग नहीं देते। जब पुलिस कुछ नहीं करती तो लोग शिकायत करते हैं। आईए बैठिए। मैं आपको छोड़ देता हूं। अब आप 12-40 तक मेरी ही कस्टडी में रहेंगी। फिर देखता हूं कैसे वो विक्षिप्त हत्यारा आपको हाथ लगाता है।"

"नो थैंक्स! मुझे आपकी मदद की कोई जरूरत नहीं।"

"मिस शाह! मामला समझिए। मामले की संजीदगी समझिए। मैं आपके साथ रहूंगा तो शायद वो हत्यारा मेरे समक्ष आ जाए। और अगर वो आ गया तो मर कर ही पीछा छुटा पाएगा मुझसे। प्लीजबैठिए।"

"हूंऽऽ।" राखी शाह सोच में पड़ गयी।

वाकई उसे उस समय मदद की जरूरत थी और अगर वो पुलिस वाला मदद कर ही रहा था तो उसे एतराज नहीं करना था।

मनीराम शंकर ने बाइक स्टार्ट की और 'यू टर्न' मोड़ते हुए एक जगह खड़ी की

"प्लीज! बी सीटेड।"

"ओ०के०। अगर वाकई इंसानियत और फर्ज के नाते मेरी मदद कर रहे हैं तो मुझे भी सहयोग करना चाहिए।" कहती राखी शाह पिछली सीट पर बैठी।

मनीराम शंकर बाइक भगाता चला गया।

"बाई दि वे, आप जानते हैं न वो विक्षिप्त हत्यारा कौन है?"

"जानता था।"

"थामतलब?"

"अभी-अभी जिस शख्सियत से मिलकर आ रहा हूं न...उसने कई गुत्थियाँ और डाल दी हैं जिससे उलझन में हूं कि वो विक्षिप्त वही है या कोई और?" बाइक दौड़ाता मनीराम बोला।

"मैं समझी नहीं।" पीछे बैठी राखी शाह चकराई।

"मैं खुद नहीं समझा...आप ही बताइए...यहां की विधायिका शकुंतला शर्मा कानून को खुद कहती है कि अब तक हुई हत्याएं करने वाला उसका पुत्र काली शर्मा है... लिहाजा उसे कानून से बचाकर रखना हमारा फर्ज है...आपकी फोन कॉल की बदौलत हमें ऊपर से ऑर्डर हो गया कि उस विक्षिप्त काली शर्मा को गिरफ्तार करेंजिंदा या मुर्दा। मैं यह बात शकुंतला शर्मा को बताने गया तो वो कहने लगी कि काली शर्मा 6 महीने से गायब है...क्या पता वो मर ही न चुका हो...मात्र मेरे कहने से आप उसे हत्यारा थोड़ी न मान सकते हैं... अभी तक किसी ने देखा थोड़ी है कि काली शर्मा ही तमाम हत्याएं कर रहा है।"

"ये आप क्या कह रहे हैं?" राखी शाह की आंखें फटीं।

"यही तो उलझन है। मैडम शकुंतला शर्मा का रहस्यमयी चरित्र यह इशारा करता है कि उसी ने ही सत्ता की खातिर काली शर्मा की हत्या कर दी है। पर उसे दुनिया में जिंदा साबित करने की खातिर जानबूझकर हत्यारा घोषित कर रही है। बाकायदा हम पुलिस वालों को खरीदकर काली शर्मा की रक्षा करने की पेशकश कर रही है।"

"रियली! मुझे अभी समझ ही नहीं आ रहा...माजरा क्या है!"

"अब जब तक काली शर्मा हमारे सामने नहीं पड़ता। आपकी हत्या की कोशिश नहीं करता...तब तक हम कैसे कह सकते हैं कि वो आज की तारीख में जिंदा है और बाकायदा वो ही कथित विक्षिप्त हत्यारा है।"

"ओह!" पीछे बैठी राखी शाह सोच में पड़ गयी।

"तभी मैं आपके पास आया। क्योंकि आज की तारीख में काली शर्मा ने आपकी हत्या की घोषणा की है। अगर वो आपकी हत्या कर देता है तो बात क्लियर हो जाती है कि वो जिंदा है। अगर वो आपकी हत्या नहीं कर पाता या सामने ही नहीं आता तो हमारा शक शकुंतला शर्मा पर जा सकता है कि वाकई वो नागिन अपने बेटे काली शर्मा को खा चुकी है। बाई दि वे, जाना किधर है?"

"जानकी दास हॉस्पिटल। यहीं नजदीक ही। अर्जुन इधर ही एडमिट है। बेचारा मुझसे ही मिलने आ रहा था कि दुर्घटना हो गयी।"

"ओह! कैसे?" मनीराम शंकर ने गाड़ी एक तंग सड़क से

निकालकर चौड़ी सड़क पर मोड़ ली।

राखी शाह ने संक्षिप्त में दुर्घटना की बाबत बताया जितना उसे जगदीश मुखी से पता चला था।

"इंस्पैक्टर, आपकी तमाम बातों से तो यही नतीजा निकलता है कि उस विक्षिप्त काली शर्मा को अब तक किसी ने देखा ही नहीं है?" एकाएक राखी शाह बोली।

"सही कह रही हैं आप। काली शर्मा को तो कोई जानता ही नहीं था। ये तो जब लड़कियों की हत्याएं होने लगी तो एक दिन अचानक शकुंतला देवी का कमिश्नर बख्शी को फोन आया। उन्होंने ही कमिश्नर को बताया कि ये हत्याएं काली शर्माउनका विक्षिप्त बेटा ही कर रहा है ज़ो पिछले कुछ महीनों से लापता है...पुलिस अपनी कीमत बोले और मेरे बेटे की बाबत मुंह बंद रखे। साथ ही उसकी रक्षा करे।"

"फिर?"

"फिर क्या, कमिश्नर बख्शी मोटी रकम खाकर चुप बैठ गए। आप ही की तरह कोई भी लड़की पुलिस थाने जाती। फोन करती और हत्याओं की धमकी की बाबत, बताती तो हमारा वही जवाब होताजो मैंने आज सुबह आपको दिया।"

"ओह!"

❑❑❑

❑❑❑

मनीराम शंकर की बाइक जानकी दास हॉस्पिटल की पार्किंग में रुकी और राखी शाह उतरी।

"काली शर्मा दिखने में कैसा है?"

"कभी देखा हो तो बताएं न।" बाइक स्टैंड पर लगाता मनीराम शंकर बोला।

"इंस्पैक्टर! आपको शकुंतला शर्मा ने मिलाया तो होगा कभी काली शर्मा से?"

"जब वो लापता ही हो रखा था तो मिलवाती कैसे?"

"फिर भी काली शर्मा की कोई फोटो, कोई एलबम आदि दिखाई होगी?"

"नहीं। पुलिस ने काली शर्मा की तस्वीर उनसे मांगी थी तो मैडम का जवाब था कि उनके परिवार में तस्वीरें खींचने आदि का रिवाज नहीं था। हमने भी ज्यादा परवाह इसलिए न की क्योंकि नोट खाने को मिल रहे थेऔर उम्मीद भी थी कि एक न एक दिन विक्षिप्त

काली शर्मा खुद ही हाथ आ जाएगा। पर आज तो मंत्री महोदया ने खोपड़ी ही घुमा दी कि हो सकता है उन्होंने ही अपने काली की हत्या कर दी हो।" कहता मनीराम शंकर हॉस्पिटल की तरफ बढ़ने लगा।

"तो आप अब शकुंतला शर्मा को हत्या के जुर्म में गिरफ्तार करेंगे?"

"काली शर्मा की लाश ही नहीं है...तो उसके मर चुके होने का कोई सबूत ही नहीं है...किसी चश्मदीद गवाह का बयान ही नहीं है तो किस दम पर हम शकुंतला शर्मा को गिरफ्तार कर पाएंगे। किसी के कहने भर से ही कानून या पुलिस उसे हत्यारा थोड़ी न मान लेते हैं।"

"अजीब गुत्थी है। आज की तारीख में कोई जानता ही नहीं कि काली शर्मा कौन है? दिखने में कैसा है? उसका मोडस ऑपरेंडी (जुर्म करने का तरीका) क्या है?"

"यही तो प्रॉब्लम है। जितनी रहस्यमयी शकुंतला खुद है उससे रहस्यमयी उसका बेटा काली शर्मा है।" दोनों लॉबी में पहुंच चुके थे।

"कहीं ऐसा तो नहींकाली शर्मा नामक कोई वजूद हो ही न।"

"अरे नहीं-नहीं। यह तो पता है कि उसके दो बेटे थे। बड़ा देवी शर्मा। छोटा काली शर्मा। देवी शर्मा तकरीबन पांच साल पहले प्लेन क्रैश में मारा गया था और छोटा...।"

"शायद छः महीने पहले ही मार दिया गया है।" राखी शाह अर्जुन के वार्ड की तरफ बढ़ती बोली"चूंकि काली शर्मा की लाश किसी को मिली नहीं। इसलिए अब शकुंतला शर्मा पर हाथ डालना मुश्किल है।"

"तुम्हारी बातों से तो यह भी लग रहा है कि कहीं बड़े बेटे देवी शर्मा का भी, प्लेन क्रैश के बहाने मर्डर न कर दिया गया हो।" चिंतित लहजे में बोला इंस्पैक्टर मनीराम शंकर।

"राजनीति में कुछ भी हो सकता है। सब कुछ जायज है।"

"यही बात उस शकुंतला शर्मा ने भी कही थी। हजारों साल पहले बाबर-हुमायूं ने सत्ता के लिए बाप-बेटे कत्ल किए थे। आज तक भी यही हो रहा है। वही हो रहा है।"

"उम्र क्या है काली शर्मा की?" राखी शाह ने पूछा।

"क्या पता। न हमें कभी शकुंतला शर्मा से पूछनी सूझी। न ही कभी शकुंतला शर्मा ने बताया।"

"वाह! कानून हो तो हिन्दुस्तान जैसा। पुलिस हो तो आप जैसी। एक विक्षिप्त हत्यारा हिन्दुस्तान में खुलेआम घूम रहा है। पर कानून

ने न कभी उसकी सूरत देखी। न कभी उसकी उम्र जानी।"

"भई। जरूरत भी क्या थी। हमें नोट मिल रहे थे। उन नोटों के एवज में शकुंतला शर्मा हमें काली शर्मा की हिफाजत का काम सौंप रही थी, जो हम करते जा रहे थे।"

"वो कानून और पुलिस के हाथों अपना उल्लू साध रही थी। अब यह खबर आम होते देर न लगेगी कि पुलिस जान-बूझकर काली शर्मा को अखबारों तथा न्यूज चैनल में आने ही नहीं दे रही है। लिहाजा शकुंतला शर्मा का उल्लू सीधा होता जा रहा था कि आज की तारीख में काली शर्मा जिंदा है और बाकायदा कानून नोट खाकर उसकी हिफाजत कर रहा है। जबकि हकीकत यह हो सकती है कि वो डायन विधायिका बहुत पहले ही अपना काली शर्मा खा चुकी हो। नतीजापुलिस वालों की वर्दियां उतरेंगी। कानून की धज्जियां उड़ेंगी। पर उस विधायिका का बाल भी बांका न होगा। यही वो चाहती थी और यही अब तक हो रहा है।"

"माई गॉड!" मनीराम शंकर पता नहीं क्यों कांपकर रह गया।

"डोंट वरी। मैं उस विधायिका की पूरी पोल-पट्टी अब खोलकर रख दूंगी।"

"तुम?"

"हां मैं। राखी शाह। चीफ कारेसपांडेंट। नैशनल हैराल्ड।"

"क्या तुम अखबार में काम करती हो?"

"हूं। और अब शकुंतला शर्मा का सारा चिट्ठा मैं अपने अखबार की सुर्खियां बनाऊंगी। अखबार के जरिए ऐसे सवाल शकुंतला शर्मा के सामने रखूंगी कि जवाब देना मुश्किल हो जाएगा मंत्राणी को।"

"नहीं। तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी। पुलिस की भी बदनामी होगी।"

"माई फुट। अब तो वही होगा जो मैं चाहूंगी। जो मैं करूंगी।"

"वक्त देखो12-10 हो चुके हैं।" एकाएक कलाई घड़ी देखता मनीराम बोला।

"मतलब?" राखी शाह चिहुंकी।

"मतलब वक्त कहां है तुम्हारे पास। देखो तुम्हारे मरने में सिर्फ 30 मिनट ही बचे हैं। फिर भला कहां अपनी अखबार को सुर्खियां दे पाओगी। मुझे तो डर है तुम खुद ही सुर्खी बन जाओगी।"

"ओह शटअप! काली शर्मा भला भरेपूरे हॉस्पिटल में आकर मुझे मारेगा।" राखी शाह खीझ कर कह उठी।

"क्या पता वो काली शर्मा है या कोई और। उसे देखा थोड़ी है

किसी नेवो विक्षिप्त हत्यारा तो कोई भी हो सकता है, जिसकी साजिश के तहत ही तुम हॉस्पिटल में पहुंचायी गयी हो।"

"ओह शटअप! क्या बेसिर-पैर की हांकने लगे।"

"मैडम! मुझे जो लगा, मैंने कह दिया। अब तक उस विक्षिप्त हत्यारे ने जिस किसी को भी मारा है पूरी योजना और चुनौती के साथ ही मारा है।"

"विल यू प्लीज शटअप।" राखी शाह पुरजोर तीखे स्वर में कह उठी, परन्तु उसकी आंखों में खौफ और आतंक अब स्पष्ट नजर आ रहा था।

दोनों अब तक कॉरीडोर पार करते एमरजैंसी वार्ड के बाहर पहुंच चुके थेऔर भीतर से एक नर्स बाहर निकल रही थी।

"सिस्टर, अर्जुन नागपाल अंदर ही हैं?" मनीराम शंकर ने पूछा।

"नो सर!" नर्स बोली"उन्हें तो पांचवीं मंजिल पर आई०सी०यू० में शिफ्ट कर दिया गया है।"

"ओह!" दोनों लिफ्ट की तरफ बढ़े।

❑❑❑

❑❑❑

आई०सी०यू० कक्ष में अर्जुन नागपाल अपने बैड पर अधलेटी मुद्रा में बैठा था।

उसके सिर पर पट्टियां बंधी थी।

यह उसका जीवट ही था कि इतने खतरनाक एक्सीडेंट के बाद भी वो अब भला चंगा नजर आ रहा था। और कोई होता तो बिस्तर पर बेहोश पड़ा होता। नींद के इंजैक्शन के हवाले होता या फिर दर्द के मारे आएं-आएं करा रहा होता।

उसकी इच्छाशक्ति के आगे चोटें हार गयी थीं और वो लगभग चुस्त, चाकचौबंद ही नजर आ रहा था।

उसके सामने ही एक स्टूल पर सब-इंस्पैक्टर जगदीश मुखी कागज-पैन लिए बैठा था।

वो दुर्घटना के मामले में अर्जुन नागपाल की स्टेटमैंट रिकॉर्ड करना चाहता था।

"हां तो अर्जुन! एक्सीडैंट कैसे हुआ था?"

अर्जुन नागपाल पहले ही बयान देने को तैयार बैठा था। उसने ऐसा बयान देना था कि जिससे वो किसी कानूनी दायरे में न आए। हालांकि मन-ही-मन वो अपने आपको इस एक्सीडैंट का और उस मासूम बच्चे की हत्या का जिम्मेदार समझ रहा था। उसके जजबात

अपना गुनाह कबूल करने को भी कह रहे थे पर विवेक यही कह रहा था कि फिलहाल उसने खुद को कानून से बचाकर चलना है ताकि उस विक्षिप्त हत्यारे का पता लगा सके। वैसे भी जो हुआ थादुर्भाग्यवश ही हुआ थाऔर वो हत्या उससे गैर इरादतन ही हुई थी। उसे लगता था कि बच्चा भी अपनी ही किसी धुन में मग्न अनायास ही उसकी मारुति के आगे आ गया था। लिहाजा जितना जिम्मेदार वो था उससे ज्यादा जिम्मेदार वो बच्चा भी हो सकता था।

"अर्जुन!" तभी जगदीश मुखी तनिक सर्द लहजे में बोला"मैं पिछले दस मिनट से एक ही सवाल दोहरा रहा हूं पर मुझे उत्तर नहीं मिला अभी तककैसे हुआ था एक्सीडैंट?"

"इंस्पैक्टर! मुझे याद नहीं आ रहा कि कैसे हुआ था एक्सीडैंट। बस सब कुछ इतना अचानक हो गया कि कुछ पता ही न चला।" अर्जुन एक-एक शब्द भूमिका में बांधता बोला।

"क्या मतलब?"

"कुछ तुम्हें भी तो बताया होगा किसी ने, कि एक्सीडैंट कैसे हुआ था?"

"हमें तो एक वाहन चालक ने जाते-जाते ही खबर की थी कि रोड पर एक्सीडैंट हुआ पड़ा है। इससे ज्यादा वाहन चालक ने कुछ नहीं कहा और अपनी गाड़ी भगाता चला गया।"

"तुमने उसे पकड़ा नहीं? या पूछा नहीं?"

"वो विपरीत लेन में था। उसकी मारुति एस्टीम तकरीबन 60 की स्पीड पर थी। उसके पीछे जाते या तुम दोनों की सुध लेते।"

"तुम दोनोंयानि मेरे साथ और भी कोई था।"

"तुम्हें नहीं पता?" जगदीश मुखी का मुख खुला।

"पता होता तो पूछता क्या! कौन था मेरे साथ? वैसे तुम्हें अगर शक हो कि मेरी याददाश्त चली गयी है तो ऐसा कुछ नहीं है। मैं भला चंगा हूं। सब याद है मुझे।" अर्जुन ने उसके दिमाग का गुंजल बनाया।

"जब याद है तो बताओकैसे हुआ एक्सीडैंट?"

"बस यही याद नहीं। शायद आंखों के आगे यकायक अंधेरा छा गया होगा। तभी याद नहीं पड़ रहा कि कौन था मेरे साथ...और कैसे हो गया एक्सीडैंट।"

"हूंऽऽ।" जगदीश मुखी संजीदगी में सिर हिलाने लगा।

"क्याहूंऽऽ।"

"हो जाता है। अक्सर एक्सीडैंट के मामलों में ऐसा ही होता है। ऐसे ही बयान आते हैं हमारे सामने। मरने वाले मर जाते हैं, बचने

वाले बच जाते हैं पर एक्सीडैंट करने वालों का बस एक ही जवाब होता हैमुझे कुछ याद नहीं...शायद आंखों के आगे अंधेरा छा गया था।"

"तो मैं झूठ बोल रहा हूं?"

"नहीं। नैवर। एक्सीडैंट में घायल आदमी भला झूठ कहां बोलता है। कभी बोलता ही नहीं। उसे तो डॉक्टरों की, पुलिस कीसबकी हमदर्दी यकायक ही हासिल हो जाती है। खैर, तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि तुम्हारी मारुति के पहिये के नीचे वो मासूम बच्चा कुचला गया है जिसकी बदौलत आज तुम जिंदा हो और वो मर चुका है।"

"व्हाट?" अर्जुन चिहुंका। यह रहस्योद्‌घाटन उसके सामने अब हुआ था"क...क्या कह रहे हो?"

"हां..." फिर जगदीश मुखी खून की अदला-बदली और डॉक्टरों की राय के मुतल्लक बताने लगा।

"माई गॉड!" अर्जुन का चेहरा शर्मिंदगी से भर गया"मेरी मारुति के पहियों के नीचे कुचला गया वो मासूमआर यू श्योर?"

"हमें सिर्फ अंदाजा है ऐसाश्योर तो तुम ही कुछ कहोगे। तुम्हारी मारुति का दायां पहिया ही खूनआलूदा पाया गया। मकतूल का खून और पहिए पर पाया गया ब्लड ग्रुप एक ही है। फिर भी कानून के सामने साबित करने लायक कुछ नहीं, क्योंकि दुर्घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं है हमारे पास।"

"फिक्र क्यों करते होमैं कबूल करता हूं कि वो बच्चा मेरी ही कार तले कुचला गया है। तुम मेरा इकबाले-जुर्म लिखो। मैं साईन करता हूं।"

"क्या!" जगदीश मुखी का मुंह खुला"यानि तुम्हें सब याद आ गया।"

"न भी याद आया हो। पर यह तो तय है ही न, कि वो बच्चा मेरी कार तले कुचल गया है। मेरी रगों में आज की तारीख में 400 ग्राम खून उसी का ही दौड़ रहा है तो क्या मेरा कोई फर्ज नहीं बनता कि उस बच्चे के लिए कुछ करूं। कुछ क्याफांसी चढ़ूं। क्योंतुम लिखोमैं ही उसका हत्यारा हूं।"

जवाब देने की बजाए जगदीश मुखी उसका चेहरा घूरता चला गया।

अर्जुन नागपाल पहले पलकें मिचमिचाता रहा। फिर उसने अपराध बोध के कारण गर्दन झुका ली।

अर्जुन अपना इकबाले-जुर्म ऐसे शब्दों का सहारा लेकर कर रहा था, जैसे बच्चे की आत्मा को शांति दे रहा हो। जगदीश मुखी की मदद कर रहा हो और कानून पर अहसान कर रहा होतभी जगदीश मुखी को उसका इकबाले-जुर्म कागज पर लिखने में तकलीफ हो रही थी। साथ ही साथ यह दुःख भी हो रहा था कि कहीं बेचारे अर्जुन के साथ कोई नई बेइंसाफी ही न हो जाए।

"लिखो लिखो। लिखो न...।"

"जब तुम्हें कुछ याद ही नहीं तो क्या लिखूं मैं।" जगदीश मुखी ने सख्त लफ्जों में उसे टोका।

"याद नहीं तो क्या हुआ मेरे जमीर पर बोझ है...टायर पर खून है तो...।"

"टायर पर खून तो कई वाहनों के पहिए पर लगा हो सकता है। क्या पता बच्चे को कोई और वाहन मार गया हो...उसका घायल शरीर सड़क पर पड़ा हो और उसे बचाने की खातिर ही तुमने अपनी गाड़ी रांग साइड में काटी हो और बस में भिड़ा दी हो। क्या पता?"

"क्या पता।" अर्जुन ने सिर हिलाया। हांमी भरी।

जगदीश मुखी ने खोपड़ी पीट ली। अब वो खुद ही अर्जुन की पैरवी करने लगा था। उसे निर्दोष मानकर बोल रहा था।

"वैसे उस ट्रक का पता चला जो मेरी मारुति हांक ले गया था?"

"हे हे हे।" यकाएक जगदीश मुखी हँसता चला गया। उसके अधरों पर यकायक धूर्त मुस्कान नाच उठी।

अर्जुन मुंह बनाकर उसे देखने लगा।

"तुम्हें सब याद है। सब याद है अर्जुन...तुम्हारा ड्रामा अब ज्यादा लंबा नहीं चलेगा।" जगदीश मुखी उसकी तरफ उंगली नचाता बोला।

"मतलब?"

"मैंने जानबूझकर 'बस' का नाम लिया था और तुम बेध्यानी में कबूल कर गए कि तुम्हारी मारुति ट्रक से ठुकी थी; यानि ट्रक तुमने देखा था। अब जब ट्रक देखा था तो जाहिर है बच्चा भी देखा होगाऔर अपनी गाड़ी के सामने आता बच्चा भी ठोका होगा...यानि तुम्हारी आंखों के आगे कोई अंधेरा नहीं था उस वक्त। और अब कानून की आंखों के सामने से भी अंधेरा छट चुका है। तुम ही उस एक्सीडैंट के चश्मदीद गवाह हो। औरमुजरिम भी।"

"वाह! बड़े लंबे-लंबे अंदाजे लगाने शुरू कर दिए।" अर्जुन ने हाथ नचाकर घुमाया।

"अगर तुम भी 'ट्रक' की जगह 'बस' कहते तो मैं मान जाता

कि दुर्घटना के वक्त तुम्हारे सामने अंधेरा छा गया था और तुम्हें वाकई ही कुछ दिखाई न दे रहा था।"

"अंधेरा छट भी तो सकता है। ट्रक की ठोकर पड़ने के बाद ही अंधेरा छंटा था और मैंने उस ट्रक को देख लिया था। मैं गाड़ी में आसमान की तरफ उड़ा थाऔर ट्रक मेरे पहलू से कन्नी काटता भाग खड़ा हुआ था।"

जवाब में जगदीश मुखी उसे फिर घूरने बैठ गया।

"ऐनी हाओ। तुम्हें जो लिखना होलिखो। करना होकरो। मुझे फिलहाल आराम करना है। देख नहीं रहे सर सूजा पड़ा है। लाओ पैड दो अपना।" कहते अर्जुन ने उससे वो कार्डबोर्ड और पैन छीना। उसके पहले कोरे पन्ने पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर तिक्त स्वर में बोला"मैंने ब्लैंक साइन कर दिए हैं। अपनी सहूलियत से जो बयान तुम्हें ठीक लगे। लिख लेना। मैं कबूल कर लूंगा कि मैंने वही कहा था जो तुमने लिखा है।" फिर उसने वो कोर्डबोर्ड जगदीश मुखी की तरफ फैंका जिसे जगदीश मुखी ने हड़बड़ाकर लपका।

"मैं तुम्हें छोडूंगा नहीं अर्जुन...एक मासूम बच्चे का कत्ल तुम्हें बहुत महंगा पड़ेगा। एक ऑफिसर की बेअदबी तुम्हें खून के आंसू रुला देगी।"

जवाब में अर्जुन ने उसका पैन उसकी जेब में फंसाया। गाल थपथपाया। फिर लेटने का उपक्रम करता बोला

"जल्दी निकलो अब। आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है। कहीं ऐसा न हो तुम दिखने बंद हो जाओआज के बाद दुनिया को।"

जगदीश मुखी दांत भींचता वहां से रुखसत होने लगा।

"और कुछ मुझे याद आया तो मैं बाद में बता दूंगा।" अर्जुन माथे के ऊपर कलाई रखता लेटा।

दरवाजे पर पहुंचा जगदीश मुखी मुड़ा और दांत भींचने लगा।

'धक्क...' तभी अर्जुन नागपाल का एकाएक झटका लगा। उसकी माथे पर रखी कलाई उछली और आंखें फटीं।

अगले ही पल उसका चेहरा विकृत होने लगा और दोनों हाथ सिर पकड़ते चले गए। सिर जकड़ते चले गए।

"लगता है दर्द का दौरा पड़ा है। साले भुगत। तेरी यही सजा है।" भुनभुनाता जगदीश मुखी वहां से निकला।

❑❑❑

❑❑❑

जगदीश मुखी बाहर निकला तो उसे राखी शाह एक डॉक्टर से

उलझी नजर आई। साथ ही मनीराम शंकर खड़ा था।

"डॉक्टर!" एकाएक राखी शाह जगदीश मुखी की तरफ नजरें उठाते बोली"आप तो कह रहे थे कि अर्जुन नागपाल की तबीयत संजीदा है। वो अभी बातचीत करने की स्थिति में नहीं है फिर यह भला क्या करने गए थे भीतर?"

"व...वो...वो।" डॉक्टर से कुछ कहते न बना।

"देखिए। मुझे जरा-सी बात करनी है मिस्टर अर्जुन से।" राखी शाह अंगली का पोर दिखाती बोली"बस अभी गयीअभीआई।"

फिर डॉक्टर की परवाह किए बिना राखी शाह दनदनाती हुई आई०सी०यू० का दरवाजा धकेलती भीतर घुसती चली गयी।

उधर जगदीश मुखी अपने सहकर्मी मनीराम शंकर के पास आ गया। फिर दोनों आपस में तमाम घटनाक्रम से वास्ता रखती बातें करने में व्यस्त हो गये।

❑❑❑

❑❑❑

"नमस्कार अर्जुन जी।" भीतर अर्जुन की तरफ बढ़ती बोली राखी शाह"मुझे अफसोस है मेरी वजह से आपको इतनी तकलीफें झेलनी पड़ीं।"

अर्जुन नागपाल तब तक अपने बिस्तर पर फिर से उठ बैठा था और उसे खूंखार निगाहों से एकटक घूरे चले जा रहा था।

अब दर्द की जगह उसके चेहरे पर खूंखारता नाच रही थी।

"हैल्लो...चट...चट...चट।" तभी चुटकियां बजाती राखी शाह उसका ध्यान आकर्षित करती चहकी"क्या सोच रहे हैं आप? कहां खोए पड़े हैं?"

जवाब में अर्जुन का चेहरा उसके कदमों की लय में घूमता चला गया। आवाज फिर भी मुंह से कोई न निकली।

"ओह समझी। दिमाग में शायद कोई गुम चोट लगी है। बोलने में तकलीफ हो रही होगी शायद...ऐनी हाओ, मुझे पहचाना। मैं राखी शाह हूं...वही राखी शाह जिसकी जान बचाने के लिए आप दिल्ली से गुड़गांवा निकले थे...मुझे ही उस विक्षिप्त हत्यारे ने 'थ्रैटनिंग कॉल' की थी। कत्ल करने की धमकी दी थी। यू नो...उस विक्षिप्त कातिल का नाम पता चल गया है। उसका नाम काली शर्मा है और...।" तत्पश्चात् राखी उसे काली शर्मा की बाबत वो सब बताने लगी जो उसे रास्ते में मनीराम शंकर ने बताया था।

अर्जुन नागपाल गर्दन एक तरफ मोड़े, जड़वत् उसके शब्द सुनता

रहा।

इसी दौरान ही राखी शाह उसके बैड के पास बनी खिड़की के नजदीक पहुंची और बाहर झांकती कहने लगी

"यू नो अर्जुन! अब मैं उस काली शर्मा को नहीं छोड़ूंगी। उस शकुंतला शर्मा को नहीं छोड़ूंगी...।" बाहर झांकती वो अभी और कुछ कहती कि

"चुप साली।" एकाएक अर्जुन नागपाल चिंघाड़ा।

राखी शाह की गर्दन अभी बैड की तरफ मुड़ती कि उसे अर्जुन अपने पीछे ही जिन्न की माफिक खड़ा नजर आया।

यह अल्फाज उसी के ही मुंह से निकले थे।

उसकी आंखें आतंकित होकर फटीं। उसे अर्जुन से ऐसे अपशब्दों की उम्मीद हरगिज न थी।

"न...न...न...।" अर्जुन सिर पर खड़ा एक उंगली इंकार में हिलाता बोला"तू किसी से कुछ न कहेगी। न...तू किसी को बताएगी कि वो विक्षिप्त हत्यारा मैं हूं। मैं...मैंने ही कंचन, सीमा, मोना, रीटा...के खून किये हैं...और अब तेरी बारी है...।"

"अर्जुनऽऽऽ!" राखी शाह के गले से चीख निकली।

अर्जुन नागपाल ने तत्काल उसके दोनों गालों को एक हाथ से जकड़ लिया। एक गाल पर अंगूठा और दूसरे गाल पर उंगलियां धंसीं तो राखी शाह का मुंह खुद-ब-खुद खुलता चला गया। होंठ 'शून्य' के आकार में गोल हो उठे।

'गूं-गूं-गूं।'। इस बार उसकी चींख गूं गूं बनकर निकली।

"हो गई न गूंगी। अब हमेशा-हमेशा के लिए होगी गूंगी।" इसी के साथ ही अर्जुन ने दूसरा हाथ उसके घुटनों के नीचे डाला और उसे ऊपर की तरफ उठाता चला गया।

'गूं-गूं-गूंऽऽ।' राखी शाह ने 'बचाओ' कहना चाहा पर गूं-गूं ही निकली।

अर्जुन का दायां हाथ उसके मुंह पर था और बाएं हाथ से उसने उसे उठा रखा था। राखी शाह का मुंह अब नीचे सड़क की तरफ था और उसका शरीर पीछे से उठा पड़ा था।

अर्जुन नागपाल ने उसे खिड़की पर उल्टा लटका रखा था और अब फेंकने जा रहा था।

"बचाओऽऽ।" बड़ी मुश्किलों से नीचे सड़क पर गतिमान ट्रैफिक देख, राखी शाह के हलक से घुटी-घुटी चीख निकली।

"नहींऽऽऽ।" राखी शाह का सिर चकराना शुरू हो गया था।

"हरामजादी घड़ी देख। मैं तेरी ही तरफ आ रहा था कि रास्ते में एक्सीडैंट हो गया। फिर भी शुक्र है...मैं टाइम पर तेरे सर पर पहुंच गया।"

"बचाओ" हवा में लटकी राखी शाह ने कलाई घड़ी देखी"12-40। ओह माई गॉड! बचाओऽऽऽ।"

"गुड बाय मैडम।" इसी के साथ ही अर्जुन नागपाल ने उसे पांच मंजिल नीचे फैंक दिया।

'ओऽऽऽ' की लम्बी होती चीख बाहर आसमान में गूंजती चली गयी।

अर्जुन नागपाल खिड़की से नीचे देखता, हाथ झाड़ता बोला

"इसकी तो गई।"

"फटाक।" तभी राखी शाह का सिर नीचे सड़क पर जाकर फटा।

अगले ही पल सड़क पर चिल-पौं मच गयी। हाहाकार मच गया।

"विक्स की गोली लोखिच-खिच दूर करो।" हाथ झाड़ता अर्जुन नागपाल अपने बैड पर लौटा और सोने की कोशिश करने लगा। फिर दर्द और बेचैनी से करवटें बदलने लगा।

अगले पांच मिनट बाद ही वो नींद में गाफिल खर्राटे भरता नजर आ रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

❑❑❑

❑❑❑

"क्या हैक्या है...क...कौन है?" एकाएक अर्जुन नागपाल हड़बड़ाकर उठा तो उसे दाएं-बाएं दो पुलिस ऑफिसर खड़े नजर आए।

"मुखी! तुम फिर आ गए...अभी तो साइन लेकर गए थे?" अर्जुन नागपाल बोला।

"हरामजादे! उठ खड़ा हो..." जगदीश मुखी उसे गिरेहबान से झिंझोड़ता बोला"साले! मर्डर करने के बाद कितने इत्मीनान से नींद आती है तुझे। पहले वो बच्चा कार तले रौंदा और खुद बेहोश होकर पड़ गया। अबराखी शाह को फैंक डाला और चैन से खर्राटे भरने लगा।"

"खामोश।" इस बार अर्जुन नागपाल ने अपना गिरेहबान छुड़ाया और उसे दूर खदेड़ा"खबरदार, जो मुझ पर अब कोई नया इल्जाम लगाया तो। सालेपहली बार मिला तो मुझे बच्चे का कातिल कहने लगा। दूसरी बार मिला तो राखी शाह का कातिल कहने लग गया।

सालों तुम पुलिस वालों को पैदा होते ही अर्जुन नागपाल को दुश्मन समझने की घुट्टी पिलाई जाती है...मुगली घुट्टी 555। टिंग टांग।"

तभी मनीराम शंकर अर्जुन नागपाल पर झपटा और उसे गिरेहबान से ऊपर उठाता बोला

"साले बोल दे, बोल दे...राखी शाह का मर्डर तूने किया है। उसे खिड़की से तूने फैंका है...नहीं तो मैं तेरा ये फटा सिर और फाड़ दूंगा।" इसके बाद मनीराम ने बायें हाथ से अर्जुन का गिरेहबान थामा और दायें हाथ का घूंसा उसकी आंखों के समक्ष ताना और दांत पीसने लगा।

मनीराम शंकर कद-काठी में ही राक्षस लगता था। उसके हाथ की गिरफ्त में अर्जुन किसी बबुए की तरह झनझना रहा थाऔर अगर दाएं हाथ का घूंसा अर्जुन को पड़ जाता, तो वाकई अर्जुन नागपाल का भेजा पीछे से बाहर जा गिरना था।

कक्ष में डॉक्टर, नर्सें, वार्ड ब्वॉय सभी अर्जुन को हैरत व खौफ भरी निगाहों से घूर रहे थे।

"बोल साले। नहीं तो मैं यहीं गाड़ दूंगा तुझे?" दांत पीसता गुस्से में उफनता मनीराम शंकर एक-एक शब्द चबाता बिफरा।

"भाई तू है कौन...?"

'ढिशुम' तभी मनीराम का घूंसा अर्जुन के जबड़े पर पड़ा और वो बिस्तर से उछलता, उड़ता, दूर खिड़की पर ही जा पड़ा।

"देखिए।" तभी दांत पीसता हॉस्पिटल चीफ दहाड़ता-सा बोला"आप इस क्रिमनल को थाने ले जाइए। हम अभी यहां से इसकी छुट्टी का पर्चा बनवाते हैं। डॉक्टर, जल्दी से पेपर तैयार करो। ये विक्षिप्त आदमी यहां रहा तो पता नहीं किस-किस को खा जायेगा।"

फिर सभी बारी-बारी कक्ष से बाहर जाने लगे।

"विल यू टैल मी।" एकाएक अर्जुन नागपाल अपना फटा होंठ-दांतों के बीच दबाता चिंघाड़ा"कि मेरा कसूर क्या है? मैंने किया क्या है।"

"साले तेरी तो 'धड़ाम' 'ढिशुम'" उसी पल जगदीश मुखी और मनीराम अर्जुन नागपाल पर वहशियों की तरह टूट पड़े।

"अरे जल्दी करो। ले जाओ इसे राखी शाह की हत्या की वजह से हमारे हॉस्पिटल की सारी इज्जत धूल में मिलाकर रख दी इस मानसिक रोगी ने।"

"मैंने किसी राखी शाह का खून नहीं किया। मैं तो कभी उससे मिला भी नहीं...मिलने जा ही रहा था कि रास्ते में एक्सीडैंट हो गया।"

अर्जुन खुद को मार से बचाता बोला।

"'धड़ाक' साले झूठ भी कितने विश्वास से बोलता है। राखी यहां घुसी पर तुझे नजर न आई। तू उससे कभी मिला ही नहीं...पांच ही मिनट में उसे खिड़की से डालकर नीचे फेंक दिया पर फिर भी तूने खून नहीं किया...साले तू ही विक्षिप्त हत्यारा है। तू ही है जिसे शकुंतला शर्मा ने काली शर्मा का नाम दे रखा है...वो अपना उल्लू साध रही है तू अपना उल्लू...अब साबित हो गया कि तूने ही जानबूझकर बच्चे को अपनी गाड़ी तले रौंदा...और तूने ही राखी शाह को फैंक डाला।"

"ये झूठ है। झूठ है। मैंने कोई खून नहीं किया।"

"मैंने खुद ही दरवाजे के बाहर सुना था जब तू राखी के सामने कंचन, मोना, सीमा, रीटा की हत्या कबूल रहा था। मैं तभी आई०सी०यू० में आ जाता पर भीतर से सिटकनी लगी थी। काश राखी ने सिटकनी न लगाई होती तो मैं शायद उसे बचा पाता...उस मासूम को तेरी वहशियत का शिकार होने से बचा पाता।" मनीराम शंकर लगभग रोता-रोता ही बोला।

अर्जुन के मस्तिष्क में सांय-सांय होने लगी।

उसे कुछ समझ न आया कि मनीराम कह क्या रहा है, जो कह रहा है वो उसने वाकई किया है तो कब किया है, कैसे किया है?

खुद को मार से बचाने की असफल चेष्टा करते उसने दरवाजे की तरफ निगाह उठाई तो वाकई उसे भीतर की सिटकनी टूटी नजर आई। उस वक्त वो नींद में था और उसी दौरान ही दोनों पुलिस वाले दरवाजा-कुंडी तोड़कर भीतर घुसे थे।

"साले हम भीतर पहुंचे तो तू कितने इत्मीनान से खर्राटे भर रहा था। जैसे कुछ हुआ ही नहीं...जैसे तुझे कुछ पता ही नहीं...धड़ाक. ..ढिशुम...कड़ाक...।"

"कोई साजिश है मेरे खिलाफ। कानून पहले ही मेरे विरुद्ध जाल बुनता आया है...अब भी कोई नया चक्रव्यूह रचा जा रहा है मेरे विरुद्ध। 'धड़ाक'" एकाएक अर्जुन नागपाल ने मनीराम और जगदीश मुखी को धक्का दिया और दरवाजे की तरफ भागा।

अभी वो दरवाजे तक पहुंचा कि उसका जिस्म लड़खड़ाया और रेत की बोरी की तरफ दरवाजे के पास ढेर होता चला गया।

रिवॉल्वर निकाल चुके मनीराम ने एकाएक रिवॉल्वर होलेस्टर में डाला और अर्जुन की तरफ बढ़ा।

अगले ही पल उसने गुड्डे की तरह अर्जुन को उठाया और कंधे

पर लादता बाहर निकल गया।

पीछे-पीछे जगदीश मुखी भी गर्दन दाएं-बाएं पटकता निकला।

तभी अर्जुन ने मनीराम के कंधे पर पड़े-पड़े एक खास हरकत की।

❑❑❑

❑❑❑

"तुम?" दरवाजा खोलते ही पंडित हरी नारायण शर्मा ने शकुंतला शर्मा को देखा तो गर्दन बाहर निकालकर दाएं-बाएं देखा और ऊपर-नीचे देखता फुसफुसाया"तुम यहां क्यों आई?"

"यहीं बताऊं या भीतर आकर?"

पंडित हरी नारायण न उसी वक्त उसे भीतर आने का रास्ता दिया तो वो भीतर घुसी।

उसने शुक्र मनाया कि किसी ने शकुंतला शर्मा को उसके फ्लैट में घुसते नहीं देखा था।

अगले ही पल वो दरवाजा भीतर से बंद करता मुड़ा।

उसके चेहरे पर खौफ और आतंक की हल्दी पुती थी।

आंखें हैरत से फटी पड़ी थीं।

"तुम यहां कैसे?" उसने शांत स्वर में पूछा।

"मुबारक हो।" शकुंतला शर्मा उसकी तरफ पीठ करती बोली"तुम्हारे खानदान का आखिरी वारिसतुम्हारा पौता काली शर्मा, अब बहुत जल्द ही खत्म होने जा रहा है।"

"मुझे कोई लेना-देना नहीं। न तुमसे। न ही तुम्हारे काली शर्मा से।"

"पर मुझे है। मुझे लेना-देना है दादाजी!" एकाएक शकुंतला शर्मा फुंफकारती हुई पंडित की तरफ मुड़ी"अभी आप जिंदा है इसलिए मुझे लेना-देना है।"

"तुम क्या चाहती हो?"

"कोस रही हूं, उस घड़ी को जब आपके पागल खानदान की मैं बहू बनी। आपके विक्षिप्त बेटे बलबीर शर्मा की मैं पत्नी बनी...और उसके बाद में बलबीर के दो पागलों की मां बनी।"

"तो मैं क्या करूं? सब होनी का खेल है।"

"आपने तो दिल्ली आकर जान छुड़ा ली अपनी...पर मैं अब आपको भी नहीं जीने दूंगी।" शकुंतला शर्मा अपनी ही लय में फुंफकारती जा रही थी"आप भी अब चैन से नहीं जी पायेंगे।"

"बात कम करो...और मुद्दे पर आओ।" पंडित हरी नारायण

गुर्राया।

"लोग मुझ पर उंगलियां उठा रहे हैं। मेरे बड़े बेटे देवी शर्मा की विमान हादसे में हुई मौत का...मुझे ही जिम्मेदार मान रहे हैं।"

"वो तो मैं भी तुम्हें ही जिम्मेदार मानता हूं। देवी शर्मा तुम्हारे ही चुनाव प्रचार के लिए छोटे प्लेन से पर्चें फैंक रहा था। उन पर्चों में तुम्हें ही वोट देने की अपील जनता से कर रहा था। तभी प्लेन के इंजिन में खराबी आ गई और देवी शर्मा उस प्लेन क्रैश में मारा गया। लोगों के साथ मैं भी यही मानता हूँ कि वो हादसा महज एक एक्सीडैंट नहीं था, बल्कि तुम्हारी ही कोई प्लान साजिश थी जिसके तहत देवी शर्मा मारा गयाऔर ऐसी मौत मारा गया कि न उसकी लाश मिली और न ही उसका दाह संस्कार हो पाया...तभी ही मैंने तुम्हारा साथ छोड़ दिया। और तुम्हें, तुम्हारे तमाम मंसूबों के साथ गुड़गांवा छोड़ दिल्ली आ गया...देख रहा हूं अब भी तुम्हें चैन नहीं है. ..मैंने तमाम धन-दौलत-जायदाद, हवेली तुम्हारे लिए छोड़ दी...फिर भी तुम मुझे चैन नहीं लेने दे रही हो। वाकई घिनौनी नागिन हो तुम। वो आदमखोर नागिन जो सत्ता के लिए अपनी ही कोख को खाली किए जा रही है।"

"ये झूठ है।" शकुंतला शर्मा तेज कदमों से पंडित की तरफ बढ़ती गरजी"अपने विक्षिप्त परिवार और संस्कारों से पीछा छुड़ाने की खातिर उस तरफ से ध्यान हटाने की खातिर आप मुझे दोष दे रहे हैं। मैंने देवी शर्मा की हत्या नहीं करवाई। करवाई होती तो जनता कभी भी मुझे वोट न देती और मैं कभी भी इलैक्शन न जीतती।"

"हूं।" पंडित हरी नारायण जहर भरे हुंकारे के साथ बोला"यहां तुमने दोहरी चाल खेली कि देवी की हत्या का आरोप विपक्षी पार्टी पर लगा दिया। नतीजाजनता की हमदर्दी तुम्हें मिल गई और तुम वो इलैक्शन जीत गयीं। अपने बड़े बेटे की बलि लेकर, उसे अपनी राजनीति के चक्कर में जिब्ह करके, तुम इलैक्शन जीतीं। तुम एम०एल०ए० बनीं।"

"ये झूठ हैझूठ है।"

"और अब लगता है राजनीति की कोई नई चाल की खातिर तुम काली शर्मा का रोना रोने आई हो। अगला इलैक्शन सिर पर है लगता है इस बार तुम काली शर्मा की बलि लोगी...फिर उसकी हमदर्दी बटोरकर फिर से इलैक्शन जीतोगी। तुम कुछ भी करो। मुझे कोई सरोकार नहीं है...बस, सिर्फ मेरा पीछा छोड़ो। यहां कोई नहीं जानता कि हकीर-फकीर, ज्योतिषी दरअसल गुड़गांवा का कोई करोड़पति

पंडित है। जिसके दम पर पूरा गुड़गांवा पल सकता है। मेरा पीछा छोड़ो।" ताली के रूप में हाथ जोड़ते पंडित ने निवेदन किया।

"हूंऽऽ।" जहर भरा हुंकारा भरती शकुंतला शर्मा उसे घूरती चली गई"कितनी सफाई से अपने जहरीले खून से पिण्ड छुड़ा लिया। ये कहने की जगह कि आपका खून ही विक्षिप्तता का मारा है...आप ही की बदौलत आपकी आने वाली नस्लें पागल और सिरफिरी पैदा होती जा रही हैं...ये मानने की जगह आपने मुझे ही अपराधी घोषित कर दिया। मैं...मुझे अपने ही बच्चों की हत्यारिन कह दिया।"

"तो क्या गलत कहा मैंने?"

"कहने को तो कुछ भी कहा जा सकता है पर साबित कुछ भी न किया किसी ने। मुझे देवी शर्मा की हत्यारिन जमाना मानता रहा, पर साबित कोई न कर पाया। और अब अपने वंश का आखिरी जहरीला सांपकाली शर्मा गुड़गांवा में जवान लड़कियों की हत्या करता फिर रहा है...उसे बचाने की खातिर एक मां ने पुलिस के आगे यह बयान दिया कि वो पिछले छः महीने से गायब है और इसलिए गायब है क्योंकि मैं ही उसकी हत्या कर चुकी हूं...लगता है अब उसकी हत्या का इल्जाम भी मुझ पर लगेगा। मुझे इस जीवन में कभी भी मुक्ति नहीं मिलेगी।"

"जीवन से मुक्ति तो मरने के बाद ही मिलती है और मरना तुम चाहती नहीं...तुम तो तभी मरोगी जब मेरा पूरा खानदान तबाह हो जायेगा। जिब्ह हो जायेगा। "

"मैंने काली की हत्या नहीं की। क्यों करूंगी। आखिर मैं मां हूं उसकी।" शकुंतला शर्मा ने दोनों हाथ पसार कर दुहाई दी।

"तुमने देवी की हत्या भी की थी। उसकी भी तो तुम मां ही थीं।"

"मैंने देवी की हत्या नहीं की...मैंने किसी की हत्या नहीं की।"

"खामोश!" पंडित हरी नारायण शर्मा उसकी तरफ हाथ नचाता बिफरा"तुम तो वो डायन हो जो अपने मरे हुए बच्चों का दाह संस्कार भी नहीं करती। उसे जिंदा ही निगल जाती है...।"

"झूठझूठझूठ।" शकुंतला शर्मा दोनों कानों पर हाथ रखती चीख उठी"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। कभी नहीं कियामैं निर्दोष हूं।"

"छोड़ो ये नाटक-नौटंकी। यह बोलो कि मुझसे क्या चाहती हो?"

"एक निवेदन करने आई थी। ठीक लगे तो मान लीजिए, नहीं तो मत मानिएगा।"

"बोलो।" हरी नारायण शर्मा तनिक नर्म पड़ा।

"काली शर्मा जिंदा है...पर मुझे नहीं पता वो कहां है...मैं चाहती हूं कि आप उसे ढूंढें और आइंदा जिंदगी के लिए अपने पास रख लें।"

"मैं...कैसे ढूंढूं उसे...गली-गली ढोल बजातामुनादी करूं कि काली शर्मा जहां भी हो अपने दादाजी के पास पहुंच जाए।"

"मैंने कब कहा कि आप ऐसा कीजिए!" शकुंतला शर्मा उखड़ी।

"अरे, जब तुम जैसी रसूक-पहुंच वाली मंत्राणी उसे नहीं ढूंढ पा रहीं, तो मैं पोलियो का लंगड़ा भला कैसे ढूंढ पाऊंगाजरूर इसमें भी तुम्हारी कोई गहरी चाल है।"

"कोई चाल नहीं है दादाजी! आपके पड़ौस में अर्जुन नागपाल है। उससे कहिए कि वो काली शर्मा को ढूंढे।"

"मतलब अपने विक्षिप्त खानदान का रोना उसके आगे रोऊं। उसे बताऊं कि गुड़गांवा में हत्याएं करता फिरता विक्षिप्त-पागल-सनकी मेरा ही पौता है।"

"हे भगवान! इस बुड्ढे को कैसे समझाऊं।" शकुंतला शर्मा ने माथा पीटा।

"समझा!" उधर हरी नारायण शर्मा सिर हिलाता अपनी ही टोन में बड़बड़ाया"इस कम्बख्त ने काली को मार डाला है और अब जानबूझकर उसे ढुंढवाने का बहाना बना रही है ताकि इसे मेरी और अर्जुन की गवाही हासिल हो सके। हम पुलिस को बता सकें कि काली शर्मा जिंदा है और बाकायदा उसे हम ढूंढ रहे हैं।"

"आपमें वाकई अक्ल नहीं है।" शकुंतला शर्मा ने ताना मारा।

"हां नहीं है। जा अब। मैं अर्जुन को कुछ बताने वाला नहीं।" पंडित ने इंकार में सिर पर सारी उंगलियां नचाईं।

"शिट।" शकुंतला शर्मा दोनों हाथों में चेहरा भींचती हुई कुर्सी पर धम्म से गिरी।

"इसे दफा होने को बोला...ये ससुरी पालथी मारकर बैठ गयी।"

ससुर-बहू में इतनी तनातनी थी कि पंडित हरी नारायण तो उसके समक्ष कुछ भी मानकर राजी नहीं था। अलबत्ता अपने पौते काली शर्मा की चिंता उसे अन्दर-ही-अन्दर अब जरूर होने लगी थी। वो अर्जुन की मदद लेना चाहता था, पर शकुंतला पर जाहिर कुछ न करना चाहता था।

फिर वो भी कमरे में चहलकदमी करता कुछ सोचने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

तभी सीढ़ियों में जूतों की आवाज गूंजी और पंडित हरी नारायण शर्मा दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसने भिड़ा रखे दरवाजे की अंदर से सिटकनी लगानी चाही कि

'भड़ाक' से दरवाजा खुला और दरवाजे पर देवसिंह राजपूत नजर आया।

"तुम!" पंडित हरी नारायण की हवा खुश्क हुई।

"हां मैं, अर्जुन कहां है?"

"मुझे क्या पता...मैंने उसका ठेका ले रखा है! जिसे देखो... मुझसे ही उस मरदूद का पता पूछता है...।"

"अर्जुन कहां है?" देवसिंह राजपूत ने पंडित के पीछे नजरें दौड़ाईं तो ड्राइंगरूम में बैठी शकुंतला शर्मा पर उसकी निगाह पड़ी।

"ये कौन है?" देवसिंह ने उसी पल सवाल बदला।

"तुमसे मतलब...कोई भी हो।" पंडित हरी नारायण शर्मा दरवाजे के आगे दीवार की तरह अड़ता भुनभुनाया।

"कोई चक्कर है क्या...बुढ़िया शर्मा भी रही है।" चेहरा ढांपे शकुंतला शर्मा को देख देवसिंह ने चुटकी ली।

"चुप...।" पंडित बौखला गया। क्या बताता वह!

जिस राज को उसने अब तक जमाने से छिपा रखा था वो भला उसे कैसे बता देता!

"पंडितजी! तो दिनदहाड़े आप भी गुल खिलाते हैं। बूढ़ी हसिनाओं को घर पर बुलाते हैं...।"

"खामोश! खबरदार...खबरदार।" हरी नारायण उंगली तानते हुए बिफरा"जो और कुछ कहा तो...द...द...ये मेरी ब...ब...ब।"

"बोलबोल बेटी है...अब बीवी तो तेरी हो नहीं सकती।"

"जयसिंहऽऽ।" पंडित हरी नारायण फट पड़ा"ये मेरी बहू है।"

"बहू!" देवसिंह की आंखें फटीं।

"हां और देख...और कुछ न पूछना। फिर आना।"

"बात क्या है?" देवसिंह भीतर झांकता बोला।

शकुंतला अभी भी चेहरा ढांपे बैठी थी। वो अपना चेहरा देवसिंह को नहीं दिखाना चाहती थी, ताकि देवसिंह पहचान न सके। और देवसिंह अपने ही अंदाजे लगाए जा रहा था।

"जरा भीतर तो आने दे पंडित।"

"नहीं। अभी हम जरा जरूरी बातों में मशगूल हैं। तुम फिर आना।"

"तेरी बहू है तो चेहरा क्यों नहीं दिखा रही?" देवसिंह बोला।

"मर्जी इसकी।" पंडित हरी नारायण उसकी तरफ हाथ नचाता बोला"चेहरा दिखाना जरूरी है क्या?"

"तू तो ऐसे बिदक रहा है पंडित जैसे तेरी दुल्हन की मुंह दिखाई मैं करने जा रहा हूं। अरे भई बहू है तेरी तो चेहरा दिखाने में क्या संकोच...आप जरा हाथ हटाइए तो?"

शकुंतला शर्मा दोनों हाथों से चेहरा ढांपे इंकार में सिर हिलाने लगी।

"समझा।" देवसिंह ने सहमति में सिर हिलाया"ये वाकई 'वो' है। तभी चेहरा दिखाने से शरमा रही है। शर्म आनी चाहिए पंडित तुझे। बुढ़ापे में भी यह पापड़ बेलता है और आने वालियों को बहू-बेटी का नाम देता है।"

"देवसिंह तमीज से...।"

'ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन।' तभी देवसिंह का मोबाइल बजा और देवसिंह तथा पंडित के अल्फाज बीच में ही रुक गए।

देवसिंह ने लपककर जेब से मोबाइल निकाला और स्क्रीन पर नंबर पढ़ा।

"अर्जुन!" अगले ही पल उसने कॉलिंग स्विच ऑन करके मोबाइल कान से लगाया और बोला"हैलो...।"

"देवसिंह...देवसिंह! मुझे बचा ले यार...गुड़गांवा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। और अब मुझ पर राखी की हत्या का इल्जाम लगा रहे हैं।" उधर से अर्जुन का हड़बड़ाता स्वर आया।

"व्हाट!" देवसिंह चिहुंका"तू गिरफ्तार है। तुझ पर राखी की हत्या का आरोप है।"

"राखी!" एकाएक भीतर बैठी शकुंतला शर्मा चिहुंकीयह नाम तो उसने मनीराम शंकर के मुंह से सुना था। मनीराम ने बताया था कि काली शर्मा ने किसी राखी शाह को 12-40 पर खत्म कर देने की धमकी दी है।

शकुंतला की हड़बड़ाहट बाहर फोन सुनते देवसिंह ने भी नोट की और पंडित को सामने से धकेलता भीतर घुसा।

"हां यार!" उधर से अर्जुन सफाई दे रहा था"ये साले पुलिस वाले मुझे राखी का हत्यारा कह रहे हैं और मुझे ही काली शर्मा कह रहे हैं।"

"काली शर्मा!" देवसिंह चिहुंका जबकि शकुंतला और हरी नारायण इस नाम पर उछले। "तुझे काली शर्मा कह रहे हैं।"

देवसिंह की हैरत बढ़ी कि माजरा क्या है? अर्जुन के कहे शब्दों पर पंडित और अधेड़ औरत चौंके क्यों जा रहे हैं?

उसने हैरतभरी आंखों से आगे पूछा

"ये काली शर्मा कौन है?"

"मुझे नहीं पता।" उधर से अर्जुन बोला"अच्छा भला हॉस्पिटल में था।"

"तू हॉस्पिटल में था? कैसे? क्यों?"

"वो एक एक्सीडेंट हो गया था। कोई ट्रक वाला उड़ा गया। मैं बेहोश हो गया। मुझे ये इंस्पैक्टर जगदीश मुखी नाम है उसका हॉस्पिटल ले आया। मेरी मरहम-पट्टी हुई। ट्रीटमैंट हुआ। मुझे खून चढ़ा। जब होश में आया तो पता नहीं ये जगदीश मुखी मुझसे क्या-क्या पूछने लगा"कहने लगा मैंने किसी बच्चे को अपनी कार से कुचला है।" फिर ट्रक से मेरी मारुति भिड़ी...उसके बाद मैं बेहोश हो गया। मैंने जगदीश मुखी को कहा कि मुझे कुछ दिखाई न दिया था कि कौन मेरी गाड़ी के आगे आया है...कौन कुचला गया है...पर ये इंस्पैक्टर नहीं माना। अभी भी नहीं मान रहा है...फिर इसके जाने के बाद कोई राखी शाह मेरे कमरे में आई। पता नहीं कैसे खिड़की से कूद गई और ये पुलिस वाले इसी नतीजे पर पहुंच गए कि मैंने ही उस राखी शाह को पांचवीं मंजिल से उठाकर नीचे फैंक दिया है।"

"य...ये क्या बके जा रहा है तू!" देवसिंह का माथा घूमा।

"वही तो...मुझे खुद नहीं सूझ रहा कि मैं क्या-क्या बके जा रहा हूं। ये तो ये पुलिस वाले कह रहे हैं। वही मैं तुझे कह रहा हूं...इन्होंने तो अब मेरा नाम भी रख दिया है...मैं अब काली शर्मा हूं...एक विक्षिप्त हत्यारा...जो जवान लड़कियों की चैलेंज देकर हत्या करता है। मैं अब तक सात मर्डर कर चुका हूं।"

"क्या!" देवसिंह का मुंह खुला"तू काली शर्मा है! तू अब तक सात मर्डर कर चुका है!"

"हां और आठवां मर्डर मैंने राखी शाह का किया है। ठीक 12-40 पर ही।" उधर से रोते हुए सफाई दी।

"ये 12-40 का क्या लफड़ा है?"

"वो किसी काली शर्मा ने राखी शाह को 12-40 पर मार डालने की धमकी दी थी। उसी राखी शाह को बचाने के लिए मैं गुड़गांवा गया था कि रास्ते में एक्सीडेंट हो गया। एक्सीडेंट हो जाने के बाद बदकिस्मती से राखी शाह मुझसे मिलने हॉस्पिटल पहुंची और मैंने राखी को मार डाला। बकौल पुलिस मैंने अपनी पहले वाली स्कीम में

तब्दीली की और बाकायदा राखी शाह को मार डाला, वो भी मुकर्रर वक्त पर। ठीक 12-40 पर ही। समझा...और ये सब मैं नहीं...यह पुलिस वाले कह रहे हैं। ये बाकायदा मान बैठे हैं कि मैं ही काली शर्मा हूं जो गुड़गांवा में मर्डर करता फिर रहा हूं और दिल्ली में बाकायदा जासूसी की दुकान चला रहा हूं।"

"हे भगवान! ये गुंजल क्या है?"

"क्या पता अपना तो मुकद्दर ही गुंजल है...।"

❑❑❑

❑❑❑

उधर देवसिंह के शब्दों से अंदाजा लगाते शकुंतला शर्मा उठी और पंडित की बांह पकड़ती एक किनारे पर गई।

फिर वो फुसफुसाई

"पंडितजी! अब यह पुलिस वाला हमसे काली के मुतालिक पूछेगा। ध्यान रखिएगा उसे कुछ नहीं बताना कि कौन है काली शर्मा. ..मैं कौन हूं। और आपका मेरा क्या संबंध है।"

"फिर क्या कहूं?" पंडित हरी नारायण चकराया।

"कह दीजिए कि मैं वाकई ही आपकी कोई 'वो' ही हूं जो अकसर यहां आती है। मेरा चेहरा देखते ही ये समझ जाएगा कि मैं विधायिका शकुंतला शर्मा हूं जो अपनी शख्सियत छिपाती यहां आती है और अपनी प्यास बुझाकर चली जाती है। "

"क्या! बुढ़ापे में, इस उम्र में मैं यह झूठ बोलूं? इतना बड़ा इल्जाम कबूलूं? अपने चरित्र पर बट्टा लगाऊं।"

"पंडितजी! फिलहाल मजबूरी है। यही जरूरी है। इन हालातों में कानून अर्जुन को ही काली शर्मा समझ रहा है तो समझने दीजिए। इससे हमारा काली बच जाएगा और अर्जुन नागपाल को देवसिंह बचा लेगा। न भी बचा पाया तो अर्जुन नागपाल खुद को ही किसी अन्य तरीके से बचा लेगा...आखिर पहले भी तो उसने कानून को गच्चा दिया ही है न।"

"वो तो ठीक है पर...अर्जुन खुद को काली शर्मा होने से कैसे बचा पाएगा?"

"मुमकिन है वो किसी और को काली शर्मा बनाकर कानून के सामने पेश कर दे। हमारा बेटा काली जब इस जंजाल से मुक्त हो रहा है तो होने दीजिए न।"

"नहीं। मैं अर्जुन के साथ ऐसा विश्वासघात नहीं कर सकता।"

"पर अपने पौते के साथ कर सकते हैं। यह जानते हुए कि

आपके अर्जुन में खुद का कानून और पुलिस से बचाने की पूरी क्षमता है जबकि हमारे काली में नहीं...मौके की नजाकत समझिए और फिर फैसला कीजिए। आगे आपकी मर्जी।"

"हूं।" पंडित नारायण शर्मा को शकुंतला शर्मा की बात मानने में फिलहाल कोई बुराई न लगी। बाद में मौका देखकर अर्जुन को यह हकीकत बताई जा सकती थी कि काली शर्मा उसका पौता है।

"वैसे भी अगर आप अर्जुन को काली को बचाने का काम सौंपेंगे तो वो आपकी मदद करेगा न...यही समझिए कि अब वो यह मदद इत्तफाकन करेगा...मजबूरन करेगा...या हालातों की रूह में करेगा।" शकुंतला शर्मा फुसफुसाई।

पंडित हरी नारायण शर्मा संजीदगी से सहमति में सिर हिलाता चला गया। अपने स्वार्थ की रूह में पहली बार वो अपने मुंह बोले बेटे के ताबूत में कील-पे-कील ठोंकने जा रहा था। उसे नजर नहीं आ रहा था कि उसकी बहू के होठों पर कितनी शातिर, कितनी जहरीली मुस्कान रेंग रही है।

बहरहाल उन दोनों का वार्तालाप इतना धीमा हुआ कि देवसिंह राजपूत कुछ सुन न पाया था। वैसे भी उसका वार्तालाप अर्जुन से फोन पर चल रहा था। कुछ इस वजह से भी ध्यान न दे पाया था। अलबत्ता यह वो समझ गया था कि दोनों में कुछ खास ही खिचड़ी पक रही है और कोई गहरा ही राज है।

फोन पर उस समय जगदीश मुखी और मनीराम शंकर सारा वाक्या सुन रहे थे जिसकी रूह में अर्जुन उस बच्चे और राखी शाह का हत्यारा साबित हो ही रहा था। और अब तो देवसिंह को यह भी लगने लगा कि अर्जुन उसे भी गलत बोलकर बहला रहा है ताकि वो कानून से परे जाकर उसकी मदद करे। और फर्ज परस्त देवसिंह राजपूत ऐसा कर नहीं सकता था। सोच ही नहीं सकता था।

उधर मनीराम शंकर ने अपनी कथा समाप्त की तो देवसिंह बोला

"फोन जरा अर्जुन को दो।"

"जी सर।" मनीराम शंकर अदब से बोला"ले बे बात कर।"

फिर लाइन पर रिसीवर अर्जुन को थमाया जाने की घुसड़-फुसड़ सुनाई दी।

"अर्जुन, सुन लिया होगा तूनजो मनीराम ने मुझे कहा।" देवसिंह सर्द अंदाज में बोला।

"झूठ बोल रहे हैं यह।"

"झूठ तो तू भी बोल रहा है। खैर, मैं वहीं पहुंचता हूं...फिर देखता हूं कि कितने पानी में है तू।"

"यानि तुझे मुझ पर यकीन नहीं...।"

देवसिंह राजपूत ने उसी पल मोबाइल ऑफ किया और उन दोनों की तरफ मुड़ा।

❑❑❑

❑❑❑

"आप बताइये...शकुंतला जी, क्या माजरा है?"

"हूंऽऽ।" शकुंतला शर्मा गहरी सांस लेती बोली"तो आपने मुझे पहचान ही लिया।"

"आए दिन अखबारों में आपकी तस्वीरें आती हैं...न्यूज चैनलों को आप इंटरव्यू देती हैं...तो भला मैं नहीं पहचानूंगा। बावजूद इसके, आपका पंडितजी से क्या रिश्ता है?"

"वही जो मर्द का औरत से होता है।"

"व्हाट!" देवसिंह का मुंह खुला। उसने हैरत में निगाह पंडित की तरफ उठाई।

"व...वो।" पंडित हरी नारायण बौखला गया।

"इंस्पैक्टर!" तभी शकुंतला शर्मा मुस्कुराती हुई उसके पास पहुंची"जवानी बुढ़ापे में भी तंग करती है। ज्यादा तंग करती है।"

देवसिंह राजपूत दांत पीसता चला गया।

"चलती हूं पंडितजी! फिर आऊंगी। मेरा ख्याल है अब इंस्पैक्टर को समझ आ गया होगा कि मैं क्यों यहां मुंह छिपाए बैठ थी।"

"ताकि आपकी सूरत नजर न आए। क्यूं। पर जैसे ही फोन आया तो आप चिहुंकी। उछलीं। आपके हाथ चेहरे से हटे और मैंने आपकी सूरत देख ली...सवाल उठता है कि राखी शाह और काली शर्मा के नाम पर चौंकी क्यों?" देवसिंह दांत भींचता बोला।

"वो इसलिए कि मनीराम शंकर ने आपको बता दिया होगा कि काली शर्मा मेरा बेटा है, जो लापता है। पुलिस को शक था कि काली शर्मा ही तमाम हत्याएं करता जा रहा है पर अब क्लियर हो चुका है कि काली शर्मा का नाम लेकर अर्जुन ही सारी हत्याएं कर रहा है ताकि मेरा काली बदनाम हो जाए। और मैं अगला चुनाव न जीत सकूं।"

"अर्जुन की आपसे क्या दुश्मनी है जो वो ऐसा करेगा?"

"अब ये तो आप अर्जुन से ही पूछिएगा। हो सकता है किसी विपक्षी पार्टी ने मुझे चुनाव में हराने के लिए ही अर्जुन को ऑफर दिया हो। और कत्लों का शौकीन अर्जुन राजा शौक-शौक में अपना शौक

भी पूरा करता जा रहा हो। बाकायदा फुलप्रूफ साजिश के साथ। खैर, मैं अब चलती हूं।" देवसिंह की बगल से निकलती शकुंतला शर्मा आगे बढ़ी।

"राखी शाह के नाम पर भी चौंकी थी आप।"

"वो इसलिए कि मनीराम ने ही मुझे बताया था कि मेरा बेटा काली शर्मा 12-40 पर राखी शाह को मारना चाहता है। तभी यह नाम अर्जुन के मुंह से सुनकर मैं चौंक पड़ी थी और अब तो तमाम बातों से मुझे पता चल ही गया है...आपको भी कि अर्जुन ही काली शर्मा के नाम पर यह खेल खेल रहा है।" वो दरवाजे तक पहुंची।

"वैसे मनीराम ने मुझे यह भी बताया है।" देवसिंह उसकी तरफ मुड़ता बोला "कि आप अपने बेटे काली शर्मा की हत्या कर चुकी है और बाकायदा दुनिया की नजर में जिंदा रखने की खातिर आपने उसे गायब बता रखा है...इन बातों से तो यही लगता है कि आप ही, अपनी किसी साजिश के तहत अर्जुन को फंसाना चाहती हैं।"

"ऐसा कुछ नहीं है। यह सब मैंने अपने बेटे को बचाने के लिए ही कहा था। उसे जिंदा रखने के लिए ही कहा था। रही बात अर्जुन की तो, मैं क्या उसके खिलाफ साजिश करूंगी। उसके खिलाफ साजिश रचने वाला उसका मुकद्दर है। इंस्पैक्टर, अर्जुन मेरी चाल पर नहीं अपने मुकद्दर के हाथों ही रंगे हाथों गिरफ्तार हुआ है, अभी-अभी आपने ही अर्जुन का कहा कि झूठ वो भी बोल रहा है। यानि आपको भी अर्जुन की बजाय कानून पर यकीन है। उसके खिलाफ मिले सबूतों पर यकीन है।" दरवाजे पर खड़ी शकुंतला शर्मा बोली "और कुछ पूछना है?"

"अब पूछना नहींआपको अपने साथ लेकर चलना है, अर्जुन के सामने। शायद कोई नया पर्दा उठे। उम्मीद है आपको कोई ऐतराज न होगा।"

"नैवर। मैं तैयार हूं। चलिए।" फिर वो बाहर निकली।

देवसिंह पीछे-पीछे निकला।

"मैं भी साथ चलूंगा।" हरी नारायण दरवाजे के पीछे लटका ताला निकालता बोला।

"तू भी चल रंगीले ताबूत। कभी बहू कभी माशूक।" देवसिंह हँसा।

पंडित हरी नारायण शर्मा कांपता हुआ ताला लगाने लगा।

फिर तीनों सीढ़ियां उतरते नीचे पहुंचे।

❑❑❑

❑❑❑

नीचे सड़क पर खड़ी सफेद अम्बैडर के लिए शकुंतला शर्मा दायीं तरफ बढ़ी।

देवसिंह बायीं तरफ खड़ी अपनी जीप की तरफ बढ़ा।

पीछे आता पंडित हरी नारायण यकायक फैसला न कर पाया कि वो किसकी गाड़ी की तरफ जाए। एकाएक उसने निर्णय लिया और देवसिंह की जीप की तरफ निकला। वो देवसिंह की जीप में बैठकर शायद यही जताना चाहता था कि देवसिंह को किसी तरह का शक न हो।

देवसिंह अपनी जीप की ड्राइविंग सीट पर पहुंचा कि अनायास ही उसकी निगाह अम्बैसडर की तरफ गई।

एकाएक उसकी पेशानी पर बल पड़े और आंखे सिकुड़ती चली गईं।

अम्बैसडर के बोनट के पास उसे खून का एक मोटा छींटा नजर आ रहा था जबकि शकुंतला शर्मा ड्राइविंग सीट पर बैठी गाड़ी स्टार्ट कर चुकी थी और रिवर्स कर रही थी।

"जस्ट ए मिनट।" देवसिंह यकायक अपनी जीप से बाहर निकला और उसकी अम्बैसडर की तरफ बढ़ा।

शकुंतला शर्मा ड्राइविंग सीट पर बैठी-बैठी ही उसे अपनी तरफ आता देखने लगी।

"जरा बाहर आइए मैडम!" देवसिंह पैसेंजर सीट की खिड़की से भीतर देखता बोला। फिर वो बोनट की तरफ बढ़ा।

फिर दोनों घुटनों पर दोनों हथेलियां टिकाए झुकता चला गया।

शकुंतला शर्मा को कुछ समझ न आया अतः वो भी बाहर निकली।

पंडित हरी नारायण शर्मा भी देवसिंह की निगाहों का मंतव्य समझ गया था और खून का वो मोटा छींटा उसकी निगाहों से भी न छिपा था।

अतः हैरत उसकी आंखों में भी स्पष्ट नजर आ रही थी।

"क्या है?" शकुंतला शर्मा ड्राइविंग साइड से घेरा काटती देवसिंह के पास पहुंची।

"ये खून कैसा है?"

"मुझे क्या पता?" खून के छींटे पर नजर पड़ते ही शकुंतला शर्मा यकायक हड़बड़ाई।

"हूंऽऽ।" संक्षिप्त-सा हुंकारा भरता देवसिंह उकडूं होकर पहिए

की तरफ झुकता चला गया। फिर गर्दन झुकाकर पहिए का अच्छी तरह से मुआयना करने लगा।

एकाएक उसकी उंगली पहिए के दाएं पहलू में ऊपर से नीचे फिरने लगी। पहिए का वो पहलू सड़क से 'टच' लेकर नहीं चलता था।

तभी देवसिंह ने उंगली हटाई तो उसे अपनी उंगली खून से सनी नजर आई।

"यहां भी खून है।" इस बार देवसिंह वो उंगली दिखाता शकुंतला शर्मा से बोला।

"तो क्या करूं। लग गया होगा रास्ते में।"

"हूंऽऽ।" देवसिंह ने फिर हुंकारा भरा और पहिए के बीचो-बीच दो उंगलियां फिराने लगा। वो हिस्सा सड़क पर चिपककर चलता था।

अगले ही पल पहिए पर लगा कीचड़ देवसिंह की उंगलियों में खिंचता चला गया।

"कीचड़ में भी खून मिला है।"

"तोऽऽ?" शकुंतला शर्मा तिलमिलाई।

"तो यही लग रहा है कि आप रास्ते में किसी को घायल करती यहां तक पहुंची हैं। आई मीन एक्सीडेंट हुआ है आपसे।"

"ओ शटअप।" शकुंतला शर्मा पैर पटकती फुनफनाई"मुझसे कोई एक्सीडेंट नहीं हुआ।"

"फिर यह खून कैसा है?"

"मैं क्या जानूं? खून से टायर सने होने से क्या साबित हो गया कि मैंने एक्सीडेंट किया है? सड़क पर कुत्ते-बिल्लियों मरी पड़ी रहती हैं।"

"मुमकिन है किसी को मार भी डाला हो।"

"देवसिंहऽऽ!" शकुंतला शर्मा दांत भींसकर बोली"औकात में रहो अपनी। मत भूलोमेरी हैसियत क्या है।"

"आप भी मत भूलिए। कानून की हैसियत आप से कहीं ऊंची है। रही आपकी हैसियत तो मैं वो देख ही चुका हूं...और आप बता ही चुकी है कि बुढ़ापे में अपनी जवानी की प्यास बुझाने आप इस पंडित की ड्योढ़ी तक खुद चलकर आती हैं।"

"इंस्पैक्टरऽऽ!"

देवसिंह उससे भी तेज चीखा

"आप अब मेरे साथ चलेंगी। और जब तक आपकी अंबैसडर पर लगे खून की जांच नहीं हो जाती, तब तक आपकी गाड़ी यहीं खड़ी

रहेगी।"

यकायक देवसिंह स्टार्ट अंबैसडर की तरफ निकला। उसने इंजन ऑफ किया और इग्नीशन से चाबी खींच ली।

हरी नारायण शर्मा का तो अब गला ही सूखा पड़ा था।

शकुंतला शर्मा का गोरा चेहरा क्रोध से लाल हुआ पड़ा था और आंखें देवसिंह को निगलने की नीयत से घूरे चली जा रही थीं। अपमान वश उसके मुंह से अब झाग भी निकलने लगा था।

"दो कौड़ी के इंस्पैक्टर...तेरी इतनी मजाल कि एम०एल०ए० शकुंतला शर्मा को हुक्म दे।"

देवसिंह उसके शब्द अनसुने करता फौरन मोबाइल पर एक नंबर मिलाता बोला

"हैल्लो कंट्रोल रूम। देवसिंह हियर।"

"जी सर!" उधर से हरीओम नाम का ड्यूटी ऑफिसर बोला"कहिए।"

"फोरैंसिक लैबोरेट्री से कुछ जांच विशेषज्ञ भेजो। अर्जुन नागपाल के फ्लैट के नीचे एक सफेद अंबैसडर खड़ी है। उसके बोनट और पहिए पर खून के निशान हैं। चैक होना चाहिए कि वो खून किस ब्लड ग्रुप का है।"

"बात क्या है सर?"

"मुझे शक है कार चालिका रास्ते में कोई एक्सीडैंट करके आई है। शायद वो घायल या मृत रास्ते या हॉस्पिटल में पड़ा मिल जाए तो उसके खून और अंबैसडर से मिले खून के ग्रुप से साबित हो सकता है कि चालिका ने रास्ते में किसे उड़ाया है।"

"ओह!" हरीओम को बात समझ आई"बाई दि वे, कार चालिका कौन है सर?"

"एम०एल०ए०...शकुंतला शर्मा। गुड़गांवा क्षेत्र से। वहीं संदिग्ध हालत और हालातों में, बिना अपनी सिक्योरिटी के दिल्ली पहुंची। उम्मीद है दिल्ली-गुड़गांवा रोड पर ही यह हादसा हुआ होगा। जरा यह पता भी लगाओ कि किसी पुलिस थाने में किसी एक्सीडैंट की इत्तला या एफ०आई०आर० दर्ज की गयी है?"

"सर! एक्सीडैंट तो हुआ है उस रोड पर। तकरीबन दो घंटे पहले जगदीश मुखी ने हमें इत्तला भेजी थी। और आपको हैरत होगी यह जानकर कि उस एक्सीडैंट का भुक्तभोगी आपका यार अर्जुन नागपाल है। एक बच्चा मरा है उस एक्सीडैंट में। पर अभी तक यह क्लियर नहीं कि उस बच्चे को किस गाड़ी ने कुचला है।"

"मरने वाले की उम्र क्या है?"

"कोई 14-15 साल, पर अभी तक ऐसा कोई चश्मदीद सामने नहीं आया, जो बता सके कि उसे किसने अपनी गाड़ी का निशाना बनाया है।"

"है कौन वो?"

"ये भी क्लियर नहीं। बकौल जगदीश मुखी बच्चे का नाम पता कुछ पता नहीं चल पाया। जेब से उसकी सिर्फ रेजगारी मिली है और उसके कपड़ों से यही निष्कर्ष निकाला गया है अब तक कि वो शायद कोई लावारिस ही है। चेहरा इस कदर कुचला गया है कि शिनाख्त न तो अब की जा सकती है...न ही उसकी बिनाह पर अखबारों में तस्वीर छापी जा सकती है ताकि उसके घरवालों को बुलाया जा सके।"

"हूंऽऽ। इस तरह तो पता ही न चलेगा कि मृतक कौन है?"

"जी। लावारिस ही फूंकना पड़ेगा उसे।"

"ऐनी हाओ। तुम यह काम तो करो...बाद की बाद में देखते हैं।" इस बार देवसिंह ने मोबाइल ऑफ कर दिया और कुछ सोचता हुआ शकुंतला शर्मा की तरफ मुड़ा।

"इंस्पैक्टर!" शकुंतला शर्मा एक उंगली तानती पूरी बांह लम्बी करती बोली"तेरी अगर वर्दी न उतरवा दी...तो मेरा भी नाम...।"

"मैडम!" देवसिंह उसके शब्द नजरअंदाज करता बोला"याद करके बताइए। रास्ते में आपसे एक्सीडैंट हुआ हो। कोई लावारिस बच्चा आपकी कार तले कुचला गया हो।"

"बोला न...ऐसा कुछ नहीं हुआ।"

"हुआ भी हो तो आपको याद ही न रहा हो...आखिर इतनी बड़ी मंत्राणी हैं, छोटी-छोटी बातों को और छोटे-मोटे लोगों को क्यों याद रखती होंगी आपक्यों?"

"हंऽऽ।" शकुंतला शर्मा घायल सिंहनी की तरह दांत किटकिटाती उसे घूरती रही।

"चलिए। जीप में बैठिए। आपकी अंबैसडर बाद में आपके घर पहुंचा दी जाएगी। वैसे आप घर से कितने बजे निकली थीं। दो घंटे पहले तो निकली ही होंगी।"

"तो तुम उस बच्चे की मौत मेरे सिर पर मढ़ना चाहते हो। तुम्हारा कहने का मतलब वो एक्सीडैंट मैंने किया हैऔर मुझे किसी ने देखा भी नहीं...मैं चुपचाप यहां तक चली आई।"

"मैडम! हाइवे पर हुए हादसों का कोई गवाह नहीं होता। धड़ाक

की आवाज गूंजती है कोई बेगुनाह उड़ा दिया जाता है और कारवां यूं ही चलता चला जाता है। रही बात उस हत्प्राण की मौत की तो, वो 'मौत' आपकी गाड़ी पर लगा खून बता रहा हैमैं नहीं।"

शकुंतला शर्मा उसी पल दनदनाती हुई जीप में बैठी।

देवसिंह भी ड्राइविंग सीट पर पहुंचा और पंडित हरी नारायण उसकी बगल में बैठा।

कहीं साली आते-आते ही काली शर्मा का वध तो नहीं कर आई है। तो जालिम औरत...करती खुद है और दोष मेरे निर्मल खून को देती है। पंडित हरी नारायण के दिमाग में यही ख्याल आया। देवसिंह उसी पल जीप को परिसर से बाहर की तरफ भगाता चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

"अनवर! मंत्राणी तो इंस्पैक्टर की जीप में जा बैठी।" अपने सामने से निकलती जीप देख दूसरे लेन में पेड़ों के पीछे खड़ी ओमनी वैन में बैठा सिकंदर बोला"अब?"

"अब क्याहमारी तो सारी स्कीम पिट गयी।" अनवर नाम का ड्राइवर अपने साथी से बोला।

"अब तो बच्चू तिवारी हमें नहीं छोड़ेगा।" वैन की पिछली सीट पर बैठा एक अन्य व्यक्ति बोला"कमाल है! इतनी नायाब चाल चली वो भी पिट गयी।"

"गोगा!" सिकंदर नाम का पहला शख्स बोला"घबरा मत। जब अंबैसडर मंत्राणी की ही है तो वो ही फंसेगी। अब न सही तो थोड़ी देर बाद सही। कुछ घंटो बाद सही।"

"फिर भी बच्चू तिवारी को खबर तो कर। उसे इत्तला तो दे. ..उसने तो अब तक मंत्राणी के फंसने की उम्मीद पर जश्न मनाना शुरू कर दिया होगा।" गोगा नामक पीछे बैठा शख्स बोला।

"हूंऽऽ।" हुंकारा भरता सिकंदर मोबाइल मिलाने लगा।

"गोगा!" तभी ड्राइवर अनवर बोला"तू जरा अंबैसडर के पास तो जा। देख तो कि वो पुलिसिया झुक-झुककर पहिए के पास क्या देख रहा था?"

"अच्छा।" कहता गोगा पिछला दरवाजा सरकाता बाहर निकला और अपार्टमैंट के बाहरी परिसर की तरफ बढ़ा।

अपार्टमैंट का वाचमैन गिरधर आज ड्यूटी पर नहीं आया था लिहाजा वहां कोई नहीं था। विशाल आयरन गेट के बायीं तरफ बना सिक्योरिटी केबिन खाली पड़ा था। फिर गोगा गेट पार करता दूर खड़ी

अंबैसडर की तरफ बढ़ा।

"साहब जी!" उधर सिकंदर मोबाइल पर अपने बॉस बच्चू तिवारी से बोला"हमारी तो सारी गेम पिट गयी।"

"हाए!" उधर से बच्चू तिवारी उछला"के बोल रहा सिकंदर! म्हारी गेम पिट गयीम्हारी?"

"जी जनाब?" सिकंदर अदब से बोला।

"के हुआ?"

"जनाब, मंत्राणी के घर हम पिछले चार दिनों से ही नजर रखे थे। आज सवारी निकली। अकेली निकली तो हम भी पीछे-पीछे निकले...।"

"वो सब मैं जानता हूं। ये बता आगे के हुआ...ईब के हुआ?"

"वो जी हमने तो लाश उसकी डिग्गी में प्लांट कर दी थी। पर सुसरी ने गाड़ी ही नहीं उठाई। और किसी पुलिस वाले के साथ निकल गयी जी। ईब के करें जी।"

"साड़ो। तुम सब खाणे के झोटे हो। सांड की तरह पलते-फूलते जा रहे हो। इत्ते दिणों से मैं तने एक काम दियो...वो भी तुमसे न हो पायो ढंग से...।"

"गड़ती हो गई जी। पर अबी भी फंसेगी मंत्राणी ही जी। लाश अभी डिग्गी में है और वो फंसेगी तो जरूर जी...आप बेफिक्र रहिए साब जी। ईब के बार म्हारा प्लाण फैल नहीं हो सकत जी।"

"हूं।" उधर से हुंकारा भरता बच्चू तिवारी सोच में पड़ा।

"फिड़हाड़ (फिलहाल) यो पूछणे के वास्ते फून किया जी कि आगे के करें। वापिस थारे धोरे लौट आवें या ईहां पर ही इंतजार करें जी।"

"उधर के करोगे अब। फौरण लौटो अब...पर याद रखणा... इबके बार मैं मंत्राणी से इलैक्शन हार गया न...तो मैं तम तीनों को जाण से मार दूंगा...पिछली बार तो वो सुसरी वाके बेटे देवी शर्मा की मौत का फायदा ठाकर जीत गयीसुसरी ने मुझ पर ही आरोप लगा दिया कि मैंने ही उसके देवी शर्मा को उड़वायो है...बस तबी से वो मंत्राणी मेरी दुश्मन नंबर वन है। इस बार वो सुसरी जीत गयी न, तो मौ से बुरा कोई नहीं होगा...मैं बता रहा हूं तैने।"

"बेफिक्र रहें सरकार।" सिकंदर चापलूसी भरे स्वर में बोला"इस बार आप ही चुणावां (इलैक्शन) जीतेंगे। आपणे चाड़ (चाल) ही इतनी बढ़िया चाली है कि मंत्राणी अपणे ही बेटे काड़ी शर्मा की हत्यारिन समझी जावेगी...और चुणावां से पहले ही पुलिस धोरे धर ली जावेगी।

पिछली बार मंत्राणी ने अपणे ही बेटे की बलि लेकर उसका हत्यारा आपको बणा दिया। और ड़तीजे (नतीजे) में आप चुणाव हार गए। ईव की बार आपने, उसे ही अपणे बेटे की हत्यारिण बणा दिया...ईब के बार चुणाव लड़ना तो दूर...उसे तो पारटी की टिकट तक भी न नसीब होगा...साड़ी की जमानत तक जब्त हो जावेगी।"

"चुप...चुप।" उधर से बच्चू तिवारी ने उसे रोका"ईब ज्यादा चपड़-चपड़ मत करे। दीवारों के भी काण होवे हैं...लास की पेमेंट कर दी तैने।"

"ना जी। आप मोर्ग (शव गृह) में बात कर लीजिए। डॉक्टर बग्गा आप ही के फोन का इंतजार कर रहे होंगे जी।"

"फिर भी तैने लास की कोई कीमत भी तो तय की होगी।"

"न जी। वो तो हमसे जैसे ही मंत्राणी को घर से अकेला लिकड़ते देखा...मैंने गोगा को मोबाइल कर दियो...गोगा फौरन जानकीदास हॉस्पिटल गयो और आपका नाम लेकड़ डॉक्टर बग्गा से लास उठा लायो। वह हॉस्पिटल से निकला। इसी दौरान हम मंत्राणी का पीछा करते धौला कुंआ तक पहुंच चुके थे जी। हमने गोगा को फोन पर बताया कि लास लेकर धौला कुआं की तरफ लिकड़े। हम मंत्राणी के पीछे हैं...तभी मंत्राणी की कार पंचर हुई और वो पैट्रोल पंप पर पंचर लगवाने खड़ी हो गयी। इसी दौरान गोगा इस मारुति में लास लेकर हमारी बताई जगह पर पहुंच गया, तो हमने अपनी गाड़ी वहीं पर ही खड़ी कर दी जी। और फिर तीनों पंप से मंत्राणी के पीछ-पीछे लिकड़े जी...और यहां पटेल नगर के जगदंबा अपार्टमैंट में मंत्राणी घुसीं तो हमने वाकी डिग्गी में लास डाल दी जी।"

"डिग्गी की चाबी थी तुम्हारे पास?"

"न जी। चाबी का चोरो के पास के काम जी...चोरों के पास तो 'मास्टर की' होवे है जो हर ताला खोल देवे है जी...और आप तो जाणत ही हो जी...गोगा तो यूं भी नामी गिरामी 'कार चोर' है जी. ..वो कार के करीब पहुंचता नहीं कि कार का दरवाजा अपणे आप ही खुल जाता है जी...अभी भी वो साड़ा (साला) मंत्राणी की डिग्गी खोले खड़या है जी...भीतर राखी लास देख रयो है जी।" मोबाइल पर बात करता सिकंदर दूर डिग्गी खोले खड़े गोगा को देखता मुस्कराया।

"तुम तीनों अब लिकड़ो वहां से।" उधर से बच्चू तिवारी फौरन बोला"अरे! वो सुसरा ईब अंबैसडर के पास के करन गयो है?"

"वो साब जी, मंत्राणी एक दरोगा की जीप में लिकड़ी है जी।" फिर सिकंदर बच्चू तिवारी को देवसिंह की अंबैसडर के साथ छेड़खानी

की बाबत बताने लगा।

उधर गोगा ने डिग्गी के भीतर कारपैट में लिपटी लाश का मुआयना किया। लाश डिग्गी के ही कारपैट में फोल्ड कर दी गयी थी, अतः खून के मोटे-मोटे धब्बे कारपैट पर भी बन गए थे।

फिर गोगा ने डिग्गी का ढक्कन बंद किया। ताला लगाया और 'मास्टर की' बाहर निकाल ली।

फिर वो बोनट की तरफ बढ़ा।

अगले ही पल वो देवसिंह की तरह पहिए की तरफ झुकता चला गया।

खून के छींटों पर उसकी निगाह पड़ी। पहियों पर भी खून दिखाई दिया।

उसकी आंखे फटीं और वो तेज कदमों से अपनी वैन की तरफ भागा।

"अरे यार! बोनट पर तो पहले से ही खून के छींटे हैं।" वो मोबाइल पर बात करते सिकंदर से बोला"लगता है उस इंस्पैक्टर ने यह बात नोट कर ली हैऔर शायद तभी अंबैसडर यहीं छोड़कर भागा है। जरूर लेबोरेट्री वाले उस खून की जांच करने आ रहे होंगे।"

"क्या...!" फिर यही बात सिकंदर ने फोन पर बच्चू तिवारी को बतायी।

"हे प्रभु!" उधर से बच्चू तिवारी विलाप करता बोला"लागे है म्हारी किस्मत में मंत्री बनणा कोणा लिखया।"

"अरे साब जी! यो बात तो मंत्राणी के विरुद्ध ही जावे है पुलिस तो यही समझेगी कि मंत्राणी ने पहले किसी को अपनी कार तले कुचला...फिर वाकी लाश डिग्गी में भर ली।"

"अरे मूढ़मगज! बोनट पर खून के छींटे से और लाश के खून से दोनों का ब्लड ग्रुप मैच किया जाएगाऔर अगर ब्लड ग्रुप एक लिकड़्या तो मंत्राणी धर ली जायेगी। अगर दोनों ब्लड ग्रुप अलग-अलग लिकड़े तो मंत्राणी बच जायेगी और सीधा मौ पर हमला करेगी कि यो सब किया-धरा मेरा है। मैं सलाखों के पीछे धर लिया जावूंगा।"

"फिर! फिर करें के?" सिकंदर चिहुंका।

"फिलहाल तो उधर से फूटो।"

"आप कहो तो हम बोनट पर मौजूद खून को साफ कर देवें।"

"पागलां जैसे न बात मती करो।" उधर से बच्चू तिवारी दहाड़ा। "खून पहियां पर भी लगा होगा। तुम जितनी भी होसियारी दिखा लो...तम पूरा खून साफ न कर सको...फौरन लिकड़ो उधर से।"

"जी।"

उधर से बच्चू तिवारी ने मोबाइल ऑफ किया।

"शूंऽऽ।" अनवर ने गाड़ी स्टार्ट की और गोगा पिछली सीट पर लदा।

उनकी ओमनी वैन भागती चली गयी।

बात सही थी वो खून के छींटे मिटाते तो यह बात शकुंतला शर्मा के ही पक्ष में जाती।

वो साफ कह देती कि उसके विरुद्ध कोई साजिश कर रहा हैऔर उसी साजिशकर्त्ता ने ही डिग्गी में लाश प्लांट कर रखी है।

❑❑❑

❑❑❑

अर्जुन नागपाल उस समय पुलिस थाने के उस कक्ष में था जो मनीराम शंकर का ऑफिस था।

वो उस समय घायल अवस्था में एक कुर्सी पर बैठा था और उसके सामने दो कुर्सियों पर जगदीश मुखी और मनीराम बैठे थे।

उधर घटनास्थल से बरामद राखी शाह की लाश की गर्दन और घुटने से फिंगरप्रिंट्स ले लिये गये थेऔर उनका मिलान अर्जुन नागपाल के फिंगरप्रिंट्स से हो चुका था। लिहाजा साफ साबित हो चुका था कि राखी की हत्या अर्जुन ने ही की है।

"अब कहोक्या कहते हो?" एकाएक फिंगरप्रिंट्स रिपोर्ट दिखाते मनीराम कड़वे स्वर में बोला।

"मनीराम, मेरा यकीन करो राखी शाह की हत्या मैंने नहीं की।"

"खामोशऽऽ।" मनीराम उसी पल अपनी कुर्सी पर खड़ा होता चिंघाड़ उठा"तुमने कानून को समझ क्या रखा है! हम क्या अंधे हैं। सिर्फ दस मिनट के लिए राखी अकेली तुम्हारे कमरे में गयी और तुमने उसे खिड़की से फैंक डालाऔर इसका सबूत है यह फिंगरप्रिंट्स रिपोर्ट। क्या यह झूठी है?"

"ओह गॉड!" अर्जुन नागपाल अपना पट्टीशुदा सिर दोनों हाथों में जकड़ता बोला"मुझें कुछ याद क्यों नहीं आ रहा?"

"पहले तुम्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था...अब कुछ याद नहीं आ रहा।" जगदीश मुखी तिलमिलाकर चीखा"उस बच्चे को मारुति से उड़ाते वक्त तुम्हारी आंखों के सामने अंधेरा छा गया थाऔर अब राखी शाह की हत्या के वक्त तुम्हारी याददाश्त चली गयी मालूम होती है। यही न?"

"देखा। मेरा यकीन करो। मैं सच कह रहा हूं।"

"सच कह रहे हो तो साबित भी करो।"

"साबित, कैसे करूं? जब कुछ पता हो कि मैंने ही यह सब किया-धरा है...तभी तो अपने विरुद्ध कोई सबूत ढूंढूं न...पता नहींपता नहीं क्या हो रहा है मेरे साथ...क्या होता रहता है मेरे साथ?"

"सब जानता हूं।" मनीराम उस पर उंगली तानता फुंफकारा"बहुत बड़े घाघ हो तुम। पहले भी कई बार कानून को अंधा बना चुके हो। पर इस बार...मैं तुम्हारी एक न चलने दूंगा। राखी शाह की हत्या तो तुम्हें अब फांसी तक ही ले जाएगी। कानून के हाथ रंगे ही लगे हो तुम इस बार...और देखता हूं कैसे देवसिंह इस बार तुम्हें बचा पाता है।"

"मुझे तो लगता है राखी शाह ने आत्महत्या की है। वो जानबूझकर खिड़की से कूद गयी...ताकि मैं फंस जाऊं।"

"ईनफ।" मनीराम हाथ खड़ा करता फुंफकारा"ऐसी बोगस दलीलें अब नहीं चलेंगी। राखी शाह मेरे साथ थी। वो शकुंतला शर्मा की सारी करतूतें दुनिया के सामने लाने की घोषणा करती तुम्हारे आई०सी०यू० में घुसी थी। अगर उसने आत्महत्या ही करनी होती तो तुम्हारी ड्योढ़ी पर आकर न करती...अपने ही अपार्टमैंट से कूद मरतीऔर फिर तुम्हारे फिंगरप्रिंट्स उसकी गर्दन तथा घुटने पर कैसे आ गए।"

"याद नहीं आ रहा न...क्या पता मरने से पूर्व उसने मुझे बांहों में भरा हो। कुछ लिपटा-लिपटी भी की हो। अपने दो-चार अरमान पूरे किए हो...तभी कूद मरी हो।"

"विल यू शट यूअर डर्टी माउथ।" जगदीश मुखी गुस्से से चीख उठा।

"देखो। शायद मेरे होठों पर तुम्हें राखी के होठों के निशान मिल जाएं। शायद 'लिप प्रिंट्स' (होठों के निशान) मिल जाएं। फिर तो मैं निर्दोष साबित हो जाता हूं न?"

"लगता है मेरी मार का असर खत्म हो गया। थोड़ी और सेवा करनी पड़ेगी।" आस्तीनें चढ़ाता मनीराम शंकर टेबल के पीछे से निकला और उसकी तरफ बढ़ा"साले। दो मासूमों को लीलने के बाद भी ऐसे अंदाज से बात कर रहा है जैसे कुछ हुआ ही नहीं।"

फिर मनीराम शंकर अर्जुन के सामने पहुंचा।

"देखो मनीराम...मेरी खोपड़ी जरूर घायल है पर हाथ नहीं। हाथ अभी खुले है और न ही तुम्हारी तरह कानून के बंधे हाथ हैं...मेरा

अगर हाथ उठा न, तो बड़ी फजीहत होगी तुम्हारी। पूरा पुलिस थाना तुम्हारा जलूस देखेगा और फिर मुमकिन है...घर जाकर तुम भी खिड़की से कूद जाओ। जैसे राखी कूदी थी...।"

"साले तेरी तो...।" मनीराम का दायां हाथ घूंसे की शक्ल में अर्जुन की तरफ बढ़ा, पर आधे ही रास्ते में अर्जुन के बाएं हाथ की गिरफ्त में जकड़ा गया।

अर्जुन उसका हाथ दायीं तरफ उमेठता अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ औरअर्जुन का दायां घूसा मनीराम की कनपटी पर पड़ा और मनीराम चार कदम दूर लड़खड़ाता चला गया।

"साले।" अर्जुन कुर्सी छोड़ता उसकी तरफ झपटा"ऊपर वाले ने सांड जैसा जिस्म तुझे जरूर दिया है पर अर्जुन जैसा कलेजा नहीं. ..जानता नहीं हमसे जो टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा...धाड़-धाड़।" फिर अर्जुन एक हाथ से अपनी छाती ठोंकता चला गया।

जगदीश मुखी भी उठा और अर्जुन पर टेबल के ऊपर से उछला।

"हाट!" अर्जुन ने उसे दोनों हाथों में पकड़ा और बबुए की तरफ फैंक दिया।

जगदीश मुखी असंतुलित होते मनीराम पर जा गिरा। नतीजतन दोनों एक-दूसरे पर ढेर होते चले गए।

अर्जुन नागपाल ने इत्मीनान से जेब से डिब्बी-माचिस निकाली और सिगरेट सुलगाने में मशगूल हो गया।

"सालों को दामाद से भी पेश आना नहीं आता।"

"हरामजादे...तेरी तो...।" एकाएक दोनों इंस्पैक्टर एक साथ अर्जुन पर उछले।

अर्जुन ने उसी पल एक पैर से अपनी कुर्सी उनकी तरफ उछाल दी।

धड़ाक से कुसी एक के थोबडे पर पड़ी और दूसरे की छाती पर। दोनों फिर से लड़खड़ाते गिरते चले गए।

'ठक...ठक...ठक...।' तभी बाहर से किसी के जूते बजने की आवाज सुनाई दी।

"लो, ये भी आ मरा।" अर्जुन ने जैसे कुनैन की गोली निगली और कश भीतर खींचा। साथ ही जली तीली बुझाकर फैंकी।

उधर मनीराम और जगदीश मुखी पागल सांड की तरह उठे और अभी अर्जुन पर झपटते कि

"क्या हो रहा है यह?" दरवाजे पर देवसिंह पहुंचता दहाड़ा।

"कुछ नहीं...इन्हें जरा पिटने की प्रैक्टिस करा रहा था।" धुंआ

उगलता अर्जुन नागपाल मुस्कराया।

"खामोश।" देवसिंह उसकी तरफ तेज कदमों से बढ़ा।

मनीराम और जगदीश मुखी खा जाने वाली निगाहों से अर्जुन को घूरने लगे।

देवसिंह अर्जुन के नजदीक पहुंचता फुंफकारा

"थाने के अंदर...दो पुलिस ऑफिसरों पर हाथ उठाने की सजा जानते हो?"

"दो नहीं तीन...धड़ाक।" उसी पल अर्जुन का घूंसा देवसिंह की ठोड़ी पर पड़ा और वो भी मनीराम तथा जगदीश मुखी की तरफ उछलता चला गया।

तब तक दरवाजे पर पहुंच चुके शकुंतला शर्मा और हरी नारायण की आंखें फटीं।

"बापूतू यहां कैसे?" अर्जुन हरी नारायण से बोला।

"व वो...वो।" हरी नारायण बौखला गया।

"और यह बेबे कौन है?" अर्जुन ने पहला सवाल छोड़ दूसरा सवाल किया। साथ ही उसकी निगाहें शकुंतला शर्मा पर जा टिकीं।

"व...वो...वो...।" हरी नारायण बौखलाकर शकुंतला शर्मा को देखने लगा। फिर जवाब देने की बजाए उसने झेंप कर निगाहें झुका लीं।

"अर्जुन के बच्चे...तूने मुझ पर हाथ उठाया।" उधर देवसिंह दांत पीसता अर्जुन की तरफ बढ़ा। पीछे-पीछे मनीराम तथा जगदीश मुखी भी बढ़े।

"रुको...रुको।" अर्जुन दोनों हाथ खड़े करता बोला"पुलिस अफसरों को थाने में पीटने की सजा मैं नहीं जानता...और थाने में निर्दोष, घायल, लाचार, मासूम मरीज को पीटने की सजा शायद आप नहीं जानते। इसलिए बेहतर है दोस्ती कर लें। न मैं आपकी कम्प्लेंट करूंगा...न आप मेरी कीजिएगा। आपने मेरी ठुकाई कीमैंने आपकीहिसाब बराबर। ओ०के०?"

"ओ०के०। धड़ाक।" उसी पल चिंघाड़ते देवसिंह का घूसा अर्जुन के चेहरे पर पड़ा और वो पीछे टेबल पर गिरा।

अगले ही पल अर्जुन की दोनों टांगे ऊपर को उठीं और वो हवा ही हवा में उलटा होता चला गया।

फिर यकायक उसके पैर पीछे खुली खिड़की की चौखट पर टिके और शरीर खिड़की से बाहर हवा में निकलता चला गया।

"ब...बाय देवसिंह!" खिड़की से बाहर लहराते अर्जुन ने बाय के

अंदाज में हाथ हिलाया"फिर मिलेंगे।"

"अर्जुनऽऽ!" देवसिंह चिंघाड़ता हुआ उसकी तरफ भागा।

"अबे पागल...तीसरी मंजिल का कमरा है...मरेगा।" मनीराम हाथ नचाता उसकी तरफ भागा।

"अर्जुनअर्जुन!" पंडित हरी नारायण भी उधर भागा पर तब तक अर्जुन का शरीर नीचे की तरफ गिरना शुरू हो गया था।

देवसिंह और मनीराम खिड़की पर पहुंचे तो अर्जुन का शरीर धनुष की तरह झुका नीचे गिर रहा थाऔर अर्जुन बाकायदा अभी भी बाय-बाय कर रहा था।

"सर! क्या है ये आदमी" जगदीश मुखी हकबकाया"तीस फुट नीचे ऐसे कूद गया जैसे तीन फुट हो।"

देवसिंह उसी पल खिड़की से हटता नीचे की तरफ भागा।

'धचाक...।' तभी नीचे से जाता एक टमाटरों का ट्रक निकला और अर्जुन का शरीर उस खुले ट्रक में गिरा और टमाटरों का गूदा कई फुट ऊपर छितराता चला गया।

"सर! रहने दीजिए...वो सिरफिरा टमैटो सॉस की बोतल बना ट्रक में खड़ा है।"

देवसिंह उसी पल लौटकर खिड़की पर आया।

अर्जुन टमाटरों के ट्रक में घुसा अभी भी 'बाय' कर रहा था उन्हें।

"हूंऽऽ।" देवसिंह के अधरों से उसी पल लम्बी-गहरी सांस निकली। फिर उसने मुक्का दिखाया और काफी दूर पहुंच चुके अर्जुन की तरफ नचाया।

जवाब में अर्जुन ने खुले हाथ का झापड़ उन तीनों पुलिसियों को दिखाया। दाएं से बाएं लहराया।

तीनों दांत किटकिटाने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

"सर! ये तो भाग खड़ा हुआ।" मनीराम देवसिंह से बोला।

"भागने की नीयत से ही उसने हम पर हमला बोला था। तुम्हारी छाती ठोकी। तुम्हारी कनपटी और मेरा जबड़ा ढीला किया।" देवसिंह अपने जबड़े को दुरूस्त करता बोला।

"अब?"

"अब क्यावो जब पूरी तरह अपने आपको निर्दोष साबित कर दिखाएगा, खुद-ब-खुद लौट आएगा। बाकायदा अपनी गिरफ्तारी

कराएगा।"

"अजीब खरदिमाग है। कभी ऊपर से किसी को फैंक देता है, कभी खुद गिर जाता है।" जगदीश मुखी हाथ नचाता बोला।

"ऐसा ही है वो।"

"पर निर्दोष कहां है वो। राखी शाह का कत्ल तो उस पर साबित हो ही चुका है।" मनीराम शंकर बोला।

"तभी तो भागा वो यहां से...अगर थाने में रहता तो खुद को कैसे साबित कर पाता निर्दोष!"

"मतलब आपको यकीन है कि अर्जुन निर्दोष है। यह जानते हुए कि राखी शाह की बॉडी पर उसके फिंगरप्रिंट मिले हैं।"

"यह सब तो मैं नहीं जानता कि उसने यह हत्या की है या नहीं. ..पर इतना यकीन है मुझे कि वो मुकद्दर का मारा करता कुछ और है और हो कुछ और ही जाता है।" देवसिंह तनिक भरे गले से बोला।

"माफ कीजिए सर! जगदीश मुखी बोलाये एक पुलिस अफसर नहीं बल्कि एक यार बोल रहा हैऔर मुझे तो अब यह शक भी होने लगा है कि अर्जुन को घूंसा धरा ही इसलिए गया है ताकि वो टेबल पर गिरे और खिड़की के रास्ते कूद जाए।"

"वैसे तुम तो उसके हाथों पिटने के बाद उसे हार पहनाने जा रहे थे शायद...मैंने पहना दिया तो अब शक की खुजली होती जा रही है।"

"वो तो सब आपकी चाल...।"

"ईनफ।" देवसिंह ने यकायक मुखी को हाथ खड़ा कर रोका"तुम्हें सफाई देने की न तो मुझे कोई जरूरत है...और न ही मैं ऐसा जरूरी समझता हूं...आगे तुम जो ठीक समझो...करो।"

जगदीश मुखी उसी पल बौखलाता हुआ मनीराम को देखने लगा।

"मैं फोर्स भेजता हूं। टमाटरों का ट्रक जरूर गुड़गांवा मंडी की तरफ ही जा रहा होगा...हम कोशिश करें तो अर्जुन को गिरफ्तार कर सकते हैं।"

देवसिंह हल्के से हँसा

"वो अर्जुन है डियर! अर्जुन नागपाल। जहां तुम्हारी सोच खत्म होती है, वहां से उसकी सोच शुरू होती है। तुमने जो अभी-अभी सोचा है न...वो उसने काफी पहले ही सोच लिया होगा। लिहाजा अब तक वो ट्रक ही छोड़ चुका होगा और किसी कुएं में उतरकर नहा-धो रहा होगा। वैसे कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं।"

"बहुत इम्प्रैस हैं आप अपने दोस्त से।" मनीराम शंकर मुस्कुराया।

"वो इसलिए कि तुमने उसे आज देखा है शायद पहली बार। मैं उसे बरसों से जानता हूं। जो आदमी कानून के मुहाफिजों को उनके घर में ही घुसकर घूंसा मारने की क्षमता रखता है...आखिर कोई तो खासियत होगी ही उसमें।"

"क्या मैं पूछ सकती हूं।" तभी काफी देर से खामोश खड़ी शकुंतला शर्मा गरजी"मुझे कब तक रुकना पड़ेगा यहां?"

"ओह सॉरी मैडम!" देवसिंह उसकी तरफ मुड़ा"मैं अभी फोन करता हूं। अब तक तो शायद ब्लड ग्रुप का पता चल गया होगा।"

फिर देवसिंह हरीओम को फोन लगाने लगा।

वो अभी थाने के लैंड लाइन फोन का नंबर मिला ही रहा था कि उसका मोबाइल गरज उठा।

"ट्रिन...ट्रिन...।" उसने तत्काल जेब से बजता मोबाइल निकाला. .."लो हरीओम का ही फोन आ गया। हैल्लो" कॉलिंग स्विच ऑन करते देवसिंह बोला"कहो हरीओम!"

"ओ सर जी! उस अंबैसडर में तो नई बात सामने आई।"

"क्या?" देवसिंह ने संदिग्ध नजरों से शकुंतला शर्मा को देखा। शकुंतला शर्मा के चेहरे पर भी असमंजस के भाव दिखाई दिए। लगभग गूंगा बने हरी नारायण शर्मा की भी हैरत में ईजाफा हुआ। पहले अर्जुन की फरारी को लेकर वो हैरत में था, अब देवसिंह के हाव-भाव हैरानी बढ़ा रहे थे।

"सर जी!" उधर से हरीओम बोला"कार की डिग्गी में से खून टपक रहा है।"

"व्हाट!" देवसिंह उसी पल उछला"खून टपक रहा है। सफेद अंबैसडर की डिग्गी से। मतलब?"

"मतलब आप खुद समझ जाओ जी।" हरीओम ने कहा।

शकुंतला शर्मा का तमतमाता चेहरा उसी पल फक्क हुआ।

हरी नारायण शर्मा भी चोर निगाहों से शकुंतला शर्मा को घूरने लगा।

"तुम्हारा मतलब डिग्गी के भीतर कुछ है?"

"जी सर! डिग्गी के भीतर लाश हो सकती है। अब चाबी तो आप साथ ही ले गए जी...डिग्गी खोलें कैसे?"

"तुड़वा देते।" देवसिंह ने कह तो दिया पर अगले ही पल उसे अपनी गलती का अहसास हुआ।

"तुड़वा कैसे देते जनाब! ऐसे तो हमी पर ही आरोप लगा देता कार का मालिक...कि हमने ही डिग्गी में लाश प्लांट की है।"

"ओह माई गॉड! ब्लड ग्रुप का पता चला?"

"सर जी, बोनट और डिग्गी से बरामद खून को लेबोरेट्री भेजा जा रहा है। उम्मीद है, रिपोर्ट जल्दी ही आ जाएगी।"

"ठीक है। हम पहुंचते हैं वहां पर। तब तक अंबैसडर के पास पहरा लगा दो।"

"वो तो लगा दिया जीआप जल्दी पहुंचिए।"

"मैं पहुंचता हूं।" कहते देवसिंह ने मोबाइल ऑफ कर दिया और शकुंतला शर्मा की तरफ चेहरा मोड़ा।

"ये...ये झूठ है! स...साजिश है मेरे खिलाफ किसी की।"

"चलिए।" देवसिंह राजपूत हाथ बाहर की दिशा में नचाता बोला"वहीं चलकर देखते हैं...क्या माजरा है...किसकी साजिश है?"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगी।"

"चलना तो आपको पड़ेगा ही। सरकारी अमले की गाड़ीजिसे आप खुद ही ड्राईव कर रही थींमें अगर कोई लाश बरामद हो जाती है और दोनों जगह पाए ब्लड ग्रुप मेल खा जाते हैं तो फिर तो... आपको भुगतना भी पड़ेगा।"

"नहीं...मैंने कोई कत्ल नहीं किया। किसी को अपनी गाड़ी तले नहीं कुचला। कोई लाश गाड़ी में नहीं रखी।"

"चलिए। देखें तो सहीअभी डिग्गी खुली थोड़ी न है। क्या मालूम अंदर लाल पेंट का कोई कनस्तर रखा हो। वहीं लीक कर रहा हो।"

"बोला नमैं कहीं नहीं जाऊंगी।" शकुंतला शर्मा कठोर स्वर में बोली।

"चलना तो आपको पड़ेगा ही। और इतना कानून भी आप जानती होंगी कि परिस्थिति जन्य (सर्कमस्टांशल एवीडैंस) साक्ष्यों के आधार पर प्राईम सस्पैक्ट आप ही मानी जाएंगी...। इसलिए बेहतर तो यही होगा कि आप चुपचाप मेरे साथ चलें वरना...।" एकाएक देवसिंह राजपूत खामोश हो गया।

"वरनाक्या करोगे तुम...मुझे जबरदस्ती उठाकर ले जाओगे।"

"जी। और आपको उठाने का काम मैं नहींबल्कि लेडी पुलिस करेगी।"

शकुंतला शर्मा मारे अपमान के होंठ चबाने लगी।

"आइए।" देवसिंह बाहर की तरफ निकला।

पंडित हरी नारायण शर्मा ने शकुंतला को देख सहमति में गर्दन हिलाई और देवसिंह के पीछे-पीछे निकला।

शकुंतला शर्मा भी दांत किटकिटाती पीछे-पीछे निकली।

"मुखी!" देवसिंह उनकी तरफ मुड़े बिना बोला"तुम अर्जुन को गिरफ्तार करने की कोशिश जारी रख सकते हो।"

तत्काल ही जगदीश मुखी तथा मनीराम शंकर हरकत में आ गए।

❑❑❑

❑❑❑

"जयसिंह।" गलियारे की सीढ़ियां उतरती शकुंतला शर्मा बोली"यह भी तो मुमकिन है मैं जिस वक्त हरी नारायण शर्मा के फ्लैट में थी, इसी दौरान ही किसी ने मेरी कार की डिग्गी में लाश प्लांट कर दी हो।"

"चाबी आप अपनी डिग्गी में लगी छोड़ गयी थीं या इग्नीशन में?" देवसिंह हँसा।

"चाबी तो मैं अपने साथ ही ले गयी थी। गाड़ी लॉक कर गयी थी। क्या ऐसा नहीं, किसी ने किसी दूसरी चाबी से डिग्गी खोली हो और...।"

"किसने! किसने किया हो सकता है यह काम?"

"हम राजनीतिज्ञों के सौ दुश्मन होते हैं। कोई भी हो सकता है।"

"यू मीन टू से कि वो दुश्मन पहले तो लाश उठाए आपकी अंबैसडर का पीछा करता रहा। फिर जैसे ही आप हरी नारायण के फ्लैट में गयीं, उसने कहीं से डुप्लीकेट चाबी निकाली और लाश भीतर डाल दी।"

"क्योंऐसा हो नहीं सकता क्या?"

"होने को क्या नहीं हो सकता। ये भी हो सकता है कि आपने अपनी गाड़ी से किसी को कुचला। फिर उसकी लाश उठाकर गाड़ी में डाली ताकि आगे जाकर कहीं ठिकाने लगा सकें। उसके बाद आप हरी नारायण के फ्लैट में गयी और...।"

"ओह शटअप! लाश उठाए-उठाए मैं हरी नारायण के साथ रंगरलियां मनाने जाऊंगी।"

"रंगरलियों का तो बहाना बनाया आपने...जबकि हकीकत तो कुछ और ही है।" सीढ़ियां उतरकर देवसिंह अपनी जीप की तरफ निकला।

पीछे वो दोनों भी तेज कदमों से भागे।

देवसिंह ने गाड़ी स्टार्ट की तो दोनों पिछली सीट पर बैठे।

देवसिंह जीप को गति देता गया।

"...मैं क्या जानता नहीं कि जब मैं आपको 'वो' कह रहा था तो पंडितजी कितना बिदक रहे थे। कितना आगबबूला हो रहे थे। फिर राखी और काली शर्मा का नाम सुनते ही आप खुद को ही 'वो' कहने लगीं और पंडितजी आपकी हां-में-हां मिलाने लगे।"

"तुम्हें मैं इतनी वहशी औरत दिखती हूं जो पहले किसी को गाड़ी से कुचलेगी। फिर उसक लाश डिग्गी में डालेगी और उसे ठिकाने लगाने की बजाय अपने यार के घर चली जाएगी।"

"पंडित हरी नारायण उम्र में आपसे ड्योढ़े है। शायद दुगने भी हों। इससे यह साबित हुआ कि यह आपके यार नहीं हैं। अलबत्ता आप दोनों के बीच कोई रिश्ता है। तो पंडितजी अभी छिपाए रखना चाहते हैं...और सच पूछिए। मुझे तो अब यकीन भी हो चला है कि हो न हो आप पंडितजी की बहू ही हैं। अब रही बात लाश को ठिकाने लगाने की...तो जवाब है...लाश की जब आदमी को जरूरत हो...और वो अपनी जरूरत पूरी करने के लिए किसी हाड़-मांस के पुतले को लाश बनाए...तो फिर वो...उसे ठिकाने क्यों लगाएगा? लगाएगा तो तभी लगाएगा, जबकि उसकी जरूरत पूरी हो जाएगी।"

"व्हाट नानसैंस। मुझे भला लाश की जरूरत थी। क्यों?"

"क्योंआपने मनीराम शंकर को कहा नहीं कि आप ही काली शर्मा की हत्या कर चुकी हैं। अब जब काली की हत्या हो ही चुकी है तो उसकी लाश छिपाना भी जरूरी है। सो आपने फौरी तौर पर एक बेगुनाह को सड़क पर कुचला। उसे लाश बनाया...और निकल पड़ीं अपने अगले मुकाम पर। आपको पता थोड़ी न था कि डिग्गी में रखी लाश लीक कर जाएगी और आपकी कर्मकांड गाथा इतनी जल्दी ही खुल जाएगी।"

जीप हाइवे रोड पर तेजी से भागती चली जा रही थी।

"पता नहींक्या अनाप-शनाप बके जा रहे हो।"

"मैडम! यही सच होगा। आपने लाश का खड़े पैर जुगाड़ किया ही इसलिए है कि कानून उसे काली शर्मा की लाश समझे और फिर काली शर्मा को हमेशा-हमेशा के लिए मर चुका मान ले।"

"इससे मुझे क्या फायदा?"

"फायदा नंबर एकआपका काली शर्माइकलौता वारिसजिंदा रहेगा। फायदा नंबर दोकानून काली शर्मा नामक विक्षिप्त हत्यारे को भूल जाएगा। जबकि फायदा नंबर तीन तो आपको अब हो चुका है कि कानून अब अर्जुन नागपाल को ही काली शर्मा समझने लगा है लिहाजा काली शर्मा जिंदा भी रहेगा और उसके कुकर्मों की सजा अर्जुन

नागपाल को मिलेगी।"

"तो तुम्हारी नजर में अर्जुन नागपाल निर्दोष है? वो काली शर्मा का नाम लेकर हत्याएं नहीं कर सकता?"

"वो निर्दोष है या नहींमैं नहीं जानता। वो काली शर्मा है या नहींमैं नहीं जानता। पर एक बात तो आपको भी समझ आनी ही चाहिए कि उसकी आपसे दुश्मनी क्या है जो वो आपके बेटे का नाम लेकर हत्याएं करता जा रहा है? कोई तो उद्देश्य बताइए। जिससे अर्जुन को ऐसा करने में कोई फायदा नजर आता हो। उसका कोई मकसद हल होता हो।"

"न सही। माना अर्जुन नागपाल की मुझसे कोई जाती अदावत या दुश्मनी नहीं है। वो प्राइवेट जासूस है। पैसा अवश्य उसकी जरूरत होगी। हो सकता है किसी के कहने पर ही, किसी से मोटी फीस लेने के ही चक्कर में मेरे विरुद्ध जा रहा हो।"

"किसके कहने पर?"

"बच्चू तिवारी के कहने पर।"

"यह किस बला का नाम है?"

"यही पिछले चुनावों में मेरा प्रतिद्वंद्वी था। इसी ने ही पिछली बार देवी शर्मा की मौत पर हंगामा मचाया था कि मैंने ही अपने बेटे देवी शर्मा को मरवाया है...पर उस वक्त मेरे सितारे बुलंदी पर थे. ..मुझे जनता ने समर्थन दिया और मैं चुनाव जीती...पर अब अपना बदला लेने के लिए बच्चू तिवारी अर्जुन नागपाल के साथ हो सकता है।"

"ऐसे तो कितने भी अंदाजे लगाते रहिए। जहां तक अर्जुन की बात है तो इतना मैं यकीन से कह सकता हूं कि वो इतना बेवकूफ नहीं कि किसी के कहने पर काली शर्मा बनकर खुद ही मासूम लड़कियों की हत्याएं करता जाए। वो मुजरिम जरूर मारता है पर मजलूम नहीं। कोई और बहाना ढूंढिए।"

"जयसिंह! तुम तो कूदकर ही इसी नतीजे पर पहुंचे बैठे हो कि मैं ही सारा खेल खेल रही हूं। राखी शाह के कत्ल को जरा सामने रखकर सोचो तो क्या यह साबित नहीं होता कि अर्जुन ही विक्षिप्त हत्यारा है?"

"है।" देवसिंह ने काफी कठिनाई से जवाब दिया।

"क्या यह मुमकिन नहीं हो सकता कि इसी विक्षिप्त हत्यारे ने पहले भी सात कत्ल किए हों?"

"हो सकता है।"

"यहां मैंने एक गलती की कि उस विक्षिप्त हत्यारे द्वारा किए गए पहले कत्ल को ही काली शर्मा यानि अपने पुत्र का नाम दे दिया और यहीं से ही बच्चू तिवारी के दिमाग में यह योजना आ गयी कि क्यों न वो अर्जुन को अपने साथ मिला ले और उससे कत्ल करवाता चला जाए जिसे मैं काली शर्मा की करतूत बताती चली जाऊं।"

"क्या बोगस बकवास कर रही है आप। अर्जुन अगर विक्षिप्त हत्यारा है तो वो क्यों बच्चू तिवारी से मिलेगा। क्यों उसके कहने पर हत्याएं करेगा? और बच्चू तिवारी भी क्यों उस पागल हत्यारे को अपने साथ मिलाएगा जो खुद ही अपनी मर्जी से हत्याएं करता जा रहा है? और उन हत्याओं का दोषी उसकी सबसे बड़ी दुश्मन खुद ही अपने असली बेटे काली शर्मा को बताती जा रही है।"

"लगता है मैं आपको सही ढंग से समझा नहीं पा रही।"

"आप मेरे दिमाग में गुंजल डाल रही हैं। शक की सुई अपने पर से हटाने के लिए आप मेरा ध्यान अर्जुन और बच्चू तिवारी पर करवा रही हैं। मैडम, मैं रोजाना दूध-घी नहीं पीता जो आपकी जलेबी बातों का सिरा ढूंढने में वक्त जाया करूं...चुपचाप बैठी रहिए...डिग्गी खुलते ही दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जाएगा। हालातों के मद्देनजर सबसे बड़ी मुजरिम आप नजर आ रही है। पहले आपने कानून को गुमराह कियायह कहकर कि सात हत्याएं आपके बेटे काली शर्मा ने की हैं। जो छः महीनों से गायब है। फिर जब उस विक्षिप्त हत्यारे को गिरफ्तार या मार देने का ऑर्डर पास हुआ तो आपने कानून को यह कहकर गुमराह कर दिया कि मुमकिन है काली शर्मा मर ही चुका हो...ताकि कानून का ध्यान इस ओर से हटे...फिर आपने एक लाश का जुगाड़ किया ताकि उसे काली शर्मा साबित कर सकें...और अब आप फिर गुमराह कर रही हैं कि यह सब किया-ध ारा बच्चू तिवारी का है। मैडम कानून अंधा जरूर है पर बेवकूफ नहीं. ..सबूतों और साक्ष्यों की जुबान से नतीजे निकालना वो अच्छी तरह जानता है।" स्टेयरिंग धौला कुआं राऊंड अबाऊंट पर घूमाता देवसिंह खामोश हुआ।

"अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊं।" शकुंतला शर्मा भी चिंतित दिखाई देने लगी।

हरी नारायण शर्मा तो खामोश बुत ही बना बैठा था कि कहे क्या और पूछे क्या।

❑❑❑
❑❑❑

सिटी नर्सिंग होम।

अर्जुन नागपाल उस वक्त उस नर्सिंग होम के बाहर खड़ा नेवी कट के छोटे-छोटे कश लगा रहा था।

उसकी निगाहें नर्सिंग होम के बड़े से नियोन साईन बोर्ड पर टिकी थीं जिस पर विभिन्न स्पेशलिस्ट डॉक्टरों के नाम तथा उनके मिलने की टाईमिंग तथा दिन लिखे थे।

"डॉक्टर अर्चना चड्ढ़ा। साईकैटरिस्ट।" अंततः एक नाम उसने पढ़ा और सिगरेट फैंकी। जूते से मसली और नर्सिंग होम के मेन फाटक की तरफ बढ़ा।

अर्चना चड्ढ़ा मनोचिकित्सक थी और इस वक्त नर्सिंग होम में उपलब्ध थी।

ट्रक से कूदने के बाद अर्जुन नागपाल ने वो ट्रक अगली ही रैडलाइट पर छोड़ दिया था और फिर जाकर 'सुलभ शौचालय' के बाथरूम में स्नान किया था।

सुलभ शौचालय के 'केयरटेकर' को उसने सौ का पत्ता थमाया था और अपने टमाटर आलूदा कपड़े वहीं बाथरूम में ही छोड़ दिए थे और केयरटेकर की ही वर्दी पहन ली थी।

केयरटेकर ने अर्जुन के महंगे कपड़ों और 100 के पत्ते की खातिर उसे अपनी वर्दी का एक जोड़ा सौंप दिया था। लिहाजा अर्जुन नागपाल जब शौचालय से बाहर निकला तो बाल-शाल काढ़कर निकला था।

उसके जिस्म पर हलके नीले रंग की वर्दी थी जिसकी शर्ट पर 'सुलभ शौचालय' का बिल्ला सिलाई द्वारा कढ़ा हुआ था। और सिर पर नीले रंग की ही नेहरू सरीखी टोपी थी। टोपी की वजह से ही उसके सिर पर बंधी पट्टी कुछ हद छिप गयी थी।

अर्जुन सुलभ शौचालय का केयरटेकर बना गेट पर पहुंचा तो दरबान ने हाथ नचाया।

"हां भईके चाहिए?"

"डॉक्टर अर्चना से मिलना है।"

"क्यों?" दरबान नख से शिख तक अर्जुन का मुआयना करता चहका"तने के बीमारी सै?"

"है तो। मेरा दिमाग हिला पड़ा है। जरा ठीक कराणा है।" अर्जुन बोला।

"जा...जा। डॉक्टर अर्चना की फीस भरेगा तो जेब भी हिल लेगीसाले पूरी तनख्वाह एक ही मुलाकात में झाड़ लेगी।"

"कितनी फीस है डॉक्टर की?" अर्जुन जेब से पर्स निकालता बोला।

"दो सौ रुपये।"

अर्जुन ने उसी पल पर्स खोला और दो सौ रुपये निकालकर दरबान की जेब में ठूंसे और चहका"दो सौ रुपया तो मैं लोगों को टिप देता हूं।"

दरबान की निगाह अभी भी उसके पर्स में भरे नोटों पर थी।

"नाम के है तोरा?" दरबान दो सौ रुपये की गर्मी महसूस करता चापलूसी भरे स्वर में बोला।

"रामलाल भड़भूजिया।"

"वाह-वाह बढ़िया नाम है...वैसे ये बता लैट्रीन के बाहर बैठकर इत्ती कमाई हो जाती है कि बटवा नोटों से भरया रहे।"

"हो तो जाती है।"

"कैसे?" दरबान की खोपड़ी घूमी।

"जिनको लैट्रीन आवे, मैं उन्हें जाणे ही न दूं। वो उछल-उछल कर मने 'एक' की जगह 'पांच' रुपया देवें...मैं बीस मांगूं तो वो 'दस' में सौदा नक्की करें और भीतर चले जावें।"

"अच्छा!" दरबान की आंखें फटीं।

"अब मैं चलूं?"

"हां हां। डॉक्टर साहिबा अंदर ही हैं।"

"थैंक्यू।" अर्जुन ने उसी पल उसकी कमीज की ऊपरी जेब में दो उंगलियां डालीं। अपने दो सौ रुपये निकाले और बोला"यो पीसे मैं शायद गलत गल्ले में डाल गयो था। माफी।"

दरबान हैरत और चिढ़ भरी निगाहों से उसे घूरने लगा जबकि अर्जुन नागपाल इत्मीनान से दो सौ रुपये अपने पर्स में ठूंसता, नर्सिंग होम के अंदर घुसता जा रहा था।

"साला। पहले उम्मीद दिखा गया। लार टपका गया। फिर जात दिखा गया।"

अर्जुन शीशे का दरवाजा धकेलता भीतर रिसैप्शन पर पहुंचा।

रिसैप्शन पर बैठी नर्स किसी हमउम्र डॉक्टर से बातों में मशगूल थी।

"एक्सक्यूज मी मैडम! डॉक्टर अर्चना से मिलता है। जरा कार्ड बनाइए।"

"जी।" नर्स उसी पल बोली"तकलीफ?"

"जी खोपड़ी खराब है, चैक करानी है।"

"व्हाट?" नर्स के साथ-साथ डॉक्टर भी उसकी तरफ मुड़ा।

"भई तकलीफ है। आपको कोई तकलीफ है। जल्दी कार्ड बनाइए।"

"जस्ट ए मिनट।" नर्स ने उसकी वर्दी पर लगा बिल्ला हिकारत भरी नजरों से पढ़ा और फिर गर्दन फेरकर डॉक्टर से बातों में मशगूल हो गयी।

"मैडम! आप कार्ड बना रही है या मैं ऐसे ही जाऊं?"

"बोला न...जरा रुकिए।" नर्स गुस्से में भड़की"देख नहीं रहें बात चल रही हैं हमारी।"

'तड़ाक' अर्जुन ने उसी पल घूमकर डॉक्टर के गाल पर जोरदार झापड़ जड़ दिया।

डॉक्टर उसी पल डर-घबराकर वहां से ही फरार हो गया।

"कहां चल रही है बातचीत...जल्दी...जल्दी।" अर्जुन उसी पल चुटकियां बजाता बोला।

नर्स उसी पल कार्ड बनाने बैठ गयी।

"अ...आपका नाम?"

"रामलाल भड़भूजिया।"

"भ...भड़भूजिया जी! दो सौ रुपये फीस देनी पड़ेगी।"

"पहले?"

"जी पहले।"

"अगर अर्चना जी ने मुझे सही सलाह न दी तो मैं अपनी फीस वापिस ले जाऊंगा जी...हां जी...पैसे कोई पेड़ में न लगते जी... एक-एक आदमी टायलेट के बाहर उछालना पड़ता जी...।" कहते अर्जुन ने दो सौ रुपये काउंटर पर रखे।

नर्स ने काफी डर-डरके दो सौ रुपये उठाए और कार्ड उसकी तरफ बढ़ाती बोली

"सीधे जाकर बाएं हो जाइए। कमरा नंबर 96।"

"बुला लीजिए अपनी बातचीत को...अभी एक गाल पर हिंदुस्तान का नक्शा बनाया है...दूसरे गाल पर वापसी पर बनाऊंगा।" कार्ड लेकर अर्जुन नागपाल लॉबी पार नजर आते गलियारे की तरफ बढ़ा।

नर्स सहमी दृष्टि से उसे घूरती रही।

अर्जुन निर्देशित कमरे के बाहर पहुंचा। उसने दरवाजा खोला और भीतर हांक लगाई

"मे आई कम इन?"

"कम इन।" भीतर से डॉक्टर अर्चना चड्ढा की अदब भरी

आवाज आई।

अर्जुन भीतर सलाम करता घुसा

"सलाम साब!"

"मिस्टर, मैं साब नहींमेम साब हूं।" डॉक्टर हँसी।

"अब मेरे कु कैसे पता चले कि आप साब है कि मेम साबअब मैंने कोई हाथ लगाकर आपको टटोला थोड़ी न।"

"श...शटअप।" डॉक्टर अर्चना उसी पल शर्म से लाल होती झेंप उठी"कहो क्या प्रॉब्लम है?"

"चींऽऽ।" अर्जुन कुर्सी घसीटता इत्मीनान से बैठा और उसे घूरने लगा।

अर्चना चड्ढ़ा 25-26 की सुंदर युवती थी जिसने सफेद डॉक्टरी कोट के नीचे गहरे हरे रंग का पंजाबी सूट पहन रखा था और कलाईयों में हरी चूड़ियां तथा माथे पर हरी बिंदिया लगा रखी थी।

कुल मिलाकर वो बेहद खूबसूरत थी।

"क...कहिए।" डॉक्टर उसे अपनी तरफ घूरता देख पहलू बदलते बोली।

"डॉक्टर आपने दीवानगी देखी है।"

"ददीवानगी?" डॉक्टर बौखला गयी"क...क्या मतलब है आपका?...क...कहना क्या चाहते हैं आप?"

"मैंने देखी है...सच पूछिए तो 'की' भी है।" अर्जुन अपनी ही रौ में बोला।

"क्या देखी है? क्या की है?" डॉक्टर अर्चना ने हाथ नचाया। पागलों को देखना उसका कारोबार था। पर यकायक कोई पागल उस पर दीवाना होकर दीवानगी पर उतर आएगा...ऐसा उसने कभी नहीं सोचा था।

अतः वो बेचारी बौखलाकर इधर-उधर देखने लगी कि शायद कोई मदद के लिए ही आ जाए।

"बाई गॉड! क्या पिक्चर थी। क्या रोल था 'अजय देवगन' का! कभी सीधा-साधा...तो कभी पागल...बाई गॉड एक डायलॉग तो आज तक नहीं भूला मैं...जब वो अक्षय खन्ना को जवाब देता है 'वकील साब! कत्ल करने के लिए कोई भी वजह जायज कैसे हो सकती है?' वाकई आप ही बताइए।" अर्जुन हाथ नचाता बोला"कत्ल करने के लिए कोई भी वजह जायज कैसे हो सकती है।"

"त...तुम दीवानगी फिल्म की बात कर रहे थे?" अर्चना ने चैन की लम्बी सांस ली।

"और नहीं तो क्याआप क्या समझीं?"

"खैर!" इस बार दीर्घ श्वास छोड़ती वो बोली"कहो तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है?"

"डॉक्टर मुझे लग रहा है मैं भी दो शख्सियतों में बंट चुका हूं। अजय देवगन की तरह Split Personality (बिखरी शख्सियत) का शिकार हूं।"

"मतलब?"

"कभी मैं अर्जुन बन जाता हूं और कभी काली शर्मा। जब अर्जुन बन जाता हूं तो मुझे याद नहीं रहता कि मैं काली शर्मा हूं और जब काली शर्मा बन जाता हूं तो यह भूल जाता हूं कि मैं अर्जुन नागपाल हूं।"

"फिर?" डॉक्टर अर्चना ने संदिग्ध नजरों से उसे घूरा।

"फिर काली शर्मा के रूप में मुझसे कत्ल होने लगते हैं।"

"अभी-अभी आपने न्यूज में सुना ही होगा कि राखी शाह का कत्ल किसी ने कर दिया। दरअसल वो कातिल मैं ही हूं। पर यकीन मानिए।" अर्जुन गले की घंटी छूता बोला"मुझे याद नहीं। मुझे कुछ याद नहीं कि राखी शाह का कत्ल मैंने ही किया है।"

"क...क्यों याद नहीं?" अर्चना चड्ढ़ा की आवाज कांपी।

"यही तोयही तो पूछने आया मैं आपसे कि मुझे क्यों याद नहीं?"

"अब मैं क्या बताऊं?" अर्चना चड्ढ़ा की नजरें नाची।

"पर मुझे महसूस हो रहा है कि राखी का कत्ल मैंने काली शर्मा बनकर किया, पर जब होश आया तो मैं अर्जुन नागपाल था। यानि भ...भूल ही चुका था कि मैंने ही राखी शाह का कत्ल किया है।"

"फ...फिर आपको याद कैसे आया कि आप ही ने काली शर्मा बनकर कत्ल किया है?"

"वो तो याद दिलवाया गया जब पुलिस ने बताया कि राखी शाह की गर्दन और घुटने पर मेरे ही फिंगरप्रिंट्स मौजूद हैं। मुझे तो फिर भी कुछ याद न आया...आप ही बताइए मैं क्या करूं?"

वो उसे देखती रही।

"यानि आपको लगता है न मैं Split Personality का शिकार हूं न?"

"ल...लगता है।" डॉक्टर अर्चना और क्या कहती बेचारी!

"आपने राज़ देखी है?"

"ये कौन है?"

"ये भी एक फिल्म है। सुपर-डूपर हिट। इसमें दीनो मारिया का एक लड़की से चक्कर होता है। लड़की मारी जाती है और फिर उसकी रूह भटकती है।" अर्जुन बेहद संजीदगी से बोला।

"तो?"

"तो मुझे लग रहा है वो रूह भटकते-भटकते मेरे अंदर आ गयी है शायदतभी मैं कभी-कभार खुद को काली शर्मा समझने लगता हूं।"

"भला फिल्मी रूह का काली शर्मा से क्या संबंध...अ आपसे क्या संबंध?"

"डॉक्टर! आप इन रूहों को नहीं जानतीं। ये कभी भी, कहीं भी, किसी के भी शरीर में प्रवेश कर जाती हैंऔर आदमी को कुछ पता नहीं चलता।"

"अ...आप कहना क्या चाहते है?"

"यही कि अगर मैं Split Personality का शिकार नहीं हूं तो फिर किसी रूह का शिकार हूं। कोई रूह यकायक मेरे अंदर हावी हो जाती है और मैं खुद को कोई और समझ बैठता हूं।"

"स...सच!" अर्चना अफसोस भरे स्वर में बोली"सच में आप तो काफी संजीदा बीमारियों के शिकार है। और आपको इल्म भी अच्छा खासा है कि आप किन बीमारियों से पीड़ित हैंऔर क्या-क्या लगता है आपको?"

"तुमको न भूल पाएंगे।" अर्जुन नागपाल संपूर्ण संजीदगी से बोला।

"ये आप मुझसे कह रहे हैं। प्लीज सर...मैं पहले से ही शादी शुदा हूं।"

"पहले कब से...स्कूल लाईफ से...या जन्म के वक्त से ही... या अपनी मम्मी के शादीशुदा के वक्त से ही।"

"ह...हट...क्या कहते हैं...मेरा मतलब पिछले 6 सालों से ही शादीशुदा हूं।"

"अच्छा...अच्छा।" अर्जुन ने सिर हिलाया।

"फिर आपने क्यों कहा तुमको न भूल पाएंगे।"

"वो फिल्म भी अच्छी चली थी। उसमें सलमान खान की याददाश्त चली जाती है। मुझे भी ऐसा लगता है...मेरी याददाश्त कभी चली जाती है। कभी आ जाती है। कभी अर्जुन नागपाल की याददाश्त चली जाती है तो मैं खुद को काली शर्मा समझने लगता हूं। जब काली शर्मा की याददाश्त आती है तो भूल जाता हूं कि मैं अर्जुन नागपाल

भी हूं...।"

"मिस्टर!" तभी अर्चना चड्ढ़ा उसका कार्ड देखती बोली"मेरा ख्याल है आप इस वक्त भूल बैठे हैं कि आपका नाम रामलाल भड़भूजिया है।"

"देखा देखा...मैंने कहा न...मेरी याददाश्त की बत्ती दिमाग में कभी जल उठती है और कभी ब्लैक आऊट हो जाता है। मैं भूल जाता हूं मैं क्या हूं और क्या होऊंगा...प्लीज मुझे ठीक करिए मैडम! मेरा इलाज कीजिए डॉक्टर...प्लीज।" अर्जुन ने पूरी संजीदगी से हाथ जोड़कर निवेदन किया।

अर्चना चड्ढ़ा संजीदगी से उसका चेहरा निहारने लगी।

अर्जुन नागपाल पूरी तरह बेवकूफ नजर आया उसे। वो अपनी किसी खास योजना के तहत नाटक करता लगा उसे।

"आप ऐसे क्या टुकुर-टुकुर देख रही है मैडम।"

"दरअसल आप फिलमेरिया के शिकार हैं।"

"फिलमेरिया?"

"जी। यानि फिल्मी मलेरिया। फिल्में बहुत देखते हैं आप... लिहाजा उसी के ही प्रभाव में कभी खुद को अजय देवगन समझ बैठते हैं। कभी सलमान खान...फिल्में देखना बंद कीजिए। बीमारी खुद-ब-खुद ठीक हो जाएगी।" फिर वो यह रिपोर्ट अर्जुन के कार्ड पर लिखने लगी।

अर्जुन एकटक उसे देखता रहा।

एकाएक उसके दोनों हाथ सिर पर गए और चेहरा विकृत होने लगा। वो सिर झुकाए अपना सिर दोनों हाथों से दबाने लगा।

"मिस्टर रामलाल!" अर्चना उसके कार्ड पर लिखती बोली"मैं यह तो नहीं जानती कि आपने राखी शाह का कत्ल किया है तो क्यों किया है...पर यह तय है कि अगर आप अपनी इस वहशियत को Split Personality का नाम देंगे तो भी अजय देवगन की तरह पकड़े जाएंगे। फंस जाएंगे। दीवानगी में अजय देवगन की यह चाल भी पकड़ी जाती है। रही बात 'आत्मा' वाले चक्कर की तो मैडिकल साइंस और इंडियन कानून इन आत्माओं-रूहों को नहीं मानता। अतः आपकी यह थ्यौरी भी आपको बेगुनाह साबित न कर पाएगी। अब आती है अमनीशिया वाली बात...तो इस संदर्भ में आपको बता दूं कि याददाश्त दिमाग में आती-जाती नहीं है वो या तो पूरी तरह चली जाती है या पूरी तरह वापिस लौट आती है। सो आपकी यह थ्यौरी भी पिट जाएगी कि आपके दिमाग में कभी अर्जुन नागपाल वाली, तो कभी

काली शर्मा वाली याददाश्त आती-जाती रहती है। तात्पर्य यह कि आपका कुछ नहीं हो सकता...अगर आप वाकई किसी ऐसी भयानक बीमारी से पीड़ित हैं तो यकीनन मैडिकल साइंस में उस बीमारी का कोई नाम नहीं है। रही बात इंडियन कानून की...तो वो भी आपकी इन फिल्मी दलीलों में विश्वास करने वाला नहीं...लिहाजा आप एक लाईलाज बीमार हैं जिसका मैडिकल साइंस में तो कोई उपचार नहीं. ..और कानून की नजर में बस एक ही उपचार है...और वो उपचार है...।" एकाएक डॉक्टर अर्चना रुक गयी। मानो जो कहना चाहती थी, वो कहने से डर रही हो।

"और वो उपचार है सजा-ए-मौत। दफा 302।" अर्जुन उसके अनकहे शब्द बोलता फुंफकारा"फांसी। बोल! बोलती क्यों नहीं।"

डॉक्टर अर्चना ने एकाएक घबराकर उसकी तरफ चेहरा उठाया तो उसकी आंखें भय से फटीं।

अर्जुन खूंखार आंखों से उसे घूर रहा था। उसकी आंखे अंगारों की तरह लाल थीं और जबड़े भिंचे पड़े थे।

डॉक्टर अर्चना उसी पल उठी और उसने दरवाजे की तरफ भागना चाहा कि

अर्जुन उसकी तरफ इंकार में उंगली हिलाता फुंफकारा

"डॉक्टर! अगले ढाई घंटों में तू मरने जा रही है। मैडिकल साइंस की नजर में तू पता नहीं बीमार है या नहीं...तेरा कोई उपचार है या नहीं...पर काली के कानून में तेरा एक ही उपचार है और वो है... सजा-ए-मौत। तू अगले दो घण्टों बाद मरी पड़ी होगी। दो घंटे का वक्त इसलिए दिए जा रहा हूं...ताकि बचा सकती है खुद को तो बचा. ..बुला सकती है तो किसी को बुला...मरवा सकती है तो मुझे मरवा अभी 6-40 हुए हैं। ऐन 8-40 तक तू मरी पड़ी होगी। जैसे कंचन, रीटा, मोना...मरी। जैसे राखी शाह मरी...।"

"नहींऽऽऽ।" अर्चना की चीख पूरे नर्सिंग होम में गूंजी"तुम्हारी मुझसे क्या दुश्मनी है?"

"काली की औरत जात से ही दुश्मनी है। काली तब तक उन औरतों को मार गिराता रहेगा जब तक औरतें उसे पागल, विक्षिप्त लाईलाज घोषित करती रहेंगी। मैं कोई पागल नहीं...मैं कोई विक्षिप्त नहीं...सब तुम छोकरियों का ही किया धरा है...मैं एक लड़की को चाहता था...पर वो मुझे पागल सनकी हत्यारा कहती है...नहीं छोडूंगा. ..हसीनों की यह कौम ही न छोडूंगा...जिसने बड़े-बड़े सूरमाओं को निकम्मा कर रखा है...जमाने ने मारे जवां कैसे-कैसे...हंसी खा गई

जवां कैसे-कैसे...।"

अर्चना ने उसी पल अपना तामझाम समेट कर वहां से निकलना चाहा कि

"बैठ। बैठ।" अर्जुन खड़ा होकर उसे बिठाता बोला"पुलिस बुला। फौज बुला...या जिसे चाहे बुला। तू अब नहीं रहेगी। 8-40 तक ही वक्त है तेरे पास।"

अर्चना चड्ढा के होंठ फड़फड़ाए पर शब्द न निकले।

उसकी पुतलियां जैसे दाएं-बाएं टकटकी लगाकर कांपने लगीं।

अर्जुन ने वो कार्ड खींचा और उसे घूरता हुआ बाहर निकला।

उस मासूम को समझ न आया कि उसका कसूर क्या है? फिल्मों की बातें करने वाला कॉमेडियनयकायक इतना खूंखार कैसे हो गया है? क्यों हो गया है?

वाकईयह तो सबसे बड़ा विक्षिप्त है।

विक्षिप्त तो अपने दिमाग के कब्जे से निकलकर कोई कांड करता है पर यह तो अच्छा खासा चैलेंज देकर मर्डर करता है। अपने दिमाग को कब्जे में रखकर ही कांड करता है।

उधर अर्जुन निकल गया और वो फोन पर झपटी।

"पापा। पतिदेव।" अगले ही पल वो कांपती खड़खड़ाती उंगलियों से फोन डायल करने लगी।

"ह...हैल्लो! पापा।" लाइन मिलने पर वो हकलाई।

"अर्चना, के बात से?" उधर से चिरपरिचित टोन सुनाई दी। लहजा सुनाई दिया।

"पापा! वो धमकी दे गया है। ववो मुझे 8-40 पर मार डालेगा जल्दी पहुंचिए।"

"क...क्या...कौन धमकी दे गया म्हारी बिटया को? बच्चू तिवारी की बिटिया को?" उधर से बच्चू तिवारी की चिंतित आवाज सुनाई दी।

"वो पापा...अर्जुन नागपाल...नहीं काली शर्मा...नहीं रामलाल भूड़भूजिया...वो मुझे दो घंटे तक की जिंदगी दे गया है पापा।"

"क्या बके जा रही है छोरी। क...काली शर्मा!" इस नाम पर बच्चू तिवारी चौंका। उछला।

"ओ पापा...।" फिर अर्चना चड्ढा अर्जुन से हुआ वार्तालाप रो-रोकर बयान करने लगी।

"तू ईब नर्सिंग होम से नाहीं लिकड़ियो...मैई (मैं) देखता हूं वो छोरा...कैसे म्हारी छोरी पर हाथ डाले है...मैं अबी के अबी थारे धोरे

पहुंचूं हूं।" उसी पल दूसरी तरफ से संबंध विच्छेद कर दिया गया।

अर्चना चड्ढ़ा दूसरा नंबर डायल करने लगी।

"जरा ए०सी०पी० चड्ढ़ा से बात कराइए।" लाइन मिलने पर वो कंपकंपाई।

"आप कौन?"

"उनकी बीवी। मिसेज चड्ढ़ा।"

"होल्ड ऑन मैडम।" दूसरी तरफ से अदब से कहा गया"आप इतनी घबरा क्यों रही हैं?"

जवाब में अर्चना चड्ढ़ा की रूलाई छूट गयी।

उधर से फौरन लाइन ए०सी०पी० चड्ढ़ा को दी जाने लगी।

"अर्ची...क्यों रो रही हो?" उधर से ए०सी०पी० चड्ढ़ा की बौखलाई आवाज आई।

"सुनो जी! जल्दी आइए...मेरे पास 8-40 तक की सांसे लिखी हैं...।"

"क्या कह रही हो जान...बात क्या है?" ए०सी०पी० चड्ढा फिक्रमंद हुआ।

"वो जी मुझे धमकी दे गया है जी वो विक्षिप्त हत्यारा...।" फिर रो-रोकर अपना दुःखड़ा सुनाने लगी।

"डोंट वरी डार्लिंग। आज ही दिल्ली से उस विक्षिप्त हत्यारे को खत्म करने का ऑर्डर निकला है। और आज रात 8-40 तक ही उस हत्यारे का क्रियाक्रम कर दिया जाएगा...मेरा विश्वास करो। आज रात अर्जुन जिंदा नहीं बचेगा...मुझे पता है वो नालापुर थाने से भाग निकला है...पर उम्मीद नहीं थी कि वो सीधा जाकर मेरे ही घर की घंटी बजा देगा...मैं पहुंच रहा हूं डार्लिंग...फिलहाल वहीं रहो।"

"ज...जी।" रोते-रोते अर्चना चड्ढा ने हामी भरी।

अब इसे अर्जुन की बदकिस्मती ही कहा जाएगा कि वो गलती से उस घर की घंटी बजा गया जिसकी आवाज सीधा एक मंत्री के घर और एक पुलिस कमिश्नर के घर सुनी गई।

कुल मिलाकर अर्जुन नागपाल ने पूरा जहां अपना दुश्मन बना डाला था।

एक 100 करोड़ का अहम सवाल और भी था।

वो बेगुनाह था या गुनहगार। बेगुनाह तो वो हरगिज ही न था। अब सवाल यह उठता था कि वो यह गुनाह ठंडे दिमाग से सोच-समझकर कर रहा था या किसी अंजानी साजिश के तहत ही उससे यह गुनाह करवाए जा रहे थे?

तात्पर्य यह कि अर्जुन की जिंदगी इस बार ऐसे रहस्यमयी गुंजल में जा लिपटी थी जिससे मुक्ति मिलना संभव नहीं था। आसान नहीं था।

अब पता नहीं उस सिरफिरे ने किस योजना के तहत अर्चना चड्ढा की जिंदगी खत्म कर डालने की घोषणा कर डाली थी। बाकायदा चैलेंज भी दे डाला था। जो पूरा भी हो पायेगा या नहीं.. .यह तो वक्त और भविष्य के ही हाथ में था।

❑❑❑

❑❑❑

देवसिंह की जीप जिस समय जगदंबा अपार्टमैंट के बाहर पहुंची तो उसे दो कांस्टेबल अंबैसडर के गिर्द पहरा देते नजर आए और एक सब-इंस्पैक्टर वहीं परिसर में ही चहलकदमी करता नजर आया।

अंबैसडर के गिर्द चॉक से रेखा खींच दी गयी थी जिससे यही साबित होता था कि अंबैसडर जहां खड़ी थी वहीं खड़ी थी और उसे इंच भर भी हिलाया नहीं गया है।

इंस्पैक्टर देवसिंह जीप से उतरा तो सब-इंस्पैक्टर दयाल उसके पास आ लगा।

शकुंतला शर्मा भी पिटे चेहरे के साथ जीप से उतरी। और हरी नारायण शर्मा की सिट्टी-पिट्टी भी गुम हो रखी थी।

देवसिंह ने जेब से अंबैसडर की चाबी निकाली जो वो खुद ही स्टार्ट अंबैसडर से निकालकर भागा था।

"लीजिए मैडम! डिग्गी खोलिए।" इस बार देवसिंह ने इकलौती चाबी शकुंतला की तरफ बढ़ाई।

उस एक ही चाबी से अंबैसडर के तमाम लॉक ऑपरेट होते थे।

"आप खोलिए।" शकुंतला शर्मा तनिक हिचकिचाई।

"नहीं! गाड़ी आपकी। चाबी आपकी। आप ही खोलिए।"

शकुंतला शर्मा ने अनमने ढंग से वो चाबी थामी और कार की तरफ बढ़ी।

"एक बात और।" पीछे से देवसिंह बोला"अभी भी आप अगर कानून को बता दें कि डिग्गी में क्या है, तो मैं आपसे वादा करता हूं कि कानून आप से नर्मी से पेश आएगा।"

एकाएक चाबी थामती शकुंतला शर्मा ठिठकी फिर देवसिंह की तरफ मुड़ती बोली

"जयसिंह यह भी तो मुमकिन है कि मेरी गाड़ी की दूसरी चाबी किसी ने हथिया ली हो। चुरा ली हो...और डिग्गी में कुछ प्लांट कर

दिया हो। यू नो कि हर गाड़ी के साथ दो चाबियां मिला करती हैं। हर ताले की दो ही चाबियां होती हैं।"

"हां।" देवसिंह यकायक मुस्कराया"आपने कानून को गच्चा देने के लिए यह दलील अभी-अभी सोची, तभी, जब चाबी आपके हाथ में आई। अगर आप यह दलील पहले देतीं तो मैं शायद आपकी बात पर तनिक विश्वास कर भी लेता...पर अब नहीं...अब नहीं।"

"मैंने गलत क्या कहा?"

"गलत तो नहीं कहा, पर गलत वक्त पर जरूर कहा। फिर भी मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि वापसी पर पुलिस फोर्स आपकी हवेली में चलेगी। वहां की तलाशी लेगी। अगर गाड़ी की चाबी हमें आपकी हवेली में मिल गयी तो आपकी चोरी पकड़ी जाएगी, अन्यथा मैं यह कुछ देर के लिए मान लूंगा कि वाकई आपकी गाड़ी की दूसरी चाबी किसी और ने चुरा ली है।"

"तुम्हे यकीन है इतनी बड़ी हवेली में तुम इस गाड़ी की दूसरी चाबी ढूंढ लोगे?"

"मैं जानता हूं मैडम, घर अगर बड़ा हो...तो वहां छोटी-छोटी चीजों की हिफाजत के लिए एक निश्चित जगह मुकर्रर कर दी जाती है। मुझे उम्मीद है आपकी गाड़ी की दूसरी चाबी हवेली के ही किसी 'कीबोर्ड' पर ही टंगी होगी, जहां हवेली के और भी तालों की चाबियां टंगी होंगी।"

"हूं।" शकुंतला शर्मा ने दांत भींचे फिर गुर्राई"ऐसा भी तो हो सकता है कि उसी कीबोर्ड से ही चाबी किसी ने उड़ाई हो और डिग्गी में कुछ रखने के पश्चात् उसी कीबोर्ड पर ही जाकर वापिस टांग दी हो।"

"यह काम तो घर का भेदी ही कर सकता है। और जहां तक मैं जानता हूं। आप उस हवेली में अकेली ही रहती हैं।"

"फिर भी कई नौकर-चार हैं। कई सिक्योरिटीमैन हैं। यह काम कोई भी कर सकता है।"

"होने को तो कुछ भी हो सकता है मैडम...अभी शाम के छः बजे हैं। दिसम्बर का महीना है। अंधेरा हो चुका है। ठंड भी बढ़ती जा रही है। मगर फिर भी अभी सूरज निकल सकता है और धूप की गर्मी पड़ सकती है। आपको पसीना भी आ सकता है।"

"शटअप यू रास्कल!" एकाएक गुर्राती हुई शकुंतला शर्मा डिग्गी के नजदीक पहुंची और लॉक खोलने लगी।

देवसिंह सब-इंस्पैक्टर दयाल के साथ पीछे-पीछे पहुंचा।

'धड़ाक' ताला खुलने के बाद शकुंतला शर्मा ने डिग्गी का ढक्कन ऊपर उठाया।

"नोऽऽऽ।" अगले ही पल भीतर कारपेट में लिपटी लाश देखकर उसकी चीख निकली और एक हाथ हैरत से मुंह पर ढक्कन की ही तरह चिपक गया।

'चींऽऽ।' तभी वहां एक अम्बूलैंस रुकी और उसमें से निकलता एक शख्स उनकी तरफ भागा।

"लीजिए मैडम!" देवसिंह लाश की तरफ हाथ नचाता बोला"जिसका डर था वही निकला। लाश ही निकली।"

"पर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। ये सब मैंने नहीं किया।"

"हवलदार!" देवसिंह उसके शब्दों को नजरअंदाज करता बोला"लाश निकालो।"

दोनों हवलदार लाश निकालने के लिए आगे बढ़े। लाश स्टपनी के ऊपर पड़े कारपेट में ही फोल्ड की गयी थी और कद-बुत में काफी छोटी नजर आ रही थी।

मृतक शायद छोटे कद का था। कारपेट खून से सना पड़ा था। कारपेट में से ही खून की बूंदें अब डिग्गी के बाहर गिरती देखी गयी थीं।

उधर अंबूलैंस में से निकला शख्स देवसिंह की तरफ बढ़ा फिर उसने एक मैडिकल रिपोर्ट देवसिंह को थमाई।

देवसिंह ने यकायक वो रिपोर्ट लपकी। उसे पढ़ा तो यकायक ही उसकी आंखें कटोरियों में बड़ी होती गयीं।

उधर दोनों हवलदार कारपेट को सड़क पर रोल करते खोलते जा रहे थे।

"मैडम!" तभी देवसिंह फुंफकारा"आपके बोनट और डिग्गी में पाया गया खून एक ही ब्लड ग्रुप का है। अभी भी बता दीजिए कि आपने किसकी हत्या की है?"

"नहींऽऽ।" शकुंतला शर्मा जोर से चीखी।

पुलिस वाले अंदाजा न लगा पाए कि वो एक ही ब्लड ग्रुप का पता चलने की वजह से चीखी है या फिर वो बताना नहीं चाहती कि उसने किसे रौंदा है।

सभी हकबकाई निगाहों से शकुंतला शर्मा को देखने लगे जबकि शकुंतला की निगाहें कारपेट में से निकलने वाली लाश पर ही थीं।

एकाएक ही कारपेट पूरा खुला तो वही लाश नजर आई जिसने अर्जुन को खून दिया था। वो बच्चा...जो अर्जुन की मारुति का

निशाना बना था। जिसका चेहरा कुचला जा चुका था।

"ओह माई गॉड!" देवसिंह यकायक बोला"ये तो वही बच्चा है जो जानकी दास हॉस्पिटल में था। यानि आपने ही इसे कुचला था और हमखामखाह अर्जुन नागपाल को दोषी करार दे रहे थे। पर ये तो हॉस्पिटल में था। फिर इसकी लाश आपकी डिग्गी में कैसे पहुंच गयी?" देवसिंह अपने ही अंदाजे लगाता बोला।

पर शकुंतला शर्मा कुछ न बोली और फटी आंखों से लाश की तरफ बढ़ी।

पंडित हरी नारायण शर्मा भी हकबकाई मुद्रा में मुंह खोले लाश की तरफ बढ़ा।

वहां खड़े पुलिस कर्मी हैरान हो गए कि जो लाश पहचान में ही नहीं आ पा रही है उसके भीतर क्या देख, दोनों को एकाएक लकवा मार गया है।

देवसिंह को उस लाश की पोशाक की बाबत जगदीश मुखी ने बताया था। तभी वो यकायक पहचान गया था कि वो वही लाश है जिसने लाश बनने से पहले अर्जुन को खून दिया था। पर अभी तक उस लाश की शिनाख्त नहीं हो पायी थी, क्योंकि चेहरा ही इस कदर कुचला पड़ा था कि शिनाख्त मुमकिन ही नहीं थी। लेकिन अब शकुंतला शर्मा के हाव-भाव देख साफ लग रहा था कि वो उस लाश को पहचानती है। अच्छी तरह जानती है।

सो देवसिंह भी शकुंतला शर्मा की तरफ सिकुड़ी निगाहों से देखने लगा। पंडित हरी नारायण की हैरानी भी उसे और हैरान करती जा रही थी।

"कालीऽऽ! कालीऽऽ!" अगले ही पल शकुंतला शर्मा सड़क पर पड़ी लाश की छाती पर धम्म से गिरी और फफक-फफक पर रोने लगी।

"व्हाट!" दयाल उछला"य...ये बच्चा काली शर्मा है। शकुंतला शर्मा का बेटा।"

"इ...इ...इसे किसने मारा? किसने मारा?" पंडित हरी नारायण लाश की तरफ लम्बी बांह करता देवसिंह की तरफ मुड़ा।

देवसिंह का सांप सूंघ गया।

"देवसिंह! बोलोबोलो किसने मारा मेरे काली को।"

"त...तेरा काली? तेरा कौन लगता है यह बच्चा?"

"पौता है मेरा...बहू है यह मेरी।"

"मैं कैसे मानूं तू सच बोल रहा है?" देवसिंह ने बौखलाकर मुंह

फेरा।

"देवसिंह! मैंने तुझे सफाई देने के लिए नहीं कहा कि यह मेरा पौता है...मैने पूछा इसे किसने मारा?"

"शायद तेरी बहू ने ही। जो अब टसवे बहा रही है।"

"देवसिंह!" पंडित हरी नारायण एकाएक देवसिंह के गिरेहबान पर झपटा"मेरे सब्र का इंम्तिहान न ले...मैं बूढ़ा जरूर हूं...पर अभी भी मेरी हड्डियों में इतना फौलाद है कि तेरे जैसे सैकड़ों देवसिंह पिघाल के रख सकता हूं।"

"गिरेहबान छोड़।" देवसिंह ने उसके हाथ अपने गिरेहबान से झटके"ये बता तुम पहचान कैसे गए कि यह काली शर्मा की लाश है?"

"देख। इसके दाएं पैर की तरफ देखउस पांव की तीसरी उंगली दूसरी उंगली से बड़ी दिखाई दे रही है। इसी निशानी से ही पहचाना कि यह ही हमारा काली शर्मा है।"

"मैं कैसे मान लूं तू सच कह रहा है। तुम दोनों सचमुच में रो रहे हो?"

"क्या!" पंडित हरी नारायण का मुंह खुला"तुझे अभी भी शक है यह हमारा काली शर्मा नहीं है। हम एक्टिंग कर रहे हैं। नौटंकी खेल रहे हैं।"

"हाट।" देवसिंह ने उसे परे खदेड़ा"अरे! मैं क्या जानता नहीं कि शकुंतला शर्मा पहले से ही तुम्हारे कान भर रही थी कि तुम दोनों ने हमें यानि कानून को काली शर्मा की हकीकत नहीं बतानी कि कौन है काली शर्मा? दिखता कैसा है? उसकी उम्र कितनी है...वगैरह... वगैरह। ये तो अब शकुंतला जी ने जैसे ही यह लावारिस लाश देखी। उसकी उंगली देखी तो रोना रोने बैठ गयी कि यही उनका काली शर्मा है। पीछे-पीछे तू भी नासिर हुसैन की तरह टसवे बहाने लगा। काली शर्मा जैसा निर्मम हत्यारा भला 14-15 साल का बच्चा कैसे हो सकता है! सब जानता हूंमैडम ने यह नौटंकी इसलिए शुरू की ताकि कानून को एक बार फिर गुमराह कर सके। कानून इस लाश को अब काली शर्मा समझेगा तो शकुंतला जी पर कभी भी आरोप न लगा सकेगा कि इन्होंने अपने बेटे की हत्या की और उसकी लाश डिग्गी में उठाए-उठाए घूमती रही।"

"तू कहना चाहता है लाश के पैर की निशानी गलत है।"

"लाश के पैर की निशानी तुम्हें नजर आ गयी तो जैसे बहाना मिल गया कि इसे काली शर्मा साबित कर सकते हैं। पैर की जगह

तुम्हें लाश के किसी हाथ में छः उंगलियां दिखाई देतीं तो तुम यह प्रलाप करने लगते कि तुम्हारे काली शर्मा के हाथ में छः उंगलियां ही थीं। हटकोई और बहाना सोचो।"

"देवसिंह।" पंडित हरी नारायण उसके मुंह पर हाथ लहराता बोला"आंखें होते अंधा मत बन। तू अच्छी तरह जानता है जब यह घायल बच्चा हॉस्पिटल में अर्जुन को खून दे रहा था तो उस वक्त शकुंतला शर्मा तो कहीं भी आसपास नहीं थी। फिर भला वो इस बच्चे की कातिल कैसे हो गयी!"

"तू भी बच्चे मत पढ़ा पंडित।" देवसिंह फुंफकारा"मत भूल जिस वक्त बच्चा कार द्वारा कुचला गया था, तो उसी वक्त के दौरान ही शकुंतला शर्मा भी दिल्ली के लिए निकली हुई थी। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि शकुंतला शर्मा ने अचानक इस बच्चे को सड़क पार करता देख लिया हो...और उड़ा डाला हो। लाश हासिल करने की नीयत लिए तो यह घर से निकली ही थीं। रास्ते में बच्चा मिला तो इसने बच्चा ही उड़ा दिया...यही सोचकर कि कानून के पास न तो काली शर्मा की कोई तस्वीर है। न ही बर्थ सर्टीफिकेट। उसकी तो सूरत से भी नवाकिफ है कानूनफिर भला कानून कैसे जान पाएगा कि असली काली शर्मा बच्चा था या बालिग। लिहाजा इसने बच्चे को ही काली शर्मा बनाने की सोच डाली। अब चूंकि इस एक्सीडैंट का अभी तक कोई चश्मदीद गवाह सामने नहीं आया तो लिहाजा हम भी कूद कर इसी नतीजे पर पहुंच गए कि यह एक्सीडैंट अर्जुन नागपाल ने किया हो सकता है। पर हकीकत अब समझ आ रही है कि अर्जुन ने यह घायल तड़पता बच्चा सड़क पर एड़ियाँ रगड़ता देखा होगा तो एकाएक ही लेन बदल लिया होगा। वाकई, अचानक, सड़क पर बच्चा पड़ा देख उसकी आंखों के आगे पल भर को अंधेरा छा गया होगा और इसी दौरान ही...उसकी कार दूसरे लेन में घुसते, ट्रक से भिड़ गयी होगी।"

"यानि अर्जुन नागपाल ने मेरे काली की हत्या की है?"

"देखदेख। जरा सी हवा लगी नहीं कि आग भड़क गयी सीने में। पंडितजीएक्सीडैंट शकुंतला शर्मा ने ही किया है। पर वो मुकद्दर का मारा फंस गया।" देवसिंह बोला।

"फिर घायल काली शर्मा...?"

"अभी साबित नहीं हुआ कि मरने वाला बच्चा काली शर्मा है। इसलिए फिलहाल इसे 'बच्चा' ही संबोधित करे। कोई नाम न दें।" देवसिंह ने उन्हें लताड़ा।

"चलो घायल बच्चे को जगदीश मुखी हॉस्पिटल में ले गया। वहां उसने अर्जुन को खून दिया...और मर गया। उसकी लाश तो हॉस्पिटल में थी तब...फिर शकुंतला ने वो लाश अपनी डिग्गी में कैसे डाल ली?"

"क्या पता डाल ली या अपने किसी गुर्गे से अपनी ही सफेद अंबैसडर में बाद में डलवा ली। जब शकुंतला जी तुम्हारे ऊपर पहुंची थीं तो ये जरूर डिग्गी का ताला खुला छोड़ आई होगी। पीछे इनका आदमी किसी तरह हॉस्पिटल से लाश बरामद करता, उसे डिग्गी में रखता निकल गया होगा।"

"शाबाश। चित भी तेरी, पट भी तेरी और टुल्ला भी तेरे बाप कालकीर खींच कर शकुंतला को ही गुनहगार साबित करना है और वो तू कर रहा है। याद कर जब हम गुड़गांवा के लिए निकले थे, तो क्या हमने शकुंतला को डिग्गी लॉक करते देखा था?"

"नहीं।" देवसिंह बौखला गया।

"अब यहां यह दलील दे...कि शकुंतला का जो आदमी पहले से खुली डिग्गी में लाश रख गया...उसी के ही पास जरूर डुप्लीकेट चाबी रही होगी, लिहाजा लाश रखने के बाद वो डिग्गी लॉक करता निकल गया होगा।"

"तू शकुंतला जी की इतनी पैरवी क्यों कर रहा है?" देवसिंह गुर्राया।

"क्योंकि तू अर्जुन के अहसानों तले गिरवी पड़ा है। अब जब और कुछ न सूझे तो कहने लगना...कि शकुंतला जी बच्चे को उड़ाने के बाद दूर ही कहीं खड़ी हो गयी। फिर उन्होंने अर्जुन की कार का एक्सीडेंट होते देखा। फिर पुलिस आई तो अर्जुन और बच्चे को शकुंतला ने हॉस्पिटल जाते देखा। ये भी पीछे-पीछे निकल गयी। फिर इन्होंने अर्जुन को खून चढ़ते देखा और बच्चा मरते देखा। बाद में मौका लगते ही यह बच्चे को हॉस्पिटल से चुराती मेरे यहां पहुंच गयी।"

"तू कुछ भी कह ले पंडित...पर मैं यह कतई नहीं मान सकता कि 14 साल का यह अबोध काली शर्मा जैसा विक्षिप्त हत्यारा हो सकता है। जवान लड़कियों का खूनी हो सकता है। इश्क में चोट खाया वो शख्स हो सकता है जो औरत जात को ही मिटा डालने पर तुला है।" देवसिंह गरजा।

"हं हं!" पंडित हरी नारायण हँसा "विक्षिप्त हत्यारा तो ये कभी था ही नहीं। और अब तो तुम्हीं ने साबित कर दिया कि वो विक्षिप्त

अर्जुन ही है। रही बात विक्षिप्त हत्यारे को काली शर्मा कहने की तोवो तो शकुंतला ने जानबूझकर अफवाह उड़ा रखी थी कि जवान लड़कियों की हत्याएं इनका काली शर्मा ही कर रहा है।"

"पर क्यों उड़ा रखी थी यह अफवाह?"

"कानून का मजाक उड़ाने के लिए। कानून के मुंह पर तमाचा, जमाने के लिए। साथ ही अपना राजनैतिक स्वार्थ सिद्ध करने के लिए। अब कानून को जब पता चल ही गया है कि काली शर्मा 14 साल का मासूम बच्चा है तो भला कानून कैसे इसे विक्षिप्त हत्यारा डिक्लेयर कर सकता है। करेगातो मेरा ख्याल है कि कानून का सबसे ज्यादा मजाक उड़ेगा।"

"यही तो मैं भी कहना चाहता हूं कि बच्चे को काली शर्मा का नाम देकर तुम हमें बरगला रहे हो। बहका रहे हो। दरअसल काली शर्मा कोई अच्छा खासा बालिग आदमी है।"

"अच्छा! तो यह अब तू हमें बताएगा कि हमारा काली शर्मा कितनी उम्र का था?"

"देवी शर्मा कितनी उम्र का थाजब मरा?" देवसिंह चिंघाड़ा।

"28 बरस का।"

"देवी शर्मा आज जिंदा होता तो 33 बरस का होता। फिर उसका छोटा भाई 14 वर्ष का कैसे हो सकता है! दो भाइयों की उम्र में उन्नीस साल का फर्क कैसे हो सकता है!"

"अब ये तो मियां-बीवी की मर्जी है वो जब चाहे बच्चा पैदा करें। जब चाहे एहतियात बरतें...अब ये भी हर मियां-बीवी को तुमसे पूछना पड़ेगा। कानून की सलाह लेनी पड़ेगी कि वो अभी बच्चा पैदा करें या रहने दें।"

"पंडित! धूल मत झोंक मेरी नजर में...तू अच्छी तरह जानता है कि इस सवाल के पीछे मेरा क्या मंतव्य छिपा है।"

"यही न कि दो बच्चों के बीच 19 साल का फर्क जंचता नहीं। तेरे हिसाब से काली की उम्र भी आज की तारीख में 28-30 साल होनी चाहिए। लिहाजा हम इस बच्चे को काली शर्मा कहकर गुमराह कर रहे हैं। यही कहना चाहता है न?"

"हां।" देवसिंह ने सिर हिलाया।

"पर बेटा, कभी-कभी मिया-बीवी फंस जाते हैं। गर्भ-निरोधक चूक जाता है। खामखाह ही गर्भ धारण हो जाता हैऔर गलती से बच्चा पैदा हो जाता है। यूं समझ लेकाली शर्मा शकुंतला और बलबीर की चूक का नतीजा था। तभी पैदा हुआ इतनी लेट। और

कुछ?"

"हूंऽऽ" देवसिंह हांमी में सिर हिलाने लगा"समझ गयाकोई गहरी चाल है यह। तेरी बहू तो खेलीखाई है ही...पर देख रहा हूं तू भी कम घुटा हुआ नहीं है। तू भी चालू रकम है बुढ़ऊ।"

"और अब सुन मेरी"पंडित हरी नारायण शर्मा, देवसिंह की छाती चेतावनी के अंदाज में ठोकता बोला"आज की तारीख में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है अर्जुन नागपाल। अर्जुन को मेरे कहर से अगर खुदा भी बचा जाए न...तो मेरा नाम बदल देना। मैंने उसे बेटा माना. ..और वो मेरा पौता खा गया। मैं उस आदमखोर को नहीं छोडूंगा. ..हरगिज नहीं छोडूंगा।" कहता पंडित, देवसिंह को वहीं छोड़ अपने फ्लैट की तरफ निकल गया।

"पंडित! अर्जुन मेरी नजर में भी मुजरिम है...पर उससे यह नतीजा नहीं निकल जाता कि तेरी बहू दूध की धुली हैऔर यह बच्चा वाकई में ही तेरा पौता काली शर्मा है।"

"मुझे तेरे आगे नतीजा नहीं निकालना। मुझे तो अब अर्जुन को ही किसी नतीजे पर पहुंचाना है और वो नतीजा हैमौत। मौतमौत।"

देवसिंह जैसा राजपूत पहली बार पंडित हरी नारायण की लुंज-पुंज नजर आती शख्सियत का शिकार हुआ।

खौफ उसके चेहरे पर तारी था, पर वो कर भी क्या सकता था।

'ट्रिन...ट्रिन...ट्रिन।' तभी उसका मोबाइल बजा।

उसने देखा तो फोन पुलिस कंट्रोल रूम से आया था।

"मुबारक हो सर!" लाईन मिलने पर उसे हरीओम की व्यंग्य करती आवाज सुनाई दी"अर्जुन नागपाल जी ने अर्चना चड्ढा की हत्या की सुपारी निकाली है। वो 8-40 तक मरने वाली है और गुड़गांवा का पूरा सरकारी निजाम अर्जुन की पागल कुत्ते की तरह खोज कर रहा है।"

"व्हाट?" देवसिंह का मुंह भक्क से खुला"य...ये क्या कह रहा है हरीओम?"

"और मिसेज अर्चन 'लोकमंच' के नेता बच्चू तिवारी की सुपुत्री है और ए०सी०पी० चड्ढा की बीवी है...उम्मीद है कल का सूरज अर्जुन जी को नसीब नहीं होगा।"

"तो दे धक्का न साले को...मैंने कोई ठेका ले रखा है साले का।" चिंघाड़ते देवसिंह ने फोन ऑफ कर दिया।

"मैं उसके दुश्मन जमाने से तो लड़ सकता हूं पर उसके नसीब से नहीं लड़ सकता।" अंततः इसी बड़बड़ाहट के साथ वो अपनी जीप

की तरफ बढ़ा"शकुंतला जी! आप चलेंगी अगर नौटंकी खत्म हो गयी हो तो।"

लाश पर काफी देर तक विलाप करती शकुंतला शर्मा का चेहरा घायल सिंहनी की तरह देवसिंह की तरफ घूमा, वो गरजी

"देवसिंह! सच तूने माना नहीं। और झूठ मैंने कहना नहीं... यकीन रखआज के बाद अर्जुन की सबसे बड़ी दुश्मन मैं ही हूं।"

"देवीजी! आपका वो दुश्मन सिटी नर्सिंग होम में 8-40 पर अर्चना चड्ढा को उड़ाने जा रहा है। आपको मौका लगे तो आप उसे उड़ा दीजिएगा। रही बात मेरीअगर अर्जुन यह हत्या कर गुजरा तो यकीन रखिएगाअर्जुन नागपाल को मैं ही उड़ा दूंगा। मैं बुरे का साथ दे सकता हूं, पर बुराई का नहीं। चलिए। वहीं चलते हैं।"

शकुंतला शर्मा उसकी जीप की तरफ बढ़ी।

"दयाल! बच्चे की लाश पोस्टपार्टम के लिए भेज, साथ ही बच्चे की शिनाख्त का कोई जरिया ढूंढ़, ताकि पता तो चले यह कौन है?" कहता देवसिंह राजपूत एक बार फिर गुड़गांवा के लिए निकल गया।

❑❑❑

❑❑❑

अर्चना चड्ढा के रूम में क्या बल्कि पूरे नर्सिंग होम के बाहर ही पुलिस तथा फौज नजर आ रही थी।

मानो वहां कोई फौजी छावनी बनी हो।

बच्चू तिवारी 60 के लपेटे में पहुंचा हुआ उम्र दराज शख्स था जिसके शरीर पर खद्दर का कुर्ता, ऊपर भूरे रंग की बास्कट तथा पाजामा था। उसके सिर पर मटमैले रंग की रूवेंदार टोपी हर समय रहती थी जिससे उसके सिर के बाल मटमैले से प्रतीत होते थे।

बच्चू तिवारी के चेहरे पर चंद्रशेखर आजाद जैसी मूंछे थी जिनका बायां पहलू हर वक्त वो ऊपर की तरफ उमेठता नजर आता था। यह उसकी खास आदत थी।

अर्चना का पति ए०सी०पी० चड्ढा छः फुट का बांका कड़ियल गबरू था जिसे ए०सी०पी० की कुर्सी बच्चू तिवारी ने इसी शर्त पर दिलाई थी कि वो उसका दामाद बनकर रहे।

उसके अलावा अर्चना के चैम्बर में सिकंदर, गोगा तथा अनवर भी थे।

अर्चना चड्ढा रो-रो कर अर्जुन नागपाल की सारी बातें बता चुकी थी। फलस्वरूप बच्चू तिवारी और ए०सी०पी० चड्ढा की भृकुटियां तनी पड़ी थीं और आंखें क्रोध से अंगार हो रही थीं।

कमोवेश सिकंदर, गोगा तथा अनवर का भी यही हाल था।

उनके हाव-भाव बता रहे थे अगर अर्जुन नागपाल उनके हाथ लग जाता तो वो उसे काट-छांटकर उसका कीमा ही बना डालते।

"अजीब खबती है साला।" कमर पर हाथ रखे ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा"धड़ल्ले से जुर्म करता है और बाकायदा डॉक्टरों को ही बताता है कि उसे बीमारी क्या-क्या है? बीमारी क्या-क्या हो सकती है?"

"हूं।" अपनी बायीं मूंछ उमेठता बच्चू तिवारी बोला"म्हारी समझ में यो नहीं घुस रिया कि वो यहां सच में ही ईलाज के वास्ते घुसया था या अर्ची का मर्डर प्लान बनाकर ही पहुंचा था?"

"अर्ची!" तभी चड्ढा बोला"तुमने क्या पाया? अर्जुन नागपाल तुम्हारी नजर में कैसा मरीज है?"

"मरीज। अरे सनकी कहो सनकी...एकाएक कॉमेडी करने लगा। एकाएक ही सीरियस हो गया...मानो साबित करना चाहता हो कि वाकई उसके मस्तिष्क से याददाश्त गयी है और वो यकायक ही काली शर्मा बन बैठा है।"

"फिर भी तुम्हारा डायगनोसिस क्या कहता है...क्या ऐसा मुमकिन है?"

"नेवर। इंपॉसिबल। वो दरिंदा साफ-साफ एक्टिंग कर रहा हैऔर बाकायदा अपने तर्कों से यह भी जतला रहा है कि वो जब चाहे इन तीन दलीलों की बदौलत कानून के चक्रव्यूह से बाहर निकल जाएगा। बाकायदा कानून ही उसे इस चक्रव्यूह से बाहर करेगा...और मैडिकल ट्रीटमैंट देगा। उसे किसी पागलखाने में भेजेगा या किसी साइकैटरिस्ट के हवाले करेगा।"

"मुझे भी यही लगता है। दीवानगी फिल्म का उदाहरण देकर उसने साबित कर दिया है कि वो हीरो अजय देवगन की तरह कोई दोहरी चाल चल रहा है। खैर...।"

'चींऽऽ।' तभी दरवाजा खोलता एक इंस्पैक्टर भीतर पहुंचा और चड्ढा को सैल्यूट झाड़ता बोला"सर, नर्सिंग होम के पांच किमी० तक चारों दिशाओं में पुलिस की तैनाती कर दी है। उम्मीद है कि अर्जुन नागपाल पकड़ा जाएगा।"

"तुम भी लिकड़ो।" बच्चू तिवारी अपने गुर्गों से बोला"वो साड़ा जैसे ही नजर आए। गोड़ी मार देना...बाकी मैं संभाड़ लूंगा।"

"जी जनाब।" सिकंदर, गोगा तथा अनवर गर्दन झुकाते निकल गए।

"तैं फिकर मत कर।" बच्चू तिवारी अर्चना को आश्वासन देता बोला"तैने कुछ नहीं होगा...अभी थारा बाप जिंदा सै।"

अर्चना चड्ढा की हिचकियां और तेज हो गयीं।

"आठ बज चुके हैं।" एकाएक कलाई घड़ी देखता चड्ढा बोला"अब हमें निकलना चाहिए पापा।"

"आध घंटा देख लयो। क्या पता साड़े ने अर्चना के रास्ते में ही जुगाड़ कर रखया हो। दामाद जी तैं एक फून घर घुमा दयो... सिक्योरिटी वाले होशियार रहें। सावधान रहें। वो अर्जुनवा थारे घरां के भित्तर ही अटैक की योजना बणा सकत है।"

"जी पापा।" ए०सी०पी० चड्ढा तेजी से अपने बंगले के सिक्योरिटी ऑफिसर को सावधान रहने का आदेश देने लगा।

"घर कैसे पहुंच सकता है वो कमीना पापा!" तभी अर्चना बोली।

"छोरी! थारे घरां का अड्रैस बाहर बोर्ड पर लिखया है। या भी तो मुमकिन है वो भूतनी का इधर से सीधा थारे घरां ही लिकड़या हो. ..और चोरी चुपके से भित्तर घुसा बैठया हो।"

इतना सुनते ही अर्चना को झुरझुरी आ गयी।

'चींऽऽ।' तभी दरवाजा खुला और जगदीश मुखी तथा मनीराम शंकर एक व्यक्ति को गुद्दी से पकड़कर भीतर लाए।

युवक ने बस फांटेदार कच्छा ही पहन रखा था।

अर्चना ने झेंपकर मुंह दूसरी तरफ फेर लिया।

❑❑❑

❑❑❑

"ये कौन है?" चड्ढा बोला।

"सर! ये सुलभ शौचालय का वही केयरटेकर है जिसके कपड़े पहनकर अर्जुन निकला था। अर्जुन वहीं ही नहाया-धोया था। उसके टमाटर आलूदा कपड़े भी मैं साथ ले आया हूं। अर्जुन ने इसे सौ का नोट दिया था।"

"नाम के है तौरा?" बच्चू तिवारी मूंछ उमेठता उसकी तरफ बढ़ा।

"जी...रामलाल...रामलाल भड़भूजिया।" कच्छे में ही रामलाल कंपकंपाने लगा।

"तो थारा बहुरूप धर के वो अर्जुनवा म्हारी छोरी के धोरे पहुंचया...तैने उसे कपड़े क्यों दिए?"

"वो जी...वो जी...!" रामलाल क्या जवाब देता कि सौ रुपये

और उसके महंगे कपड़ों के लालच में वो आ गया था।

"उसने तुम्हें डराया था?" ए०सी०पी० चड्ढा ने पूछा।

"जी जी!" रामलाल को जैसे जबान मिल गयी।

"कोई हथियार था उसके पास?"

"जीजी!" रामलाल सिर हिलाता बोला"वॉल्वर था जी।"

"रिवॉल्वर?"

"वो जिससे गोलियां दागते हैं जी। पस्तौल।"

"ओह। यू मीन टू से कि अर्जुन के पास रिवॉल्वर था?" ए०सी०पी० चड्ढा ने पूछा उससे, नजरें जगदीश मुखी तथा मनीराम की तरफ डालीं।

"नहीं सर! हॉस्पिटल ले जाने से पहले मैंने उसकी सारी तलाशी ली थी जी...रिवॉल्वर नहीं था उसके पास।" जगदीश मुखी एकाएक सफाई देता बोला"आइ सी यू से मी मनीराम जब उसे कंधे पर लादकर थाने लाया था तब भी रिवॉल्वर नहीं था उसके पास जी।"

ए०सी०पी० चड्ढा ने अपनी कोप दृष्टि मनीराम शंकर पर डाली।

वो अपना सांड जैसा जिस्म सावधान की मुद्रा में तानकर खड़ा हो गया।

"ओह माई गॉड!" जगदीश मुखी का हाथ यकायक मुंह पर गया और आंखें फटीं।

बच्चू तिवारी के भी जबड़े भिंचने शुरू हो गए।

जबकि ए०सी०पी० चड्ढा दांत पीसता मनीराम की तरफ बढ़ा।

मनीराम की गले की घंटी उछली। उसने थूक निगला और सोच में पड़ गया कि एकाएक सभी के कोप का निवाला वो क्योंकर बन गया।

"मनीराम! ऊपरवाले ने तुझे हाथी जैसा जिस्म दिया। सांड जैसी से मोटी-मोटी आंखें दीं...अगर दो तोला भेजा भी वो तेरी खोपड़ी में धर देता तो क्या बिगड़ जाता उसका।"

मनीराम शंकर की घिग्गी बंध गयी।

"सांड!" बच्चू तिवारी बिफरा"सिर पर तरबूज रखे है। छाती पर तैने गेहूं की बोरी बांध रखी है। टांगे तैने केले के पेड़ से बनायी हैं...लगभग ढाई क्विंटल वजन तो थारा होवे ही होवे...ऐसे में तेरे जिस्म से दो-ढाई किलो वजन कम हो जावे...तो तैं को का खबर लगेगी। क्यों?"

"म...मुझे समझ नहीं आ रहा...सर...!" मनीराम

हकलाया“आखिर आप सब मेरे पीछे क्यों पड़ गए हैं।”

‘तड़ाक।’ उसी पल ए०सी०पी० चड्ढा का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा“अभी भी समझ नहीं आया कि तेरे जिस्म से कुछ वजन कम हुआ है?”

“नहीं सर! भला दो-ढाई किलो मेरे जिस्म से निकल जाए तो क्या मेरे को ही खबर न होगी। वाकई सरकुछ समझ नहीं आया।”

“रिवॉल्वर कहां है तेरा?”

“ये रहा सर!” मनीराम शंकर का हाथ तत्काल अपने होलेस्टर की तरफ रेंगा। उसने टिचबटन खोलते हुए ऊपरी फ्लैप खोला और हाथ भीतर डाला।

अगले ही पल उसका हाथी जैसा हाथ होलेस्टर में घुसता चला गया।

रिवॉल्वर गायब थाऔर उसे खबर तक न थी।

“शेम ऑन यू। एक घायल आदमी तुम्हारे जिस्म पर बेहोश लटके-लटके ही रिवॉल्वर निकाल गया और तुम्हें खबर न लगी।”

“हे भगवान!” मनीराम शंकर ने उसी पल दोनों हाथों में अपना चेहरा भींच लिया। फिर दोनों गाल पीटने लगा।

“कोई फायदा नहीं। परिंदा अपना काम कर गया। रिवॉल्वर हाथ में आते ही वो शेर हो गया। उसने फौरन थाने से अपनी उड़ान भरी और अब पूरी दुनिया पर भारी जा पड़ा। जानते हो न, एक रिवॉल्वर हो आदमी के पास, तो वो पूरी फौज पर भारी होता है। सतयुग का अर्जुन तो धनुष का तीर था। और कलियुग का यह अर्जुन तो रिवॉल्वर का ही जादूगर समझा जाता है।”

“सॉरी सर! प्लीज...” मनीराम ने सफाई देनी चाही।

“शटअप।” ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा।

“इब लिकड़ना चाहिए। साडे आठ बज लिए।” बच्चू तिवारी दीवार घड़ी देखता बोला“10 मिनट में वो गांडीव के कर लेगा म्हारा। चल अर्चना बेटी।”

अगले ही पल सभी चैम्बर से आगे-पीछे बाहर निकलने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

अर्चना ने अपना पर्स उठाया। टेबल पर पड़ा स्टैथोस्कोप उठाया और बाहर की तरफ बढ़ी।

“दामाद जी, तैं अड़चना की गाड़ी में लिकड़ोमैं पाछे-पाछे आवे हूं।”

"जी पापा।" ए०सी०पी० चड्ढा मनीराम से बोला"तुम दोनों बाहर खड़ी मेरी गाड़ी में अर्चना की गाड़ी के आगे-आगे चलोगे।"

"जी सर।" जगदीश मुखी तथा मनीराम बाहर निकले।

बच्चू तिवारी भी तेज कदमों से निकला।

वो सभी फ्रंट गेट से बाहर निकलने लगे जबकि अर्चना अपने चैम्बर के दायीं तरफ बने एक पतले से गलियारे की तरफ मुड़ गयी।

ए०सी०पी० चड्ढा भी उसके साथ-साथ हो लिया।

वो जानता था कि स्टाफ के डॉक्टरों के लिए पार्किंग पीछे बनी हुई है। डॉक्टर पीछे से नर्सिंग होम में आते थे। और चले जाते थे।

गलियारे के बाद एक बड़ी सी लॉबी थी। लॉबी के बाद लकड़ी का विशाल फाटक था। फाटक पर एक शीशे की खिड़की थी जहां से बाहर खड़े दरबान की टोपी दिखाई पड़ रही थी।

अर्चना अपने पति ए०सी०पी० सुमंत चड्ढा के साथ उस छः इंच चौड़ी खिड़की के पास पहुंचा।

'ठक...ठक...ठक।' उसने खिड़की खटखटाई।

अचानक दरबान की टोपी घूमी तो चेहरा नजर आया। उसने भीतर अर्चना को देखा और दरवाजा खोल दिया।

अर्चना अपने पति के साथ बाहर निकली।

"नमस्कार सरकार।" दरबान ने ए०सी०पी० चड्ढा को सलाम बजाया। फिर दरबान ने चाबी का गुच्छा अर्चना को दे दिया।

अपनी गाड़ी की चाबी हाथ में लेती अर्चना दूर बायीं तरफ नजर आते सायबान की तरफ बढ़ी। साथ-साथ चड्ढा भी निकला। गाड़ी की चाबियां सभी डॉक्टर दरबान को ही थमा देते थे ताकि वक्त-बेवक्त गाड़ियां आगे-पीछे करके दूसरी निकलने वाली गाड़ियों को रास्ता दे सके।

तात्पर्य यह कि वो दरबान पार्किंग के अटैंडेंट का भी काम करता था। कभी उसे किसी डॉक्टर की फंसी गाड़ी बैक करनी पड़ती थी। कभी आगे ले जानी पड़ती थी और पीछे खड़ी गाड़ियों को रास्ता देना पड़ता था।

सायबान के नीचे आठ गाड़ियां आगे-पीछे पार्क हो रही थीं।

"सुनिए मैडम!" एकाएक दरबान को कुछ सूझा तो उसने आगे जाती अर्चना को पुकारा।

अर्चना मुड़ी। ए०सी०पी० चड्ढा भी मुड़ा और दरबान को घूरने लगा। दरबान एकाएक ए०सी०पी० चड्ढा की भावभंगिमा देख टोपी घुमाने लगा और हड़बड़ाता सा बोला

"क...कुछ नहीं मैडम जी! अ...आप जाइए।"

"कहो क्या बात है?" दस फुट दूर खड़ी अर्चना बोला।

"व...वो ऐसे ही...बस जी जरा पूछना था कि कल आप ड्यूटी पर आएंगी? मेरे पड़ोस में एक बच्चा है। जरा उसे दिखाना था।"

"ले आना। देख लूंगी।" अर्चना गाड़ियों के झुंड की तरफ बढ़ी। दरबान खींसे निपोरने लगा।

ए०सी०पी० चड्ढा को लगा कि दरबान कुछ और कहना चाहता था। पर उसे देखकर बौखला गया...और बात बदल गया।

"वाचमैन! बात क्या है? तुम कुछ और ही कहना चाहते थे?"

"नहीं सरकार नहीं।" दरबान उसी पल बौखला गया"वों पड़ौस का गरीब बच्चा है। यतीम है। मां-बाप नहीं हैं। फीस भर नहीं सकता। तभी डॉक्टरनी जी से अपनी सिफारिश लगवाई...कल बच्चे को दिखाने ले आऊंगा।"

"हूंऽऽ" ए०सी०पी० चड्ढा ने सर्द हुंकारा भरा और अर्चना के पीछे-पीछे निकला।

अर्चना आगे की पंक्ति में लगी अपनी ओपल एस्ट्रा की तरफ बढ़ी।

उसने रिमोट दबाया।

'टियूं टियूं।' करता कार का सैंटर लॉक खुल गया।

"गाड़ी आप ड्राईव कीजिए।" अर्चना चाबी पीछे आते चड्ढा को थमाने के लिए मुड़ी।

"ओ०के०।" चाबी थामता ए०सी०पी० चड्ढा अभी ड्राइविंग सीट पर बैठता कि एकाएक उसे कुछ सूझा और वो अपनी वर्दी की जेब थपथपाने लगा।

"क्या हुआ?" पैसेंजर डोर की तरफ बढ़ती अर्चना उसकी तरफ मुड़ी।

"डार्लिंग। अपनी अंबैसडर की चाबी मेरी जेब में है। फिर भला जगदीश मुखी और मनीराम शंकर मेरी गाड़ी कैसे ड्राइव कर पाएंगे। तुम गाड़ी ड्राइव करके फ्रंट गेट पर लाओ। मैं तब तक उन्हें चाबी देकर आता हूं।"

"अरे!" अर्चना चिहुंकी"दरबान को बुला लो। चाबी वो दे आएगा।"

"अरे नहीं न...गाड़ी में इंपोर्टेंट फाईल भी पड़ी है। बेहद सीक्रेट। कहीं मनीराम और जगदीश मुखी की नजर पड़ गयी उस फाईल पर तो, और बबाल खड़ा हो जाएगा।" हड़बड़ाते सुमंत चड्ढा ने ओपल

की चाबीअर्चना की तरफ उछाली।

फिर खुद लंबे डग भरता लगभग भागता हुआ दायीं तरफ को निकल गया।

अर्चना ने चाबी लपकी और ड्राइविंग सीट पर बैठी। उसने दरवाजा बंद किया और चाबी इग्नीशन में घुमाई। 'शूंऽऽ' गाड़ी स्टार्ट हुई और भीतर ए०सी० भी ऑन हुआ। चारों शीशे वैसे ही खिड़की पर चढ़े हुए थे। उसने क्लच दबाया।

वो अभी गेयर डालती कि...

"थैंक गॉड!" अर्चना की सीट की पुश्त के पीछे से अर्जुन नागपाल का सिर नमूदार हुआ"तुम्हारा पति साथ बैठ जाता तो खामखाह दो जानें लेनी पड़तीं।"

अर्चना के गले से अभी चीख निकलती कि

धप्प से अर्जुन का हाथ अर्चना के मुंह पर पड़ा और चीख हलक में ही रह गयी।

उसने गाड़ी के रियर-व्यू-मिरर में निगाह डाली तो अपने पीछे अर्जुन नागपाल यमराज की मुस्कान लिए नजर आया।

"हैल्लो डार्लिंग! मौत मुबारक। घड़ी देखो अपनी।"

"ऊ...ऊ...।" अर्चना ने कलाई घड़ी देखी तो 8-39 नजर आए।

"अभी एक मिनट पड़ा है। सो तुम्हें बता दूं कि दरबान तुम्हें मेरे ही बारे में बताने जा रहा था कि तुम्हारे खडूस पति को देख सहम गया। तभी उसने बच्चे का बहाना बना लिया। पूछो क्यों?"

'गूं गूं गूं।' अर्चना ने पूछना चाहा पर शब्द नहीं निकले।

"ऐनी हाओ। 8-40 हो गए। आपका समय खत्म हुआ अब... ।" अगले ही पल उस वहशी ने अर्चना की गुद्दी पर रिवॉल्वर की नाल रखी और घोड़ा दबा दिया'धांय।'

साथ ही उसने अर्चना के मुंह पर रखी हथेली हटाई और गर्दन पुश्त पर टिका दी। उसके दोनों हाथ पहले ही स्टेयरिंग पर थे।

बेचारी चीख सकी न पुकार सकी।

शीशे बंद थे। ए०सी० घुरघुरा रहा था। सो फायर की आवाज बाहर सुनी ही न गयी।

वो फटी आंखे लिए स्टार्ट गाड़ी में ही बैठ रही। तकरीबन 10 गज दूर खड़ा दरबान भी न जान पाया कि उसकी डॉक्टरनी मर चुकी है सो उसकी सिफारिश अब किसी काम की नहीं, यतीम बच्चे का इलाज तो क्या होगा...उस दरिंदे ने अर्चना का ही इलाज कर दिया है।

अर्जुन ने उसी पल अर्चना के पीछे से हाथ डाला और पहला गेयर डाल दिया। क्लच अर्चना पहले ही दबाए बैठी थी। पर अब वो मुर्दा थी अतः उसकी टांग का वजन कमजोर पड़ता जा रहा था। अतः क्लच खुद-ब-खुद रिलीज होता जा रहा था।

गाड़ी धीमे-धीमे रेंगने लगी।

अर्जुन ने हैडलाइट जलाने की कोशिश नहीं की।

उसने चुपचाप पिछला दरवाजा जरा सा खोला और धीमे से बाहर कूद गया। वो दरवाजा दूर खड़े दरबान के पहलू से दिखाई नहीं पड़ता था। अतः दरबान नहीं देख पाया कि एक लाश गाड़ी ड्राईव कर रही है और हत्यारा दरवाजे से कूदता दूसरी गाड़ियों के तले सरकता जा रहा है।

ओपल एस्ट्रा तनिक गति पकड़ती दरबान के सामने से ही निकली। स्टेयरिंग लाश के हाथों ने वैसे ही सीधा थाम रखा था।

"क्या बात है डॉक्टरनी साहब सीधा काहे जा रही हैं।" दरबान की मुंडी गाड़ी के पीछे-पीछे मुड़ी"गाड़ी की लाइटें भी ऑफ हैं।"

फोर व्हीलर्स गाडियों में यही खासियत होती है कि वो बिना एक्सीलेटर प्रयोग में लाए भी, क्लच के दम पर भागती हैं। मगर धीरे ...धीरे...धीरे।

उधर अर्जुन नागपाल पीछे खड़ी गाड़ियों के नीचे से रेंगता पीछे नजर आती चारदीवारी की तरफ भागा और उछाल भरता दूसरी तरफ कूदता चला गया।

उसका शिकार उसके ऐन विपरीत अपनी ओपल खुद दौड़ाए जा रहा था। अतः पुलिस का ध्यान उस दिशा में ही जाना था।

'धड़ामऽऽऽ' की एक जोरदार धमाके के साथ ओपल एस्ट्रा सामने वाली चारदीवारी से जा टकरायी। बेचारी लाश थी। भला स्टेयरिंग कैसे दाएं मोड़कर नर्सिंग होम परिसर से बाहर निकल सकती थी।

"डॉक्टरनी साब।" दरबान उसी पल आंखों में आंसू लिए कार की तरफ दौड़ा"वो सुलभ शौचालय वाला अपना काम कर गया।"

वो इस हादसे का सबसे पहला प्रत्यक्षदर्शी था।

धमाके की आवाज से ही बाहरी गलियारे में चिल्ल-पौं मच गयी और फिर...

'टूं-टूं-टूं' सरकारी गाड़ियां सायरन बजाती उसी गलियारे से ओपल एस्ट्रा की तरफ पहुंचने लगीं।

सारी सुरक्षा प्रणाली को गच्चा दे गया था अर्जुन नागपाल।

पुलिस अगले रास्तों पर तैनात थी पर वो पिछले रास्ते से ही सबके मुंह पर थप्पड़ मार गया था।

पांच मिनट भी नहीं बीते कि बच्चू तिवारी और ए०सी०पी० सुमंत चड्ढा अर्चना की गाड़ी के बाहर रोते-बिलखते नजर आए।

सुमंत चड्ढा को कुछ सूझा और वो दरबान की तरफ झपटा

"बोल, क्या कहने जा रहा था तू...गाड़ी में कैसे पहुंचा अर्जुन नागपाल?"

"जी कोई दो घंटा पहले...।"

❑❑❑

अर्जुन नागपाल अर्चना के केबिन से बाहर निकलता उसी पिछवाड़े वाले गलियारे की तरफ निकला था।

गलियारे के पास एक बड़ी-सी लॉबी थी जिसके दायीं तरफ दो टायलेट बने हुए थे और लॉबी पार ही उसे वो दरवाजा नजर आ रहा था जिसकी खिड़की के बाहर दरबान पहरा देता नजर आ रहा था।

अर्जुन नागपाल एक टायलेट में घुसा। उसने वहां एक नल के नीचे पड़ी बाल्टी में आधा पानी भरा। झाड़ू उठाया। वहीं पड़ा एक गंदा-सा कपड़ा उठाया और टायलेट से बाहर निकला। टायलेट में पड़ा वह सामान सफाई के काम आता था। शरीर पर उसके वैसे ही 'सुलभ शौचालय' वाले की वर्दी थी। फिर वो सारा सामान उठाए दरवाजे के पास पहुंचा।

उसने शीशे की छोटी-सी खिड़की खटखटाई तो दरबान का चेहरा उसकी तरफ घूमा।

उसने भीतर एक भंगी को खड़े देखा तो दरवाजा खोल दिया।

"डॉक्टर अर्चना की गाड़ी कौन-सी है?" अर्जुन नागपाल सामान्य स्वर में बाहर निकलता बोला।

"क्यों क्या बात है?" दरबान तनिक आशंकित हुआ।

"मेम साब की गाड़ी धोनी है?" वह पीछे मुड़ा तो उसे दरबान की सीट के पास ही दीवार पर एक लोहे का गोल रिंग लटका नजर आया। जिसके अंदर पार्किंग में खड़ी तमाम गाड़ियों की चाबियों के छल्ले लटके थे।

"गाड़ी धोनी है। उसके लिए डॉक्टर अर्चना ने तुम्हें बुलवाया?"

"तुम्हें तकलीफ है?" अर्जुन सख्त स्वर में बोला।

"तकलीफ तो नहीं है पर समझ नहीं आ रहा कि बाहर का जमादार गाड़ी धोने आ रहा है तो क्यों आ रहा है? नर्सिंग हाम का जमादार भी तो हैपरमानैंट। फिर तुम्हारी क्या जरूरत है।"

"तू साले बेवकूफ ही रहेगा। नर्सिंग होम का जमादार सुबह 6-7 बजे तक नर्सिंग होम की साफ-सफाई करके चला जाता है। नहीं भी जाता हैतो भी वो इधर-उधर मंडराता रहता होगा। सारा दिन झाड़ू-पौछा थोड़ी न लगाता रहता होगा।"

"मगर...

"तू चाबी दे रहा हैया मैं जाऊं?" अर्जुन अपनी बाल्टी झाड़ू उठाता वापिस उसी दरवाजे की तरफ मुड़ा।

"रुकरुक...।" दरबान दीवार पर टंगा वो गोल रिंग निकालता बोला"साले नखरे तो ऐसे दिखा रहा है जैसे रिजर्व बैंक का गवर्नर लगा है।"

अर्जुन उसे खामोश घूरता ही रहा।

उधर दरबान ने सैंटर लॉक रिमोट सहित गाड़ी की चाबी का गुच्छा निकाला और उसकी तरफ बढ़ाया।

"ये काले बटनों वाला छल्ला किसलिए है?"

"साले। सैंटर लॉकिंग का रिमोट है। ये बटन दबाएगा तो दरवाजा खुल जाएगा और ये दबाएगा तो बंद हो जाएगा। कभी गाड़ी के अंदर घुसा हो तभी तो पता पड़े न।"

"झूठ मत बोल। सही-सही बता ये काला छल्ला क्यों है? मुझे तो यह किसी बम-शम का रिमोट लगता है।"

"वो देख!" पार्किंग की तरफ चेहरा उठाता दरबान बोला। अर्जुन ने भी चेहरा मोड़ा।

उधर आठ गाड़ियां खड़ी थीं चार आगे। चार पीछे।

दरबान ने उसी पल रिमोट का एक बटन दबाया।

'टियूं-टियूं' करती ओपल एस्ट्रा की अगली दो बत्तियां जलीं-बुझीं।

"जा अब। दरवाजे खुले हैं। पर एक बात समझ नहीं आई... गाड़ी धोनी है तो दरवाजे खोलने की क्या जरूरत है...और गाड़ी भी बाहर से चमचम कर रही है। धोने की जरूरत क्या है?" सोचपूर्ण मुद्रा में दरबान बोला।

"तू साले आडू ही रहियो।" अर्जुन बोला"भीतर किसी ने 'उल्टी' की है। वही जाकर धोनी है। हो सकता है तेरी मेमसाब ने तुम्हारे परमानैंट जमादार को बोला भी होऔर वा नाट गया हो।"

"हां ये हो सकता है। राज बिहारी बोला होगा कि वो नर्सिंग होम की साफ-सफाई के लिए रखा गया है। न कि गाड़ियों में पड़ी उल्टियां धोने के लिए। वो साला कौन-सा किसी गवर्नर से कम है...।"

"तू साला कौन-सा गवर्नर से कम हैं।" कहते अर्जुन ने दरबान

के हाथ से चाबी का छल्ला नोचा और ओपल एस्ट्रा की तरफ बढ़ा। दरबान ने रिमोट ऑपरेट करके अर्जुन को बता दिया था कि अर्चना की गाड़ी कौन-सी है।

बहरहाल दरबान अपने स्टूल पर जा बैठा और अर्जुन बाल्टी झाड़ू उठाए गाड़ी की तरफ निकला।

उसने दरवाजा खाला और पिछली सीट के नीचे पड़ा एक रबड़ का मैट उठाया और उसे धोने का उपक्रम करने लगा।

दरबान को भला कहां सूझना था कि अच्छा-भला मैट खामखाह में ही धोया जा रहा है।

बहरहाल पांच-दस मिनट खामखाह जाया करने के बाद अर्जुन ने रिमोट के बटन आठ-दस बार दबाए और खामखाह में टियूं-टियूं सुनने के मजे लिए। बटन बार-बार दबाना भी उसकी योजना का एक हिस्सा था। फिर वो फारिग हो, बाल्टी-झाड़ू उठाए दरबान के पास पहुंचा।

"गाड़ी लॉक कर दी?"

"कर दी। दम लगाएगा?" रिमोट थमाता, अर्जुन यकायक बोला। साथ ही उसने जेब से नेवीकट की डिब्बी निकाली।

"तू इतनी महंगी सिगरेट पीता है।" दरबान की लार टपकी।

"अरे भई, ऊपर की आमदन अच्छी है। क्यों ने पियूं...ले तू भी पी।" कहते अर्जुन ने एक सिगरेट उसके होठों पर लगायी। दूसरी अपने होठों पर।

दरबान खामखाह में साढ़े तीन रुपये की सिगरेट हाथ आई देख खुश हो गया।

"माचिस।" अर्जुन दोनों हाथों से जेबों को टटोलता बोला"शायद गाड़ी में भूल आया।"

"छोड़ो न। माचिस मेरे पास है... ।" दरबान ने उसी पल चाबी का छल्ला लोहे के रिंग में डाला और दोनों हाथों से माचिस टटोलने लगा।

"छोड़ इस नौकरी को। पीरा गढ़ी में एक नया सुलभ शौचालय खुल रहा है। तू कहे तो तेरी नौकरी वहीं लगवा दूं...ऊपर की अच्छी आमदनी हो जाएगी। फिर तू भी गोल्ड फ्लैक पी सकेगा।"

"अच्छा!" दरबान की आंखे चमकीं। उसने जेब से माचिस निकाली।

"हां।" अर्जुन उसे जानबूझकर बातों में लगा रहा था ताकि वो ओपल एस्ट्रा की बाबत भूल जाए कि वो लॉक है या अनलॉक।

तभी दरबान ने तिल्ली जलायी। फिर पहली उसकी और बाद में अपनी सिगरेट सुलगाई। साथ ही बोला

"मेरी नौकरी लग सकती है?"

"हां।" अर्जुन उसके मुंह पर धुआं छोड़ता बोला"पर पांच-सात हजार का जुगाड़ करना होगा।"

"वो किसलिए?"

"रिश्वत देनी पड़ेगी। पगार इससे डबल मिलेगी।"

"अच्छा! पगार डबल क्यों मिलेगी?"

"अरे भाई शौचालय में 24 घंटे की ड्यूटी होती है। वहीं रहना, सोना, नहाना, धोना। पगार तो तीन गुना होनी चाहिए। मैं लड़ रहा हूं इस बाबत मैनेजमैंट से। अभी सुनवाई हो नहीं रही। पर हो जाएगी।"

"तू लड़ रहा है किस बाबत?"

"अरे भाई गुड़गांवा में चल रहे सभी सुलभ शौचालयों का मैं यूनियन लीडर हूं। अपने जात भाइयों की पगार तिगुनी कराने के लिए लड़ रहा हूं तो किसी पर अहसान थोड़ी कर रहा हूं। आखिर मेरी भी तो पगार बढ़ेगी न।"

"हांहां। ये तो है।" दरबान पूरी हथेली में सिगरेट भींचे कश लगाता बोला"पगार तो बढ़ेगी ही। मैं कर लूंगा पांच हजार का इंतजाम।"

अब उसे अपनी नौकरी भी पक्की नजर आने लगी थी।

"पांच नहीं सात लगेंगे। पांच तो ऊपर खिलाना पड़ेगा। दो मैं भी तो खाऊंगा।"

"क्या। अपने जात भाई से खाएगा। नहीं...नहीं।" इस बार तो दरबान ने उसके कंधे चापलूसी के अंदाज में दबाने शुरू कर दिये"तू मेरी खातिर दो हजार रुपया छोड़ नहीं सकता।"

"क्यों...तू मेरा दामाद लगता है या जीजा। धंधे में कोई शर्म नहीं। कोई लिहाज नहीं। कईयों की नौकरियां लगवाईं मैंने...।"

"चल एक हजार। बस-बस! और नहीं दूंगा। दे भी नहीं सकता। ये रकम भी किसी से उधार मांगनी पड़ेगी।" इस बार गिड़गिड़ाने के अंदाज में उसके पुट्ठे दबाता दरबान बोला"देख, अब मुझे शर्मिंदा न करियो। अपने भाई के लिए एक हजार की कस (घाटा) नहीं खा सकता।"

"ठीक है यारतू भी क्या याद रखेगा। कल पांच बजे के बाद मुझे इसी रोड के कॉर्नर पर बने 'सुलभ शौचालय' के बाहर मिलियो।

तू छः हजार लेकर आईयो। मैं तेरा अपाइंटमैंट लैटर वहीं पकड़ा दूंगा।"

"क्या! इतनी जल्दी।" दरबान की आंखे चमकीं।

"अपना काम तो चट...चट...।" चुटकी बजाता राख झाड़ता अर्जुन बोला"हाथों-हाथ होता है। चट मंगनी पट ब्याह। और यह सब मैं तेरे लिए नहीं अपने लिए कर रहा हूं। अपने एक हजार के लालच के लिए कर रहा हूं। ऐसे थोड़ी न हर वक्त पर्स भरा रहता है।" इस बार अर्जुन ने उसे अपना पर्स निकालकर दिखाया, तो नोटो का गट्ठर देखकर दरबान की आंखें फटीं।

उसे अर्जुन नागपाल वाकई जुगाडू आदमी लगा।

"ठीक है मैं मिलता हूं...कल शाम पांच बजे...छः हजार के साथ।"

"और हांये बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिए।" अर्जुन ने सिगरेटयुक्त हाथ से उसे चेतावनी दी।

"मैं क्या पागल हूं। जानता नहीं कि रिश्वत की बाबत किसी को बता दो तो न काम होता है न ही पैसा वापिस मिलता है। रिश्वत चुपचाप खाई जाती हैऔर चुपचाप ही खिलाई जाती है।"

"हूं।" अर्जुन सिर हिलाता बोला"आदमी समझदार है। जल्दी ही साहूकार बनेगा। और हां किसी को नहीं बताना कि यह काम तूने मुझसे कराया है। खबरदारजो किसी को पता भी चला कि तेरी-मेरी मुलाकात हुई हैऔर इतनी लम्बी बात हुई है।"

"तुम बेफिक्र रहो। मैं भला क्यों मुंह फाडूंगा।" दरबान ने आश्वासन दिया।

फिर अर्जुन ने अपना बाल्टी-झाडू-पौछा उठाया तो दरबान ने दरवाजा खोल दिया। फिर उसे सलाम झाड़ा।

अर्जुन गवर्नरों की तरह सिर हिलाता भीतर घुस गया।

दरबान के आगे इतनी लम्बी-चौड़ी इसलिए छोड़ी गयी थी कि वो भूल ही जाए कि ओपल एस्ट्रा की चाबी उससे किसी भंगी ने ली थी।

अर्जुन ने भीतर बाल्टी-झाडू-पौछा रखा और कश लगाते गलियारा लांघा।

डॉक्टर अर्चना अभी अपने चैम्बर के अंदर ही थी और शायद डर के मारे उसने भीतर से अपना दरवाजा भी बंद कर लिया था।

वो रिसैप्शन से होता, मेन गेट से बाहर निकल गया।

बाहर खड़ा वाचमैन उसे कातर निगाहों से घूर रहा था जिसे उसने

पहले दो सौ रुपये बतौर टिप दिए थे और बाद में ले भी लिए थे।

अर्जुन उस नर्सिंग होम के साथ लगी इमारतों के सामने से होता पिछवाड़े की चारदीवारी के पास पहुंचा।

फिर वो दोनों कोहनियों के बल चारदीवारी पर चढ़ा तो उसे अपने सामने आठ गाड़ियों का झुंड नजर आया।

वो निःशब्द चारदीवारी फांद भीतर कूदा। फिर गाड़ियों की ओट में होता ओपल एस्ट्रा के पिछले दरवाजे पर पहुंचा। फिर उसने दरवाजा खोला और भीतर घुस गया।

अगले ही पल उसने गाड़ी के तमाम दरवाजे हाथों द्वारा ही भीतर से लॉक कर दिए। जिन्हें अब डॉक्टर अर्चना ने बाहर से रिमोट द्वारा खोलना था।

फिर वो बेताबी से अर्चना का इंतजार करने लगा। उसने बाहर लगे बोर्ड पर पढ़ लिया था कि अर्चना वहां चार से आठ बजे तक की ड्यूटी देती है। तभी उसने अर्चना को 8-40 तक खत्म करने का न्यौता दे डाला था।

मनीराम के होलेस्टर से चुराई रिवॉल्वर उसके हाथों की गिरफ्त में बेचैनी से उछलने-कूदने लगी।

उसने अर्चना की कार में ही घुसकर कत्ल करने की योजना खड़े पैर बनायी थीऔर ऐसी योजनाएं सिर्फ अर्जुन नागपाल ही बना सकता था।

क्या इस समय वो सच में अर्जुन नागपाल ही था या कोई और? क्या वाकई में उसकी याददाश्त गुम थी, या उस पर किसी बुरी आत्मा का असर था? या वो Split Personality का शिकार था? या यह सब उसका ढोंग था खुद को कानून से बचाने और बचाए रखने के वास्ते?

बहरहाल गुत्थी अभी भी वहीं खड़ी थी और अर्जुन की वहशियाना हरकतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

'तड़ाक' पूरी कहानी सुनने के बाद सुमंत चड्ढा का झापड़ दरबान को पड़ा और वो फटे तथा भीगे गले से चिंघाड़ा

"हरामजादे! अगर तू वक्त रहते बता देता कि गाड़ी में वो जमादार घुसा था तो शायद मैं अपनी बीवी को बचा लेता...।"

"होनी को यहीं मंजूर था दामाद जी...तभी तो तैं भी फाईल लेने के बहाने अपनी गाड़ी की तरफ लिकड़या...।" बच्चू तिवारी

बोला"आपने कौन-सी चौकसी बरती। आप तो इस चपड़ासी से भी बड़े गुनाहगार लिकड़े म्हारी नजर में।"

"हां-हां...।" ए०सी०पी० सुमंत चड्ढा दोनों हाथों में अपना चेहरा पीटने लगा।

'ठक...ठक।' यह आवाज गूंजी तो सभी का ध्यान उधर गया।

गलियारे में सामने से देवसिंह राजपूत शकुंतला शर्मा के साथ आ रहा था।

देवसिंह के चेहरे पर हवाईयां उड़ी पड़ी थी।

सूरतेहाल से ही उसे पता चल गया था कि अर्जुन नागपाल अपना काम कर निकला है।

सभी सिटी नर्सिंग होम के उस खुले गलियारे में थे जहां चारदीवारी के साथ अर्चना की गाड़ी भिड़ी थी और घटनास्थल को पुलिस ने सील कर रखा था।

दो पुलिसकर्मी अर्चना की लाश को गाड़ी में से निकाल रहे थे जबकि चार फिंगरप्रिंट्स विशेषज्ञ कार पर से अर्जुन के फिंगरप्रिंट्स हासिल करने का काम कर रहे थे।

"य...ये सब हुआ कैसे?" देवसिंह बच्चू तिवारी तथा चड्ढा के करीब पहुंचते बोला।

जवाब में सब-इंस्पैक्टर जगदीश मुखी उसे पूरा वाक्यात सुनाने लगा।

"ओह गॉड!" पूरी बात सुनने के बाद देवसिंह मनीराम को घूरता बोला"इतने लंबे समय तक तुम्हारी रिवॉल्वर गायब रही...और तुम्हें पता नहीं चला।"

मनीराम शंकर ने आंसुओं से भीगी पड़ी आंखों के साथ गर्दन झुका ली।

'ट्रिन...ट्रिन।' तभी बच्चू तिवारी का मोबाइल बजा और वो अपनी पॉकेट की जेब से मोबाइल निकालता एक किनारे हो गया।

"हैल्लो।" अंततः वो एक कोने पर सबसे अलग-थलग जाकर बोला।

"डॉक्टर बग्गा हियर।" उधर से स्वर आया"सर जी आपने तो मुझे उस बच्चे की लाश की पेमंट करनी थी। मैं आपके घर पर पहुंचा पड़ा हूं और आप पता नहीं कहां हैं?"

"के बताऊं डॉक्टर...म्हारी बेटी अर्चना भी लाश बनी म्हारे सामने पड़ी है।"

"ओह!" डॉक्टर बग्गा ने अफसोस जताया"आय'म सॉरी

मंत्रीजी! फिर बात करूंगा इस मुत्तलक...अभी तो आप खुद ही सदमे की हालत से गुजर रहे हैं।"

"सही कहा तैने डॉक्टर...।"

"फिर भी मंत्रीजी! एक बात पूछनी है...अगर इजाजत हो तो?"

"पूछ।"

"वो लाश उसी बच्चे की थी जिसे गोगा मेरे से ले गया था। शकुंतला की डिग्गी से वो लाश मिलने पर इस बाबत कोई इंक्वायरी जरूर होगी। तो क्या बोलूं मैं?"

"हूंऽऽ।" बच्चू तिवारी तनिक सोचों में गुम हो गया।

"आप समझ रहे हैं न...लाश मेरी कस्टडी में थी। अगर उसे आपने किसी अन्य की डिग्गी में प्लांट करना होता तो मैं कह देता कि लाश कोई भी चोरी कर गया है...पर लाश जैसे ही शकुंतला शर्मा की गाड़ी से बरामद होगी तो वो आप पर भी आरोप लगा सकती है कि ये सब किया-धरा आप ही का है...ऐसे में मुझे भी कोई ऐसा जवाब देना होगा कि न आप पर कोई मुसीबत आए और न ही मेरी नौकरी पर कोई सवाल खड़ा हो। कहिएआगे क्या करना है?"

"ठीक कह रिया है डॉक्टर तू...वो शकुंतला अभी-अभी दिल्ली पुलिस के किसी दरोगा के साथ पधारी है। जरूर लाश की बाबत ही दरोगा पूछताछ करने आया होगा। जवाब तो वाकई हमें सोच के ही देना होगा।"

"एक सलाह दूं।" उधर से बग्गा रहस्य भरे स्वर में बोला।

"दे! म्हारा तो भेजा वैसे ही ठुस्स पड़्या सै...तैं ही कोई सड़ाह दे।"

उधर से डॉक्टर बग्गा फुसफुसाता बच्चू तिवारी को कोई सलाह देने लगा। फलस्वरूप बच्चू तिवारी के चेहरे पर संतुष्टि के भाव नजर आने लगे।

"ये ठीक करया तैने। सही बखत (वक्त) पर सही सड़ाह दी मने। अब न तै फंसेगा...न ही म्हारी तरफ कोई अंगड़ी ठाएगा। चल मैं तने बाद में मिलता। तू अपनी तरिफ से मामड़ा संभाड़। मैं अपनी तड़फ से...फिड़हाड़ तो वैसे भी बहोत सदमे में चल रिया हूं।" इन शब्दों के साथ बच्चू तिवारी ने मोबाइल ऑफ किया।

फिर उधर निकला जहां देवसिंह राजपूत और ए०सी०पी० चड्ढा में अर्चना की हत्या को लेकर कुछ गुफ्तगू हो रही थी।

शकुंतला शर्मा खा जाने वाली निगाहों से अपनी ओर आते बच्चू तिवारी को घूर रही थी।

□□□
□□□
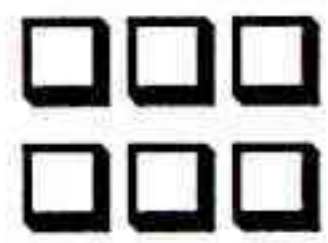
"एक चाय ला यार! पत्ती तेजमीठा कम। एकदम कड़क... पता नहीं क्यों सिर फटा जा रहा है।" अर्जुन अपने नजदीक खड़े वेटर से बोला। फिर दोनों हाथों से अपना भन्नाता सिर दबाने लगा।

"सॉरी सर!" वेटर अदब से 'बो' करता बोला"ये लीजा बार है। यहां चाय नहीं...लिकर (शराब) सर्व होता है सर।"

"क्या!" अर्जुन ने चहुं तरफ नजरें दौड़ाईं तो उसे सभी टेबलों पर धुआं फैंकते, पैग चुसकते शराबी बैठे नजर आए।

"बोलिए सर!" वेटर तनिक झुकता हुआ बोला"सिंगल लाऊं। डबल लाऊं। या पटियाला लाऊं।"

"ओह गॉड! ये क्या होता जा रहा है दिमाग को...कुछ याद क्यों नहीं पड़ता मेरे को। मुझे पता नहीं...मैं यहां कैसे पहुंचा?"

"सर जी! एक लगा लीजिए। सब याद पड़ जाएगा।"

"ठीक हैठीक है...एक पटियाला ही लेकर आ।"

"जी सर!" वेटर बोला"पानी में, सोडे में या बर्फ की डली पर ही डाल लाऊं।"

"डली पर ही डाल ला।"

वेटर हँसता हुआ चला गया जबकि अर्जुन नागपाल नेवी कट सुलगाने में मशगूल हो गया। साथ ही उसकी गर्दन बार में चारों तरफ घूमी।

एक टेबल पर चार आदमी बैठे कोई गेम खेल रहे थे।

अर्जुन नगपाल उठा और उनकी तरफ बढ़ा।

"दीपे! पंजा रख।" तभी एक मवाली छोरा दायां हाथ नचाता बोला।

"नहीं।" दीपे नाम के मवाली ने अपना पंजा पीछे खींचा और डरता हुआ बोला"मैं यह सिरफिरों वाली गेम नहीं खेलूंगा डागा।"

"अरे हाथ इधर दे न साले।" डागा नाम के मवाली ने दीपे का हाथ पकड़ा और उसका पूरा पंजा लकड़ी की टेबल पर टिका दिया। अगले ही पल दीपे की खुली उंगलियों के बीच छुरे की नोक ठकठकाने लगा।

'ठक...ठक।' की आवाज के साथ छुरे की नोक उसकी उंगलियों के गिर्द सुराख बनाने लगी।

एक गलत प्रहार दीपे की किसी भी उंगली को जड़ से काटकर अलग फैंक सकता था।

"नहीं...नहीं...बंद कर डागा।" दीपे चिंघाड़ा"मेरा हाथ कट जाएगा।"

'ठक...ठक...।' पर डागा नहीं रुका और छुरे की नोक बदस्तूर बजाता रहा।

"हा हा हा।" बाकी दो मवाली दीपे की हालत पर बहशियाना ठहाके लगाने लगे।

एक मिनट बाद डागा ने दीपे का हाथ उठायापरे किया।

अर्जुन ने देखा टेबल पर उसके हाथ का ही 'नाप' बना हुआ था।

दीपे अपना हाथ सही-सलामत देख पहले तो सकपकाया। फिर अपने बाकी साथियों को हँसता देख झेंपी मुस्कान मुस्काया।

"हीं...हीं।" अगले ही पल दीपे भी झेंपता हुआ हँसने लगा।

'धड़ाक।' तभी डागा ने टेबल पर मुक्का मारा तो दीपे के हाथ की छाप टेबल पर से कटकर नीचे फर्श पर जा गिरी।

अब टेबल टाप पर दीपे के खाली हाथ का खांचा नजर आ रहा था।

"हे...हे...।" अर्जुन वहीं खड़ा देखने लगा।

"क्यों बे हीरोखेलेगा।" डागा ने छुरा अर्जुन की तरफ उछाला और अपना पंजा टेबल पर टिका दिया"पहली बारी तेरी।"

अर्जुन ने छुरा लपका। उसकी नोक टेबल की दिशा में जोर से ठोकी।

छुरा टेबल पर जाकर धंस गया।

"डर गया।" डागा उस पर हँसा।

"मैं यह बच्चों वाले खेल नहीं खेलता। तूने 'सोलजर' देखी और खुद को 'बॉबी देओल' समझ लिया।"

"तो तू ही बता कोई खेल।" अपना हाथ उठाते डागा ने अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाई"देखेंतेरे खेल में कितना दम है।"

उनकी यह बातचीत बाकी बैठे लोगों ने भी सुनी और कौतुक भरी निगाहों से उन्हें देखने लगे।

उन्हें लगा एक दिलचस्प जंग होने जा रही है।

अर्जुन नागपाल भी चारों तरफ गर्दन घुमाता सभी को देखने लगा। साथ ही उसके अधरों पर मुस्कुराहट गहरी होने लगी।

"हां...हां...खेलो। हम भी देखें...तुम दोनों में ज्यादा दिलेर कौन है।" एक शराबी ने दोनों पार्टियों को भड़काने की नीयत से जैसे जलती में घी डाला।

"ठीक है। यह खेल हम दोनों ही खेलेंगे। पर उसमें आप भी पार्टप्ले करेंगे। आप में से जिसकी किस्मत अच्छी हुई उसे जिंदगी मिलेगी और जिसकी खराब हुई उसे मौत मिलेगी। मंजूर?"

हकलाई निगाहों से सभी अर्जुन को घूरने लगे। किसी ने भी 'मंजूर' कहकर अर्जुन नागपाल की चुनौती नहीं कबूली।

किसी को समझ ही न आया कि ऐसा कौन-सा खेल खेलेगा अर्जुन कि उसमें किसी बदकिस्मत की जान भी जा सकती है।

"अबे शब्दों से क्या खेल रहा है।" डागा यकायक भड़का"चल मंजूर। खेल शुरू कर। मैं भी देखूं कितने पानी में है तू।"

"मंजूर।" अर्जुन ने रिवॉल्वर निकाल लिया।

"मंजूर।" रिवॉल्वर से बिना डरे डागा चिंघाड़ा"इस तमंचे से क्या डराता है। इससे खेल-खेल कर तो अपुन जवान हुआ है।"

"मुमकिन है। इससे खेलकर ही अब तू भरी जवानी में मुर्दा भी बन जाए। तेरी बीवी विधवा भी हो जाए।"

"तू खेल शुरू कर।" डागा मुस्कराया"मुझे पता है अब तू इस रिवॉल्वर के चैम्बर में एक गोली रखेगा। फिर चैम्बर घुमा देगा। फिर हम दोनों बारी-बारी नाल अपनी कनपटी पर लगाएंगे। जिसकी किस्मत हुई वो बच जाएगा। क्योंकि उसकी किस्मत में खाली चैम्बर आएगा। जो बदकिस्मत हुआवो उस इकलौती गोली से मरेगा जो ट्रिगर दबाने के बाद तेरी या मेरी कनपटी में जा घुसेगी...।"

"मैं ऐसे फिल्मी खेल भी नहीं खेलता। क्योंकि तू रिवॉल्वर से खेलकर जवान हुआ है जबकि मैं रिवॉल्वर हाथ में लिए पैदा हुआ था।"

"...पर मुझे समझ नहीं आ रहा।" डागा अपने पहले वाले शब्द पूरा करता बोला"तेरी मेरी इस गेम से यहां मौजूद बाकी यार लोग कैसे मर सकते हैं? सभी कैसे हम दोनों की इस गेम में हिस्सा ले सकते हैं।"

उसके शब्दों का जवाब अर्जुन पहले ही दे चुका था कि वो कोई और ही खेल खेलने जा रहा है। पर डागा अपने ही शब्दों में मग्न था, अतः वो अर्जुन का मंतव्य समझ ही न पाया था।

"डागा डियर! तू जितना भी बड़ा दिलेर सही, पर मेरा ये दावा है तू यह खेल मेरे साथ नहीं खेल पाएगा।"

सभी हैरत से अर्जुन की तरफ देखने लगे।

"अच्छा! जरा हम भी तो देखें वो खेल जो डागा को डरपोक बना दे।"

❑❑❑
❑❑❑

"ट्रिन...ट्रिन...।" पंडित हरी नारायण ने कॉलबैल बजाई और बेचैनी से दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा।

कुछ पल बाद ही भीतर से कदमों की पदचाप दरवाजे की तरफ आती सुनाई दी।

'खटैक।' भीतर से सिटकनी खुली। फिर लकड़ी का दरवाजा खुला, तो लोहे के ग्रिलदार दरवाजे के पीछे नैना देशमुख का चेहरा नजर आया।

"पंडितजी आप!" नैना यकायक चिहुंकी और फुर्ती से लोहे का ग्रिलदार दरवाजा खोलने लगी"सब ठीक तो है न। वो ठीक तो है न?"

पंडित हरी नारायण ने कोई जवाब न दिया।

'चींऽऽ।' तभी नैना ने गेट बाहर की तरफ खोला और पंडित हरी नारायण ने अपने पैर भीतर डालेऔर एक साईड पर जाकर खड़े हो गए।

नैना ने शांत मन से ग्रिलदार दरवाजे की चीं-चीं करती कुंडी दोबारा लगाई और पंडितजी की तरफ मुड़ी।

"ब...बात क्या है...उ...उसे तो कुछ नहीं हुआ न?"

"खामोश।" पंडित हरी नारायण दहाड़ा"क्या होगा उस कुत्ते को। क्या होगा उस वहशी को, जो हर किसी को शौक-ही-शौक में मौत बांटता जाता है। क्या होगा उस दरिंदे को!"

"ओह!" नैना के हलक से गहरी सांस निकली"तो फिर कुछ किया उस सिरफिरे ने?"

"हां। और मैंउसे जिंदा नहीं छोडूंगा। पर ऐसा तभी होगा जब वो मेरे कब्जे में आएगाऔर वो मेरे कब्जे में तभी आएगा, जब तू मेरे कब्जे में रहेगी।"

"व्हाट!" नैना चिहुंकी।

"हां।" पंडित हरी नारायण दांत चबाता बोला"इस बार वो मेरा 14 साल का पौता लील गया है। उसने मेरे आखिरी वंशज को मार डाला है। और मैंमैं उस हरामी को जिंदा नहीं छोड़ सकता अब?"

"हं।" नैना विषाक्त स्वर में हँसती, फिर पंडित की तरफ पीठ करती दोनों हथेलियां एक-दूसरे में फंसाती-छुड़ाती बोली"अपने घर में आग लगी तो आगदूसरे के घर लगी तो तमाशा। आज खुद पर आन पड़ी तो वही अर्जुन दुश्मन नजर आने लगाजिसे बेटा-बेटा

कहते आपकी जबान नहीं थकती थी।"

"हां। लगी है आज मेरे घर आग। तो बताओक्या करूं मैं?"

"हुआ क्या है?" नैना ने पूछा।

पंडित हरी नारायण शर्मा रो-रोकर उसे सारी दास्तान सुनाने लगा।

नैना की आंखे फटने लगीं। उसे उम्मीद नहीं थी कि उसका अर्जुन एक दिन विक्षिप्त हत्यारा बन जाएगा, और दिल्ली से बाहर गुड़गांवा जाकर जवान लड़कियों को मौत देने लगेगा।

पंडित हरी नारायण ने उसे सब बताया जितना वो जानता था। जितना उसे पता चला था...फिर बोला

"अब तू ही बता नैनामुझे क्या करना चाहिए?"

"मैं क्या कहूं। आपको जो ठीक लगे कीजिए। रही बात मेरी, तो मैं तो, कब का ही उसे छोड़ चुकी हूं। मैंने तो उसकी नौकरी से. ..उसकी जिंदगी से ही इस्तीफा दे दिया है। मेरा उस राक्षस से कोई रिश्ता नहीं अब।" अंततः उसने फुंफकार कर गर्दन फेरी।

"पर मेरा है। मेरा उससे रिश्ता है अभीऔर यह रिश्ता अब तभी खत्म होगा जब मैं उसे मौत दूंगा। जब मैं इन्हीं हाथों से उसे चिता पर सजाऊंगा। जब मैं उसे उसकी जिंदगी से इस्तीफा दिलाऊंगा। नहीं छोड़ सकता मैं उसेनहीं छोड़ूंगा।"

"मेरी बला से। जो आपको ठीक लगेकीजिए। मेरे पास क्यों आए हैं?"

"क्योंकि तू ही वो बला है जिसके इश्क में पड़कर वो दिलवाला दिलजला बना है। न तू उसे धोखा देती...न ही वो हर किसी को मौत बांटता। तेरे ही इश्क में पड़कर उसे आज पूरी औरत जात से नफरत हो गयी है और वो दुनिया से औरत जात का नाम ही मिटाने पर तुला है।"

"ये सच नहीं है।" नैना की आंखों में उसी पल पानी चमका"अगर है भी, तो इसमें मेरा क्या कसूर?"

"तेरा कसूर है या नहीं...इससे मुझे कोई सरोकार नहीं। पर इतना तय है कि उस कम्बख्त को भी तुझसे सरोकार है। तेरी सलामती के लिए वो कहीं से भी चलकर आएगा। तब मैं उसे मौत दूंगा। इन्हीं हाथों से दूंगा।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"यही कि अब तू मेरे कब्जे में रहेगी। और वो तुझे बचाने के वास्ते मेरे बताए ठीए पर आएगा। तब मैं उसे मौत दूंगा और तुझे

रिहा करूंगा। उस वहशी को जमाने से रिहा करूंगा।"

"पंडितजी!" नैना फुंफकारी"ये क्या कह रहे हैं आप?"

"सही कह रहा हूं। अपने पौते की मौत का इंतकाम लेने के लिए आज मैं अपनी बहू (नैना) का अगवा करूंगा और उसकी बिनाह पर अपने उस मुंहबोले वहशी बेटे को अपने पास बुलाऊंगा ताकिउसका गला घोट सकूं। उसकी हत्या कर सकूं।"

"पंडितजी, होश में आइए...।"

"हैंड्सअप।" तभी पंडित हरी नारायण शर्मा ने पीठ पीछे लगा एक हाथ आगे किया। उसमें रिवॉल्वर नजर आ रही थी।

"खबरदार! जो अब कुछ भी बोली तो...गोली मार दूंगा। कभी पिस्तौल चलाई नहीं मैंने...पर इतना जानता हूं कि घोड़ा दबाने से गोली चलती है।"

"रिवॉल्वर कहां से आई आपके पास?"

"उसी दरिंदे के फ्लैट से हासिल की। चाबी मेरे पास ही रहती है न उसकी...बस उसी फ्लैट से ही हासिल की। हाथ ऊपर कर।"

"नहींऽऽ।" नैना की आंखे फटीं।

"देख बेटी! मेरे सब्र का इम्तिहान न ले। मैं तेरी हत्या नहीं करना चाहता। पर मजबूर हूं...कर भी जाऊं तो बड़ी बात न होगी। हाथ ऊपर कर मेरी बच्ची।"

"हं।" नैना हँसी"कभी बेटी कहते हो, कभी बहू तो कभी बच्ची...और जानते भी हो कि अर्जुन गलत है मैं नहीं...फिर भी धमकी मुझे देते हो...चलाओ गोली। मैं भी देखूं एक बाप, कैसे अपनी बेटी की हत्या करता है।"

पंडित हरी नारायण का हाथ कांपने लगा। वजनी रिवॉल्वर की वजह से हाथ खुद-ब-खुद नीचे जाने लगा।

"पंडितजी! अर्जुन हालातों का शिकार है। मेरा दिल कह रहा है कि वो इतना बड़ा पागल नहीं है जितना हम उसे समझ रहे हैं।"

"ओहो! तो अब मुझे घुट्टी पिलाई जा रही है। जो घड़ी भर पहले तुम्हारी नजर में गलत था। वो अब तुम्हें हालातों का शिकार नजर आ रहा है। इसलिए कि...उसने पंडित हरी नारायण के ही पौते का शिकार कर डाला है।"

"नहीं। ऐसा मैंने कुछ नहीं कहा। फिर भी वो अगर मुजरिम है तो हमें उसे कानून के हवाले करना चाहिए। उसे कानून ही सजा देगा।"

"नहीं। कानून के हाथ वो दस बार आया...और सौ बार नहीं

आया। कानून से बच निकलने की महारथ उसे हासिल है। इस बार तो उसे पंडित हरी नारायण का ही नजला सहना होगा। बूढ़ा जरूर हूं...पर कमजोर नहीं...उसे मेरे हाथों मरना ही होगा।"

"हूं।" नैना ने विष भरा हुंकारा भरा"अगर आपने भी ऐसा किया जैसा कि अर्जुन हर मुजरिम के साथ करता है तो फिर आप में और अर्जुन में फर्क कहां रहा। वो तो विक्षिप्त है ही...आप तो उससे भी बड़े विक्षिप्त कहलाएंगे।"

"वो सब मैं नहीं जानता...मुझे अर्जुन चाहिए...और उस तक खड़े पैर तू ही मुझे पहुंचा सकती है। तू ही वो सीढ़ी है जिस पर पैर रखकर मैं उस तक पहुंच सकता हूं।" पंडित हरी नारायण रिवॉल्वर पीठ पीछे छिपाए नैना को ही देखे जा रहा था।

"जब हर आदमी अपना इंतकाम खुद ही लेने निकले तो फिर कानून की जरूरत क्या रही। इंसाफ कहां रहा।"

"तू ये फिल्मी बातें बंद कर और मुझे अर्जुन तक पहुंचा...उसे किसी भी सूरत यहां बुला।"

"मुझे कुछ सोचने दीजिए।" नैना एकाएक सोफे पर धम्म से गिरी और अपने बालों की एक लट सुलझाने लगी।

पंडित हरी नारायण रिवॉल्वर छिपाए उसके सिर के पीछे पहुंच गया।

"पंडितजी! बकौल आपके अर्जुन जवान लड़कियों को चैलेंज देकर मौत के घाट उतारता जा रहा है। अगर ऐसा है तो उसे यह काम मेरे साथ भी करना चाहिए। मैं अर्जुन को फोन लगाती हूं। देखती हूं वो मुझे भी मार डालने की धमकी या चैलेंज देता है या नहीं...पता चल जाएगा कि वो यह हत्याएं किसी अंजानी ताकत के वश में कर रहा है या सोच-समझकर ठंडे दिमाग से कर रहा है। क्यों!" कहती नैना ने तिपाही पर पड़े फोन का रिसीवर उठाया।

"नहीं फौन तू नहीं...मैं करूंगा अब। तू तो बस बेहोश होगी। यूं...धड़ाक।" अगले ही पल रिवॉल्वर का दस्ता पंडित ने नैना के सिर के बीचो-बीच ठोक दिया और चिंघाड़ा"मैं देखता हूं तुझे बचाने की खातिर अर्जुन कैसे नहीं आता...वो सात तालों में बंद भी रहेगा तो भी यहीं आएगा।"

उधर नैना का सिर घूमा। दोनों हाथ कनपटियों पर पहुंचे और वो गठरी की तरफ सोफे पर लुढ़क गयी।

पंडित हरी नारायण अर्जुन का मोबाइल मिलाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

अर्जुन ने रिवॉल्वर का चैम्बर खोला और पूरे बार को दिखाता चहका

"दोस्तों! इसमें पांच गोलियां हैं। छठी कहां गयी...मुझे नहीं पता।"

"कहां गयी छठी गोली?" किसी ने पूछा।

"आई डोंट नो।" अर्जुन ने बताया नहीं कि वो गोली अर्चना चड्ढा की गुद्दी में डाल आया है। या तो वो लोगों को बताना ही नहीं चाहता था या फिर उसे याद ही नहीं था।

"खैर, अब मैं यह चैम्बर बंद करता हूं और इसका सेफ्टी लॉक हटा देता हूं।" कहते अर्जुन ने पीछे लगा सेफ्टी लॉक हटा दिया"अब इस रिवॉल्वर से गोलियां दागी जा सकती हैं, अब मैं इसे घुमाता हूँ ओ०के०?"

"नहींऽऽ।" तभी कोई चीखा।

"ओ०के०।" अर्जुन ट्रिगर-होल में उंगली डालता उसे अपनी कनपटी के पास ले जाता डागा से बोला।

"अबे पागल है। यूं रिवॉल्वर घुमाएगा तो ट्रिगर अपने आप दबेगा और गोलियां चारों तरफ निकलेंगीऔर किसी को भी जा लगेंगी।"

"नहींऽऽ...भागो...ये कोई पागल है।" फिर तो बार में जैसे हड़कम्प ही मच गया।

"रुकिए।" अर्जुन उन्हें रोकता बोला"सुनिए रिवॉल्वर घूमेगी तो उसकी नाल भी चारों तरफ घूमेगी। ऐसे में कोई भी गोली मेरी कनपटी में धंस सकती है। जब मुझे डर नहीं तो आपको क्यों?"

"तू तो एकदम पागल है साले...हम क्यों रुके यहां।"

"तो तुम नहीं रुकोगे..." इसी के साथ अर्जुन ने रिवॉल्वर सुदर्शन चक्र की तरह गोल-गोल घुमानी शुरू कर दी।

'धांय...धांय...छनाक...आऽऽ।' उसकी मध्यमा उंगली ट्रिगर से टकराती चारों दिशाओं में फायरिंग करने लगी। कोई शीशा भी टूटा। किसी की चीख भी गूंजी।

"नहींऽऽ। भागो...ये कोई पागल है...।" बार में लोगों की चीखें गूंजी।

पहली बार डागा के चेहरे पर भी आतंक दिखाई दिया। उसे गुमान नहीं था कि उसके सामने खड़ा दिलेर ऐसी दिलेरी दिखाएगा जिसमें अपनी मौत का भी उतना ही बड़ा चांस होगा जितना और

किसी की मौत का, शायद उससे भी बड़ा।

कोई भी गोली अर्जुन की कनपटी में घुस सकती थी। चेहरे में धंस सकती थी।

तभी अर्जुन ने उंगली में घूमता रिवॉल्वर रोका और उसे टेबल पर फैंकता डागा से बोला"अब तेरी बारी है।"

डागा ने कुछ कहना चाहा पर आवाज न निकली, मगर होंठ फड़फड़ाए उसके।

"उठा रिवॉल्वर। अब तो रिवॉल्वर भी खाली है।"

"न...नहींऽऽ।" डागा हैरत से बोला"क...क्या पता रिवॉल्वर खाली है या अभी भी उसमें गोलियां हैं।"

"हं...हं...हं!" अर्जुन बोला"बस इतना ही बड़ा दिलेर निकला। सवाल यह नहीं है कि रिवॉल्वर में मौजूद पांचों गोलियां चल चुकी हैं या नहीं...सवाल यह है कि तू इस रिवॉल्वर को उंगली पर घुमाते हुए चला पाता है या नहीं...सवाल यह है कि क्या तू मुकद्दर का इतना धनी है कि अपनी ही कनपटी को रिवॉल्वर से निकलने वाली किसी भी गोली से बचा पाता है या नहीं...उठा रिवॉल्वर।"

"नहीं! नहीं मेरे बाप!" डागा ने उसी पल उसके आगे दोनों हाथ ताली की शक्ल में जोड़े"तू जीता मैं हारा।"

"तो देख।" इस बार अर्जुन ने रिवॉल्वर उठाया और उसका चैम्बर खोला"इसमें वाकई कोई गोली नहीं है। ये खाली है और तू इतना बड़ा दिलेर निकला कि खाली रिवॉल्वर भी अपनी उंगली में न घुमा सका।"

डागा का चेहरा उसी पल शर्म से झुक गया।

"अरे! इसे गोली लगी है कनपटी में।" तभी एक व्यक्ति चिल्लाया"ये तो मर गया।"

"शुक्र है आंख बच गयी बेचारे की।" अर्जुन सहजता से बोला जबकि बार के एक कोने में एक आदमी मरा पड़ा था और सभी उसकी लाश को आतंकित निगाहों से देख रहे थे।

अर्जुन की खेल-खेल में चली गोली उस ग्राहक का खेल खत्म कर गयी थी।

बारमैन तत्काल ही मैनेजर रूम की तरफ दौड़ा और पुलिस को फोन करने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

'टूं-टूं-टूं।' तभी बाहर से पुलिसिया सायरन सुनाई दिया।

"अब पुलिस वाले आएंगे। कान खाएंगे। मैं चलता हूं।" कहते अर्जुन ने खाली रिवॉल्वर पतलून में उड़सा और वहां से निकलने के लिए मुड़ा।

"पकड़ो। इसने खेल-खेल में ही यह हत्या की है।" कोई चीखा। पीछे डागा और उसके साथियों की निगाहें मिलीं। कुछ इशारे हुए।

फिर उन चारों ने आगे जाते अर्जुन पर छलांग लगा दी।

अर्जुन औंधे मुंह फर्श पर जा गिरा और वो चारों अर्जुन पर पिल पड़े।

उसकी रिवॉल्वर खाली थी। सो अर्जुन से उन्हें अब कोई खतरा न थाऔर वो चारों उस पर आसानी से काबू पा सकते थे।

'ठक...ठक...।' तभी बार का मेन दरवाजा खुला और चार पुलिसकर्मी भीतर घुसे।

"गोलियां किसने चलाई थीं?" एक इंस्पैक्टर गरजा।

"सर! है कोई सुलभ शौचालय का कर्मचारी। उसी ने खेल-खेल में कत्ल कर डाला।" कोई बोला।

"क्या! पकड़ो उसे। वो अर्जुन नागपाल है। अभी-अभी ए०सी०पी० चड्ढा की पत्नी अर्चना चड्ढा की हत्या करके निकला है। अबयहां भी कर डाली।" अगले ही पल इंस्पैक्टर अपने कांस्टेबलों के साथ अर्जुन की तरफ दौड़ा।

फिर अर्जुन को डागा के साथियों से छुड़ाया गया और गिरफ्तार कर लिया गया। उसका सिर खून से नहाया पड़ा था।

"कमीने! अभी दिल नहीं भरा तेरा।" इंस्पैक्टर पोपली गला फाड़कर चिंघाड़ा।

"क्योंमैंने क्या किया है?" खून आलूदा हांफता अर्जुन बोला।

'धड़ाक।' पोपली का सर्विस रूल उसके चेहरे पर पड़ा तो अर्जुन पीछे को लड़खड़ाता चला गया"साले! उधर नर्सिंग होम में एक डॉक्टर को मार डाला...।"

"डॉक्टर को मार डाला!" अर्जुन हैरान हुआ"मैंने! पोपली साहब, कोई गलती लगी है। गलतफहमी लगी है। मैं तो यहां डागा के साथ गेम खेल रहा था। क्यों डागा?"

'धड़ाक...धड़ाक...।' इंस्पैक्टर पोपली अर्जुन पर पिल पड़ा"गेम तो अब कानून खेलेगा तुझसे। ले चलो इसे। देखते हैं कौन बचाता है इस सिरफिरे विक्षिप्त हत्यारे को।"

"कमाल है! मैंने डॉक्टर को मार दिया! कैसे? मुझे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा?" अर्जुन खुद से ही सवाल-जवाब कर रहा था।

और पुलिसिये उसे बाहर की तरफ खदेड़ते जा रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

"शकुंतला जी!" देवसिंह सिटी नर्सिंग होम के बाहरी गलियारे में बोला"अब अर्चना की लाश देखकर तो आपको यकीन हो गया न कि अगर अर्जुन बच्चू तिवारी का गुर्गा होता तो बच्चू तिवारी उसे अपनी बेटी की हत्या का हुक्म थोड़ी न देता।"

"आपको भी यकीन करना चाहिए कि वो बच्चा मेरा बेटा काली शर्मा है और उसे अपनी गाड़ी के नीचे रौंदने वाली मां मैं भी नहीं हूं।"

"जी, बच्चे की लाश का हॉस्पिटल में पहुंचना, फिर वहां से लाश का गायब हो जाना यह तो साबित करता है कि वहां से किसी अधिकारी या डॉक्टर की मर्जी से ही लाश हासिल हो गयी है। पर वो लाश किसने गायब की है? इसका जवाब तो उस डॉक्टर से पूछताछ करने के बाद ही मिलेगा...।"

"मतलब तुम्हें अभी भी शक है कि वो लाश मैंने हासिल की हो सकती है?" शकुंतला शर्मा फुंफकी।

"सॉरी मैडम! हालातों के मद्देनजर वो लाश आपने या आपके किसी आदमी ने हासिल की हो सकती है...फिर शक करना तो हमारा पेशा है। शक के सूराग पर ही कानून आगे बढ़ता है और सबूत तक पहुंचता है...।"

"इंस्पैक्टर!" तभी उनकी बातें सुनता बच्चू तिवारी गरजा"ये मंत्राणी कुछ भी कर सके हैं। पिछली दफा यो अपणे सगे बेटे देवी शर्मा की बलि लेकर चुणावां जीती सै...इस बार यो म्हारी बेटी की बलि लेकर ये काम करणा चाहती सै।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" देवसिंह ने संदिग्ध निगाहों से पूछा।

"इसने ही म्हारी अर्चना की हत्या उस विक्षिप्त अर्जुन नागपाल के हाथों कराई है। वो सरफिरया छोरा इसी का ही काम कर रिया है। मैं साफ-साफ कह दूं कि ये ही है म्हारी बेटी की हत्यारन। अर्जुन इसी का ही बंदा है...ईब तक हुई सारी हत्याएं उसी...अर्जुन ने ही की हैं और उसे बचाने की खातिर मंत्राणी ने ये अफवाह फैला रखी है कि वो सिरफिरया विक्षिप्त हत्यारा इजका बेटा काली शर्मा है ताकि काणूण गुमराह रहे। काणूण इसके नाबालिक बेटे काली को ही ढूंढता रहे और इसका अर्जुन चुपचाप याके कहने पर कतड़ (कत्ल) पर कतड़ करता फिरे।"

"ये झूठ है।" शकुंतला शर्मा चिंघाड़ी"मत भूलो। तुम्हारी बेटी की मौत से पहले मैं अपने बेटे काली शर्मा की लाश देख आई हूं। उसे भी अर्जुन नागपाल ने ही मारा है। और मेरी बदकिस्मती देखो कि कानून मुझे ही काली शर्मा की हत्यारिन समझ रहा है और मैंयह तक साबित नहीं कर पा रही कि वो बच्चा मेरा ही बच्चा काली शर्मा है।"

बच्चू तिवारी गुस्से में दिखाई दिया इस बार।

"अगर अर्जुन मेरा आदमी होता तो मैं क्या उसे काली शर्मा को उड़ाने का हुक्म देती? और तुम्हारी बेटी की बाबत तो मुझे पता ही आज चला कि वो सिटी नर्सिंग होम की डॉक्टरनी है। मान सको तो मान लो आज की तारीख मैं जैसे अर्जुन तुम्हारा दुश्मन है, वैसे ही मेरा भी दुश्मन है। मैं उसे किसी भी सूरत में जिंदा नहीं छोडूंगी।"

"हूं।" बच्चू तिवारी सोच में बोला"शायद तू ठीक कहे है। इन हालातों की रूह में अर्जुन ही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। ऐसे मेंहमें अपणी दुश्मणी भुलाकर दोस्ती कर लेनी चाहिए और इस इकड़ौते दुश्मन को उड़ाने की तरकीब सोचनी चाहिए।"

"शुक्र है। तुम्हे अक्ल तो आई।" शकुंतला फुंफकारी।

'ट्रिन...ट्रिन।' तभी दूर अर्चना की कार के पास छानबीन में लगे ए०सी०पी० चड्ढा का मोबाइल बजा।

उसने कॉलिंग स्विच दबाकर फोन सुना और अगले ही मिनट घोषणा की

"अर्जुन नागपाल पकड़ा गया। उसने बार में भी एक हत्या की। उसे हैडक्वाटर की तरफ ले जाया जा रहा है। अब हैडक्वार्टर से उसका मुर्दा ही बाहर जाएगा वो नहीं।" फिर ए०सी०पी० चड्ढा सोच में पड़ गया।

बच्चू तिवारी और शकुंतला शर्मा के जबड़े भी भिंच गए।

देवसिंह तनिक चिंतित दिखाई दिया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसे हत्यारे यार के लिए उसे किस तरीके से पेश आना चाहिए। फिर भी वो अर्जुन को ऐसी मौत मरने के लिए नहीं छोड़ सकता था, अतः वो अपने मोबाइल पर किसी से संपर्क बनाने लगा।

साथ ही वो भी हैडक्वार्टर की तरफ निकला।

अब तक की जांच में कार के डोर-हैंडल से फिंगरप्रिंट उठा लिए गए थे। अर्चना की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेजी जा चुकी थी और उसकी गुद्दी से निकलने वाली गोली ने साफ साबित कर देना था कि वैसी ही गोलियां बार में भी चलाई गयी हैं।

अब अर्जुन की मौत तय थी।

❑❑❑

❑❑❑

हरियाणा पुलिस के हैडक्वार्टर के बाहर जैसे ही ए०सी०पी० चड्ढा तथा देवसिंह का कारवां पहुंचा तो बाहर प्रैस रिपोर्टर्स भी नजर आये। कई अखबारों तथा न्यूज चैनलों के नुमाइंदे वहां भीड़ जमाए खड़े थे और बाहर पुलिस कर्मियों से भीतर जाने की गुहार कर रहे थे।

"ये सब कैसे पहुंच गए?" ए०सी०पी० चड्ढा अपनी अंबैसडर से बाहर निकलता चीखा।

"मैंने बुलाया।" देवसिंह भी जीप का इंजन ऑफ करता बाहर कूदा।

शकुंतला शर्मा तथा बच्चू तिवारी उसे घूरने लगे।

"तुमने बुलायाक्यों?" ए०सी०पी० चड्ढा दांत पीसता गरजा।

"मैं नहीं चाहता कि तुम अर्जुन नागपाल को बिना कोई सफाई का मौका दिए ना मार डालो।" देवसिंह सहज स्वर में बोला।

"ओह!" ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा"पूछ सकता हूं देवसिंह जैसा फर्ज परस्त इस बार अपने यार की पैरवी कर रहा है या एक मुजरिम की?"

"जयसिंह सिर्फ कानून की पैरवी करता है। यार मेरा वो जरूर है...मुजरिम भी जरूर है वो...पर फिर भी मैं चाहता हूं कि कानून की छाया में रहकर ही हमें अर्जुन के साथ पेश आना चाहिए।"

"यह जानते हुए कि अर्जुन नागपाल कानून की हदें तोड़ते हुए वार पर वार करता है। और करे भी क्यों न...उसे बचाने के लिए तुम जैसा दोस्त सीना ठोककर आगे जो आ जाता है। जो कानून की दुहाई दे-देकर ही कानून के ढीले-ढाले छेदों में से निकल जाता है।" चड्ढा फुंफकारा।

"मुझे अपनी सफाई नहीं देनी! आप लोगों से कुछ नहीं कहना. ..मुझे जो ठीक लगा, मैंने किया।" देवसिंह प्रैस वालों की तरफ बढ़ता बोला"हां तो संजय, कब पहुंचे?"

"हो गया आधा घंटा सर! बस, जैसे ही आपका फोन आया हम यहां पहुंच गए। अर्जुन नगपाल 10 मिनट पहले ही इंस्पैक्टर पोपली निगम की निगरानी में भीतर ले जाया गया है। आप प्रैस कांफ्रेंस का इंतजाम कीजिए सर!" संजय चुग नाम का न्यूज चैनल रिपोर्टर बोला।

जवाब में देवसिंह ने ए०सी०पी० चड्ढा की तरफ निगाहें उठाईं।

"यहां कोई प्रैस कांफ्रेंस नहीं है।" ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा"और दिल्ली के इस मामूली इंस्पैक्टर देवसिंह को कोई अख्तियार नहीं है कि हरियाणा पुलिस के हैडक्वार्टर में प्रैस कांफ्रेंस बुलवाए।"

"माफ कीजिए।" तभी संजय चुग बोला"हरियाणा पुलिस के ए०सी०पी० को भी शोभा नहीं देता कि ऐसे हल्के अल्फाज बोले कि हरियाणा पुलिस की छवि लोगों के आगे खराब हो जाए। आपके यही अल्फाज अगर हमने न्यूज चैनल में सुनवा दिए तो...काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है आपको।"

"तुम मुझे धमकी दे रहे हो।" ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा"जानते हो उसी अर्जुन ने ही मेरी पत्नी की चैलेंज देकर हत्या की है। उसके फिंगरप्रिंट्स बाकायदा गाड़ी में से मिले हैं।"

"आपकी धर्मपत्नी का हमें भी अफसोस हैऔर उनका हत्यारा, अगर अर्जुन नागपाल है तो उसे सजा भी मिलनी ही चाहिए। तभी तो हम यहां आए हैं ताकि पूछ सकें उस अर्जुन से...कि उसने यह हत्या क्यों की?"

"उसने हत्या नहीं हत्याएं की हैं...वो हत्यारा नहीं सिरफिरा हत्यारा है।"

"और अब ये उस सिरफिरे की हत्या कर देना चाहते हैं।" देवसिंह यकायक चड्ढा की बात काटता बोला"तभी मैंने आप लोगों को बुलवाया। मैं भी कहता हूं अर्जुन हत्यारा है...पर उससे इन्हें कैसे हक मिल जाता है कि ये हैडक्वार्टर में ही उसे मार गिराएं। और बाद में...अर्जुन की मौत को मुठभेड़ करार कर दें।"

"कहिए ए०सी०पी०!" संजय चुग बोला"आपको कैसे हक मिल गया कि आप उस विक्षिप्त हत्यारे की हत्या कर डालें और मामला मुठभेड़ का बना दें।"

"ओफ्फो! आपसे किसने कहा कि हम उस अर्जुन को हैडक्वार्टर में ही मार डालना चाहते हैं?" ए०सी०पी० चड्ढा ने बात बदली और दांत चबाकर देवसिंह को घूरा।

"आपके तेवर ही बता रहे हैं सर...कि आप ऐसी ही किसी फिराक में यहां पहुंचे हैंऔर हमें यहां देखकर अब बात बदल रहे हैं।" संजय चुग बेखौफ बोला।

"खामोश।" तभी ए०सी०पी० चड्ढा ने संजय चुग को उंगली दिखाई"उतनी बात करो जितनी हैसियत है तुम्हारी। औकात है तुम्हारी। समझे?"

"माफ कीजिए सर! कलम की औकात तलवार से बेहतर ही होती है। हम तब तक यहीं हैं जब तक कि हम अर्जुन नागपाल का इंटरव्यू न ले लें। जब तक कि उसकी न सुन लें कि उसने यह हत्या. ..सॉरी...उसने यह हत्याएं क्यों की हैं?"

"माई फुट। खड़े रहो यहीं पर।" पैर पटकता ए०सी०पी० चड्ढा बोला"रिमैम्बर। अर्जुन पुलिस कस्टडी में हैऔर मामला, विचाराधीन है। पुलिस प्रैस को तब तक कुछ बताने के लिए बाध्य नहीं है जब तक कि जरूरी न समझे। आप जबरन हमसे कुछ नहीं पूछ सकते।"

"ओ०के०। हम बाहर खड़े हैं। तब तक खड़े हैं जब तक कि अर्जुन नागपाल को कल सुबह कोर्ट में नहीं ले जाया जाता।" संजय चुग ने कहा और अपने दल में आ गया।

ए०सी०पी० चड्ढा देवसिंह को घूरता हैडक्वार्टर में निकल गया।

देवसिंह ने जेब से चिंगम का पैकेट निकाला और एक चिंगम मुंह में डाल ली।

उसने ही वहां प्रैस रिपोर्टरों की मंडली बुलवा ली थी, ताकि प्रैस का जमावड़ा देख चड्ढा, तिवारी, कोई गैरकानूनी हरकत न कर सकें। संजय चुग उसकी पहचान का था और गुड़गांवा में रहकर ही खबरें इकट्ठा करता था। देवसिंह के एक फोन पर ही उसने अपनी जात के कई रिपोर्टरों को इकट्ठा कर डाला था। अब उनकी मौजूदगी में अर्जुन को हैडक्वार्टर से जिंदा निकालना और कोर्ट की तरफ ले जाना जरूरी हो चला था।

फिर देवसिंह राजपूत भी हैडक्वार्टर में निकल गया।

अब प्रैस कांफ्रेंस भी जरूरी हो चली थी।

❑❑❑

❑❑❑

हैडक्वार्टर के सभागार में प्रैस कांफ्रेस लगी थी।

मंच पर ए०सी०पी० चड्ढा, बच्चू तिवारी तथा शकुंतला शर्मा बैठे थे। जबकि देवसिंह राजपूत दायीं तरफ बने कटघरे में खड़े अर्जुन नागपाल के पास खड़ा था।

सामने कुर्सियों पर प्रैस रिपोर्टर बैठे थे।

अर्जुन नागपाल हथकड़ियों में घिरा एक-एक को हैरत भरी निगाहों से घूर रहा था।

"मिस्टर अर्जुन! आप कबूल करते है कि आपने डॉक्टर अर्चना

चड्ढा का खून किया है?" तभी संजय चुग ने उठकर पहला सवाल किया।

"देख रहा हूं। मुझ पर आजकल हर कोई बेबुनियाद आरोप लगाने लगता है। पहले मुझ राखी शाह का हत्यारा बताया गया। बाकायदा मेरे खिलाफ सबूत भी जुटा लिए गएऔर इस बार मुझे अर्चना चड्ढा का हत्यारा साबित किया जा रहा है।"

"तो क्या यह झूठ है?" ए०सी०पी० चड्ढा फुंफकारा।

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"क्या तुम अर्चना चड्ढा से मिलने नहीं गए थे?"

"गया था। मैं खुद को किसी खतरनाक बीमारी से ग्रसित समझ कर गया था। मुझ लग रहा था कि मुझ पर किसी बुरी आत्मा का साया है। या मैं Split Personality का शिकार हूं। या फिर मेरी याददाश्त आ जा रही है। पर अफसोस डॉक्टर अर्चना मेरा मर्ज न पकड़ पायी। वो वाकई मेरा इलाज न कर पायी।"

"तो तुमने उसी का इलाज कर दिया।" देवसिंह राजपूत बिफरा।

"कैसा इलाज?" अर्जुन ने देवसिंह की तरफ चेहरा मोड़ा।

"तुमने डॉक्टर अर्चना को 8-40 तक मार डालने की धमकी दीऔर बाकायदा उसे उसकी गाड़ी में ही मार दिया।"

"देवसिंह, ये तुम क्या कह रहे हो!" अर्जुन हैरान हुआ"मैंने अर्चना को चैलेंज दिया था! क्यों?"

"क्यों का पता होता तो इतना बखेड़ा ही क्योंकर होता। ये तो तुम ही बताओगे कि डॉक्टर अर्चना का कत्ल तुमने क्यों किया?"

"मैं क्या बताऊं...जब मैंने कत्ल किया ही नहीं...मुझे तो याद ही नहीं कि डॉक्टर अर्चना से मिलने के बाद मैं कहां गया था! कहां को निकला था! फिर भला मैंने उसकी हत्या कर डाली...मैं कैसे मान लूं यह सब! जरूर मुझे फंसाने की साजिश है यह कोई।"

"खामोश।" देवसिंह ने हलक फाड़ा।

अर्जुन नागपाल ने सकपकाकर थूक निगला और प्रैस रिपोर्टरों से संबोधित हुआ

"मेरा यकीन कीजिए भाई लोगों! मुझे याद नहीं कि मैंने अर्चना जी का कत्ल क्यों किया? कब किया?"

"ओह शटअप।" संजय चुग ने मुंह बनाया"तुम वाकई घुटे हुए शातिर हो कोई।"

"हे हे। कमाल है! आप भी मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं। मैं तो आज ही आपसे मिला हूं। और आप हैं कि मुझ पर इल्जाम पर इल्जाम

लगाए जा रहे हैं।"

संजय चुग अपनी कुर्सी पर बैठा, फिर उसने दोनों हाथों में सिर जकड़ लिया।

"देख छोरे! तैं मान जा...कबूड़ कर ले कि तैंने अर्चना का खून किया से?" मंच पर बैठा बच्चू तिवारी बोला।

"आपकी तारीफ?" अर्जुन नागपाल ने उसकी तरफ चेहरा मोड़ा।

"मंने बच्चू तीवाड़ी कहे हैं। और अर्चना म्हारी बेटी थी और इस ए०सी०पी० की बीवी। अब तेड़ा जिंदा लिकड़ भागना मुश्किल है ब्होत। मैं तैंने जिंदा नहीं छोड़ने वाड़ा।"

"ओह गॉड!" अर्जुन ने सोचपूर्ण मुद्रा में हाथ माथे पर रखा"आपके मुताबिक मैंने ए०सी०पी० की बीवी को मार डाला। एक मंत्री की बेटी को मार डाला।"

जवाब में बच्चू तिवारी और चड्ढा दांत पीसने लगे।

"जयसिंह, ये क्या कह रहे हैं?"

"ये सही कह रहे हैं। और अब तक रिपोर्ट आ चुकी है। अर्चना की गर्दन में और बार में पायी गयी लाश की कनपटी में मिली गोली से साफ नतीजा आया है कि अर्चना का खून तूने किया है। बार में खूनी खेल खेलता तू रंगे हाथ ही पकड़ा गया था। तेरे फिंगरप्रिंट्स भी दोनों जगह मिले हैं...इसलिए इस बार तेरा बचना मुश्किल है। फिर भी सच कबूल कर ले ताकि मैं तुझे भारतीय दंड संहिता के अधीन कानूनन फांसी दिलवा सकूं...वरना तो दुनिया तुझे अब जिंदा नहीं छोड़ने वाली।"

"जब तुम ही मेरा विश्वास नहीं कर रहे तो और कौन करेगा।" अर्जुन बोला।

बच्चू तिवारी तथा ए०सी०पी० चड्ढा आपस में कुछ मंत्रणा करने लगे।

संजय चुग भी अपने रिपोर्टरों से अर्जुन के मुतल्लक मंत्रणा करने लगा।

देवसिंह राजपूत होठों को उंगली से कुम्हलाता अर्जुन की आंखों में झांकने लगा।

अर्जुन नागपाल मासूमियत से खड़ा पलकें मिचमिचाने लगा।

तभी देवसिंह को कुछ सूझा और वो ए०सी०पी० चड्ढा की तरफ बढ़ा।

"सर!" देवसिंह चड्ढा से बोला"देखिए, आपने यह तो महसूस

कर ही लिया होगा कि अर्जुन नागपाल जब चाहे ऐसी दलीलें देकर खुद को कानून की पकड़ से आजाद कर सकता है।"

"तो?" चड्ढा ने उसे आग्नेय नेत्रों से घूरा।

"हमें कुछ और ही सोचना पड़ेगा। कुछ ऐसा कि अर्जुन नागपाल खुद ही बता दे कि क्या खटराग है? क्यों वह दिनदहाड़े हत्याएं करता फिर रहा है?"

"ईसा कैसे होगा?" बच्चू तिवारी बोला।

"मुझे एक गेम खेलनी पड़ेगी।" देवसिंह दूर खड़े अर्जुन को घूरता बोला।

"कुछ पता तो चले, क्या गेम खेलना चाहते हो?" चड्ढा गुर्राया।

"मुझे इसे दिल्ली ले जाना होगा।"

"वो तो तुम चाहते ही यही हो। दिल्ली जाकर तुम इसे आजाद करा दोगे या यह खुद ही भाग खड़ा होगा। पहले भी तो कई बार कानून की पकड़ से भाग चुका है।"

"भागना चाहेतो यह यहां से भाग सकता हैं। और मनीराम तथा जगदीश मुखी की पकड़ से यह पहले भी भाग चुका है। बाकायदा मनीराम का रिवाल्वर लेकर।"

"उस फरारी में भी तुमने ही अर्जुन को सहयोग दिया था।"

"पर मनीराम के होलेस्टर से रिवाल्वर उड़ाने का आइडिया मैंने नहीं दिया था अर्जुन को। वो सब तो मनीराम की लापरवाही का ही नतीजा थाऔर उसी लापरवाही की वजह से ही अर्चना और बार में मौजूद ग्राहक की जान गई।"

"वो सब हम जानते हैं। तुम कहो क्या चाहते हो?"

"अपनी पुलिस पर आरोप लगा तो घबरा गये।"

"दामाद जी! कुल जमा ये इंस्पैक्टर जो कह रहा है, उससे तो एक ही नतीजा लिकड़े हैयह अर्जुन को हमारी पकड़ से दूर ले जाना चाहते हैं।"

"उसके बाद क्या करेगावो भी तो बताए।" ए०सी०पी० चड्ढा ने देवसिंह को घूरा।

"एक तरकीब है मेरी निगाह में?"

"क्या?"

"अभी बताना ठीक नहीं समझता।"

"या कोई तरकीब हो ही नहीं...तरकीब का बहाना ही हो।" चड्ढा फुल ढिठाई से बोला।

"अब आपको कैसे समझाऊं?"

"जब तरकीब है तो समझाने में क्या मुश्किल है। हां तरकीब हो ही न...तब समझाना मुश्किल है।"

"सर! अगर तरकीब आपको बता दी तो वो अर्जुन को पता चल जायेगी।"

"अर्जुन को कैसे पता चल जायेगी?" फुंफकारा ए०सी०पी० चड्ढा"मैं भला अर्जुन को बताऊंगा। अपने कट्टर दुश्मन को बताऊंगा...अपनी बीवी के हत्यारे को बताऊंगा।"

"हर बात बताने से ही पता नहीं चलती। आप इस समय गुस्से में बौखलाएं बैठे हैं। मुमकिन है आप कोई ऐसी हरकत कर बैठें जिससे अर्जुन समझ जाए कि हमारी तरकीब क्या है, फिर वो खुद को बचाने के लिए कोई नई तरकीब घड़ लेगा। कोई नई तरकीब कर लेगा।"

"तो तुम नहीं बताना चाहते कि तरकीब क्या है?"

"फिलहाल तो मैं अर्जुन को दिल्ली ले जाना चाहता हूं। आप भी जानते है कि होम मिनिस्टर भी इस पागल के अंत में दिलचस्पी ले रहे हैं। अब आज्ञा हो तो मैं इसे दिल्ली ले जाऊं...या फिर कमिश्नर नारंग से आपकी बात कराऊं। आप पर कोई ऊपरी दबाव डालवाऊं।"

"हूं।" इस बार ए०सी०पी० चड्ढा संजीदा दिखाई दिया।

"यकीन रखिए सर! अगर यह पागल न निकला...या फुलप्रूफ प्लानिंग के साथ कोई साजिश करता मुजरिम निकला, तो इसका कत्ल मेरे हाथों से होगा। और...।"

"हूं।" ए०सी०पी० चड्ढा ने सहमति में सिर हिलाया।

"अगर यह वाकई में पागल निकला तो इसकी नैना का मर्डर इसके ही हाथों होगा।" देवसिंह यह शब्द मुंह-ही-मुंह में बुदबुदाता बोला"नैना ही वो तरकीब है जो हमें इस पागल की असलियत के करीब ले जाएगी। अगर नैना इसके हाथों मारी गयी तो वाकई साबित हो जाएगा कि यह सच में पागल है। अगर इसने नीला को छोड़ दिया तो साबित हो जाएगा कि यह अच्छा भला है और बाकायदा प्लानिंग के साथ हत्याएं करता फिर रहा है...तब यह मेरी गोली से मरेगा। मेरी गोली से।" आखिरी तीन शब्द देवसिंह ने अर्जुन की आंखों में झांककर कहे।

"क्या मुंह-ही-मुंह में मिण-मिण कर रहा है। कुछ मुझे भी तो बता।" अर्जुन ने सहज स्वर में पूछा।

"तू दिल्ली चल। फिर देख...कैसे गाजे-बाजे के साथ में तेरा जनाजा उठवाता हूं और तेरी उस माशूका का भी।"

"गाजे-बाजे का प्रोग्राम तो यहां पर भी है। फिर दिल्ली क्यों

जाएं...तू यहीं उठा मेरा जनाजा...मैं तैयार हूं...फायर।" तभी अर्जुन चिंघाड़ा।

पर किसी ने भी उस पर गोलियां न चलाईं।

"दामाद जी! छोरा वाकई पागल दिखे है। भेज दियो दिल्ली। बार की बाद में देख लेवेंगे। इतने लोगो के सामणे यूं भी हम इसको ना मार सकै हैं।" बच्चू तीवारी ए०सी०पी० चड्ढा के कान में फुंफकारा।

"ठीक है देवसिंह! तुम अर्जुन को ले जाओ। पर इतना ध्यान रखना...कानून के पास पागल की सजा हो न हो...पर हमारे पास है। हम इसे छोड़ने वाले नहीं।"

"छोड़ने वाला मैं भी नहीं।" देवसिंह भरे गले से चिंघाड़ा।

"अगर ये पागल निकला तो सच में अपनी सबसे प्यारी चीज नैना का गला घोंटेगा। अगर पागल न निकला तो देवसिंह अपने सबसे प्यारे यार का गला रेतेगा। मुकद्दर के मारे इस यार ने एक बार फिर मुझे, धर्मसंकट के उस दोराहे पर खड़ा कर दिया है जहां एक कुर्बानी देनी है और एक कुर्बानी लेनी है।"

"देवसिंह, क्या बक रहा है। बहुत फिल्में देखने लगा है। लेटस्ट कौन सी देखीं?"

"अर्जुन, अब तो या तू नहीं। या नैना नहीं।"

"देवसिंहऽऽ।" अर्जुन उसी पल चिंघाड़ उठा।

"फैसला तू ही कर अब। खुद जिंदा रहेगा या नैना को जिंदा रखेगा?"

"देवसिंहऽऽ।"

देवसिंह ने उसी पल उसे गिरेहबान से खींचा और कटघरे से नीचे खदेड़ लिया। फिर उसे गिरेहबान से ही खदेड़ता बाहर की तरफ निकलने लगा। उसकी आंखों में धुआं छोड़ते आंसू स्पष्ट नजर आ रहे थे।

पत्रकार-रिपोर्टर उन दोनों के गिर्द घेरा बनाकर छाने लगे, ताकि उन पर कोई फायर न कर सके।

"आइए शकुंतला जी!" बच्चू तिवारी बोला"आपको घर छोड़ दूं।"

❑❑❑
❑❑❑

शकुंतला शर्मा गाड़ी में बैठी अतीत की यादों में खोई पड़ी थी। अर्जुन के चक्कर में देवसिंह ने उस पर तवज्जो नहीं दी थी।

पांच साल पहले उसने जिस रहस्य को दुनिया की नजरों से

छिपाने के लिए अपने पति बलबीर शर्मा की हत्या कई लोगों सहित की थी, वो रहस्य अब ज्यादा समय तक दुनिया की निगाहों से छिपने वाला नहीं था। बलबीर का दिमागी कीड़ा अब सिर उठाने लगा था।

पांच साल पहले 'मैनन नर्सिंग होम' में हुआ हादसा दो-चार हफ्ते अखबारों की सुर्खिया बना। उस ऑपरेशन थियेटर में मिली लाशों की वजह से खूब हाहाकार मचा था पर लाशें इस कदर जल गयी थीं कि उनकी शिनाख्त न हो पायी थी। कई इंक्वायरी कमिशन बैठे। कई मंत्रियों ने उस हादसे को सुलझाने की कसमें खाईं पर कोई सुखद नतीजा नहीं निकला।

आखिरकार वो हादसा समय के आगे हारता चला गया और लोगों द्वारा भुला दिया गया।

जब कोई यह ही नहीं जान पाया कि ओ०टी० में बलबीर शर्मा का ऑपरेशन चल रहा था और वहां से मिली कमांडोज की लाशें बलबीर शर्मा की धर्मपत्नी शकुंतला शर्मा के कमांडोज की थीं। अतः शकुंतला शर्मा का नाम किसी की जबान पर ही न आया।

बलबीर शर्मा अपनी हवेली से गायब करार कर दिया गया। फिर एक दिन शकुंतला शर्मा ने कोई लावारिस लाश हासिल की। उसे बलबीर शर्मा का नाम दिया और खुद को विधवा घोषित कर दिया।

धीरे-धीरे गुड़गांवा के लोग शकुंतला के गायब शौहर को मृत जान उसे विधवा कबूल कर बैठे।

तब इलैक्शन सिर पर थे। शकुंतला शर्मा बच्चू तिवारी के विरुद्ध विधान सभा का चुनाव लड़ने जा रही थी। उसे पूरी उम्मीद थीं कि अपने पति की मौत की हमदर्दी के एवज में जनता उसे वोट देगी और वो एम०एल०ए० बनेगी। पर होनी को कुछ और ही मंजूर था।

पांच साल पहले का दृश्य उसके आगे फिल्म की तरह चलने लगा...सन 2003...।

❑❑❑

❑❑❑

शकुंतला शर्मा अपने कमरे में बैठी स्वैटर बुन रही थी कि उसका बड़ा बेटा देवी शर्मा उसके कमरे में पहुंचा।

"देवी!" शकुंतला शर्मा की सलाईयां चलाती उंगलियां रुकीं"क्या बात है?"

देवी शर्मा उसके बैडरूम में पहुंचा और पीठ पीछे हाथ बांधे गोल-गोल घूमने लगा।

"तुम्हारे हाथ में क्या है...क्या छिपा रहे हो, दिखाओ तो?"

"ऊंह।" 28 साल के बुद्धिमान देवी शर्मा ने किसी नटखट बच्चे की तरह लाड किया और बोला"मैं नहीं बताऊंगा...नहीं बताऊंगा कि मेरे हाथों में क्या है?"

"देवी!" शकुंतला शर्मा कर्कश आवाज में चीखी"उम्र देखो अपनी। 28 के हो चुके हो। ऊंट की तरह बदन हो चुका है तुम्हारा. ..तुम्हें शोभा नहीं देता कि बच्चों की तरह हरकतें करो...दिखाओ क्या छिपा रखा है तुमने?"

देवी शर्मा ठिनकता हुआ उसकी तरफ बढ़ने लगा।

शकुंतला शर्मा ने सलाईयां व ऊन का गोला साथ वाली टेबल पर रखा और अपनी सीट से खड़ी हुई।

"मुझे तो शोभा नहीं देता...पर आपको शोभा देता है। आपको सब शोभा देता है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"याद करो वो मैनन नर्सिंग होम...वो हादसा...वो हत्याकांड।"

"देवी!" शकुंतला शर्मा की घुटी-घुटी चीख निकली"य...ये क्या कह रहे हो तुम?"

"कह नहीं रहा। सब देखा है मैंने...सब। जो उस रात हुआ था।"

"न...न...नहीं।" शकुंतला ने इंकार में हाथ नचाया"त...तुम वहा कहां थे?"

"मैं वहीं थावहीं।"

"कैसे?"

"आपकी सफेद अंबेसडर की डिग्गी में छिपा पड़ा था। जिस वक्त आप अंदर ऑपरेशन थियेटर में मंडरा रही थीं। मैं डिग्गी से निकलकर वहीं एक पेड़ के पीछे जा छिपा था।"

"य...ये झूठ है।"

"झूठ है तो फिर यह क्या है?" इस बार देवी शर्मा ने पीठ पीछे से हाथ निकाला तो एकाएक हाथ में वीडियो कैसेट नजर आई।

"यह क्या है?"

"ये वही वीडियो कैसेट है जो कैमरामैन अमरकांत दूबे ने शूट की थी। वो यह कैसेट आपको देने, जलता हुआ सड़क पर भी पहुंचा था। पर आप तब तक लूका के साथ अपनी अंबेसडर में निकल चुकी थीं। आप सबको ऑपरेशन थियेटर में मरा समझकर वहां से निकल चुकी थीं। अमरकांत दूबे भी मर चुका था। पर मरने से पहले उसका वीडियो कैमरा नाल में जा गिरा था और मैंने नाले में कूदकर यह कैमरा

कब्जा लिया था। यह वीडियो कैसेट निकाल ली थी। और अब यह वीडियो कैसेट दुनिया देखेगी...अब दुनिया जानेगी कि अपने पति की हत्यारिन शकुंतला शर्मा के कुकर्मों का जीता-जागता चश्मदीद गवाह उसी का ही बेटा देवी शर्मा है...मैं खोलूंगा तुम्हारा कच्चा चिट्ठा कि तुम कितनी बड़ी नागिन हो।"

"नहींऽऽ। तुम ऐसा नहीं करोगे।"

"मैं ऐसा करूंगा।"

"यह जानते हुए कि इसमें तुम्हारे खानदानी दिमाग की करतूत छिपी है। तुम्हारे बाप के दिमाग में कीड़ा था जिसकी बाबत दुनिया जानेगी तो तुम्हारे से भी दस कदम दूर-दूर रहकर चलेगी। तुम्हारे छोटे भाई काली शर्मा से भी दूर-दूर भागेगी। मैंने उस वक्त जो किया तुम्हारी खातिर किया। तुम्हारे छोटे भाई काली शर्मा की खातिर किया। मैं नहीं चाहती थी कि दुनिया जाने कि मेरे पति के दिमाग में कीड़ा था। वो कीड़ा आगे देवी शर्मा के दिमाग में भी हो सकता है। काली शर्मा के दिमाग में भी हो सकता है...आखिर औलादें तो उसी बलबीर शर्मा की हैं। बोलोमेरी जगह तुम होते तो क्या करते?"

"मैं भी वही करता जो तुमने किया।" देवी शर्मा फुंफकारा"मैं अब भी वही करने जा रहा हूं जो तुमने किया था।"

"इस वक्त क्या करने जा रहे हो तुम?" शकुंतला चीखी।

"अपनी नागिन मां का नरसंहार करने जा रहा हूं। पहले तुमने हमारे भविष्य की खातिर पापा की जान ली। अब मैं अपने भविष्य की खातिर अपनी मां की जाने लेने जा रहा हूं।"

"नहींऽऽ।" शकुंतला शर्मा पीछे हटी।

"हां मां हां। शादी होती है तो औरत का भी वही खून हो जाता है जो उसके पति का होता है। मेरा बाप हिंसक जानवर था तो तुम क्या निकलीं। वही न...जो मेरा बाप था। तुम भी तो वही खून निकलीं न...जो मेरा बाप था। मेरे बाप के खून में दौड़ते कीड़े अब तुम्हारे भी दिमाग में दौड़ने लगे हैं। नहीं दौड़ रहे होते तो तुम क्यों मेरे बाप का कत्ल करती। जो राज दुनिया को पता चलना चाहिए था, उसे तुम क्यों दुनिया से छिपाकर रखना चाहतीं...अगर इस कीड़े की बाबत मैडिकल साईंस जान जाती तो शायद कोई ईलाज निकल आता...इन कीड़ों को खत्म करने की कोई ईजाद हो जाती...पर तुमने अपने सियासत की खातिर...एम०एल०ए० की कुर्सी की खातिर...अपने सुहाग को ही जला डाला। मां, बीमार होना गुनाह नहीं...बीमार बन जाना गुनाह है। पापा कुदरतन इस बीमारी के शिकार थे और तुम.

..किस कदर इस बीमारी का शिकार हो गयीं। गुनहगार पापा नहीं थे. ..तुम थीं। तुम हो। और आज...।" एकाएक देवी शर्मा ने कैसेट सोफे पर फैंकी और दोनों हाथों से शकुंतला शर्मा की गर्दन जकड़ ली और जहर भरे स्वर में फुंफकारा"मैं तुम्हारी हत्या करके तुम्हें इन गुनाहों से मुक्ति दूंगा। मौत दूंगा। ताकि कल को हमारा भविष्य खराब न हो. ..सियासत की चाह में तुम हमारी बलि न दो। तुम्हें मरना होगा मां! मरना होगा...मैं भी तुम्हारी तरह दुनिया को बता दूंगा कि मेरी मां गायब हो गयी। फिर किसी भी लावारिस लाश को मां की लाश बनाकर चार दिन शोक मना लूंगा। तुम्हारी तरह मगरमच्छी आंसू बहा लूंगा...मर जाओ मां...मर जाओ।"

'गूं-गूं-गूं।' मुंह से आवाज निकालने की कोशिश में शकुंतला शर्मा के मुंह से यही आवाज निकली।

देवी शर्मा उसे अपने साथ घसीटता सोफे पर गिरा कि...

'छनाक...।' टेबल पर पड़ा पानी का जग फर्श पर गिरा और उसके टूटने की आवाज गूंजी।

उसी पल बाहर का दरवाजा खुला और उस कमरे की तरफ कोई शख्स भागा।

"लो। आ गया तुम्हारा आशिक...लूका...जिसके पहलू में सोने की खातिर तुमने पापा की जान ले ली। बड़े घरों की महिलाएं अपने जिस्म की आग बुझाने के लिए अपने ड्राइवरों, नौकरों की सेवाएं लेती हैं। तुमने यह प्रथा भी बदल डाली...अब बड़े घरों की बुढ़ियाएं भी यार पालने लगीं। मैं जानता हूं लूका के साथ तुम्हारे पिछले तीन सालों से संबंध हैं...यह बात पापा भी जानते थे...पापा खामोश रहे और तुमने एक दिन उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए खामोश कर दिया। मैं भी अब तक खामोश ही था। एक दिन तुम मुझे भी खामोश ही कर देतीं. ..पर आज तुम्हें खामोश करके मैं यह किस्सा ही खामोश कर दूंगा।"

तभी लूका भीतर घुसा और चिंघाड़ता हुआ देवी शर्मा पर झपटा।

'धड़ाक...।' अगले ही पल उसने अपनी स्टेनगन का दस्ता देवी शर्मा के सिर पर दे मारा।

देवी शर्मा के हाथ फौरन शकुंतला के गले से छूटे और अपने सिर पर पहुंचे।

फिर वो शराबी की तरह लहराता फर्श की तरफ घुटने मोड़ने लगा।

"रानी साहिबा...क्या हुआ था?" स्टेनगन नाल से पकड़े दूसरा वार करने को तैयार खड़ा लूका बिफरा।

"कुछ नहीं...सब जान गया यह।" एक हाथ से अपने गले की मालिश करती फंसी-फंसी आवाज में शकुंतला शर्मा बोली।

"मतलब?" लूका की आंखें फटीं।

"कुछ नहीं...एक और दो इसे।"

'धड़ाक' अगले ही पल स्टेनगन का दूसरा वार देवी शर्मा के सिर पर पड़ा और वो फर्श पर चारों खाने चित जा फैला।

"क्या जान गया यह?"

"यह जान गया कि तुम कितने कड़ियल मर्द हो।" शकुंतला शर्मा खड़ी होती दोनों हाथ लूका की चौड़ी छाती पर फेरती बोली"और इसकी मां की भूख तुम्हारी जवानी से ही शांत होती है।"

"क्याऽऽ!" लूका का मुंह फटा।

"यह, यह भी जान गया कि कैसे हमने मैनन नर्सिंग होम में बलबीर शर्मा की हत्या की। वो हत्याकांड किया...।"

"नहींऽऽ!" लूका की आंखे फटीं।

"...और यह - यह भी जान गया कि कैसे तुम यह काम बाखूबी अंजाम न दे पाए...तड़ाक।" अगले ही पल शकुंतला शर्मा का चाटा लूका के गाल पर पड़ा तो उसकी गर्दन झुकती चली गयी।

"सॉरी मैडम!" लूका शर्मिंदगी महसूस करता बोला"पर देवी शर्मा ऑपरेशन थियेटर में नहीं था। होता तो कभी जिंदा न बचता।"

"बेवकूफ! मैं देवी की नहीं कैमरामैन दूबे की बात कर रही हूं। दूबे कैमरे सहित जलता बाहर निकला था और देवी ने वो वीडियो कैसेट हासिल कर ली थी, जिसमें उस ऑपरेशन थियेटर में घटा सारा वाक्यात है।"

"ओह माई गॉड!" तत्काल ही लूका की दृष्टि सौफे पर पड़ी उस कैसेट पर पड़ी"पर मैडम, देवी वहां कैसे पहुंच गया?"

'तड़ाक।' शकुंतला का चांटा फिर पड़ा लूका के गाल पर।

"यानि इस बार भी लापरवाही मेरी ही थी।" लूका गाल पर हाथ रखे बोला।

"ऑफकोर्स। तुम्हारे होते यह उसी अंबैसडर की डिग्गी में छिपा रहा जिसमें हम पांच लोग मैनन नर्सिंग होम की तरफ निकले थे। चार कमांडोज और पांचवीं मैं।"

"ओह! सॉरी।" लूका ने इस बार चेहरा सीने पर ही झुका लिया।

शकुंतला शर्मा तत्काल ही लूका की वर्दी के बटन खोलती उसकी छाती के घने बालों से खिलवाड़ करने लगी। फिर रोमांटिक अंदाज में बोली

"समझ गए न अब। क्या करना है?"

"समझ गया मैडम। आपकी आग बुझानी है और अपनी प्यास. ..पर इस देवी शर्मा का क्या करें?"

"वही जो बलबीर शर्मा का किया था। इसके बाप का किया था। देखो...लाश है या सांस है?"

लूका उसी पल, घुटने के बल देवी शर्मा के शरीर पर झुक गया। फिर नब्ज टटोलता बोला

"जिंदा है अभी।"

"बाहर प्रैस रिपोर्टर है कोई?"

"हां मैडम! दो रिपोर्टर आपकी हर स्टेटमैंट की खबर अपने न्यूज चैनल को पहुंचाते हैं। आखिर आप इलैक्शन लड़ने जा रही हैं. ..कल को एम०एल०ए० बनेंगी तो उन्हीं रिपोर्टरों के ही काम आएंगी न...तभी चापलूसी के अंदाज में आपको मशहूर करते जा रहे हैं।"

"सो नाइस ऑफ दैम। उन्हें बाहर जाकर संदेश दो कि मेरा बेटा देवी शर्मा मेरी इलैक्शन कंपेनिंग (पब्लिसिटी) के लिए दिल्ली जा रहा है। मैं तब तक हैलीकॉप्टर का इंतजाम करती हूं।"

"फिर?"

"फिर देवी शर्मा दुनिया की नजर में हैलीकॉप्टर पर जाएगा पर वापिस कभी न आएगा। हैलीकॉप्टर ब्लास्ट हो जाएगा।"

"यानि हैलीकॉप्टर में बम भी लगाना है।"

"जो कि तुम लगा ही लोगे।"

"हां। दो बम हैं मेरे पास। जो कि इस्तेमाल तो बच्चू तिवारी के खिलाफ होने थे पर...देवी शर्मा के खिलाफ होंगे। बट मैडम, बाहर खड़े रिपोर्टर जब हैलीकॉप्टर पर बेहोश देवी शर्मा को लोड होता देखेंगे, तो क्या सोचेंगे?"

"लूका! तुम्हारे में जितनी अक्ल है उतनी ही तो बात करोगे।"

"सही कहा मैडम आपने। आप जितनी अक्ल होती तो कहीं का कमिश्नर, गवर्नर न होता। आपकी ही चौखट पर कुत्ते की तरह एड़ियां क्यों रगड़ रहा होता। आपने तो मुझे जिगालो (मर्द वैश्या) बना रखा है।"

"शटअप। बाहर खड़े रिपोर्टरों को यह संदेश दो। जब हैलीकॉप्टर आ जाए तो रिपोर्टरों को मेरे साथ जलपान करने का न्यौता देना। वो जलपान करने भीतर आएंगे। तुम पिछले रास्ते से बेहोश देवी शर्मा को लेकर निकल जाना और हां...कहीं बम लगाना न भूल जाना। तुम्हें आदत है बिना बंबू के तंबू गाड़ने की और बिना तंबू के बंबू गाड़ने

की।"

"हं हं हं! वाह! क्या स्कीम बनाई है। रिपोर्टर अपना अहोभाग्य समझते आपके साथ जलपान कर रहे होंगे और पिछले रास्ते से ही देवी शर्मा का जुगाड़ किया जा रहा होगा।"

"आगे पता है न क्या करना है?"

"जी।" लूका चहका"मैं बम सहित देवी शर्मा को हैलीकॉप्टर में डाल दूंगा। हैलीकॉप्टर उड़ेगा और टाइम बम आसमान में ही फट जाएगा और इस हत्या को विमान हादसा करार कर दिया जाएगा।"

"पायलेट को बता देना कि देवी शर्मा अभी नींद में है। जब नींद से जगे तो देवी को बता देगा कि उसे दिल्ली में मां का चुनाव प्रचार करना है।"

"जी। पायलेट बेचारे को क्या पता कि देवी शर्मा ने अब कभी होश में नहीं आना है...और उसे (पायलेट) भी आधे रास्ते से, हमेशा-हमेशा के लिए गहरी नींद में सो जाना है।"

"नाओ मूव! मूव!" इस बार उंगली बाहर की दिशा में हड़काई गयी।

लूका तेजी से बाहर की तरफ निकला।

"इन सब कामों से फारिग होने के बाद...हमें क्या करना है?"

"जी! एक दूसरे को फारिग करना है। बंदा बैड पर हाजिर होगा. ..आपके हुजूर में सलाम बजा रहा होगा।"

"मूव-मूव। आऊट।" शकुंतला शर्मा कामुकता छिपाती मुड़ी।

लूका निकल गया।

और वो सिंहनी अपने बेट देवी शर्मा के ही बेहोश शरीर पर टांग रखकर खड़ी हो गयी। जो कुछ ही देर बाद मरने जा रहा था। फिर वो उसी अंदाज में ही मोबाइल पर हैलीकॉप्टर मंगवाने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

'गड़...गड़...।' हैलीकॉप्टर की गर्जन गूंजी तो उस समय रिपोर्टर अजय मलकानी और मीरा नागिया डायनिंग टेबल पर बैठे नाश्ता कर रहे थे।

शकुंतला शर्मा उन्हीं के पास बैठी सैंडविच खा रही थी।

"मैडम!" तभी नैपकिन से हाथ पोंछता अजय मलकानी बोला"हैलीकॉप्टर आ गया है। हम चलकर देवी जी की तस्वीरें लेते हैं।"

"आप पहले नाश्ता कीजिए। फिर चले जाइएगा।" कहती

शकुंतला शर्मा ने काफी का घूंट भरा“हैलीकॉप्टर कही नहीं जाता। न ही देवी शर्मा।”

“जी।” अजय मलकानी ने झेंपकर पुनः छुरी-कांटा उठा लिया और प्लेट में पड़ा कटलेट काटकर मुंह में डाला।

“मैम! आपने पहले तो नहीं बताया कि देवी शर्मा जी दिल्ली जा रहे हैं। आपकी कंपेनिंग के वास्ते।” मीरा नागिया सैंडविच का बाइट लेती बोली।

‘गड़...गड़...।’ उधर हैलीकॉप्टर छत के ऊपर उतरा।

“वो अचानक ही प्रोग्राम बना। वैसेहर बात रिपोर्टर्स लोगों को बतानी जरूरी है क्या?” शकुंतला शर्मा शांत स्वर में बोली।

“नो नो। मैंने तो बस वैसे ही पूछ लिया। वैसे ही।” मीरा नागिया यकायक हड़बड़ाई।

‘ट्रिन...ट्रिन।’ तभी कॉलबैल बजी और मीरा नागिया ने उठने का उपक्रम किया।

“बैठी रहो। मेड सर्वेंट देख लेगी। मेहमान हो। मेहमानों की तरह पेश आओ। मेरी बहू बनने की चेष्टा मत करो।”

“जी।” मीरा नागिया ने उसी पल झेंपकर अपने सहकर्मी अजय मलकानी की तरफ देखा।

अर्जुन मलकानी ने कटलेट चबाते अनभिज्ञता से कंधे उचकाए।

उधर बड़े से लिविंग रूम से मेड सर्वेंट हाथ पोंछती मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ी।

सभी की दृष्टि दरवाजे पर जा टिकी।

तभी दरवाजा खुला और दरवाजे पर एक नौ साल का बच्चा स्कूल यूनिफार्म में नजर आया।

उसके कंधे पर टंगा बस्ता कह रहा था कि वो अभी-अभी स्कूल से लौटा है।

“लीजिए मैडम! आपका बेटा काली शर्मा आ गया।”

शकुंतला शर्मा ने जवाब न दिया पर निगाहें दरवाजे पर ही रखीं।

“मम्मां! मम्मां!” काली शर्मा सीधा डायनिंग टेबल पर बैठी शकुंतला शर्मा की तरफ दौड़ा।

“रमैया! इसे पकड़ो और कमरे में लेकर जाओ।” शकुंतला शर्मा तत्काल चीखी।

दरवाजे पर खड़ी रमैया नामक मेड सर्वेंट काली शर्मा के पीछे झपटी और फिर उसने गुद्दी से ही पकड़कर काली शर्मा को हवा में उठा लिया।

अगले ही पल वो बच्चे को उठाए दायीं तरफ बनी ऊपरी सीढ़ियां चढ़ती चली गयी।

अजय और मीरा की निगाहें कभी हकबकाकर शकुंतला की तरफ उठतीं तो कभी हाथ-पैर उछालते उस बच्चे पर।

"भैया! भैया! देवी भैया!" काली शर्मा यकायक मम्मा का अलाप छोड़ भैया-भैया चिल्लाने लगा।

दोनों रिपोर्टरों को यह माजरा समझ न आया। शकुंतला शर्मा बड़ी ही निर्मोही औरत लगी उन्हें...वो अभी कुछ पूछते कि

"मेरा बेटा नहीं है यह?" शकुंतला शर्मा ने तत्काल ही उन दोनों रिपोर्टरों की शंका का समाधान किया।

"जी!" दोनों रिपोर्टर एकाएक हिचकिचाए।

"हां। ये काली शर्मा मेरा बेटा नहीं है। मेरा असली बेटा देवी शर्मा है जो 28 साल का हैऔर यह 9 साल का छछूंदर मेरा बेटा नहीं है। कैसे हो सकता है?"

"ह...हम कुछ समझे नहीं मैडम!"

"बड़े घरों में बड़ी ही बातें होती हैं। न ही समझो तो अच्छा है।" शकुंतला शर्मा जैसे कुनेन की गोली निगलती बोली हो।

"फ...फिर भी।"

"दरअसल अपने बाप बलबीर शर्मा की अय्याशी का नतीजा है यह। बलबीर ने एक रखैल रखी हुई थी।"

"यू मीनऔरत।"

"हां।" शकुंतला शर्मा सहमति में सिर हिलाती बोली"बड़े लोग अक्सर रखैल रखते हैं। सो उन्होंने भी रखी हुई थी। बस यह बच्चा उसी रखैल का ही अंश है। रखैल तो इसे जन्म देते ही मर गयी और यह सीधा मेरी गोद में चला आया। बस तभी से ही यह मुझे मां समझता है। पर पता नहीं क्यों, मैं खुद को इसकी मां कभी न समझ पायी। शायद इस मामले में मैं एक साधारण औरत ही निकली। शायद उससे भी कम। जब-जब इसे देखती हूं...वो रखैल और बलबीर मुझे कहीं बिस्तर पर नजर आने लगते हैं। बोलो...कैसे बर्दाश्त करूं सब!"

"ओह! यानि इसकी मां के मरते ही आपके पति ने यह बच्चा आपकी गोद में डाल दिया। फिर भी महानता तो है ही आपकी...जो आपने इसे अब तक पाला-पोसा। और कोई औरत होती तो कब का इसे छोड़ देती। और अब तो बलबीर जी को मरे भी छह महीने हो गए। आप तब भी इसे पाल ही रही हैं।"

"चापलूसी कम करो और पेट ज्यादा भरो।" शकुंतला शर्मा ने

उन्हें फटकार लगाई"इस मामले में मैं भी एक आम औरत ही निकली जो अपने पति की अय्याशी का नतीजा ढंग से संभाल नहीं पायी।"

"जी जी!" अजय मलकानी फिर नाश्ता करने में जुट गया।

"और हांजो देखा। सुना। जानाउसे बाहर जाते ही भुला देना। यह बच्चा आज की तारीख में मेरी ही संतान है तो ऐसा ही रहने देना...खामखाह कोई स्कैंडल मत बना देना। मेरी हाथ जोड़कर विनती है आपसे...इलैक्शन सिर पर है। यह राज जनता के सामने खुला तो मुझे कोई वोट न देगा...और मैं कभी इलैक्शन लड़ न पाऊंगी। तुम्हारा भी पता नहीं...फिर क्या हो। बस मेरी यह विनती हमेशा दिमाग में रहे तुम्हारे।"

"जी मैम! हम कुछ नहीं बताएंगे किसी को। हम विनती और धमकी में फर्क समझते हैं।" मीरा नागिया ने कटाक्ष किया।

"लड़की सयानी हौ। बिना कुछ कहे ही सब समझ जाती है।"

शकुंतला शर्मा नैपकिन से हाथ पोंछती उठी"आप यहीं बैठोमैं अभी आई।"

"म...मगर हम ऊपर चलते हैं...देवी शर्मा की तस्वीर...।" इससे आगे अजय मलकानी कुछ कहता कि शकुंतला शर्मा उसकी तरफ मुड़ी।

उसने घूरा तो अजय मलकानी के बाकी शब्द मुंह में ही रह गये।

"मैं अभी आई। तुम यहीं बैठो।" अंततः आदेश देती शकुंतला शर्मा उन्हीं सीढ़ियों की तरफ बढ़ी।

दोनों रिपोर्टरों की निगाहें सीढ़ियों की तरफ गयीं।

"भैया...भैया...।" काली शर्मा नजर नहीं आ रहा था पर उसके रोने-चीखने की आवाजें अभी भी उस हवेली में गूंज रही थीं और उसे रहस्यमयी भूतिया हवेली का नाम देती जा रही थी।

"आ मेले मुन्ना...प्वच...प्वच...।" तभी पुचकारता-सा स्वर उन दोनों के कानों में पड़ा।

"ये शायद देवी शर्मा की आवाज है। अपने रोते भाई को प्यार दे रहा है। शायद देवी नहीं जानता होगा कि काली शर्मा उसका सगा भाई नहीं है।" शून्य में देखती मीरा नागिया बोली।

पर वो दोनों ही नहीं जानते थे कि उन्हें सुनवाने की खातिर ही सिक्योरिटी चीफ लूका, देवी शर्मा की भूमिका निभा रहा है। लूका ही काली शर्मा को पुचकार-फुसला रहा है, ताकि नीचे बैठे रिपोर्टर यही समझें कि देवी शर्मा अभी हवेली में ही हैऔर बाकायदा होश में है।

"मीरा नाश्ता छोड़ और यहां से निकल ले। पता नहीं क्यों मामला कुछ रहस्यमयी लग रहा है।"

"चुप।" मीरा ने उसे लताड़ा"देख नहीं रहे, वो कैसी लताड़ देकर गयी है। बिना बताए निकले यहां से तो, यकीनन हमे बिना बताए ही जहां से निकाल देगी। याद है न, उसके धमकी भरे शब्द. ..'तुम्हारा भी पता नहीं...फिर क्या हो'।" इतना कहते ही मीरा नागिया डर से झुरझुराती चली गयी।

अजय मलकानी का शरीर भी डर से कांपा। फिर उसने नाश्ते की प्लेट पेर सरका दी।

अब उस हवेली का, उस औरत का परोसा हुआ एक भी निवाला उनके हलक से नीचे उतरने वाला नहीं था।

उनके चेहरे आतंक और खौफ की वजह से सफेद हो उठे।

❑❑❑

❑❑❑

शकुंतला शर्मा सीढ़ियां चढ़ती पहली मंजिल पर पहुंची। फिर एक गलियारा घूमती कहीं जाने लगी तो उसे नीचे डायनिंग टेबल पर बैठे अजय मलकानी और मीरा नागिया नजर आए।

उनके नाश्ते की प्लेटें दूर सरकी पड़ी थींऔर चेहरे डर की वजह से हल्दीपुते नजर आ रहे थे।

उसके अधरों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी।

वो बुदबुदाई

"बेचारे डर गए हैं...अभी भाग खड़े होंगे। समझदार होंगे तो आज के बाद हवेली के बाहर तंबू डाले नजर नहीं आएंगे। ज्यादा समझदार होंगे तो किसी को नहीं बताएंगे कि हवेली में इन्होंने क्या देखा, क्या सुना...जानते नहीं यह...इस हवेली में सिर्फ वही रह सकता है जिसे आंखें बंद करके देखने की आदत हो...कान बंद करके सुनने की आदत हो...और मुंह पर तो हर समय ताला जड़कर ही बोलना आता हो। सिवाय मुझे छोड़कर...यहां परिंदा भी मेरी इजाजत के बगैर पर नहीं फड़फड़ा सकता, फटकार नहीं सकता...बेवकूफ हुए तो यहां का सारा वाक्यात बाहर जाकर दुनिया को बताएंगे और फिर...जान से जाएंगे। बेचारे...अपना बाकी का हनीमून स्वर्ग में मनाएंगे...ईश्वर इनकी आत्माओं को एयरकंडीशन बैडरूम बख्शे। जहां यह अपनी प्रेम पींगें डाल सकें।"

इन्हीं शब्दों के साथ वो एक कमरे में घुसी।

वहां रमैया काली शर्मा को चुप कराने के उपक्रम में दाएं-बाएं

झूल रही थी मानो कोई मां अपने भूखे बच्चे को बहला रही हो।

वहीं खड़ा लूका काली शर्मा को प्वच...प्वच करता पुचकार रहा था।

काली शर्मा गला फाड़ता रोता ही चला जा रहा था।

"चुपऽऽ।" तभी शकुंतला शर्मा मुंह पर उंगली रखती नागिन की तरह फुंफकारी।

काली शर्मा सहमकर उसी पल चुप हो गया। अलबत्ता उसकी आंखे शकुंतला शर्मा को घूरने लगीं।

'तड़ाक' शकुंतला का चांटा काली के गाल पर पड़ा

"घूरता है। मां को घूरता है।"

काली शर्मा का गोरा गाल लाल हो गया। शकुंतला की उंगलियों की छाप गाल पर पड़ गयी। फिर भी उस बच्चे ने शकुंतला शर्मा को घूरना नहीं छोड़ा।

"चलो लूका।" शकुंतला शर्मा मुड़ी।

लूका पीछे-पीछे निकला।

दोनों कमरे के दरवाजे तक पहुंचे कि पीछे से उस बच्चे के मुंह से फुंफकार निकली

"मैं तुझे नहीं छोडूंगा...नहीं छोडूंगा डायन।"

शकुंतला शर्मा फिरकनी की तरह घूमी।

लूका और रमैया भी हैरत भरी निगाहों से उस बच्चे को घूरने लगे। किसी को भी यकीन न हो रहा था कि वो शब्द बच्चे के मुंह से निकले हैं। नौ साल के मासूम काली शर्मा के मुंह से।

काली शर्मा अभी भी उन्हें घूर रहा था और बाकायदा अब तो दांत भी पीसने लगा था।

शकुंतला शर्मा पहली बार कांपी। उसे अपना वजूद उस बच्चे के आगे डगमगाता नजर आया।

उस बच्चे ने, उसे नौकरों के आगे चंद शब्दों से ही नंगा कर दिया था।

शकुंतला शर्मा दांत पीसती उसकी तरफ बढ़ी।

"क्या कहा तूने?" फिर गुर्राई।

"मैं तुझे नहीं छोडूंगा डायन।" बच्चे के मुंह से ऐसी गुर्राहट निकली जैसे कोई मर्द बोल रहा हो"तूने मुझे मारा है म...मुझे...याद रख...मैं अपना बदला लूंगा। खून का बदला खून होता है...और खून का बदला खून ही लेता है...मैं लूंगा अपनी हत्या का इंतकाम...तुझी से लूंगा...तेरी पूरी औरत जात से लूंगा।"

"नहींऽऽ।" लूका की आंखें कांपीं।

रमैया का भी जिस्म फड़फड़ाया।

"य...ये तू क्या कह रहा है काली! मेरे बच्चे।" शकुंतला शर्मा तनिक नर्म पड़ी"म...मैंने भला तेरा खून किया है। कब? कैसे?"

"हरामजादी! देख मुझे। पहचान मुझे।" काली शर्मा नौ साला बच्चा फुंफकारा"मैं काली नहींबलबीर हूं। बलबीर शर्मा। तेरा पति। जिसका तूने खून किया है।"

"नहींऽऽ।" शकुंतला शर्मा घबरा गयी।

"याद रख। बलबीर का खून मेरी रगों में दौड़ रहा है...उसी खून का उबाल अब अपने भी लहू में महसूस कर...मैं इंतकाम लूंगा। पूरी औरत जात से लूंगा। तू पत्नी नहीं। मां नहीं। तू सिर्फ डायन है डायन. ..और मेरा प्रतिशोध तभी पूरा होगा...जब तू मरेगी...। जब तू मरेगी. ..।" बच्चा उसकी तरफ उंगली भोंकता गुर्राया"तू-तू-तू मरेगी जब. ..।"

"नहींऽऽ।" शकुंतला शर्मा को कुछ नहीं सूझा कि एकाएक होने क्या लगा है?

बच्चे के मुंह से निकलने वाला प्रत्येक शब्द यही दर्शा रहा था कि बच्चा नहीं, कोई सुलझा हुआ बड़ा आदमी ही बोल रहा है। और तो और, उसकी आवाज भी मर्दाना हो चली थी।

तभी शकुंतला शर्मा का हाथ एक कांच के फूलदान पर पड़ा और उसने उसे उठा लिया।

'धड़ाक...धड़ाक...।' अगले ही पल उसने वो फूलदान काली शर्मा के सिर पर दे मारा।

काली शर्मा उसी पल अचेत होता रमैया की बांहों में ही झूल गया।

"इसे संभालो। मैं अभी आई।" शकुंतला शर्मा ने रमैया को हुक्म दिया।

"जी मालकिन!"

शकुंतला और लूका उसी पल कमरे से बाहर भागे।

इस बार उन दोनों के चेहरे हल्दीपुते हो रखे थे।

❑❑❑

❑❑❑

दोनों तेजी से एक अन्य कमरे में पहुंचे।

जहां देवी शर्मा का अचेत शरीर पड़ा था और शरीर के पास ही एक बैग पड़ा था।

फिर लूका ने देवी शर्मा का शरीर उठाया और बाहर निकलता चला गया।

शकुंतला शर्मा बैग उठाती उसके पीछे-पीछे लपकी।

"मैडम, बम इसी बैग में है और रिमोट...मेरी जेब में। जैसे ही हैलीकॉप्टर उड़ेगा, हम बम उड़ा देंगे।" लूका छत की सीढ़ियां चढ़ता बोला।

शकुंतला शर्मा के कानों में जैसे कोई शब्द ही न पड़ा।

छत पर गड़गड़ करता हैलीकॉप्टर प्रोपैलर घुमा रहा था। लूका ने हैलीकॉप्टर की सीट पर देवी शर्मा को बिठाया और पायलेट से बोला

"साहब को जगाना नहीं। अभी नींद में हैं। नींद से जाग जाएं तो बिदक उठते हैं। अपने आप ही जाग जाएंगे।"

"जी सर।" पायलेट तत्परता से बोला।

शकुंतला ने बैग बेहोश देवी शर्मा की गोद में ही रख दिया"जैसे ही जागे इसे कहना कि खाना खा ले...बैग में ही पड़ा है।"

"जी मैडम!" पायलेट बोला।

तभी लूका ने ऊपर की तरफ अंगूठा उठा दिया।

तत्काल ही हैलीकॉप्टर ऊपर की दिशा में उठना शुरू हो गया। दोनों तेजी से छत की मुंडेर पर पहुंचे और उन्होंने पहले ऊपर देखा फिर बाहर की दिशा में नीचे झांका।

अजय मलकानी और मीरा नागिया अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट करते नजर आए।

"इन्हें क्या हुआ?" लूका हैरत से बोला।

"वहीं जो हमें हुआ। अभी-अभी।"

"क्या?" लूका का चेहरा मुड़ा शकुंतला शर्मा की तरफ।

"डर गए बुरी तरह। हमारी तरह।" शकुंतला शर्मा पहली बार कांपी शायद।

फिर आंखों पर हाथ की छतरी बनाकर वो ऊपर आसमान में उड़ते हैलीकॉप्टर को देखने लगी।

लूका का चेहरा भी काली शर्मा के आतंक से सफेद हो गया।

वक्ती तौर पर वो शायद उसे भुला ही बैठा था।

तभी लूका ने रिमोट निकाला और मैडम की तरफ बढ़ाया।

शकुंतला शर्मा ने तत्काल एक हाथ आंखों पर रखे दूसरे हाथ से रिमोट थामा और हैलीकॉप्टर की दिशा में नचाया।

"गुड बाय देवी! तेरे बाद काली की बारी है। तू घबराना नहीं

बेटा...वो भी आ रहा है पीछे-पीछे...टक।" उसी पल उसने रिमोट दबा दिया।

'भड़ाम...।' उसी पल काफी दूर पहुंचा हैलीकॉप्टर हवा में परखच्चों की तरह उड़ता आग के बादलों में खो गया। सब कुछ आग और धुएं में ही विलीन हो गया।

"चलो।" शकुंतला शर्मा छत से नीचे की तरफ भागी।

"मैडम!" पीछे आता लूका डरे स्वर में बोला"मुझे लगता है बलबीर जी की आत्मा काली जी के भीतर घुस गयी है।"

"नहीं।"

"फिर काली कैसे कह रहा था...कि आपने उसका कत्ल किया है...आवाज भी उसकी मर्दाना हो चली है।"

"ओह शटअप! ऐसा कुछ नहीं है। आत्मा-वात्मा को मैं नहीं मानती। सब कमजोर लोगों के दिलों को समझाने के बहाने हैं।"

"फिर भी आप क्या समझती हैं?"

"जरूर देवी शर्मा ने ही काली को सब बताया होगा। या काली ने उसी के साथ ही बैठकर वो वीडियो कैसेट देख ली होगी जिसमें उसने अपने बाप की हत्या होती देख ली होगी। फिर देवी ने ही काली के दिमाग में यह बात डाली होगी या प्लान बनाया होगा कि उन्होंने मेरे आगे आत्मा का ही राग अलाप कर इंतकाम लेना है ही बातर आवाज बदलने की...तो काली को आवाज बदलने की अद्भुत कला बचपन से ही कुदरती तौर पर मिली है। इसी वजह से वो ऐसा बोल रहा होगा।"

"यू मीन टू से कि नौ साल का बच्चा हमारे, साथ किसी योजना के तहत पेश आ रहा हैऔर वो योजना, उसके दिमाग में बड़े भाई देवी शर्मा ने भरी है। यानि दोनों भाई मिलकर अपनी मां के विरुद्ध कोई साजिश रचे बैठे हैं।" लूका बोला तो सही पर अपने ही शब्दों पर संतुष्ट नजर न आया।

"हां।"

शकुंतला शर्मा तेजी से सीढ़ियां उतरती काली शर्मा के कमरे में पहुंची।

रमैया अभी भी बेहोश काली को आगोश में लिए घूम रही थी। उसकी आंखों में नमकीन पानी बांध के रूप में नजर आ रहा था।

"तू क्या छाती से लगाए घूम रही है इसे...ला मुझे दे।" शकुंतला शर्मा ने दोनों हाथ आगे बढ़ाए और काली को अपनी गोद में ले लिया।

फिर बाहर निकलते हुए उसने लूका को कोई इशारा किया।

अगले ही पल लूका दोनों हाथों से रमैया की गर्दन दबाता चला गया।

रमैया बैड पर गिरी और लूका उसके ऊपर जा चढ़ा।

फिर रमैया हाथ-पैर पटकने लगी और पांच मिनट बाद ही उसके हाथ-पैर ठंडे पड़े और जबान बाहर निकल आई।

"अब?" लूका बोला।

"इसे कंधे पर लाद और पीछे लॉन में पहुंच।" शकुंतला शर्मा दरवाजे पर खड़ी बेहोश काली शर्मा को लादे बोली"दोनों को ही मिट्टी में दफना देते हैं। प्लानिंग होगी तो भी...आत्मा-वात्मा का चक्कर होगा तो भी...सब खत्म हो जाएगा। सारा टंटा ही खत्म हो जाएगा।"

"ओह!" लूका उसी पल रमैया की लाश को कंधे पर लादने लगा।

पिछले पंद्रह मिनट में उन्होंने साढ़े तीन हत्याएं कर डाली थीं। पहली देवी शर्मा की, दूसरी पायलेट की, तीसरी रमैया की और आध ी काली शर्मा कीक्योंकि वो अभी बेहोश था। पूरी तरह मरा नहीं था। मिट्टी में दफन होने के बाद काली ने पूरी तरह मर जाना था और तब यह संख्या साढ़े तीन की बजाय चार हत्याओं में तब्दील हो जानी थी।

❑❑❑

❑❑❑

आधे घंटे बाद लूका कब्र खोदे खड़ा था।

लॉन की मिट्टी पर रमैया और काली के शरीर पड़े थे।

"लूका! भीतर ताबूत पड़ा है उठा ला।"

"ताबूत कहां से आया?"

"वो जब, किसी की लावारिस लाश को मैंने बलबीर शर्मा का नाम देकर ढोंग रचाया था न...तो वो लाश ताबूत में ही आई थी। सोचा...ताबूत क्यों चिता के साथ जलाया जाए...शायद कभी काम आ जाए। आज आ गया...जा उठा ला।"

"कहां पड़ा है?"

"भीतर स्टोररूम में। वो जिस कमरे में तैल चित्र लगे हैं न... उसी में।"

लूका हाथ झाड़ता पिछले दरवाजे से भीतर घुसा।

दस मिनट बाद वो ताबूत धकेलता बाहर निकल रहा था।

फिर दोनों ताबूत खोलकर उसके भीतर रमैया और काली शर्मा

की लाशें भरने लगे।

"मैडम! आपने तो अपना पूरा कुनबा ही खत्म कर दिया।"

"करना पड़ता है। कुर्सी कब्जाने के लिए और जान बचाने के लिए कुछ भी करना पड़ता है। सब कुछ करना पड़ता है...अभी भी एक आदमी बचा है जिसका शातिर खून मुझसे इंतकाम लेने के लिए निकल सकता है।"

"कौन है वो?"

"पंडित हरी नारायण शर्मा। मेरे पति का बाप। मेरे बच्चों का दादा।"

"ओह!"

लूका ने रमैया की लाश ताबूत में डाली। ऊपर काली शर्मा का बेहोश शरीर रखा और ढक्कन बंद कर दिया।

फिर दोनों ने ताबूत को कब्र में उतार दिया।

"गहरा कम किया। कब्र जरा और गहरी बनानी थी। ताबूत के ऊपर पड़ी मिट्टी पर कोई चलेगा तो साफ पता चल जाएगा कि नीचे ताबूत है।"

"आप पहले कहतीं कि लाशें ताबूत में डालकर गाड़नी हैं। मैं फावड़ा और चला देता। दस मिनट और ज्यादा लग जाते...पर काम तो तसल्ली से हो जाता न।"

"खैर, मिट्टी भर।"

लूका उसी पल ताबूत के ऊपर मिट्टी डालने लगा।

"मैडम! दुनिया को क्या जवाब देंगी कि कहां गया काली शर्मा?"

"अभी तो कह देंगे कि नानी के घर रहने मसूरी गया है। बाद में कहेंगे कि वहीं पढ़ने लगा है नानी अकेली जो है। फिर सालों साल बीत जाएंगे तो एक दिन उसे दिल्ली आ गया घोषित कर देंगे। फिर एक दिन लापता-गायब घोषित कर देंगे। किसी को खबर न होगी कि काली शर्मा तो सालों पहले ही मार दिया गया है। कब्र में दफना दिया गया है। यूं भी हवेली में आम आदमी आने से डरता है। अब हम ही किसी को भीतर न घुसने देंगे। देवी और काली की मौत का राज बस एक राज ही रह जाएगा।"

"ओह!" लूका पहली बार उस चुडैल से चिंतित दिखाई दिया।

❑❑❑

❑❑❑

अगले कुछ दिनों में देवी शर्मा के विमान क्रैश का हल्ला मचा। बच्चू तिवारी ने उस क्रैश का जिम्मेदार शकुंतला शर्मा को ठहरा दिया

जबकि शकुंतला शर्मा यहां भी गेम खेल गयी।

उसने बच्चू तिवारी को ही क्रैश का जिम्मेदार ठहरा दिया। नतीजतन पब्लिक की हमदर्दी शकुंतला शर्मा को मिली और वो अपने प्रतिद्वन्द्वी तिवारी से चुनाव जीत गयी और एम०एल०ए० बन गयी।

काली शर्मा की लापतगी की बाबत भी शोर मचा तो शकुंतला शर्मा ने पूर्व निर्धारित स्टेटमैंट के साथ काली शर्मा को नानी के घर गया बता दिया।

फिर उसने यह अफवाह भी फैला दी कि चूंकि उसकी नानी मसूरी में अकेली रहती है अतः काली शर्मा अपनी बाकी की पढ़ाई मसूरी में ही पूरी करेगा।

किसी को ख्वाब में भी न सूझा कि मसूरी जाकर पड़ताल करें। पता तो करे कि शकुंतला शर्मा की मां वहां रहती भी है या नहीं?

धीरे-धीरे काली शर्मा का वजूद लोगों को भूलने लगा और समय बीतने लगा।

साल-दर-साल बीतते गए।

किसी को ख्याल न आया कि काली शर्मा भी उसी दिन ही मारा गया था जिस दिन देवी शर्मा की हत्या की गयी थी।

अजय मलकानी और मीरा नागिया उस दिन के बाद गुड़गांवा में ही नजर न आए। शकुंतला शर्मा का रहस्यमयी वजूद उनके ऊपर इस कदर हावी हो चुका था कि उन्होंने गुड़गांवा ही छोड़ दिया और कहीं और रिपोर्टिंग करने लगे।

तात्पर्य यह कि अब तक के सारे पत्ते शकुंतला शर्मा के ही फेवर में पड़े। उसकी योजना कामयाब रही। लूका उसकी शारीरिक और मानसिक खिदमत में लगा रहा।

काली शर्मा की हत्या के तीन साल बाद शकुंतला शर्मा ने एक दिन यह अफवाह उड़ा दी कि काली शर्मा अपनी नानी के यहां से दिल्ली आ गया है अपने दादा के पास। वो भी उसके साथ कुछ दिन दिल्ली जाकर रही थी। फिर एक दिन पता नहीं कहां चला गया।

किसी ने तफतीश करने की जरूरत न समझी कि काली शर्मा मसूरी से कब आयाकब तक दिल्ली पंडित हरी नारायण के यहां रहाऔर फिर कब गायब हो गया?

जनता की याददाश्त ऐसे मामलों में तो बिल्कुल ही जीरो होती है जो कान में पड़ता है जनता उसे ही सच मान लेती है। रही बात पुलिस की, तो पुलिस तब तक कुछ नहीं करती जब तक कि उसे कोई सुझाए नहीं कि कुछ करना चाहिए। पुलिस तो तब भी कुछ नहीं करती

जबकि उसके ऊपर दबाव डाला जाए...पुलिस तभी कुछ करती है जब मोटे नोटों का मोटा गड्डा उसके हाथ में थमाया जाए...और बार-बार थमाया जाए।

नतीजतन काली शर्मा की बाबत सबने वही मान लिया जो शकुंतला शर्मा बताती रही।

हकीकतन काली मर चुका था। सालों पहले ही मर चुका था पर शकुंतला ने अभी भी उसे दुनिया की नजर में जीवित कर रखा था। पर जरूरत किसी को न थी कि उस जीवित बच्चे को देखे तो सही, मिले तो सही। जब मां को ही न थी तो किसी और को क्यों होती।

एक साल और बीत गया।

फिर गुड़गांवा में लड़कियों के मर्डर होने लगे। कोई विक्षिप्त हत्यारा सामने आया तो शकुंतला शर्मा ने उस हत्यारे को काली शर्मा का नाम दे दिया।

पुलिस यह सच भी मान बैठी। और फिर शकुंतला शर्मा से पैसे खा-खाकर काली शर्मा को जीवित रखने का फर्ज निभाने लगी।

अगले छः महीने ऐसे ही बीते। मरहूम काली शर्मा सात लड़कियों के कत्ल का हत्यारा घोषित हो गया।

फिर आठवां कत्ल राखी शाह का हुआ और लगभग पुलिस की आंखों के सामने हुआ। नौवां कत्ल अर्चना चड्ढा का हुआ और वो भी पुलिस की आंखों के सामने हुआ।

नतीजतन पुलिस के हाथों में वो विक्षिप्त हत्यारा अर्जुन नागपाल आया। तब जाकर दुनिया के सामने यह रहस्य खुला कि वो विक्षिप्त काली शर्मा नहीं - बल्कि अर्जुन नागपाल है।

इसी दौरान शकुंतला शर्मा की डिग्गी में वो लाश मिले जिसे देखकर वो चौक पड़ी। हरी नारायण शर्मा उछल पड़ा।

लाश के पैर की एक उंगली देखकर ससुर-बहू इसी नतीजे पर पहुंचे कि वो लाश काली शर्मा की ही है।

नतीजतन शकुंतला शर्मा की आंखों के आगे खौफ के बादल मंडरा उठे। जिस काली शर्मा को वो पांच साल पहले रमैया के साथ ही अपनी हवेली के लॉन में दफना चुकी थी वो एकाएक जिंदा कैसे हो गया?

यही सोचकर ही कार में बैठी शकुंतला शर्मा की आंखे हैरत से फटी हुई थीं।

पांच साल पहले मरा काली शर्मा आज तक जिंदा था और वो यह हकीकत अब तक न जानती थी। आज जब उस जिंदा काली की

लाश उसे डिग्गी में दिखाई दी तो उसकी हैरत जायज ही थी।

'चिंऽऽ।' तभी बच्चू तिवारी की कार को यकायक ब्रेक लगे।

'ऊंऽऽ।' शकुंतला शर्मा को यकायक झटका लगा और वो अतीत के बादलों से निकली।

"मंत्राणजी! तैंकी हवेली आ गयी।" बच्चू तिवारी बोला।

"ओह!" शकुंतला शर्मा वर्तमान को महसूस करती कार से निकली।

"कल दिल्ली चालेंगे। तोहार काली का और म्हारी छोरी का हत्यारा वहीं मिलेगा। फिर वो सुसरे अर्जुनवा को देखेंगे।" बच्चू तिवारी बोला।

"ठीक है। कल सुबह यहीं आ जाना।" शकुंतला शर्मा अपनी हवेली के विशाल फाटक की तरफ बढ़ती बोली।

बच्चू तिवारी की कार आगे बढ़ गयी।

'ठक...ठक...ठक...।' शकुंतला शर्मा ने फाटक का कुंडा खड़खड़ाया और कलाई घड़ी देखी।

रात के दो बज चुके थे।

❑❑❑

❑❑❑

लूका ने फाटक खोला और गेट पर खड़ी शकुंतला को देख हैरत में पड़ा।

"गाड़ी कहां है आपकी?"

"दिल्ली में।" शकुंतला भीतर घुसती बोली - "काली शर्मा की मौत के मामले में फंसी पड़ी हूं।"

"पांच साल बाद काली शर्मा की मौत के मामले में फंसी हैं आप?" लूका धीमे से बोला।

शकुंतला शर्मा ने इधर-उधर गर्दन घुमायी तो लूका के सिवा वहां कोई गार्ड नजर न आया।

जाहिर है गार्ड हवेली के पीछे बने सर्वेंट क्वार्टर्स में सोने चले गये थे और लूका इसलिए जाग रहा था क्योंकि उसे शकुंतला नाम की बुढ़िया के साथ ही सोने की आदत थी।

"बेवकूफ! काली शर्मा जिंदा था।" शकुंतला शर्मा तेज कदमों से हवेली की तरफ बढ़ती बोली-"वो आज ही रोड एक्सीडैंट का शिकार हुआ - और उस रोड एक्सीडैंट की गुनहगार मैं समझ ली गयी-और तो और-उसी काली शर्मा की लाश तक मेरी अंबैसडर की डिग्गी में से मिली।

"य...ये क्या कह रही हैं आप?क...क...काली शर्मा की तो लाश हम पांच साल पहले ही ताबूत में भरकर दबा चुके हैं। व...वो भला जिंदा कैसे था अब तक?" फाटक बंद करता लूका फुसफुसाया।

"यही रहस्य तो मुझे भी उलझाए जा रहा है।" इस बार शकुंतला हवेली का लॉक्ड मुख्य दरवाजा खोलती भीतर घुसी।

लूका चेहरे पर हवाईयां लिए पीछे-पीछे घुसा। फिर दोनों बड़े से हाल में से गुजरते पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे।

इसी दौरान ही शकुंतला शर्मा रोड एक्सीडैंट से वास्ता रखती सारी बातें लूका को बताने लगी।

लूका का चेहरा नमक की तरफ सफेद हो उठा।

डर और आतंक उसके चेहरे पर साफ दिखाई देने लगा।

"फावड़ा लाओ। हमें वो कब्र खोदनी पड़ेगी।"

लूका उसी पल स्टोर रूम की तरफ भागा। जबकि शकुंतला शर्मा पिछला दरवाजा खोलती लॉन की तरफ निकली।

लॉन में जहां ताबूत दफनाया गया था वहां तो पांच सालों में अब अच्छी खासी घास उगी खड़ी थी।

कोई कह ही नहीं सकता था कि उस बगीचे की मिट्टी के नीचे एक ताबूत दफन है। जिसमें रमैया और काली की लाशें दफन हैं।

शकुंतला शर्मा उसी जगह पंहुची और उस जगह को घूरने लगी जहां ताबूत दफन था।

तभी लूका फावड़ा उठाता उसके नजदीक पहुंचा।

"खोदो।" सस्पैंस की अधिकता के कारण शकुंतला शर्मा का शरीर तक कांपने लगा था।

'खच्च' लूका ने पहला फावड़ा घास पर चलाया और पागलों की तरह खुदाई करता चला गया।

"एक नम्बर के जाहिल हो तुम। नालायक हो तुम। कोई भी काम तुमसे तसल्लीबख्श तरीके से नहीं होता सिवाय बैड पर झटके मारने के...वो भी कहां...झटके भी मुझे ही लगाने पड़ते है...।"

शकुंतला शर्मा अपना सारा गुस्सा लूका पर ही निकालती रही।

लूका मिट्टी खोदता चला गया।

"ऑपरेशन रूम में बलबीर की हत्या की तो कैमरामैन जिंदा छोड़ दिया। अंबैसडर की डिग्गी में देवी शर्मा घुसकर छिप गया। पर तुम्हें खबर न लगी...और अब काली शर्मा जिंदा निकल आया...जो पिछले पांच सालों तक जिंदा रहा, पर हमें खबर न लगी...आज लगी वो भी तब...जब वो मुझे मुर्दा नजर आया...मेरी ही डिग्गी में पड़ा मुर्दा नजर

आया...और मैं उसकी हत्यारिन घोषित कर दी गयी...।''

''मैडम! याद कीजिए।काली के वो शब्द...जरूर बलबीर की आत्मा ही यह सब खेल खेल रही है।'' खुदाई करता पसीने में तर-ब-तर लूका बोला।

''शटअप। आत्मा काली की लाश ताबूत से बाहर नहीं निकाल सकती। आत्मा किसी भी लावारिस बच्चे के पैर की तीसरी उंगली बड़ी नहीं कर सकती...आत्मा कभी भी किसी लावारिस लाश को काली शर्मा साबित नहीं कर पाती...आज या कभी भी उस लावारिश लाश का कत्ल मेरे सिर नहीं मढ़ जाती...जरूर कोई और खटराग है. ..जरूर तुम्हारे ही किसी नए जाहिलपने का नमूना ताबूत में हमें नजर आ सकता है...खोदो।''

'खच्च...खच्च।' लूका जुटा रहा।

इसी खुदाई में ही उसके हॉलेस्टर में उड़सा रिवॉल्वर मिट्टी पर जा गिरा।

''इधर दो रिवॉल्वर।''

लूका ने उसी पल रिवॉल्वर शकुंतला की तरफ उछाल दिया।

''सायलैंसर किधर है इसका?''

''क्यों?'' खुदाई करते लूका का चेहरा असमंजस में शकुंतला शर्मा की तरफ उठा -''सायलैंसर क्या करना है?''

''ताबूत में लाशें न निकलीं तो तुम्हें ही लाश बनाकर इस ताबूत में भरना है। ऐसे गोली चली तो धमाका होगा...और गार्ड भी जाग जाएंगे। सायलैंसर होगा तो न गोली गूंजेगी, न ही तुम्हारी चीखें।''

''नहींऽऽ।'' लूका के गले से घुटी-घुटी चींख निकली-''अ... आप मेरा कत्ल नहीं कर सकतीं।''

''करना भी नहीं चाहती...इसलिए ईश्वर को याद करते खुदाई जारी रखों। दुआ करो कि रमैया और काली की लाशें हमें भीतर ही मिलें। वरना तो तय है कि तुमने ही मुझे धोखा दिया है। तुमने जानबूझकर दो बेहोशों को ताबूत में दफनाया और फिर मौका देखकर उन्हें बाहर निकाल दिया।''

''ये झूठ है। मां कसम।'' गले की घंटी छूता लूका मिमियाया-''मैनें ऐसा कुछ नहीं किया।''

''खोदो।'' डांट पिलाती शकुंतला शर्मा फुंफकारी-''अभी दूध-का-दूध, पानी-का-पानी हो जाएगा। तुम जिंदा तभी रहोगे जब कि ताबूत में लाशे मिलेंगी। वरना तो तुम अपना हश्र जानते ही हो।''

''हे भगवान! कहां फंस गया मैं....खच्च....खच्च।'' फावड़ा

चलाता लूका कांपने लगा।

यह रहस्य उसे भी हैरान किए था कि ताबूत से काली की लाश कहां गई?

अगले पंद्रह मिनट तक शकुंतला शर्मा ऐसे ही भुनभुनाती रही और लूका कांपता-झुरझुराता खुदाई करता रहा।

आखिरकार ताबूत नजर आया और उसके ढक्कन के पास खुद रखी मिट्टी में लूका कूदा।

अब वो ताबूत का ढक्कन उठाने जा रहा था।

शकुंतला शर्मा कब्र के बाहर खड़ी रिवॉल्वर लूका पर ताने ताबूत को ही देख रही थी।

"खोलो फाटक। देखें तुम्हें जिंदगी मिलती है या मौत।"

ताबूत पर सांकलनुमा कुंडी तो थी पर उस पर सांकल चढ़ी नहीं थी।

"देखा। सांकल खुली है। जाहिर है लाश गायब है भीतर से।"

"मैडम आपके सामने ही मैंने...बल्कि हम दोनों ने ताबूत दफनाया था। आप गवाह हैं कि कुंडी चढ़ाने की न आपको सूझी थी. ..न मूझे सूझी थी। हमने इसी हाल में ही ताबूत दफनाया था।"

"खोलो। अब पुरानी बातों से क्या फायदा?"

लूका नीचे झुका और मिट्टी में दफन, जड़ हो चुके, जंग खा चुके ताबूत का ढक्कन पूरी शक्ति से ऊपर उठाने लगा।

'किर्र...किर्र।' ढक्कन खुलने की रहस्यमयी आवाज फिजां में गूंजी।

"नहींऽऽ।" अगले ही पल लूका की चीख गूंजती चली गयी।

शकुंतला शर्मा की आंखें भी अपनी कटोरियों से बाहर उबलीं। ताबूत खाली था।

न उसमें रमैया की लाश थी। न ही काली शर्मा की।

"अब...अब क्या कहते हो?" शकुंतला ने नाल हिलाई।

"म...मैं क्या कहूं मैडम....!"

"वाह लुच्चे! काली के साथ-साथ रमैया की लाश भी गायब कर दी...पर क्यों?"

"मैं क्या कहूं....जब मैंने ऐसा कुछ किया ही नहीं तो क्या बताऊं कि क्यों किया ऐसा?"

"तो फिर तुम ही इस ताबूत में जाओ। फिर देखती हूं कैसे तुम्हारी लाश इस ताबूत से निकलकर भागती है। तभी मुझे भी शायद पता चले कि तुम्हारी लाश की ही तरह...वो दो लाशें भी भागी थीं

यहां से।"

"नहीं। आप मुझे नहीं मार सकतीं!"

"क्यों-तू मेरा खसम लगता है। लगता भी हो...जब मैं उसे भी खा-गई तो तू किस खेत की मूली है। सायलैंसर, निकाल।"

"नहींऽऽ।" लूका चिंघाड़ा।

"सायलैंसर निकाल, नहीं तो दो घड़ी पहले ही मर जाएगा। अभी जी ले दो घड़ी।"

लूका ने उसी पल जेब से सायलैंसर निकाला और उसकी तरफ बढ़ाया। वो कब्र के भीतर था जबकि मौत की नानी सिर पर खड़ी थी। कब्र से बाहर निकलना-कूदना उसके बस में नहीं था। न ही उसके पास समय था अब।

"इधर उछाल।"

"नहीं।" लूका ने सायलैंसर वाला हाथ पीछे खींचा।

"लूका! मरना तो तूने है ही। धमाका सुनकर मर या धमाका करके मर। फिर भी जानना चाहता है कि मैं तुझे क्यों मार रही हूं तो सायलैंसर मेरी तरफ उछाल।"

लूका ने सायलैंसर चार फुट दूर खड़ी शकुंतला की तरफ उछाला। रिवॉल्वर की नाल उसकी दिशा में ही रखे शकुंतला ने सायलैंसर दूसरे हाथ से कैच किया और सायलैंसर की चूड़ियाँ नाल पर चढ़ाने लगी। गोल-गोल घुमाने लगी।

"लूका! सिर्फ तू ही मेरा राजदार बचा है। अब सिर्फ तू ही जानता है कि बलबीर शर्मा के दिमाग में कीड़े थे। खून में कीड़े थे। वो कीड़े बलबीर की वजह से काली के खून में पहुंचे। काली ने मरने से पहले वह खून अर्जुन को दिया। लिहाजा अर्जुन के खून में भी वहीं कीड़े रेंग रहे हैं अब। वो कीड़े सीधा-दिमाग में जाकर अटैक करते हैं और आदमी हिंसक प्रवृत्ति का होता चला जाता है। यानि आज की तारीख में अर्जुन नगपाल का कोई इलाज नहीं है। वो लाईलाज है। वो ऐसे ही खून करता रहेगा और कानून उस कुत्ते को मारने के बहाने ढूंढता रहेगा...यह राज तेरे मरने के बाद मेरे सिवा कोई नहीं जान सकेगा अब...अर्जुन की मौत तो तय ही है अब....और तेरी....तय हो चुकी है अब...चल ताबूत में लेट जा।"

"साली!" लूका उसी पल फुंफकारा - "कीड़े बलबीर के खून में नहीं...तेरे खून में थे शायद...शादी की पहली रात तेरा और बलबीर का खून एक हुआ तो नतीजतन वो कीड़े बलबीर के खून में चले गए. ..फिर तुझी से ही वही कीड़े तेरी होने वाली औलादों को तोहफों के

रूप में मिले...अर्जुन बेचारा तो इत्तफाक से ही इन खूनी कीड़ो की साजिश का शिकार हो गया...उसका तो जो होगा सो होगा...पर तेरा भी हश्र अच्छा नहीं होगा...ठीक कह गया था काली...तू उसी के हाथों मरेगी साली।''

''हूं। काली शर्मा मर चुका है। मैं अभी-अभी उसकी लाश देखकर आई हूं। कल सुबह तक वो लाश मेरे यहां पंहुच जाएगी। फिर मैं पूरी श्रद्धा के साथ उसका अंतिम संस्कार करूंगी। उसका चौथा-तेरहवां करूंगी। भला वो लाश बना काली शर्मा कैसे मार पाएगा मुझे-!''

''मत भूल, काली शर्मा खून के रूप में उसी अर्जुन के ही शरीर में बह रहा है। वो विक्षिप्त हत्यारा बना है तो सिर्फ तेरा ही वध करने के लिए बना है...काली भले ही मर गया हो...पर अर्जुन तभी मरेगा, जब वो तुझे अपने हाथों मार जाएगा...।''

''यानि कबूल करता है कि तूने ही ताबूत से काली शर्मा को निकाला था-क्योंकि दफनाने के वक्त काली शर्मा सिर्फ बेहोश था। मरा नहीं था - और तूने ऐसा इसलिए किया था ताकि काली शर्मा जिंदा रहकर मुझसे बदला ले सके। पहले सात कत्ल काली शर्मा ने ही किए थे पर आठवें, नौवें कत्ल अर्जुन के हाथों हो गए। नतीजतन अर्जुन नागपाल आज की तारीख में 9 कत्लों का गुनहगार हो गया-हा हा हा।''

''हँस ले। अभी हँस ले।'' लूका फुंफकारा - ''पर अंत तेरा भी वही है-जो मेरा होने जा रहा है। और सच यही है कि मैंने ताबूत से काली शर्मा को नहीं निकाला।''

''तो कौन निकाल गया?''

''ये तू सोच। अपनी मौत से पहले तू हर घड़ी अब यही सोचेगी कि काली ताबूत से कैसे निकल भागा? रमैया की लाश ताबूत से कैसे निकल भागी? यह रहस्य तुझे अब चैन से न जीने देगा, न मरने देगा। तू तिल-तिल कर रोज मरेगी। मरने की उम्मीद में ही जिएगी।''

''ताबूत में उतर...तेरा वक्त पूरा हो गया है।''

''नहीं। अब मैं बाहर ही आऊंगा। चला गोली।'' इस बार लूका कब्र से बाहर निकलने को मुड़ा।

''मत भूल। भोपाल में तेरा भरापूरा परिवार है। एक बीवी है। 4 बच्चे हैं। उन्हें जिंदा रखना चाहता है तो चुपचाप ताबूत में जाकर लेट जा। नहीं तो तू तो मरेगा ही....तेरे पीछे-पीछे चारों बच्चे भी चले आएंगे। बापू...बापू....।''

"नहींऽऽ।" घुटी-घुटी चीख के साथ लूका की आंखे फटीं।

शकुंतला शर्मा उसके बच्चों को मारने की साफ-साफ धमकी दे रही थी। पर अपने राजनैतिक अंदाज में....लुके-छिपे शब्दों में।

"जल्दी जा ताबूत में। बाद में तेरी कब्र भी भरनी है मुझे। वो भी काफी टाईमखपाऊ काम है-चल।"

लूका की आंखों में लाचारी के आंसू झिलमिला उठे और वो बेचारा अपने बच्चों की जिंदगानी की खातिर चुपचाप जाकर ताबूत में ही लेट गया।

"गुड बाय लूका, जितनी कटी खूब कटी। फिश्श...फिश्श।" दांत भींचती शकुंतला शर्मा एकाएक सायलैंसर युक्त फायर करती चली गयी।

लूका की चीख तक न निकली। उसका जिस्म ताबूत में फड़फड़ाया और एकाएक शांत होता गया।

और शैतान की खाला ढक्कन बंद करती, अपने कुकर्मों को मिट्टी से पाटने लगी।

आधे घंटे बाद ही वो पैरों से ताजी मिट्टी को थपथपा रही थी। फिर उसने दूर पड़े बड़े-बड़े गमले उठाए और उस कब्र पर रखने लगी ताकि किसी को इल्म न हो कि वहां ताजी-ताजी कब्र बनी है।

"लूका! तेरी समाधि पर फूल भी चढ़ा दिए मैंने। इसे मेरी श्रद्धांजलि ही समझ।" गमलों के फूल देखती वो बोली।

फिर वो घास के तिनके तोड़-तोड़ कर वहां डालने लगी ताकि लगे ही न कि वहां कोई खुदाई भी हुई है।

एक घंटे बाद वो हाथ झाड़ती लूका का खाली रिवॉल्वर संभाले हवेली में घुस रही थी।

काली-रमैया कब्र से कैसे गायब हुए? किसने गायब किए? यह रहस्य अभी भी उसकी नीदें उड़ाए था।

❑❑❑

❑❑❑

देव सिंह राजपूत इतनी रात गए नैना के फ्लैट पर पहुंचा तो फ्लैट के बाहरी लोहे के गेट पर उसे बड़ा-सा ताला नजर आया।

वो समझ गया कि नैना घर पर नहीं है।

'कहां चली गयी?' यह जानने की खातिर वो पड़ोसिन श्यामा आंटी के फ्लैट की तरफ निकला।

उसने श्यामा आंटी का दरवाजा खटखटाने की सोची तो रात के साढ़े तीन बजे देख यह विचार स्थगित किया और सीढ़ियां उतरने

लगा।
गुड़गांवा से अर्जुन को लेता वो सीधा आर्मी हॉस्पिटल में पहुंचा था। जहां आर्मी कमांडोज की निगरानी में उसने अर्जुन को हॉस्पिटल में भर्ती करवा दिया था। आर्मी हास्पिटल में अर्जुन की भर्ती करवाने की खातिर उसने रास्ते में ही कमिश्नर नारंग से बात की थी और सूरतेहाल से अवगत कराया था। नतीजतन नारंग ने आर्मी चीफ पदमनाभम से बात की थी।
पदमनाभम अर्जुन की काबलियत से पहले ही प्रभावित थे क्योंकि अर्जुन का कमाल वो एक मिशन में पहले ही देख चुके थे। सो उन्होनें तत्काल ही अर्जुन को आर्मी हॉस्पिटल में दाखिल करने का हुक्म दे दिया।
फलस्वरूप अर्जुन नागपाल देवसिंह की निगरानी में आर्मी वार्ड में दाखिल हुआ।
अर्जुन की असलियत उजागर करने के लिए कि वो पागल है या अभिनय कर रहा है-देवसिंह को नैना की जरूरत थी। लिहाजा वो नैना से मिलने उसके फ्लैट पर पहुंचा था कि नैना नदारद मिली।
इन्हीं सोचों के अधीन देवसिंह अपनी जीप में बैंठा और गति देता चला गया।
अब कहां जाऊ?
पंडित हरी नारायण के पास चलूं। उसी से ही पूंछू कि शकुंतला शर्मा और उसका क्या लफड़ा है? वो बच्चा वाकई काली शर्मा है या पंडित, शकुंतला की किसी साजिश के तहत ही उसे काली शर्मा कह रहा है? इन्हीं ख्यालों के अधीन उसने हरी नारायण के फ्लैट की तरफ जीप मोड़ ली।
दस मिनट बाद ही वो उसी पंडित हरी नारायण का किवाड़ खटखटा रहा था जो कुछ घंटे पहले नैना को बेहोश किए नैना के ही फ्लैट में मौजूद था।
'ठक...ठक...ठक।' देवसिंह ने हरी नारायण का किवाड़ खटखटाया।
भीतर से कोई प्रतिक्रिया सुनाई न दी।
'टन...टन...टन।' इस बार देवसिंह ने अपना डंडा बजाया। 'ची' भीतर से कोई खटिया चरमराई और पंडित का स्वर आया - कौन?"
"देवसिंह।"
कदमों की आवाज सुनाई दी।

दरवाजा खुला और पंडित हरी नारायण बनियान से अपना चश्मा साफ करता नजर आया।

'सो रहे थे पंडितजी?'

"सो सकता हूं? नीदं आएगी?" पंडित हरी नारायण तनिक रूक्ष स्वर में चश्मा नाक पर चढ़ाता बोला - 'कहो। अर्जुन का कुछ पता चला?'

"हॉस्पिटल में है। आर्मी हॉस्पिटल में।"

"हूंऽऽ।" पंडित ने चेहरे के भाव छिपाने के लिए मुंह फेरा और भीतर निकला।

देवसिंह उसके पीछे-पीछे भीतर घुसा। फिर पीठ पर दरवाजा बंद करता बोला -

"आपको तो खुशी ही हुई होगी।"

"तुम्हें नहीं हुई?"

"हुई, पर इतनी नहीं कि मैं अपने मनोभाव छिपाने की खातिर चेहरा फेर लूं।"

"कहना क्या चाहते हो इंस्पैक्टर?" पंडित हरी नारायण दोनों हाथ पीठ पर बांधे उसकी तरफ मुड़ा।

"यही कि अर्जुन से इंतकाम लेने के लिए तो मरे जा रहे होंगे आप।"

"मरा तो नहीं जा रहा...पर तब तक जीना जरूर चाहूंगा, जब तक कि अर्जुन नागपाल मर न जाए। मेरे हाथों मर न जाये।" पंडित एक एक अपने दोनों हाथों की मुट्ठियां खोलता-भींचता फुंफकारा।

"वाकई! आपके ठंडे खून में पहली बार उबाल देखा मैंने।"

"अभी इस उबाल का कमाल देखना बाकी है। इस बार तुम्हें ताज्जुब ही होगा देखकर कि यह लुंजपुंज बूढ़ा क्या-क्या कमाल दिखा सकता है।"

"हूं। तो वो बच्चा वाकई ही आपका पौता काली शर्मा ही है?"

"तुम्हें शक है?"

"शक था। पर अब यकीन हो चला है कि वो बच्चा वाकई ही आपका पौता ही है। फिर भी ताज्जुब इस बात पर है जहां से उसकी लाश मिली है उस बाबत आप कुछ नहीं कह रहे।"

"तुम्हीं ने तो कहा था कि बच्चे का कत्ल अर्जुन ने ही किया है।"

"मैंने नहीं आपकी उसी बहू ने कहा था। हालातों के कहा था. ..सच पूछिए तो शकुंतला जी भी मुझे उस बच्चे की कातिल ही नजर

आ रही हैं। पर आपकों क्या दिखाई पड़ेगा...आखिर खून पुकार रहा है। खून ही आपको शकुंतला शर्मा को दुश्मन समझने की मोहलत नहीं दे रहा।''

''बातों में मत उलझाओं। मैं जानता हूं - मुझे क्या करना है।''

''मैं नहीं जानता...आपको क्या करना है - जरा मुझे भी बताइए।''

''जरूरी नहीं समझता।''

''फिर भी इतना तो मानते ही होंगे कि आपके पौते की कातिल आपकी बहू भी हो सकती है।''

''मैं इस बाबत कोई बात नहीं करना चाहता। कोई बात नहीं सुनना चाहता... ।''

''बस कूदकर इसी नतीजे पर पहुंचना चाहते हैं कि काली का खून अर्जुन ने ही किया है।''

''ऐसा सिद्ध हो चुका है।''

''सिद्ध नहीं हुआ। अभी सीर्फ अंदेशे ही लग रहे हैं। जब काली शर्मा का एक्सीडैंट हुआ था, तब अर्जुन की आंखों के आगे अंधेरा छाया पड़ा था।''

''उसका काफिर की आंखों के आगे अब अंधेरा ही नाचेगा... फंसा जो पड़ा है। कानून को बरगलाने के बहाने तो उसकी जेब में पड़े रहते हैं।''

''बाइ दि वे, फंसी तो शकुंतला शर्मा भी पड़ी है जिनकी गाड़ी से काली की लाश बरामद हुई है।''

''वो आपकी नजर में मुजरिम है तो आप निबटिए उससे। भले ही फांसी चढ़ा दीजिए उसे। मेरा दुश्मन तो बस अर्जुन है...मैं उसी से ही इंतकाम लूंगा।''

''पंडित जी! इतना गुस्सा ठीक नहीं। अगर एक्सीडैंट हुआ भी है, तो उसे आप हत्या नहीं कह सकते। वो इतफाकन ही हुआ है। गैर इरादतन ही हुआ है।''

''बड़ी देर बाद अर्जुन की पैरवी करनी सूझी तुम्हें?''

''मैं उसकी पैरवी नहीं कर रहा। आपको सिर्फ हालातों से अवगत करवा रहा हूं।''

''मेरी बला से। खैर...मेरे पास सिर्फ बहस करने के इरादे से ही आए हो या कुछ और बात है?''

''नैना का कुछ पता है?''

''क्यो?'' पंडित ने सहजता से चेहरा घुमा लिया।

"मुझे जरूरत है नैना की।"

"किसलिए?"

"मैं उसे अर्जुन के सामने पेश करना चाहता हूं। अगर अर्जुन दिमागी तौर पर विक्षिप्त हुआ तो वो नैना को नहीं पहचानेगा। वो नैना का मर्डर जरूर कर देगा...तब हम उसे (अर्जुन) बचा सकेंगे।"

"अगर अर्जुन ने ऐसा न किया तो।"

"तो मैं उसे अपने ही हाथों से गोली मार दूंगा।"

"ओह! तो यह बात है।"

"यही बात है। अर्जुन पागल है तो जिंदा रहेगा। पलानर है तो मेरे हाथों मरेगा।"

"यानि नैना और अर्जुन में से अब सिर्फ एक ही बचेगा।"

"आप ठीक समझे।"

"ये तो बहुत अच्छी कही।"

"अब बताइए नैना का कुछ पता है?"

"मुझे कैसे पता होगा। क्यों पता होगा। न नैना मेरी कुछ लगती है। न ही अब...अर्जुन।"

"तो इतनी देर से यों-यों किसलिए कर रहे थे?"

"ताकि जान सकूं कि देवसिंह अर्जुन नागपाल की बाबत क्या सोचे बैठा है।"

"तो क्या जाना आपने?"

"तुम वाकई फर्ज परस्त ऑफिसर हो।" पंडित उसकी छाती पर उंगली ठोंकता बोला - "मुझे नाज है तुम पर। अगर अर्जुन गुनहगार है तो तुम उसे गोली मारोगे। अगर बीमार है तो वो नैना की गोली मारेगा।"

"तारीफ कर रहे हैं या ताना मार रहे हैं?"

"ताना! भला कैसे?"

"आप छिपे शब्दों में यही कहना चाह रहे हैं कि मैं अपनी बेकार की योजना के तहत नैना को खामखाह मरवाने जा रहा हूं।"

"ऐसा हो भी जाए तो बुरा क्या है! न नैना अर्जुन के किसी काम की, न ही हमारे-तुम्हारे किसी काम की।"

"आपकी और अर्जुन की मैं नहीं जानता पर नैना आज भी मेरी बहन ही है।"

"फिर भी बहन को मरवाना चाहते हो।"

"नहीं, यार की पोल-पट्टी खोलना चाहता हूं।"

"तो नैना की जगर राधा को क्यों नहीं आगे कर देते?"

"पंडितऽऽ।" देवसिंह उसी पल चिंघाड़ उठा।

"देवसिंह! अब नाज नहीं है मुझे तुम पर। राधा बीवी हैं। और नैना बहन नहीं...पर बहन 'जैसी' है। बहन 'जैसी' को तो किसी पागल का शिकार बनाया जा सकता है पर बीवी को नहीं-क्यो!"

"आप मेरी नीयत पर शक कर रहे हैं?"

"मैं तुम्हारी खुदगर्जी पर तंज कर रहा हूं?"

देवसिंह मुंह खोले अवाक् दृष्टि से पंडित को घूरता चला गया।

"सांप सूंघ गया न देवसिंह।" पंडित हरी नारायण का स्वर गूंजा।

देवसिंह ने फिर कोई जवाब न दिया।

"मेरी मानो छोड़ो यह किस्सा और निकलो।"

"आपने तो मुझे धर्म-संकट में डाल दिया। एक तरफ नैना है और दूसरी तरफ राधा। मेरी नजर में दोनों ही अजीज है, पर नैना को आगे करूंगा तो दुनिया भी वही समझेगी जो आपने समझा कि देवसिंह ने अपनी खुदगर्जी में नैना की खामखाह बलि दे डाली।"

"खैर...। पंडित हरी नारायण ने मुंह खोलना चाहा कि-

"नहीं पंडितजी!" देवसिंह एकाएक हाथ खड़ा करता, एक-एक शब्द चबाता बोला - "अगर ऐसा ही है तो देवसिंह अपनी राधा को ही अर्जुन का चारा बनाकर डालेगा।"

"तुम्हारे पास चारा ही यही है।"

"मतलब?" देवसिंह की आंखे सिकुड़ीं।

"क्योंकि तुम नैना तक पहुंच ही नहीं सकते?"

"व्हाट?" देवसिंह उछला - "यानि आप जानते है कि नैना कहां है?"

"नैना जहां भी है, मेरी ही वजह से है।"

"मैं समझा नहीं।"

"समझ जाओगे। गौर करोगे तो जल्दी समझ जाओगे।"

"ओह, नैना आपके कब्जे में है।"

"हां।"

"पंडित!" एकाएक देवसिंह ने पंडित का गिरहबान पकड़ा और गुर्राया - "मेरे सब्र का इम्तिहान न ले। जल्दी बता नैना कहां है... कहीं ऐसा न हो तू मेरे हाथों से मारा जाए।"

"देवसिंह! इतना बता दिया कि नैना मेरे कब्जे में है। काफी है। इससे ज्यादा नहीं बताना, तो नहीं बताना।"

"मैं तेरे हलक में हाथ डालकर जबान खुलवा लूंगा।"

"कोशिश करके देख लो। बूढ़ा हूं। कमजोर हूं...पर मर्द अभी भी हूं। मुझे मारकर तुम नैना तक पहुंच सकते हो तो फौरन करो ऐसा. .. जल्दी मारो मुझे।"

"तुमने नाना को अगवा क्यों किया? कैसे किया?"

"कैसे का जवाब यह है कि नैना के घर जाकर उसे बेहोश करने के बाद उसको अगवा किया? और क्यों का जवाब यहीं है कि मैं नैना को चारा बनाकर अर्जुन के आगे डालूंगा। वो नैना को बचाने मेरे पास आएगा और फिर...ऊपरवाले के पास पहुंच जाएगा।"

"ओह!" देवसिंह के होंठ गोल हुए।

"ओह!" पंडित ने उसकी नकल उतारी।

देवसिंह ने उसका गिरेहबान झटके से छोड़ा तो वो दूर तक लड़खड़ाता चला गया।

"तू तो बड़ा उस्ताद निकला पंडित!"

"आखिर राजा हरी नारायण हूं - कभी पूरे गुड़गांवा में अपना ही राज चलता था। आज राजपाट छोड़ दिया तो अकड़ थोड़ी न छोड़ दी। राजा होने का गरूर तो आज भी है। हमेशा रहेगा।"

"अब कहां है नैना?"

"जहां भी है सुरक्षित है। राजा के कई ठिकाने होते हैं। कई निवास होते हैं। तुम मुझ पर हावी हो भी गए तो - फिर भी नैना तक कभी नहीं पहुंच सकोगे।"

"हूंऽऽ।" हुंकार भरता देवसिंह राजपूत सोच में पड़ गया।

वाकई पंडित हरी नारायण आज की तारीख में वो नहीं था जो वो सोचते थे। आज उसका अतीत खुला था और उसकी साहूकारी सामने आई थी।

"हो न हो। नैना को तुमने हवेली में ही छिपाया होगा।"

"अंदाजे लगाते रहो। अंदाजे लगाने से न उम्र कम होती है... न ही जिंदगी।"

"इसका मतलब शकुंतला शर्मा से तुम्हारी मिलीभगत है।"

"उस नागिन का नाम न लो मेरे सामने।"

"अच्छा! सुबह तो लसूड़े की तरह उससे चिपका पड़ा था। उसके सुर-में-सुर हांक रहा था।"

"मजबूरी थी तब-अब नहीं है।"

"मैं भी सुनूं वो मजबूरी...जो आपने करोड़ों की जायदाद जागीर अपनी उस बहू के नाम कर रखी हैं।"

"सुबह वो काली की जान बचाने की खातिर ही मेरे पास आई

थी। मेरे वंश के आखिरी चिराग की सलामती की दुहाईयां देती आई थी। तब मैं उसकी बातों में आ गया। जब तुम पहुंचे तो मुझे पता चला कि डिग्गी में कोई लाश है। जब लाश देखी तो मुझे लगा कि काली की हत्यारिन शकुंतला शर्मा ही है।''

''ये बात अब कबूल रहे हो। पहले तो कील ठोककर अर्जुन पर ही इल्जाम लगा रहे थे।''

''हालातों की रूह में जो सब सोच रहे थे...मैं भी वहीं सोच रहा था। मैं शकुंतला का साथ काली की जिंदगी की खातिर ही दे रहा था। जब उसकी लाश ही देख ली तो अब भला मैं शकुंतला का साथ क्यों दूंगा।''

''पता तो चले आखिर शकुंतला है क्या चीज?''

''सुन सकोगे।''

''सुनाओ।''

''शकुंतला ही मेरे बेटे बलबीर की हत्यारिन है। उसी ने ही मेरे बड़े पौते देवी को मरवाया है-और उसी ने ही मेरे पौते काली शर्मा को कभी कब्र में गाड़ा था।''

''व्हाट?'' देवसिंह उछला-''काली को कब्र में गाड़ा था!अरे-काली आज मरा है! एक्सीडेंट में!''

''हां।'' पंडित हरी नारायण सिर हिलाता बोला-''काली मरा जरूर आज है, पर उसे मारने की कोशिश पांच साल पहले जरूर कर दी गयी थी। ये तो उसका मुकद्दर साथ दे गया जो वो बच निकला।''

''पंडित! क्यों खोपड़ी घुमा रहा हैं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि तू क्या कह रहा है? और मेरा ख्याल है तू भी नहीं जानता कि तेरे मूंह से क्या अनाप-शनाप निकल रहा है।''

''देवसिंह, यही सच है - और इतना घिनौना सच है...कि सुनकर तो विश्वास ही नहीं होता। सोच...जिसने यह सब देखा होगा, भुगता होगा.... ।''

''साफ-साफ कहो...मुझे चक्कर आ रहे हैं।''

''चलो। तुम्हें एक जगह लेकर चलता हूं...वो सच तुम अपने ही कानों से सुनो।''

''चलो।''

पांच मिनट बाद ही देवसिंह अपनी जीप, में पंडित हरी नारायण के बताऐ रास्ते पर जा रहा था।

दोनों दिल्ली का जमना पार का इलाका पार करते गाजियाबाद बॉडर्र पर बनी सीमापुरी नामक बस्ती की तरफ जा रहे थे।

देवसिंह की खोपड़ी में सांय-सांय हो रही थी।

पहला ससपैंस खत्म नहीं हो रहा था कि पंडित हरी नारायण नया ससपैंस लेकर खड़ा हुआ था।

❑❑❑

❑❑❑

देवसिंह पंडित के साथ कई गलियां पैदल पार करता एक उजाड़ से मकान के बाहर पहुंचा।

वहां तक जीप नहीं आ सकती थी अतः जीप देवसिंह को बाहर सड़क पर खड़ी करनी पड़ी थी।

'ठक...ठक...ठक।' पंडित हरी नारायण ने किवाड़ खटखटाया।

काफी देर बाद नींद से उनींदी एक महिला की आवाज आई-

''कौन है?''

''बेटी, मैं पंडित हरी नारायण।''

''ओह!'' अंदर से महिला की खुशी भरी ओह गूंजी और फिर दरवाजे की तरफ भागते कदमों की आहट सुनाई दी।

'छम...छम...छम' की आवाजें दरवाजे के नीचे से ही आई।

देवसिंह समझ गया कि कथित बेटी ने 'पायल' पहन रखी है।

तभी दरवाजा खुला और चौखट पर एक कालीकलूटी महिला खड़ी नजर आई।

उसकी आंखों में नींद भरी थी...पर हरी नारायण का नाम सुनते ही उड़नछू हो रखी थी।

वो कोई 35-36 साल की युवती थी जो शक्लोसूरत से इतनी बदसूरत थी कि आदमी ज्यादा देर उसे देख नहीं सकता था।

''इसकी सूरत पर न जाओ देवसिंह...हकीकत जानोगे...तो तुम भी इस देवी के आगे नतमस्तक हो जाओगे।''

''बाबा! आप भी बस...।'' युवती शरमा गई और उसने उन्हें भीतर आने का रास्ता दिया।

देवसिंह थूक निगलता भीतर घुसा। पंडित पहले घुसा पड़ा था।

युवती ने दो पल्लों वाले दरवाजे पर कुंडीनुमा सांकल चढ़ा दी।

देवसिंह ने एक नजर दो कमरों के उस छोटे-से मकान का मुआयना किया।

''पंडितजी! कुछ बताइए तो सही...सस्पैंस के मारे मेरी खोपड़ी भन्ना रही है।'' देवसिंह ने पंडित पर नजर मारी।

''मैं चाय बनाऊं।'' युवती उसी इठलाहट भरे अंदाज में बोली।

देव सिंह को वो बदसूरत यकायक मासूम नजर आने लगी।

युवती यकायक पास बनी एक रसोई में गई और गैस जलाने लगी।

पंडित हरी नारायण ने बत्ती जलाई तो कमरे में ट्यूब कड़कड़ाई और फिर रोशन हो गयी।

देवसिंह की निगाहें कमरे में नाचीं तो उसकी आंखें फटती चली गयीं।

उसे दीवारों पर कई तस्वीरें नजर आई।

एक बड़ा-सा तैल चित्र भी नजर आया।

तैल चित्र में पंडित हरी नारायण, वो बदसूरत बेटी तथा एक गोरा-चिट्टा बच्चा नजर आ रहा था।

फ्रेमयुक्त तस्वीरों में युवती उसी बच्चे के साथ नजर आ रहीं थी। एक तस्वीर में बच्चा स्कूल बैग कंधे पर टांगे फुल पोज में मुस्कराता नजर आ रहा था।

"य...ये सब क्या है?"

"ये वही बच्चा है जिसकी लाश सुबह तुमने मुझे दिखाई।"

"नहींऽऽ। छनाक" तभी रसोई में से यह चीख गूंजी फिर श्रीख के साथ ही चायपत्ती की कांच की शीशी जमीन पर गिरकर टूटी।

अगले ही पल बदसूरत युवती हैरत में आंखे फाड़े रसोई की चौखट पर आ टिकी।

देवसिंह उसकी तरफ घूमा तो उसे युवती डर से कांपती जजर आई।

"हां देवसिंह। ये मां है काली शर्मा की...जिसकी मौत की खबर इसे मैंने अभी-अभी सुनाई।"

"नहीं....नहीं....क...काली मर गया। मेरा काली मर गया!"

युवती मुंह टेढ़ा करती एक-एक शब्द शून्य में देखती बोली।

"मां है? काली की मां तो शकुंतला शर्मा है?"

"शकुंतला ने सिर्फ उसे जन्म दिया है। पाला इसने है। शकुंतला काली की, देवकी मां है। यशोदा यह है।"

"म...मगर-।"

"क...काली क....कालीऽऽऽ।" उधर चौखट पर खड़ी युवती की पुतली डगमगाई। उसका सिर घूमा और जिस्म दाएं-बाएं डोला।

वो अभी गश खाकर गिर ही जाती कि देवसिंह ने लपककर उसे बांहों में संभाल लिया।

"सूंऽऽसूंऽऽ।' रसोई में चाय का पानी उबाले खा रहा था और चाय की पत्ती नीचे बिखरी पड़ी थी।

देवसिंह ने युवती को बांहों में उठाया और भीतर जाकर डबलबैड पर लिटा दिया।

"बेचारी!" पंडित हरी नारायण उसके सिरहाने पहुंचकर हाथ से पंखा झलने लगा।

"पंडितजी। मैं चलूं?"

"क्यों-बैठो न। अभी उठेगी-चाय बनाएगी।"

"भई आपके खानदान के सारे करैक्टर ही बिना सिरे के हैं। ना अगला सिरा दिखता है न पिछले का पता लगता है...मुझे तो डर है कि कहीं मुझे ही ब्रेन हैमरेज न हो जाए। कौन आपकी बहू निकल आती है कौन बेटी....और कौन पौता....मुझे माफ कीजिए...।"

"तुम तो नाराज हो गए देवसिंह।"

"बात ही ऐसी है। पंद्रह मिनट इस कमरे में घुसे हुए हो गए पर मुझे पता नहीं कि आपकी इस बेटी का नाम क्या है?"

"बोला तो यशोदा है इसका नाम।"

"फिर तो काली का नाम भी कृष्ण मुरारी ही होगा।" देवसिंह दाएं-बाएं सिर नचाता बोला।

"सही पहचाना तुमने। पुलिस हो तो ऐसी। मां का नाम सुनते ही बच्चे का नाम की घोषणा कर दे। आई लांईक इट।"

"पंडित...पंडित....।" देवसिंह ने बाल नोचे।

"दरअसल काली शर्मा को शकुंतला से छिपाए रखने के लिए ही काली का नाम बदलना पड़ा। सो मैंने काली का नाम स्कूल में कृष्ण मुरारी शर्मा ही लिखवा दिया। जब बच्चे के नाम के हिसाब से ही मां का भी नाम रखना था सो इसका नाम भी मैंने यशोदा ही रख दिया-और पुलिस दोनों को पहचान गयी।"

देवसिंह उसी पल भुनभुनाता उठा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसे लगा पंडित हरी नारायण नहीं बताना चाहता, तो नहीं बताना चाहता।

"रूको देवसिंह! सुनो, कब्र में गड़े काली शर्मा के जिंदा रहने की कहानी...मेरी जबानी।" एकाएक पंडित हरी नारायण का भीगा स्वर देवसिंह के कान में पड़ा।

देवसिंह उसी पल दरवाजे के पास ठिठक गया।

"पांच साल पहले...विमान हादसे में देवी शर्मा की मौत की खबर सुनते ही मैं गुड़गांवा निकला ताकि घर का बड़ा होने का फर्ज निभा सकूं....और पौते काली से मिल सकूं...।

मैं हवेली पहुंचा तो बाहरी प्रांगण में मुझे तंबू लगा नजर आया।

लोग देवी शर्मा का अफसोस प्रकट करने आए हुए थे। औरतें अलग पंडाल में बैठी थी और मर्द अलग। सभी देवी शर्मा की मौत पर क्षुब्ध नजर आ रहे थे।

चूंकि मैं अपने परिवार से बहुत पहले ही नाता तोड़ चुका था। अतः अपनी शिनाख्त छिपाने की खातिर मैं हवेली के मुख्य फाटक से जाने की बजाए दूर से ही मुड़ गया और हवेली की चारदीवारी के किनारे-किनारे चलता हवेली के पिछले फाटक की तरफ निकला।

उम्मीद के अनुसार वो फाटक मुझे बंद मिला और वहां कोई गार्ड नजर न आया।

मैं फाटक के नजदीक पहुंचा।

मैंने जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला और उसमें से गेट के इंटरलॉक की चाबी निकाली।

हवेली के तमाम तालों की चाबियां अभी भी मेरे पास है।

मैंने ताला खोला और गेट धीमे-धीमे सरकाता भीतर घुसा।

मैंने गेट का पल्ला बंद किया। फिर भीतर से चाबी लगाकर लॉक कर दिया।

मैं शकुंतला से अपनी आमद छिपाना चाहता था। वैसे भी शकुंतला में मुझे रती भर भी दिलचस्पी न थी। मैं काली से मिलने आया था। दुनियादारी के नाते शकुंतला से भी मिलने आया था।

बहरहाल मैं पिछला गेट बंद करता मुड़ा। बीच में बजरिया पटरी बनी थी। दायें-बायें अच्छे खासे बगीचे थे।

मैं पटरी पर चलता हवेली की इमारत के पिछवाड़े की तरफ निकला कि-

'खड़...खड़...खड़....।' मुझे यह रहस्मयी ध्वनि सुनाई दी मेरा चेहरा अनायास ही लॉन की तरफ मुड़ा तो मुझे लॉन की जमीन की नीचे से यह खड़-खड़ सुनाई दी।

उस वक्त तक मैं नहीं जानता था कि काली शर्मा को दफन दिया गया है।

मैं डरी-सहमी निगाहों से उस तरफ बढ़ा।

जैसे-जैसे मैं बढ़ता जा रहा था-जमीन के नीचे से खड़खड़ाहट की आवाज बढ़ती जा रही थी।

मैंने लॉन की मिट्टी को ध्यान से देखा, तो मेरी आंखे और फटीं।

लॉन की मिट्टी ताजी-ताजी खुदी थी-और सूरतेहाल साफ कह रहे थे कि मिट्टी के नीचे कुछ दफन है।

डर के मारे मेरा जिस्म कांपना शुरू हो गया।

पहले मेरा दिल किया कि मैं दानों हाथ से मिट्टी हटाऊं फिर देखूं कि मिट्टी के नीचे क्या है?

पर मैं बुरी तरह आतंकित था। भूत-प्रेत में विश्वास रखने वाला मैं पंडित उस पल घबरा गया और बड़ी-सी क्यारी के पीछे छिपकर उस खड़...खड़.....को सुनता रहा।

दिल कह रहा था कि भाग जा...दिमाग कह रहा था कि सब्र कर। बहरहाल, पांच-सात मिनट और बीते तो मुझे लॉन की मिट्टी ऊपर की तरफ उछलती नजर आई।

फिर एक ढक्कन ऊपर-नीचे उछलता नजर आया।

"हे भगवान! ये तो ताबूत है! और ताबूत के भीतर...।"

'धड़ाक...ऽऽ।' अभी मेरे शब्द पूरे होते कि ताबूत का ढक्कन खुलता हुआ दूसरी तरफ जा गिरा। फिर ताबूत में से एक औरत किसी बच्चे को उठाए खड़ी होती गयी।

बच्चा दांए-बाएं सिर नचा रहा था जबकि औरत पूरी तरह मिट्टी में सनी नजर आ रही थी।

"काली!" बच्चे का चेहरा पहचान में आते ही मैं तेज कदमों से ताबूत की तरफ निकला।

इसी दौरान औरत बच्चा उठाए ताबूत से बाहर आ निकली और चारों तरफ गर्दन घुमाने लगी।

सहसा उसकी निगाहें मुझसे मिलीं और हैरत बढ़ी। साथ ही डर भी उसके चेहरे पर नाचा।

"तुम कौन हो?" मैं नजदीक पहुंचता बोला। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। क्योंकि हवेली तो मैंने सन् 95 में ही छोड़ दी थी जबकि तब 200 चल रहा था।

"मैं रमैया हूं। इस घर की नौकरानी।"

"मैं हरी नारायण हूं। इस घर का मालिक। हवेली का खुदा... ये मेरा पौता है। काली शर्मा।"

"ओह!" रमैया ने फौरन काली को मेरी तरफ बढ़ा दिया।

काली शर्मा तत्काल मेरी आगोश में आ गया और कंधे पर सिर रखकर खामोश हो गया।

"म...माजरा क्या है?"

"माजरा यह है कि आपके इस पौते काली में, आपके बेटे बलबीर शर्मा की आत्मा है-और आज दोपहर ही इस बच्चे ने शकुंतला शर्मा को बता दिया कि बलबीर की हत्या उसने की है और यह इंतकाम लेगा...नतीजतन शकुंतला भड़क गयी। उसने काली के सिर

पर गुलदस्ता मारकर बेहोश कर दिया। फिर वो अपने बॉडीगार्ड के साथ
छत पर गयी वहां उसने लूका के साथ मिलकर देवी शर्मा को हैलीकॉप्टर में डाला और हैलीकॉप्टर बम से उड़ा दिया। अभी भी बम का रिमोट शकुंतला के पास ही होगा।''

''तुम इतना कुछ कैसे जानती हो?''

''शकुंतला ने मेरे सामने ही काली को बेहोश किया था। फिर वो लूका के साथ ऊपर छत पर गयी थी। मैं बेहोश काली को उसके कमरे मे ही छोड़कर ऊपर छत पर गयी थी और देवी शर्मा की हत्या का मंजर मैंने अपनी आंखों से देखा था।''

''नहींऽऽ।'' मैंने दोनों कानों पर हाथ रख लिए।

''फिलहाल बाबूजी, वक्त कम है। हमें यहां से निकलना चाहिए। बाद में काफी कुछ बताउंगी।''

''ओह!'' वो सही कह रही थी-''तुम यह चांबिया पकड़ो और दिल्ली निकलो। वहां मेरा फ्लैट है। मैं वहीं तुम्हें मिलूंगा।''

''जी! पर यह कब्र साफ बता देगी कि दोनों लाशें निकल भागीं हैं।''

''वो मैं हूं। मैं कब्र पूर्ववत् तरीके से बंद कर दूंगा। तुम निकलो।''

''जी।''

फिर मैंने उसे और काली को पिछले गेट से बाहर निकाला।

अपने फ्लैट का पता दिया और गेट लॉक करता कब्र के पास पहुंचा।

मैंने ताबूत बंद किया। फिर उस खाली ताबूत को दोबारा मिट्टी से पाटने लगा ताकि किसी को शक न पड़े कि ताबूत भीतर से खाली हो चुका है।''

❑❑❑

❑❑❑

''कमाल है!'' देवसिंह पंडित हरी नारायण की बात सुनते बोला-''आपने पूछा नहीं कि वो काली के साथ जिंदा कब्र में से कैसे निकल आई?''

''तब समय नहीं था। बहरहाल कब्र पाटने के बाद मैंने भी वहां रूकना मुनासिब न समझा। मैं पिछले गेट से बाहर निकलता तेज कदमों से बस अड्डे की तरफ भागा। वहां मुझे रमैया काली के साथ बस में ही बैठी मिल गयी। उसने काली को अपने सीने में छिपा रखा

था ताकि काली शर्मा को कोई देख न सके-और यू भी उसे कोई पहचानता नहीं था। उसके बाद मैं भी उसी बस में सवार हो गया। हम तीनों दिलली पहूंचे। दिल्ली बस अड्डे से मैं अपने फ्लैट में जाने की बजाए इसी कॉलोनी में पहुंचा। यहा मैनें रमैया और काली को मकान किराये पर दिलाया। फिर रमैया को यशोदा का नाम दिया और काली शर्मा को कृष्ण मुरारी शर्मा का नाम दिया और इन्हें यहां बसा दिया...।''

''तो ये बात है। रमैया नामक नौकरानी यशोदा बनकर कृष्ण की परवरिश कर रही है।''

''...उसके बाद काली कृष्ण बरनकर यहां के स्कूल में ही पढ़ने लगा....मैंने दोनों की परवरिश का जिम्मा ले लिया।''

''अब ये भी बताइए कि कब्र से रमैया और काली जिंदा कैसे निकले?''

''रमैया ने ही बताया कि जिस वक्त लूका उसका गला दबा रहा था तो एक नॉवल का आइडिया उसके दिमाग में आया और उसने अपनी सांस रोक ली। जीभ बाहर निकाल ली और गर्दन लटकाकर मरने का नाटक किया। हड़बड़ी में लूका ने उसे मृत समझ लिया और नब्ज तक न चैक की। दिल की धड़कन तक न सुनी। फिर लूका और शकुंतला ने मिलकर उसे और काली को ताबूत में बंद कर दिया। काली वैसे ही बेहोश था और दोनों मुझे वैसे ही मरी हुई समझ चुके थे। अतः हम दोनों कब्र में दफना दिए गए। बेहोश काली ने वैसे ही बिना ऑक्सीजन के ताबूत में ही मर जाना था। बस...फिर उसी शाम रमैया जब ताबूत खोलने का यत्न कर रहीं थी कि मैं (पंडित) पहुंच गया। उसके बाद तो तुम जानते ही हो। दोनों मेरे साथ दिल्ली ही आ गए।''

''ओह! वाकई रमैया ने करिश्मा कर दिखाया।'' देवसिंह बोला -''मौत के मुंह से खुद भी जिंदा बच निकली और काली शर्मा को भी बचा लाई। खैर, जब आप जानते थे कि शकुंतला बलबीर, देवी तथा काली की हत्यारिन है तो पांच सालों तक चुप क्यों रहे?''

''अपने स्वार्थ की खातिर-। मैं काली को शकुंतला की निगाहों से छिपाये रखना चाहता था। अगर रमैया सामने आती तो शकुंतला जान जाती कि काली भी जिंदा है। मेरी सारी स्कीम चौपट हो जाती। फिर शकुंतला को कोई सजा हो पाती या नहीं...पर यह तय था कि शकुंतला रमैया और काली को जरूर मार डालती। इसलिए ही मुझे खामोश रहना उचित लगा।''

"इसका मतलब शकुंतला को आज ही पता चला कि काली शर्मा पिछले पांच सालों से जिंदा था और आज रोड एक्सीडैंट में मारा गया। पैर की उंगली की शिनाखत से उसने जरूर काली की लाश को पहचान लिया है; यानि आज उसने जरूर वो ताबूत खोला होगा-और अब तक वो जान भी चुकी होगी कि काली और रमैया उस ताबूत से पांच साल पहले ही गायब हो चुके थे।" देवसिंह ने सोचपूर्ण मुद्रा से सिर हिलाया।

"हां। पर रमैया के जिंदा रहने की वजह उसे भी हैरान किए होगी।"

"खैर, मैं ए0सी0पी चड्ढा को फोन करता हूं। शकुंतला की हवेली पर धावा बुलवाता हूं। कब्र की खुदाई शायद अभी हो ही रही हो। शकुंतला रंगे हाथों पकड़ी गयी तो फिर न बच पाएगी कानून से।"

इन्हीं शब्दों के साथ देवसिंह तेजी से ए0सी0पी0 चड्ढा का मोबाइल नंबर मिलाने लगा।

पंडित हरी नारायण ने कोई एतराज नहीं किया।

अगले ही मिनट देवसिंह ए0सी0पी0 चड्ढा को पंडित से पता लगा सारा घटनाक्रम सुना रहा था।

दूसरे ही मिनट ए0सी0पी0 चड्ढा शकुंतला के घर धावा बोलने जा रहा था। उसके पिछले कारनामों की चश्मदीद गवाह रमैया अभी जिंदा थी-और उसका ताजा करनामा लूका की लाश के रूप में उसी कब्र में ही दफन था। जिसकी ए0सी0पी0 चड्ढा एक बार फिर से खुदाई करने जा रहा था।

यानि आज के बाद शकुंतला शर्मा तबाह थी। कानून के हाथों जिबह थी। उसका राजनैतिक भविष्य खत्म था।

पंडित हरी नारायण ने चैन की सांस ली।

फिर दोनों रमैया को होशं में लाने की कोशिश में लग गए।

दस मिनट बाद रमैया होश में आ गयी।

फिर देवसिंह ने एक सरकारी कागज पर रमैया की स्टेटमैंट रिकॉर्ड की। शकुंतला की पूरी करतूतें कलमबंद की और अंततः रमैया के हस्ताक्षर लिए। अपने हस्ताक्षर किए। गवाही के तौर पर पंडित हरी नारायण के हस्ताक्षर लिए और दोनों रमैया को धीरज रखने की सलाह देते वहां से निकले।

शकुंतला शर्मा की तो अब जमानत भी नहीं होनी थी। और इस बार इलैक्शन लड़ना तो दूर....उसे पार्टी ने टिकट तक न देना था।

उसके ताबूत में बच्चू तिवारी ने कुछ कीलें और ठोक दी थीं। बच्चू तिवारी ने डॉक्टर बग्गा को आदेश दे दिया था कि अगर कोई उससे काली की हॉस्पिटल से गायब हुई लाश की बाबत पूछताछ करें तो बग्गा सीधा यही कह दे कि वो लाश शकुंतला शर्मा ही जानकी दास हॉस्पिटल से लेकर गयी थी।

अर्थात् रोड एक्सीडैंट में मरे काली शर्मा की हत्या का इल्जाम भी अब शकुंतला शर्मा के सिर लगना था।

देवसिंह की जीप हरी नारायण के साथ ईस्ट पटेल नगर भागी जा रही थी जहां पंडित रहता था।

"देवसिंह! हो सके तो ये राज राज ही रहे कि शकुंतला मेरी बहू थी और काली मेरा पौता।"

"मैं समझ सकता हूं पंडित जी! यह राज राज ही रहेगा।"

देवसिंह ने पंडित को उसके फ्लैट में छोड़ा और फिर अपने घर के लिए निकला।

'ठक....ठक....।' देवसिंह ने अपने फ्लैट का दरवाजा जैसे ही खड़खड़ाया तो भीतर से राधा के भागते कदमों की आवाज आई।

"अभी तक सोई नहीं राधा।" कलाई घड़ी देखता देवसिंह खुद से ही बोला।

'खटाक' तभी राधा ने दरवाजा खोला और लाल-लाल आंखों से उसे घूरती चली गयी।

देवसिंह ने सकपकाकर निगाहें चुराई और भीतर घुसता बुदबुदाया-

"बहुत गुस्से में है। अभी खाने को पड़ेगी।"

"फर्ज के पीछे इतने भी अंधे न हो जाओं कि एक दिन हमारा मरा मुंह ही देखना पड़े।" पीछे दरवाजा बंद करती फुंफकारी राधा।

"य...ये क्या कह रही हो!" देवसिंह बौखलाता हुआ मुड़ा।

"जाकर देखो बैडरूम में।" राधा गुर्रायी - "पता चल जाएगा कि कह रहीं हूं या तुम्हें चेता रही हूं।"

"क्या हुआ?" देवसिंह कापता हुआ जिंकी के बैड पर पहुंचा और हथेली की पीठ उसके माथे पर रखता बोला-"अरे इसे तो बुखार है। तप रहा है।"

"तप भी रहा है और पीला भी पड़ा है। देखो-चेहरा कैसे पीतल का रंग लिए पीला हो रखा है।"

"और तुमने मुझे फोन तक न किया।" देवसिंह स्टोव की तरह फटा।

"किया। कई बार किया। पर हर बार एक ही जवाब मिला-दिस

मोबाइल इज करैंटली स्विच्ड ऑफ!'' राधा मुंह बनाती बोली।

देवसिंह ने पतलून की जेब से मोबाइल निकाला तो वाकई वो ओफ हो रखा था। जेब में होने के कारण शायद उसका 'ऑफ' वाला बटन स्वतः ही दब गया था और वो ऑफ हो गया था।

''और घर वापिस लौटने का तो तुम्हारा कोई टाईम है नहीं। ये खाकी वर्दी क्या पहनकर निकलते हो कि भूल जाते हो कि तुम्हारा भी घर-बार है। बीवी-बच्चा है....।''

''ओफ्फो! अब बस भी करो। डॉक्टर को दिखाया?''

''दिखाया। डाक्टर ने 'डेंगू' का अंदेशा बतलाया और इसके खून का सेम्पल ले गया। जिंकी का ब्लड चैक होगा और रिपोर्ट सुबह मिलेगी। सुबह क्या दोपहर मिलेगी। दोपहर बारह बजे।''

''इतनी लेट मिलेगी रिपोर्ट।''

''और नहीं तो क्या - जब रात एक बजे डॉक्टर आएगा। खून ले जाएगा तो खून की जाँच होते-होते तो टाइम लगेगा ही-अब लेबोरेट्री वाले तुम्हारी तरह तो हैं नहीं...कि रात के चार बजे तक मारे-मारे काम करते फिरें। वो तो सुबह ही लैब खोलेंगे और खून की जांच करेंगे।''

''ओफ्फो! अब बस भी करो न....हाथ धोकर पीछे पड़ गयी हो। दवाई-ववाई दी इसे कोई?''

''क्रोसीन सिरप ही दिया। डॉक्टर गाबा कह गए है कि जब तक बुखार की मुकम्मल जांच नहीं की जाती - तब तक दवाई रिकमैंड नहीं की जा सकती। वैसे भी रात के एक बजे दवाइयां मिलेंगी भी नहीं. ..आप क्रोसीन सिरप ही देती रहिए....और वो तो मैं रात दस बजे से ही दे रही हूं। तीन डोज दे चुकी हूं अब तक....बुखार कम ही नहीं हो रहा।''

''थर्मामीटर लगाया?''

''लगाया। वो भी टूटते-टूटते बचा।''

''मतलब?'' देवसिंह ने घूरा उसे।

''104 बुखार है। थर्मामीटर तो टूट ही सकता था।''

''शटअप।'' देवसिंह ने फटकारा राधा को - ''बच्चा बुखार से तप रहा है और तुम्हें मजाक सूझ रहा है।''

''तुम्हें यह मजाक लग रहा है।''

''क्रोसीन सिरप देने के बाद इसे पसीना आया था?''

''नहीं।'' राधा मुंह फेरकर बोली।

''यानि क्रोसीन सिरप काम नहीं आया। जिंकी को कोई और भी बुखार हो सकता है। चेहरा देखकर तो पीलिया के आसार भी नजर

आ रहे हैं।"

मुंह फुलाए खड़ी राधा ने जवाब न दिया।

"चलो तैयार हो। इसे हॉस्पिटल लेकर चलते हैं।" देवसिंह तेजी से जिंकी को गोद में उठाता बोला।

"गौर करो तो मैं तैयार ही खड़ी हूं। खड़ी थी....ताकि कब तुम आओ और कब हम जाएं।"

देवसिंह ने घूरकर उसकी तरफ देखा तो राधा ने वाकई बाहर आने-जाने वाला सूट पहन रखा था। बस चेहरा तथा मांग सूनी थी।

"कहों तो बिंदी-लिपिस्टक लगाऊं। बारात में जो जा रहे हैं।"

"चलो भी। जरा-सा बहाना क्या मिले कि ताने मारना शुरू कर देती हो।" कहता देवसिंह बैडरूम से बाहर भागा।

पीछे-पीछे राधा भी निकली।

अगले दो मिनट बाद वो जिंकी का उठाए हॉस्पिटल की तरफ भागे जा रहे थे।

नहीं जानते थे कि जिंकी का बुखार वो रंग लाने जा रहा है कि देवसिंह का पूरा टब्बर ही बर्बाद हो जाएगा।

देवसिंह द्रुतगति से जीप आर्मी हॉस्पिटल की तरफ भगाए जा रहा था, जबकि राधा अपने लाल को सीने से चिपकाए आंसुओं से उसका तपता चेहरा धो रही थी।

"त...तुम थे कहां अब तक?"

देवसिंह उसे अर्जुन से मुतल्लक तमाम घटनाक्रम सुनाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

शकुंतला शर्मा हवेली में अकेली पड़ी फिर अतीत की यादों में खोई पड़ी थी।

तब उसकी नई-नई शादी हुई थी....

शकुंतला दुल्हन बनी सुहाग शैया पर बैठी अपने पति बलबीर शर्मा का इंतजार कर रही थी कि सहसा दरवाजा खुला।

बलबीर शर्मा राजा-महाराजाओं वाली पोशाक पहने गुलाब का फूल सुंघता उस आलीशान बैडरूम में घुसा।

शकुंतला घुटनों पर सिर रखे लाज से और सिकुड़ती चली गई। तभी बलबीर शर्मा के पीछे-पीछे एक कैमरामैन विडियो कैमरा कंधे पर उठाए भीतर घुसा। उसके चेहरे पर सकपकाहट के भाव थे।

शकुंतला शर्मा ने यकायक चेहरा उठाया और कैमरामैन की तरफ देख उसकी आंखे फटीं।

"य...ये सब क्या है महाराज?" वो बलबीर से बोली।

"मालिका-ए-आलिया!" बलबीर शर्मा फूल सूंघता बोला - "आज हमारी सुहागरात है-और हम चाहते है कि आज की रात हम कैमरे में उतार लें। ऐ!" कहता बलबीर फोटोग्राफर की तरफ मुड़ा-"तुम अपना काम करो।"

कैमरानाम उसी पल बौखलाता-हड़बड़ाता कैमरा और फ्लैश लाइट बैड के गिर्द चौकस करने में मशगूल हो गया।

"य...य...ये आप क्या कह रहे हैं....ये फोटोग्राफर....हमारी फिल्म बनाएगा!"

"क्या हर्ज है...हम सुहागरात मनाएंगे। ये हमारी शूटिंग करेगा। हमारी फिल्म बनाएगा, जो हमारी जिंदगी की जागीर बन जाएगी। तुम जब कभी मायके जाओगी मैं वह फिल्म देखकर तुम्हें याद कर लूंगा। मैं जब कभी शिकर पर जाऊंगा....आप अपनी सुहागरात की फिल्म देख लीजिएगा।"

"क्या बकवास है।" शकुंतला शर्मा उसी पल सारी लाज-शर्म छोड़कर बैड से नीचे उतर आई-"एक तीसरा आदमी हमारे अंतरंग दृश्य देखेगा।"

"नहीं...नहीं। ये नहीं देखेगा। इसका कैमरा देखेगा।" फूल सूंघता बलबीर शर्मा बोला।

"खामोश। तुम्हें शर्म नहीं आती अपनी बीवी की नुमाईश एक तीसरे आदमी के सामने करते हुए! कैसे पति हो तुम!"

"हम ऐसे ही हैं मलिका-ए-आलिया! शादी की पहली रात, एक ही बार जिंदगी में आती है। हम चाहते है कि इन सुनहरे व रंगीन पलों को यादगार बना लें। जब जी चाहे अपने पहले रंगीन दृश्यों को दोबारा देख सकें। तुम्हें याद कर सकें।"

"हटो। घिन्न आती है तुम्हें अपना पति कहते हुए....।"

"डोंट वरी। घिन्न आती है तो लो ये फूल सूंघ लो।" कहते हुए बलबीर ने उसका चेहरा जबरन ऊपर उठाते उसे गुलाब का फूल सुंघाने का उपक्रम किया।

"हटो।" शकुंतला शर्मा ने गुलाब खींचा। फैंका और उसे पांव से मसलती-कुचलती चली गयी।

बलबीर शर्मा की पुतलियां आंखों से बाहर फटती चली गयीं।

"दो टके की लौंडिया! तेरी इतनी मजाल कि राजा बलबीर शर्मा के फूल का अपमान करे।"

कैमरामैन थूक निगलता चोर नजरों से उन्हें देखता कांपने लगा।

"शिट! मुझे नहीं पता था कि काली हवेली का मालिक इतना सिरफिरा सनकी होगा जो अपनी सुहागरात किसी तीसरे आदमी को दिखाकर मनाएगा....सुहागरात की शूटिंग कराएगा।"

"डोंट वरी। ये तुम्हें देख जरूर लेगा पर बता किसी को न पाएगा। हम इसकी भी शूटिंग कर देंगे।"

कैमरामैन की आंखे फटीं।

"क्या मतलब है महाराज?" कैमरामैन हड़बड़ाया।

"मेरा मतलब हम इस कैमरामैन का मुंह बंद कर देंगे।" बलबीर शर्मा शकुंतला को सुनाता बोला - "हम इसका मुंह माल से भर देंगे कि यह किसी को कुछ न बताएगा। बता ही न पाएगा।"

कैमरामैन की आंखें चमकीं। वो समझ गया कि उसे इस सुहागरात की ब्लू फिल्म बनाने की अच्छी रकम मिलेगी।

"अब आओं भी....!" एकाएक शकुंतला शर्मा को बलबीर शर्मा ने अपनी बांहो में खींचा कि...।

"हटो....दफा होवो।" शकुंतला शर्मा ने बलबीर को धक्का दिया और दरवाजे की तरफ भागी।

बलबीर ने उसे पीछे से खींचा।

शकुंतला शर्मा पीछे की तरफ पीठ के बल जा गिरी।

"कैमरा ऑन।"

'भक्क...।' उसी समय कैमरा लाइट ऑन हो गयी।

बलबीर शर्मा ने शकुंतला शर्मा की छाती पर पांव रखा और फिर...'तड़ाक....तड़ाक....।' उसके थप्पड़ शकुंतला के दोनों गालों पर बारी-बारी पड़ते चले गए।

"साली। नाम से तू रानी है। पर बांदी बनकर रहना सीख... वरना वो हाल करूंगा रानी कि नानी याद आ जाएगी...'तड़ाक.... तड़ाक...फच....फचाक।' फुंफकारता बलबीर शर्मा उसका लहंगा फाड़ता नोचता चला गया।

और फिर विक्षिप्त सनकी बलबीर शर्मा अपनी ही रानी को नग्न करता वासना का नंगा नाच खेलता गया और कैमरामैन मजबूरी और खौफ के तहत यह तमाम दृश्य कैमरे में बंद करता चला गया।

शकुंतला शर्मा आंखे हैरत में फाड़े बेबसी और शर्म के आंसू लिए लुटती चली गयी। वो भी पराए मर्द के सामने।

पूरी रात ऐसे ही कटी और कैमरामैन ने पूरे तीन घंटे की वो फिल्म बनाई।

बलबीर शर्मा और शकुंतला बैड पर पड़े अब गहरी लंबी सांस

ले रहे थे।

"सारी कैसेट खत्म हो गयी। मैं चलूं?" तभी कैमरामैन बोला।

"रू...रूक। रूक।" एक हाथ खड़ा करता बलबीर शर्मा अपने बैड से खड़ा हुआ।

फिर लड़खड़ाता-झूमता कमरे में ही बनी एक तिजोरी के पास गया।

कैमरामैन की आंखों में लालच के सर्प नजर आने लगे।

बलबीर शर्मा से सेफ खोली और कुछ हटाता-निकालता उसकी तरफ मुड़ा।

"नहींऽऽ।" कैमरामैन की चीख गूंजी।

"कैसट भी खत्म। कैमरामैन भी खत्म....धांय....,धांय.....।"

अगले ही पल बलबीर शर्मा दोनाली देसी पिस्तौल से फायर करता चला गया।

कैमरामैन छाती पर हाथ रखे, फटी आंखों से भल्ल-भल्ल खून बहता देख, फर्श पर लहराने लगा।

शकुंतला शर्मा भी सीने तक चादर ओढ़े बैड पर उठ बैठी।

"देखा। कर दी न हमने कैमरामैन की शूटिंग...कर दिया न इसका मुंह बंद.....भर दिया न इसका मुंह....अब कहो यह बता पाएगा किसी को कि इसने क्या देखा.....नहीं न...नहीं न...हा हा हा।"

शकुंतला शर्मा की आंखे फटीं और मुंह खौफ से खुलता चला गया।

"रानी! तुम्हें भी याद रहे, जो देखा किसी को नहीं बताना...नहीं तो मुझे तुम्हारी भी शूटिंग करनी पड़ेगी।" बलबीर हँसता मुड़ा।

उसने पिस्तौल सेफ में रखी। सेफ बंद की और बैड की तरफ मुड़ा।

"अब सोते हैं-चैन से सोते हैं।"

'धड़ाम....।' इधर कैमरामैन लाश बनकर फर्श पर ही फैल गया था।

'भक्क' बलबीर शर्मा ने बुत्ती बुझाई और शकुंतला के गले में बांह डालकर सो गया।

दो ही मिनट बाद उसके खर्राटे गूंजने लगे।

शकुंतला शर्मा उसकी बांहों की गिरफ्त में भयभीत हिरनी की तरह सिसक रही थी। बैडरूम में एक पराए मर्द की लाश पड़ी थी और वो चैन से सो रहा था।

"हे प्रभ! इस विक्षिप्त के साथ मुझे सारी जिंदगी गुजारनी पड़ेगी।"

❑❑❑

❑❑❑

अगली सुबह शकुंतला की आंख खुली तो पास में पति नहीं था और फर्श पर लाश भी नहीं थी। कैमरा, फ्लैश लाईट कुछ भी नहीं था।

उसने अचकचाकर चारों तरफ देखा तो कहीं खून का धब्बा नहीं था।

वो समझ गयी कि बलबीर शर्मा ने रातो-रात ही अपने गुनाह का सबूत और लाश ठिकाने लगा दी है।

अलबत्ता बिस्तर पर विडियो कैसेट पड़ी साफ चुगली कर रही थी कि हकीकत वही है जो कल रात उसने देखी है। भोगी है। भुगती है।

'उफ्फ' तभी उसके हलक से ठंडी सांस निकली और वो उठी। फिर बाथरूम में चली गई।

बाथरूम में उसने पानी के ठंडे शॉवर के नीचे सब कुछ भुलाने की कोशिश की-मगर कामयाबी न मिली।

पानी में ही उसका रोम-रोम कांपता चला गया।

बहरहाल वो 'बेदिंग रोब' (लंबा तौलिया) पहनकर बाहर निकली कि एकाएक उसकी आंखे फटती चली गयीं।

उसके बैडरूम में हरी नारायण शर्मा खड़े थ। उसके ससुर।

"आप!" शर्म से पानी-पानी होती वो चिंघाड़ी।

"बेटी! सुहागरात कैसी बीती?" हरी नारायण शर्मा उसकी तरफ पीठ करते बोले।

"आपकी हिम्मत कैसे हुई मेरे कमरे में आने की?"

"कमरे में हिम्मत से नहीं, पैरों से आया जाता है। ये देखो... .धप्प.....धप्प।" हरी नारायण दोनों पैर फौजियों की तरह उठाता-रखता कदमताल करता बोला-"देखा मेरे पैर कितने चौकस है कितने तंदुरूस्त है।"

शकुंतला शर्मा हैरानी और शर्म से हरी नारायण जी की पीठ देखती चली गयी।

"आपको शर्म नहीं आती...जवान बहू के कमरे में बिना इजाजत घुसते हुए। जाइए।"

"शर्म तो आती है। तभी तो हम रात को नहीं आए। अब आए.

...जब आधी दुनिया जाग चुकी है। काम-धाम पर लग गयी है। और आप हैं कि - अभी तक नहा-धो रही हैं। ये सब हमारे यहां नहीं चलेगा। हवेली की बहुंए सोऐं भले ही रात भर न....पर सुबह पांच बजे उठ जरूर जाती हैं। साढ़े पांच बजे तक बहुएं हवेली में मां काली की पूजा करती हैं। और.... ।''

''कितनी बहुएं है आपकी? एक मैं ही तो हूं। एक ही तो बेटा है आपका। वो भी पूरे जहां से निराला। न्यारा। प्रिंस बलबीर शर्मा। जो रात को बीवी की नुमाईश करता है। फिर कत्ल करता है। फिर चैन से सो भी जाता है।''

''खैर, हवेली की बहुओं को शोभा नहीं देता कि अपने पति की शान में इतना बढ़-चढ़कर बोलें।'' हरी नारायण उसकी तरफ पीठ किए ही बोला।

''पता तो चले, ये बहुएं-बहुएं क्या लगा रखी है आपने?''

शकुंतला शर्मा भुनभुनाई-''बाकी बहुएं कौन हैं आपकी?''

''अगर तुम नहीं रहीं, तो दूसरी बहू आएगी, वो भी न रही, तो तीसरी आएगी...फिर चौथी.....फिर पांचवी.....हो गयी न सभी हमारी बहुएं....तभी हमने बहुएं-बहुएं लगा रखी है।''

''हे भगवान! कहां फंस गयी मैं! सभी पागल हैं यहां तो। विक्षिप्त भरे पड़े हैं यहां पर.... ।''

''कोशिश करो तुम भी ऐसी ही बन जाओ। हमारे जैसी...तभी इस हवेली में रच-बस पाओगी। नहीं तो...भगवान जाने....और हां. ..नाश्ते में आज हम मूली के परांठे खाएंगे। यही कहने ही यहां आए थे....फौरन रसोईघर में पहुंचो।'' कहता हरी नारायण बाहर की तरफ निकला।

''वो कहां गए हैं?''

''पता नहीं कंधे पर कोई आदमी-सा डाल रखा था-दिखने में भी आदमी ही लगता था...शायद उसी को ही ठिकाने लगाने गए होंगे साहबजादे। कह रहे थे जंगल जा रहे है....अभी आते ही होंगे।''

शकुंतला शर्मा दरवाजे तक पहुंचे अपने ससुर को घूरती रही। जो उसके पति से भी बड़ा सनकी था।

"वो आदमी नहीं लाश थी महाराज! उस कैमरामैन की।"

"वो लाश नहीं आदमी था बहू...लाश कैमरामैन थोड़ी होती है. ..झूठ कम बोला करो।" कहता हरी नारायण शर्मा बाहर निकल गया।

'हिश्श।' पीछे शकुंतला ने दोनों हाथ के पंजे अपने ससुर की तरफ नचाए, पर तब तक वो बाहर निकल चुका था।

शकुंतला, इन ऊत दिमाग लोगों से निबटने का एक ही तरीका है कि चुपचाप सहती जा और इनके ही जैसी होती जा। आखिर इतनी बड़ी हवेली के चक्कर में ही तो तूने बदसूरत बलबीर से शादी की है...पति और न भी मिला, तो मर्द जरूर कोई न कोई मिल जाएगा. ..पर ये धन-दौलत जागीर फिर न मिलेगी?

❑❑❑

❑❑❑

"सुनो जी!" शकुंतला बलबीर की छाती पर हाथ फेरती शर्माई, फिर उसके कान में फुसफुसाई"मैं मां बनने वाली हूं।"

"तो इसमें शर्माने की क्या बात है! हर लड़की मां बनती है.. .शर्माओ तो तब...जब तुम्हें लगे कि तुम बाप बनने वाली हो...हटो।" इस बार बलबीर ने उसे धक्का दिया और बैड से खड़ा हुआ।

"आपसे तो बात करना ही गुनाह है...हर बात का उल्टा ही जवाब देते हो।"

"तुम औरतें होती ही पागल हो। आधी बुद्धि की। मैं मां बनने जा रही हूं...।" बलबीर शर्मा उसकी नकल उतारता गाल पर एक उंगली रखे शर्माता चला गया। इठलाता चला गया।

शकुंतला शर्मा मन-ही-मन दांत पीसती अपने अजीबो-गरीब सनकी पति को देखती रही।

"सुनो जी! मैं जरा बाहर जा रहा हूं। दिल्ली। कल लौटूंगा। पिताजी का ख्याल रखिएगा।" इठलाता हुआ बलबीर बोला"उन्हें वक्त पर दूध-दलिया देतीं रहना।"

शकुंतला शर्मा गुस्से से लाल हो गयी।

बलबीर चला तो गया पर उस दिन के बाद लौटा ही नहीं। उसका कल आया ही नहीं।

समय अपनी रफ्तार से भागता रहा। पीछे देवी शर्मा का शकुंतला ने जन्म दिया।

"पिताजी!" एक दिन शकुंतला ने हरी नारायण से पूछा"वे कल लौटने को कह गए थे। आज पांच साल बीत गए। इनका कल नहीं आया अभी तक?"

"कल आता ही नहीं है।" हरी नारायण शर्मा बोला"दस साल और बीत जाएं। पर देख लेना कल फिर भी नहीं आएगा। कल कभी नहीं आएगा। जब कल आएगा ही नहीं...तो क्यों आएगा बलबीर.. .आखिर बेटा किसका हैं....राजा हरी नारायण का....जबान से थोड़ी न फिर जाएगा....देख लेना वो तभी आएगा जब कल आएगा और

कल.... ।"

"ओफ्फो!" शकुंतला ने मुंह फेरा "बुड्ढा चालू हो गया।" वो बुदबुदाई।

शकुंतला शर्मा तत्काल वहां से उठी और अपने कमरे की तरफ ही निकली। उस सनकी से सिर खपाना उसके बस में नहीं था।

'टिंग टांग।' तभी कॉलबैल बजी।

"बहू, देख तो देवी आया होगास्कूल से।"

शकुंतला शर्मा तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ी।

"मैं भी छिप जाऊं....।" हरी नारायण शर्मा सोफे से उठता बोला "देवी आएगा तो रोज की तरह मुझे ढूंढेगा। फिर हम लुक्का-छिपी खेलेंगे।"

कहता पंडित हरी नारायण हॉल कमरे के एक किनारे बने कमरे की तरफ भागता चला गया।

शकुंतला ने जाकर दरवाजा खोला।

दरवाजे पर लाल कलगीदार टोपी पहने पुलिस का दरोगा खड़ा था और उसके साथ दो हवलदार डंडे लिए खड़े थे।

"बल्ली शाह यहां रहता है?" एकाएक दरोगा ने पूछा।

"कौन बल्ली शाह?" शकुंतला शर्मा हैरत से बोली।

"ये बल्ली शाह?" कहते दरोगा ने एक पोस्टकार्ड तस्वीर शकुंतला की तरफ बढ़ाई।

उधर कमरे में छिपा हरी नारायण भी लपक कर दरवाजे पर पहुंचा।

तस्वीर पर निगाहें पड़ते ही शकुंतला की आंखे फटीं। वो अभी कुछ कहती कि पीछे से पहंचते हरी नारायण ने वो तस्वीर खींच ली।

उसकी भी आंखें फटती चली गयीं।

तस्वीर बलबीर शर्मा की थी पर दरोगा उसे बल्ली शाह कह रहा था।

"ब....बात क्या है?" हरी नारायण मिमियाया।

"मैंने जो पूछा उसका जवाब दीजिए। ये यहां रहता है?"

"नहीं तो....नहीं तो...क...कौन है यह?" एकाएक हरी नारायण ने घबराकर तस्वीर दरोगा को ही लौटा दी। वो समझ गया था कि पांच साल से गायब बलबीर शर्मा ने कोई काण्ड किया है। वो किसी फड्डे में फंसा है। पर यह हकीकत उन तक न पहुंचे। उसके आलीशान खानदान की बदनामी न हो...लिहाजा उसने पुलिस वालों को अपना नाम बल्ली शाह ही बता रखा होगा। फिर वो कैसे उसे

बलबीर शर्मा कह देते और खामखाह में बदनामी मोल ले लेते।

"मैं आपसे पूछ रहा हूं कि कौन है यह?" दरोगा तस्वीर हाथ में लेता गरजा।

"आपको तो पता ही है यह बल्ली शाह है। पर यह यहां नहीं रहता।" हरी नारायण सख्ती से बोला।

"हमने गुड़गांवा में छानबीन की है। लोगों को यह तस्वीर भी दिखाई है। उन्होनें ही बताया कि यह बलबीर शर्मा है। इस हवेली का इकलौता वारिस।"

"अच्छा!" हरी नारायण ने फर्जी हैरानी जताई"मुझे तो यह तस्वीर कमल हसन की लगती है...मेरा ख्याल है आपको अब मुम्बई जाना चाहिए।"

"बाबा! हम यहां मजाक करने नहीं...हकीकत जानने आए हैं। बोलिए यह आपका बेटा बलबीर शर्मा है कि नहीं?" दरोगा तेज स्वर में बोला।

"चलो।" कमर पर हाथ रखता हरी नारायण लड़ाकू औरत की तरह बोला"मान लिया कि यह तस्वीर बलबीर शर्मा की हैतो?"

"तो आपको दस लाख की रकम सरकार को देनी पड़ेगी।"

"क्यों?" इस बार तो की जगह क्यों ने ले ली।

"क्योंकि आपके इस बेटे ने पांच साल पहले बैंक लूटा था। इसके साथ दो आदमी और भी थे। दोनों को ही बलबीर ने मार डाला। पिछले पांच सालों से यह जेल में हैऔर तब से ही अपने आपको बल्ली शाह बतला रहा है। अदालत ने इसे उम्र कैद की सजा सुना दी है...पर रकम....रकम कहां है....इस बाबत इसने अभी तक मुंह नहीं खोला....चार दिन पहले ही जेल में ट्रांसफर हुए एक नये पुलिस कर्मी ने शिनाख्त की है कि यह गुड़गांवा का प्रिंस बलबीर शर्मा है। वो पुलिस कर्मी पिछले दस सालों से गुड़गांवा में ही नौकरी कर रहा था। तभी हम यहां पहुंचे। चार दिनों में हमने पूरी पड़ताल कर ली है और पता चला है कि आपके उस सपूत ने गुड़गांवा में भी कई हत्याएं की हैं। आपको हमारे साथ थाने चलना होगा।"

"कमाल है! एक आदमी अपने आपको बल्ली शाह कह रहा है। वाकायदा सजा भी भुगत रहा है। मैं उस अच्छे-भले बल्ली को बलबीर कह दूं। बलबीर करार दूं और अपने गले में दस लाख की ढपली बांध लूं....खामखाह कर्जा चढ़ा लूं....हमें क्या इतना पागल समझ रखा है आपने। जाइए दफा होइए।"

"ये बात है तो बलबीर शर्मा कहां है?"

"पांच साल पहले ही उसे हैजा हो गया था। मर गया।" कहते पंडित हरी नारायण ने दरवाजा भी बंद करना चाहा कि

दरोगा दोनों दरवाजों के बीच पैर फंसाता बोला"मैं फिर आऊंगा जनाब! और इस बार आप भी बेटे के साथ मिलीभगत में शामिल समझ लिए जाएंगे। दस लाख तो क्या....कानून बाकायदा आपकी यह हवेली नीलाम कर देगा और अपना पैसा वसूलेगा।"

"अब तो जा....धड़ाक....।" पंडित ने उसी पल दरवाजा बंद किया और पीठ दरवाजे पर टिकाकर लंबी गहरी सांसे लेने लगा।

"देख लिया पिताजी! आपका विक्षिप्त खून रंग लाया और अब आप भी फसेंगे। सारी इज्जत खाक में मिल जाएगी।" शकुंतला शर्मा फुंफकारती वहां से निकल गयी।

और उसी शाम हरी नारायण शर्मा उस हवेली से ही गायब हो गया।

शायद गायब होने का उस परिवार में रिवाज था।

हरी नारायण दुनिया से छिपने के लिए, अपने बेटे बलबीर की करतूतें छिपाने के लिए ही हवेली से गायब होकर दिल्ली में बस गया।

❑❑❑

❑❑❑

समय फिर बीतने लगा।

बलबीर शर्मा बल्ली शाह के नाम से उम्र कैद काटने लगा और धीरे-धीरे दुनिया और पुलिस भूल गयी कि उसकी हकीकत क्या है? बलबीर ने अपनी उम्र कैद पूरी की और जेल से बाहर निकला।

कुछ दिन वो इधर-उधर ही रहा ताकि पुलिस अगर उसकी घात में हो तो जान न पाएं कि वो बल्ली शाह नहीं बलबीर शर्मा हैऔर फिर पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद बलबीर शर्मा अपनी खानदानी हवेली में लौट आया। पूरे 14 साल बाद।

ये सन 93 की बात थी।

फिर शकुंतला शर्मा के साथ वो पूर्ववत् सनकपूर्ण तरीके से जीवन बिताने लगा।

फिर काली शर्मा पैदा हुआ।

चूंकि बलबीर शर्मा 14 साल जेल में रहा था सो इसी वजह से ही देवी शर्मा और काली शर्मा की उम्र में 14 साल का फर्क था।

लेकिन इस दौरान शकुंतला राजनीति के दलदल में फंस चुकी थी।

लूका के साथ उसके शारीरिक सम्बंध हो चुके थे।

अतः बलबीर शर्मा का आगमन उसे नहीं भाया था, पर मजबूरी थी अतः बलबीर को ढोना जरूरी था।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा।

समय के साथ-साथ बलबीर शर्मा दिमागी तौर पर कमजोर होने लगा और राजनैतिक कुचक्रों में माहिर हो चली शकुंतला शर्मा का कठपुतला ही बनता चला गया।

धीरे-धीरे बलबीर की हालत अपनी ही हवेली में उस दर-ब-दर कुत्ते की तरह हो गयी जो शकुंतला के फैंके टुकड़ों का मोहताज था।

देवी और काली बड़े होने लगे।

पर खून उनकी भी रगों में उसी हरी नारायण शर्मा का ही था। अपने सनकी बाप बलबीर शर्मा का ही था। अतः देवी शर्मा अपने बाप की हालात देख बागी बनता गया। चूंकि काली शर्मा तब बच्चा था अतः वो अपनी मां शकुंतला की चालें समझ न सका।

एक दिन बलबीर शर्मा बीमार पड़ा तो उसे हॉस्पिटल ले जाया गया।

उसके दिमाग का कैट स्कैन हुआ तो मस्तिष्क के पहलू में मौजूद खून में डूबा काला धब्बा नजर आया।

डॉक्टरों ने ऑप्रेशन की सलाह दी ताकि जान सकें कि उस धब्बे का राज क्या है?

अंततः एक दिन शकुंतला शर्मा ने डॉक्टर मैनन को राजी किया और चुपचाप तरीके से बलबीर की सर्जरी का हुक्म दिया।

सन् 2003 में बलबीर की सर्जरी हुई

और सर्जरी के बाद कीड़े का रहस्य खुलते ही शकुंतला ने लूका के हाथों उसको मरवा डाला।

यह सारा दृश्य देवी शर्मा ने कार में छिपकर देखा और वो वीडियों कैसेट कब्जे में की।

तब काली शर्मा मात्र दस बरस का ही था।

जब यह राज देवी शर्मा ने शकुंतला को बताया तो शकुंतला शर्मा ने अपने ही हाथों उसे भी मार डाला कि ऐन वक्त पर काली शर्मा का खून बलबीर शर्मा के भीतर बोल पड़ा। नतीजतनशकुंतला ने नौकरानी रमैया सहित काली को भी जिंदा कब्र में दफन कर डाला।

पर खून अभी भी जिंदा था और किसी के दिमाग में अभी भी गोलियों की आवाज बनकर गूंज रहा था।

किसके दिमाग में?

❑❑❑

❑❑❑

"धायं....धायं.....नहीं।" एकाएक अर्जुन नागपाल अपने बिस्तर पर उछलकर बैठा और चारों तरफ डर भरी निगाहों से देखने लगा।

"नहीं छोडूंगा....नहीं छोडूंगा....मैं उस हरामजादी शकुंतला को नहीं छोडूंगा। उसने मेरी हत्या की। मेरी; यानि अपने पति बलबीर शर्मा की हत्य की।"

आई0सी0यू0 में दूर खड़ी नर्स ने एकाएक नींद से जागे अर्जुन नागपाल को देखा और हैरत से उसकी तरफ भागी।

"मिस्टर अर्जुन! कोई भयानक सपना देखा क्या?"

"सपना!" नर्स के शब्दों में से सिर्फ यही शब्द अर्जुन नागपाल को सुनाई दिया। वो अपने आपको टटोलने लगा।

तभी आई0 सी0 यू0 का दरवाजा खुला और देवसिंह राजपूत भीतर घुसा।

उसके साथ दो आर्मी डॉक्टर भी थे।

"अर्जुन!" देव सिंह राजपूत उसकी तरफ लपका।

"अर्जुन? कौन अर्जुन?" अर्जुन नागपाल अपने चारों तरफ देखता देवसिंह से बोला "आफिसर! आप किसे अर्जुन पुकार रहे हैं?"

"आफिसर!" देवसिंह ने हैरत में खुद को देखा। फिर दांत पीसकर अर्जुन को देखा और फुंफकारा"तू मुझे नहीं पहचानता। मुझे देवसिंह की बजाए 'आफिसर' कह रहा है। अर्जुन....।"

"मैं अर्जुन नहीं हूं। मैं बलबीर शर्मा हूं। शकुंतला मेरी बीवी है। देवी और काली मेरे दो बेटे थे।"

"ओह! तो नींद से जागते ही नया ड्रामा शुरू कर दिया।"

"ड्रामा!" अर्जुन अपने आपको देखता बोला"मैं ड्रामा कर रहा हूं। मैं यहां कैसे पहुंचा? वो नागिन कहां है?"

"कौन?" देवसिंह की भृकुटि तनी।

"शकुंतला मेरी बीवी।" अर्जुन चिंघाड़ा"मैं उस नागिन को जिंदा जला डालूंगा। उसने ऑपरेशन थियेटर में मेरी हत्या की।"

"ओह शटअप।" देवसिंह चिंघाड़ा"बंद करो यह नाटक।"

"नाटक। कभी ड्रामा। ये हॉस्पिटल है या नौटंकीखाना।" अर्जुन चिंघाड़ा"मेरी देवी को उसने हैलीकॉप्टर में मार डाला। काली को कब्र में दफना डाला।"

"अर्जुन...।" देवसिंह ने कहना चाहा।

"मैं अर्जुन नहीं हूं...नहीं हूं अर्जुन...आय'म बलबीर शर्मा। सन

ऑफ श्री हरी नारायण शर्मा। मैं यहां पहुंचा कैसे?"

"ईनफ। बहुत हो चुका..." देवसिंह ने पुनः चीखना चाहा कि

"शीः" डॉक्टर देवसिंह को चुप कराता बोला "ये वाकई Split Personality का शिकार है...।"

"ओह शटअप डॉक्टर! आप भी वही बात कह रहे हैं जो यह चाहता है कि दुनिया कहे। ये सब एक्टिंग कर रहा है साला।" देवसिंह फुंफकारा।

"एक्टिंग!" अर्जुन अपने आपको देखता बोला "अब मैं एक्टिंग कर रहा हूं। क्यों?"

"क्योंकि खुद को बचा सको। तुम जानते हो अच्छी तरह कि अब तक तुम दस कत्ल कर चुके हो। तुम अर्जुन नागपाल हो। विक्षिप्त हत्यारे। 9 लड़कियों के कातिल। दसवां शिकार संजीव सूरी था तुम्हारा...जिसे तुमने खेल-खेल में बार में मारा। डागा के सामने।"

"डॉक्टर! ये दरोगा क्या बके जा रहा है?" अर्जुन गुस्से से चीखा "मैं बलबीर हूं जिसकी हत्या शकुंतला ने ऑपरेशन थियेटर में की थी।"

"जब बलबीर मर ही चुका है तो तुम जिंदा कैसे हो?" डॉक्टर दहाड़ा।

"कमाल है! जब मैं मर ही चुका हूं तो जिंदा कैसे हूं। हां भईये तो वाकई ताज्जुब की बात है।" एकाएक कुछ सोचता अर्जुन बैड से उठा और सामने दीवार पर लगे शीशे के सामने पहुंचा।

फिर तो अपना चेहरा निहारने लगा।

"अरे! मेरी शक्ल को क्या हुआ? ये बदल कैसे गयी? समझा. ..आप डॉक्टरों ने मिलकर मेरे चेहरे पर किसी और की मुंडी चिपका दी। क्यों?"

"तेरी तो साले...न वक्त देखता है न मौका...हर जगह नौटंकी शुरू कर देता है।" देवसिंह उसकी तरफ लपका किएकाएक आई०सी०यू० का दरवाजा खुला और राधा भीतर घबराई हुई सी आई।

"देवसिंह! जिंकी को थैलासीमिया है...।" लगभग रोती हुई वो चिंघाड़ी।

"थैलासीमिया!" डॉक्टर उछले।

"ये क्या होता है?" देवसिंह ने हैरत में हाथ नचाया।

"वो डॉक्टर कोचर ने बताया है।" राधा बोली "जिंकी को ऐसी ब्लड डीसीज (खून की बीमारी) है जिसके तहत मरीज का सारा खून

हर महीने, या तिमाही बदलना पड़ता है।"

"व्हाट!" देवसिंह उछला।

"हां देवसिंह!" एक डॉक्टर देवसिंह का कंधा थपथपाता बोला"थैलासीमिया के मरीज का खून पीला पड़ता जाता है। उसमें हीमोग्लोबिन की मात्रा कम होती जाती है। इसी हीमोग्लोबिन की वजह से ही खून का रंग लाल होता है। इस बीमारी का एक ही इलाज है कि सारी उम्र मरीज का खून बदलवाते रहो या फिर 'बोन मैरो' का ऑपरेशन करना पड़ता है। ऑपरेशन एक तो महंगा बहुत पड़ता है दूसरे, बच्चे के ऑपरेशन की कामयाबी की गारंटी बहुत कम ही होती है।"

"नहींऽऽ।" देवसिंह दोनों हाथ कानों पर रखता चला गया।

"हां देवसिंह!" राधा उसी पल उसके आगोश में आ घुसी"डॉक्टर सच कह रहे हैं। हमें अब हर दो महीने बाद जिंकी को हॉस्पिटल लाना होगा और उसका खून बदलवाना होगा...।"

"चुप साली। नागिन।" एकाएक फुंफकारता अर्जुन नागपाल उसकी तरफ मुड़ा"तू औरत जात है ही मक्कार।"

"अर्जुन!" राधा की पहली बार उस पर नजर पड़ी और आंखे हैरत से फटीं।

"चुप! नहीं छोडूंगा। अभी 4-40 हुए हैं...।" एक दीवार पर टंगी वाल क्लॉक पर निगाहें टिकाता अर्जुन फुंफकारा"और 12-40 तक मैं तेरा खून कर दूंगा। बचा सकती है तो बचा ले खुद को...मैं तुझे नहीं छोडूंगा। तेरी मौत अब तय है, उसके बाद तुझे फिक्र करने की जरूरत नहीं कि थैलासीमिया के मरीज को खून कौन चढ़ाएगा...।"

"अर्जुनऽऽ।" राधा की चीखें उसी पल आई०सी०यू० में गूंजती चली गयीं।

देवसिंह भी खूंखार निगाहों से अर्जुन को घूरता चला गया।

जिस राधा को वो अर्जुन के सामने अपनी मर्जी से पेश करना चाहता था, उस राधा को सामने देखते ही अर्जुन ने चुनौती दे डाली थी।

वो इस बार फैसला न कर पाया कि वो दरिंदा एक्टिंग कर रहा है या वाकई अपनी विक्षिप्तता के तहत चैलेंज दे रहा है।

"साले। धड़ाक...धड़ाक...।" एकाएक देवसिंह अर्जुन की तरफ बढ़ा और घन्न जैसे घूंसे उस पर बरसाता चला गया।

अर्जुन चेहरा दोनों हाथों में थामता दीवार से जा टकराया और फिर उसके दोनों हाथ अपने सिर को पकड़ते चले गए।

"अब नया ड्रामा दिखेगा।" देवसिंह अर्जुन को देखता डॉक्टरों की तरफ मुड़ा।

सभी अर्जुन नागपाल को देखने लगे। राधा भी

दीवार के संग पीठ टिकाए अर्जुन दोनों हाथों में सिर दबाए बुरी तरह छटपटा रहा था।

"डॉक्टर! ये मेरे दिमाग में गियर सा क्या पड़ रहा है?" एकाएक अर्जुन चिंघाड़ा।

"गियर पड़ रहा है!" डॉक्टरों ने अचकचाकर एक-दूसरे की तरफ देखा।

"हां, साले की खोपड़ी में गाड़ी चल रही है। जो गियर बदल रही है।" देवसिंह भुनभुनाया।

उधर अर्जुन के घुटने मुड़े और आंखें बंद होने लगीं।

फिर वो दीवार के साथ-साथ ही ढेर हो गया।

"अब ये अर्जुन बनकर आंखे खोलेगा।" देवसिंह बोला"अब इसे यह याद न होगा कि घड़ी भर पहले यह क्या भौंक रहा था।"

"अच्छा!" एक डॉक्टर हैरान हुआ।

"मुझे तो एमनीशिया (याददाश्त) का चक्कर लगा रहा है।" दूसरा डॉक्टर बोला"याददाश्त चली जाती होगी बेचारे की।"

"यही तो चाहता है यह।" देवसिंह फुंफकारा"अभी आपको यह पागल भी लगेगा। फिर आपको पागल बना देगा। आप अंदाजे ही लगाते रहेंगे कि यह Split Personality का शिकार है। इसकी याददाश्त आ जा रही है या फिर कोई आत्मा-वात्मा का चक्कर है।"

"रियली!"

"साले ने कानून से बचने की सब ढालें साथ ले रखी हैं। कुत्ता अर्जुन बनकर भी कत्ल कर रहा हैऔर विक्षिप्त हत्यारा बनकर भीऔर कानून को मजाक बनाकर इस्तेमाल कर रहा है। जो आप कह रहे हैं न डॉक्टर...ये वो पहले ही कह चुका है डॉक्टर अर्चना से...बाद में उसी डॉक्टर का ही मर्डर कर दिया।"

"अच्छा!" उन डॉक्टरों को शायद यह हकीकत पता नहीं थी।

"पहला मर्डर राखी शाहटाईम 12-40। दूसरा मर्डर अर्चना काचैलेंज टाईम 8-40। तीसरा मर्डर बार में टाईम 4-40। चौथा मर्डरराधा राजपूत काटाईम फिर 12-40। यानी 40 मिनट का आंकड़ा हर जुर्म में शामिल है। हर कत्ल के पीछे 40 मिनट का कोई न कोई लफड़ा है।" देवसिंह यकायक भुनभुनाया।

"वन मिनटवन मिनट।" एक डॉक्टर सोचता हुआ

बोला"आपने गौर नहीं किया देवसिंह! इन चारों टाईमिंग्स में एक फिक्स मियाद है। एक खास अंतराल।"

"क्या?" देवसिंह का मुंह खुला।

"हर टाईमिंग के बीच 8 घंटे का फर्क है। पूरे आठ घंटे का।"

"हैं!" देवसिंह ने उसी पल माथा पीटा"यानि हर आठ घंटे के बाद यह खुद को भूलने का नाटक करता है और कत्ल करने के लिए तड़पने लगता है।"

"यस। जरूर कोई लफड़ा है। कोई खास लफड़ा।" डॉक्टर ने राय दी।

"कोई लफड़ा नहीं है। हो ही नहीं सकता। ये सब भी इस लफाड़िए का कोई फुलप्रूफ लफड़ा ही है। यह सबसे वही सोचवाना चाहता है जो हम इस वक्त सोचे खड़े हैं।" देवसिंह ने घूरकर अर्जुन को देखा।

सभी डॉक्टर आठ घंटे की बाबत सोचने लगे।

"ओह!" तभी दीवार के साथ बैठे अर्जुन ने सिर दीवार के सहारे ही दाएं-बाएं घुमाया और फिर उसकी आंखें हैरत में खुलीं। पैशानी पर बल पड़े।

"देवसिंह।" एकाएक अर्जुन नागपाल के मुंह से निकला।

देवसिंह दांत पीसने लगा। उसका अनुमान सही निकला था।

"भाभी! आप यहां। सब खैरियत तो है?" राधा को देखता अर्जुन बोला।

राधा भी उस ढोंगी को कातर निगाहों से घूरने लगी।

डॉक्टर लोग भी हकबकाकर एक-दूसरे को देखने लगे।

"देखा।" देवसिंह दांत पीसता बोला"अब ये अर्जुन नागपाल है। अब यह भूल गया है कि इसने अभी-अभी राधा की हत्या की चेतावनी दी है।"

"और वो चेतावनी इसे आठ घंटे बाद याद आएगी। या उससे कुछ देर पहलेजब इसने राधा का कत्ल करना होगा।" डॉक्टर ने अनुमान लगाया।

"व्हाट?" अर्जुन का मुंह खुला"ये आप क्या कह रहे हैं! मैं और राधा भाभी का कत्ल करूंगा! राधा भाभी का!"

"शटअप।" देवसिंह फुंफकारा।

'चींऽऽ।' तभी दरवाजा खुला और एक डॉक्टर भीतर घुसा। फिर वो संजीदा अंदाज में देवसिंह के कान में फुसफसाने लगा। देवसिंह की आंखें चिंतित अंदाज में फटने लगीं। अंततः उसके

होठों से टूटे-फूटे शब्द निकले

"य...य...ये आप क्या कह रहे हैं डॉक्टर?"

"मैं सही कह रहा हूं इंस्पैक्टर! पूरी जांच मुकम्मल हो चुकी है। अगर आप एक भी दिन और लेट हो जाते हैं तो जिंकी से आपको हाथ धोना पड़ सकता था। उसके भीतर का खून मुकम्मल तौर पर न सही, पर 70 प्रतिशत बेकार हो चुका है।"

"नहींऽऽ।" राधा की गर्दन दाएं-बाएं नाची।

"हमें फौरन खून का इंतजाम करना होगा। वरना..." डॉक्टर कोचर ने बाकी शब्द मुंह में ही रख लिए।

"क्या हुआ...क्या हुआ जिंकी को...उसे खून की जरूरत क्यों है?" एकाएक अर्जुन नागपाल बावलों की तरह देवसिंह पर झपटा।

"दफा हो साले।" देवसिंह ने तत्काल अर्जुन को धक्का दिया तो वह अपने बैड पर जा गिरा।

"डॉक्टर! इस नौटंकीबाज को नींद का इंजैक्शन दो और सुला दो। नहीं तो यह बेकार में सिर खाता रहेगा।"

"नर्स हरीअप।" उसी पल डॉक्टर अर्जुन पर झपट पड़े।

"देवसिंह!" हॉस्पिटल में बी-पॉजिटिव का ब्लड नहीं है। आपको इस ग्रुप का इंतजाम करना होगा।

"अरे बी-पॉजीटिव मेरा ब्लड है।" अर्जुन यकायक चीखा"जब बच्चे का चाचा जिंदा है...तो देवसिंह को क्यों करना पड़ेगा इंतजाम. ..मेरा खून ले लो...सारा खून ले लो पर मेरा जिंकी...सीः" तभी अर्जुन के मुंह से सिसकारी निकली और उसके बाकी शब्द गुम होते चले गए।

डॉक्टर ने एक इंजैक्शन ठोक मारा था।

देवसिंह अर्जुन की इस घोषणा पर चिहुंका। राधा ने भी आस भरी दृष्टि से देवसिंह को देखा।

"नहीं। मैं इस दरिंदे का खून अपने बेटे को नहीं दूंगा।"

"देवसिंह! वक्त बहुत कम है।" एकाएक डॉक्टर कोचर देवसिंह को समझाता बोला"हमारे पास न तो किसी और का ब्लड ग्रुप जांचने का टाईम हैऔर न ही आपके पास किसी ब्लड बैंक को जाकर खुलवाने का टाईम है। सुबह के चार बज रहे हैं। जितनी जल्दी ब्लड ट्रांसफ्यूज हो जाएगा, जिंकी के लिए अच्छा रहेगा।"

"नहींऽऽऽ बोला न, नहीं तोनहीं।" देवसिंह फुंफकारा।

"मान जाओ देवसिंह! खून कभी खराब नहीं होता। दिमाग खराब होता है। अर्जुन विक्षिप्त है तो उसके दिमाग का कसूर है, न कि खून

का।" एक डॉक्टर ने देवसिंह को समझाया

देवसिंह ने राधा की तरफ देखा।

राधा ने भीगी आंखों से सहमति दे दी।

देवसिंह भी गाल पर लुढ़क आया एक आंसू पोंछता सहमति में सिर हिलाता चला गया।

उसी पल डॉक्टर-नर्स अर्जुन को स्ट्रैचर व्हील पर लादने लगे। चाचा का खून भतीजे को चढ़ने जा रहा था।

पंद्रह मिनट बाद ही अर्जुन और जिंकी दाएं-बाएं बिस्तरों पर पड़े थे। अर्जुन का खून जिंकी की दायीं बांह से होता शरीर में पहुंचता जा रहा था और बायीं बाजू से जिंकी का पुराना खून निकलता जा रहा था।

जिंकी के शरीर में अर्जुन का खून पहुंचने की गति ज्यादा थी जबकि उसका अपना खून निकलने की गति कम थी। तभी तो जिंकी का जिस्म अपने भीतर लहू की भरपाई करता जा रहा था।

डॉक्टर्स ने तय किया कि अर्जुन के जिस्म से पांच यूनिट खून निकालकर जिंकी और अर्जुन दोनों को ही जिंदा रखा जा सकता है।

फिर यह प्रक्रिया चलती रही।

सुबह के आठ बजे तक अर्जुन का ब्लड जिंकी के जिस्म में पहुंच गया तो उसका मुरझाया चेहरा खिल उठा।

राधा उसे चूमती-चाटती चली गयी।

अर्जुन को उसके वार्ड में पहुंचा दिया गया। जहां पुलिस के सख्त पहरे के तहत देवसिंह खुद ही अर्जुन के सिरहाने पर बैठा ताकि देख सके कि 12-40 पर अर्जुन राधा की हत्या करने के लिए क्या करता है? कैसे करता है? अभी अर्जुन की चेतावनी का समय पूरा होने में चार घंटे बाकी थे।

❑❑❑

पंडित हरी नारायण शर्मा ने प्रसाद नगर श्मशान में काली शर्मा की चिता को मुखाग्नि दी और एक तरफ जाकर खड़ा हो गया।

शकुंतला शर्मा ए०सी०पी० चड्ढा की गिरफ्तारी में खड़ी अपने बेटे काली शर्मा की चिता जलती देखती रही।

उसे पिछली रात ही ए०सी०पी० समुंत चड्ढा ने गिरफ्तार कर लिया था और दोबारा कब्र खुदवाई थी तो उसके भीतर से लूका की लाश निकली थी। फिर लूका की लाश का पोस्टमार्टम हुआ तो यह सच सामने आ गया कि शकुंतला शर्मा ने कुछ देर पहले ही लूका की हत्या करके उसे कब्र में दफनाया था। लूका वाली रिवॉल्वर भी तलाशी

के दौरान शकुंतला की हवेली से मिल गयी और उस पर मौजूद फिंगरप्रिंट्स ने शकुंतला के ताबूत में आखिरी कील ठोक दी।

नतीजतन उसे ए०सी०पी० चड्ढा ने गिरफ्तार कर लिया और लॉकअप में डाल दिया। फिर चड्ढा ने बच्चू तिवारी के साथ मिलकर अपने पत्नी अर्चना चड्ढा का दाह संस्कार किया और अपने आंसू छिपाता शकुंतला के पास लॉकअप में पहुंचा।

वहीं शकुंतला ने निवेदन किया कि काली की लाश दिल्ली के पोस्टमार्टम घर में है, अतः वो चाहती है कि काली शर्मा की अंत्येष्टि उसके सामने हो। लिहाजा सुमंत चड्ढा अपनी पुलिस फोर्स के साथ शकुंतला को दिल्ली ले आया।

दिल्ली तो सुमंत चड्ढा वैसे ही आना चाहता था क्योंकि उसकी अर्चना का हत्यारा अर्जुन नागपाल अभी हॉस्पिटल में था और सुमंत चड्ढा इंतकाम की आग में जलता-झुलसता जा रहा था। यही वजह थी कि अपने घर पर लगी अर्चना की शोक सभा का मुखिया उसने बच्चू तिवारी को बनाया था और खुद शकुंतला के साथ दिल्ली चला आया था।

'कड़...कड़' तभी इस ध्वनि के साथ काली शर्मा की चिता वेग पकड़ने लगी और आग के शोले पंडित, ए०सी०पी० चड्ढा तथा शकुंतला की आंखों में चमकने लगे।

तीनों ही अर्जुन नागपाल से अपना इंतकाम लेना चाहते थे।

पंडित हरी नारायण शर्मा तो इसलिए इंतकाम लेना चाहता था क्योंकि अर्जुन ने उसका आखिरी वंशज मार डाला था।

शकुंतला शर्मा इसलिए इंतकाम लेना चाहती थी क्योंकि जिस काली को वो पांच साल पहले ही मार चुकी थी वो एकाएक जिंदा होकर उसे ही फंसा गया था। और इन सबके पीछे अर्जुन नागपाल ही जिम्मेदार था।

रही बात सुमंत चड्ढा की तो, वो अर्चना की हत्या का बदला अर्जुन से लेना ही चाहता था।

बहरहाल शकुंतला शर्मा जिस वक्त पंडित हरी नारायण के घर पहुंची थी तो वहां पंडित हरी नारायण नहीं मिला था उसे।

वो चड्ढा के साथ सब्जी मंडी के चीराफाड़ी गृह पहुंची थी तो पंडित वहां मौजूद काली की लाश की डिलीवरी लेता नजर आया।

फिर पंडित हरी नारायण काली की लाश को अपने घर लाने की बजाए सीधा श्मशान ले गया।

शकुंतला और चड्ढा भी साथ-साथ निकले।

नतीजतन अब सब मिलकर काली की चिता जलती देख रहे थे। मौका ऐसा नहीं था कि अपना रोना किसी के आगे रोया जाए और एक-दूसरे को दोषी ठहराया जाए।

अगले आधे घंटे तक वो काली से मुतल्लक तमाम रस्में पूरी करते रहे और फिर वहां से निकले।

शकुंतला शर्मा पुलिस की नीली बड़ी-सी वैन में बैठी। उसी वैन में ही पंडित तथा सुमंत चड्ढा भी बैठे।

वैन प्रसाद नगर श्मशान की पार्किंग छोड़ती दिल्ली पुलिस हैडक्वार्टर की तरफ निकली।

सभी खामोशी से अपना सफर पूरा करने लगे।

❑❑❑

"ससुर जी!" वैन में बैठी शकुंतला धीर-गंभीर स्वर में बोली"आपने मुझे कभी बताने की जरूरत ही नहीं समझी कि काली शर्मा जिंदा है और आपकी देखरेख में ही पल रहा है। यह तो सब मुझे सुमंत चड्ढा ने ही बताया।"

"तूने भी कहां बताया मुझे कि तू सन् 2003 के एक ही हफ्ते में मेरे खानदान के तीनों चिराग खा गयी थी। पहले तूने बलबीर की हत्या की। फिर देवी की...और आखिर में काली को भी जिंदा कब्र में दफना दिया।"

"पुरानी बातों को दोहराने से क्या फायदा...मैंने जो किया है वो तो अब भुगतूंगी ही।"

"भुगतेगी। तू तो अब फांसी चढ़ेगीफांसी। तुझे तो फांसी लगनी चाहिए।" पंडित हरी नारायण हाथ नचाता बिफरा।

"औरतों को कभी फांसी नहीं लगती...।" शकुंतला ढिठाई से हँसी"देखना मुझे तो कोई कैद तक न होगी। क्यों सुमंत चड्ढा जी!"

"शटअप।" लंबे समय से खामोश बैठा सुमंत चड्ढा बोला"कानून अभी इतना अपंग नहीं हुआ कि आप जैसी हत्यारिन को बाइज्जत छोड़ दे।"

"बाइज्जत न सही। बेइज्जत करके ही छोड़ दे। मुझे फिर भी एतराज नहीं है।"

"फुल बेशर्म है बहू तू...इतना कुछ करने के बाद भी तुझे पछतावा नहीं अपने किए का...और कोई होता तो चुल्लू भर पानी में ही डूब मरता।" पंडित हरी नारायण भुनभुनाया।

"हं हं हं।" शकुंतला शर्मा हँसी।

"आपके यूं दांत फाड़ने से कानून आपको छोड़ देगा।"

"लाशें।" शकुंतला शर्मा मुस्कुराई"पांच साल पहले हुई मौतों को कानून ने कभी भी हत्याएं नहीं माना, लिहाजा मेरे विरुद्ध कोई चार्ज नही लगाअब भला बलबीर, देवी की मौत को हत्या कैसे साबित कर पाएगा कानून? चलो साबित कर भी ली...तो ये साबित कैसे कर पाएगा कि वो हत्याएं मैंने की हैं?"

"चश्मदीद। तेरी करतूतों का चश्मदीद है अभी।" पंडित हरी नारायण बिफरा।

"चश्मदीद तो काली ही था। उसी में ही बलबीर की आत्मा एकाएक आन घुसी थी। चश्मदीद भी अब फुंक गया। और कौन रहा चश्मदीद?"

"रमैया।"

"रमैया?" शकुंतला शर्मा उछली"व...वो जिंदा है अभी?"

"हां। और वो जिंदा थी तभी काली को जिंदा उस कब्र से निकाल लाई। अब वही रमैया ही तेरी पोल-पट्टी खोलेगी।"

"वो जिंदा कैसे थी?"

"नॉवेल बहुत पढ़ती थी...।" फिर पंडित रमैया की बाबत बताने लगा कि वो जिंदा कैसे बच निकली थी?

"हूंऽऽ।" एकाएक शकुंतला ने विषभरा हुंकारा भरा"फिर भी रमैया की गवाही कुछ भी साबित न कर पाएगी। उसने न तो मुझे बलबीर का खून करते देखा था, न ही देवी कारही बात उसकी कि मैंने उसका और काली का खून करने की कोशिश की थी तो वो उस हादसे से बच ही निकली थी तो फिर भला कैसे साबित कर पाएगी कि पांच साल पहले मैंने ही उनके खून की साजिश रची थी?"

पंडित हरी नारायण कातर निगाहों से उसे घूरने लगा। शकुंतला वाकई ही सही फरमा रही थी। रमैया शकुंतला के खिलाफ जो बयान दे बैठी थी। पहली ही पेशी में शकुंतला का वकील उसकी धज्जियां उड़ा देगा कि रमैया ने पंडित के पढ़ाने पर ही यह बयान दिया है। वकील ने कहना था कि रमैया को पाँच साल पहले ही यह बयान दे देना चाहिए था। वो इतने साल चुप कैसे रही? हकीकत तो यही है कि रमैया और काली को किसी भी कब्र में दफनाया ही नहीं गया था। यह सब पंडितजी ने ही मनघड़ंत कहानी गढ़ रखी है कोई, ताकि शकुंतला को फंसा सके और अपनी हवेली फिर से कब्जा सके।

कुल मिलाकर शकुंतला अपनी सारी साजिशों को पंडित हरी नारायण की करतूत बता सकती थी।

"शकुंतला जी! भले ही कानून आपको पिछली करतूतों की कोई

सजा न दे सके। आप लूका की लाश क्यों भूल रही हैं?"

"तो आपने माना कि पिछली करतूतों की मुझे कोई सजा न मिलेगी, लिहाजा मैं सिर्फ लूका की हत्यारिन समझी जाऊंगी। फिर पेशियां होंगी। तारीखें पड़ेंगी। एक दिन मेरा जज ही बिक जाएगा और मेरा वकील हालातों को इस कदर तोड़-मरोड़ देगा कि लूका की हत्यारिन मैं समझी ही न जाऊंगी। रिमैंबर...लूका की हत्या का कोई चश्मदीद नहीं है...और बिना चश्मदीद के कानून मुझे सजा नहीं दे सकता।"

"फिर भी सबूत आपके ही खिलाफ है।"

"सबूत घड़े भी जा सकते हैं। प्लांट भी किए जा सकते हैं मेरे खिलाफऔर यह काम पंडित हरी नारायण बाखूबी कर सकते हैं। आपका ससुर बच्चू तिवारी बाखूबी कर सकता है। लूका की हत्या करके, उसे कब्र में दफनाकर, लूका का ही रिवॉल्वर मेरी हवेली में प्लांट कर देना कोई बड़ी बात नहीं है।"

"मत भूलिए।" दांत चबाता ए०सी०पी० सुमंत चड्ढा फुंफकारा"रिवॉल्वर पर आपकी उंगलियों के निशान मौजूद हैं अभी।"

"मेरे फिंगरप्रिंट्स रिवॉल्वर पर बना डालना कोई बड़ी बात नहीं है। मैं कह दूंगी कि इतने लचर सबूतों के होते पुलिस को अपनी कहानी बोगस लगी थी अतः पुलिस ने जबरन लूका वाला रिवॉल्वर मेरे हाथ में थमाया और मेरे फिंगरप्रिंट्स जबरन हासिल कर लिए।"

"ये झूठ है।"

"पर मैं इसे सच साबित कर दिखाऊंगी।" शकुंतला शर्मा फुंफकारी"कानून और इंसाफ पहले भी पैसे और सिफारिश के हाथों बिकता आया है। इस बार भी बिक जाएगा। मैं उसे खरीद लूंगी।"

"तू चाहती क्या है शकुंतला?" पंडित गुर्राया।

"अपनी हवेली। अपनी रियासत। अपनी सियासत। कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जिस सल्तनत को मैंने इतनी कोशिशों के बाद, इतनी साजिशों के बाद पाया है, उसे मैं यू ही नहीं छोड़ने वाली. ..देख लेना तुम्हारा कानून मुझे एक दिन की सजा भी न दे पाएगा।"

"तू तो वाकई चुडैल है।"

"जब जानते हो तो बेहतर यही है कि मुझसे डरकर ही रहो।" शकुंतला शर्मा घायल सिंहनी की तरफ फुंफकारी।

सुमंत चड्ढा उस नागिन की फुंफकार सुन मन-ही-मन दहल गया।

"फिर तो तेरा इलाज वो विक्षिप्त हत्यारा ही करेगा।"

"वो अर्जुन।" शकुंतला हँसी"मेरा इलाज करने के लिए तुम लोगों को उसे जिंदा रखना होगाऔर वो तुम होने नहीं दोगे। आपने अर्चना की हत्या का प्रतिशोध लेना है उससे और...आपने अपने काली का।"

सुमंत चड्ढा ने मुंह दूसरी तरफ फेर लिया जबकि पंडित हरी नारायण लाल-लाल आंखों से उसे घूरने लगा।

"हा हा हा।" शकुंतला हँसी"अर्जुन मुझे खत्म करे। इसलिए तुम्हें उसे जिंदा रखना होगा। और वोविक्षिप्त जिंदा रहकर पता नहीं कितने कत्ल और करेगा...कितने जुर्म और करेगा...पता नहीं वो मुझे मार पाएगा कि नहीं...पर ये जरूर मुमकिन है कि वो एक दिन पंडित हरी नारायण की हत्या कर दे...सुमंत चड्ढा की हत्या कर दे...हा हा हा।"

"शकुंतला तू अभी हकीकत जानती कहां है।" एकाएक पंडित हरी नारायण फुंफकारा।

"हकीकत! कैसी हकीकत?" शकुंतला उसी पल पंडित को देख चिहुंकी।

"वक्त आने दे। वक्त पूरा होने दे अपना...सब पता चल जाएगा।" कहते पंडित हरी नारायण ने चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया।

शकुंतला शर्मा के मस्तिष्क में सांय-सांय होने लगी।

सुमंत चड्ढा भी रहस्यमयी आंखों से पंडित की तरफ चेहरा करके यकायक घूरने लगा था।

कोई ऐसा रहस्य जरूर था जिसे पंडित हरी नारायण छिपा रहा था। क्या था वो रहस्य? क्या थी वो हकीकत?

❑❑❑

ए०सी०पी० चड्ढा ने पंडित हरी नारायण को उसके फ्लैट पर छोड़ा और शकुंतला शर्मा को दिल्ली पुलिस हैडक्वार्टर में छोड़ने के लिए निकला। शकुंतला को छोड़ने के बाद वो आर्मी हॉस्पिटल जाना चाहता था। पंडित हरी नारायण शर्मा चड्ढा के सामने तो अपनी ईमारत की सीढ़ियां जरूर चढ़ने लगा। पर जैसे ही वो नीली वैन वहां से ओझल हुई तो वो फौरन सीढ़ियां उतरता नीचे परिसर में पहुंचा।

परिसर के मुख्य फाटक से वैन उसे शंकर रोड की तरफ मुड़ती दिखी तो वो गेट लांघता सड़क पर आया।

अगले ही पल वो दूर नजर आते टैक्सी स्टैंड पर पहुंचा।

"टैक्सी!" वहां से उसने एक टैक्सी पकड़ी और नैना के फ्लैट

की तरफ निकल गया।

पंद्रह मिनट बाद वो नैना के फ्लैट को जाती तीन मंजिला सीढ़ियां चढ़ता जा रहा था।

फिर वो नैना के फ्लैट के बाहर पहुंचा।

उसने अपनी अंदर वाली बनियान की एक गुप्त जेब से छह इंच लंबी चाबी निकाली और लोहे के ग्रिलदार गेट का लॉक खोलने लगा। उस चाबी को तीन बार घुमाकर तीन लॉक खोलने पड़ते थे।

'खट...खट...खट।' लॉक खुलने की आवाज गूंजने लगी।

'खट।' तभी पड़ोस के लोहे वाले गेट की सांकल भीतर से खुली और फिर एक झटके से दरवाजा खुला।

"कौन है?" तत्काल पड़ोसिन श्यामा आंटी की कर्कश आवाज हरी नारायण के कानों में पड़ी।

"म...मैंबहनजी!" पंडित हरी नारायण मिमियाया।

"मैं कौन।" श्यामा आंटी दनदनाती बाहर आ गयी"और मैं आपको बहन दिखती हूं। बहन लगती हूं। उम्र देखिए अपनी...आपके पांव कब्र में हैं...और मेरा बेटा अभी पालने में ही झूल रहा है। अभी तो बाहर भी नहीं आने दिया मैंने उसे।" कहती श्याम अपने गर्भयुक्त पेट पर हाथ फेरने लगी।

"सॉरी बेटी! अब ठीक है?"

"ठीक है। बेटी ही कहना चाहिए था आपको...हैं!" तभी श्यामा आंटी की आंखें यकायक 'की-होल' पर लगी चाबी पर पड़ीं"आप हैं कौन? नैना की चाबी आपके पास कैसे आई?"

"बेटी मैं पंडित हरी नारायण। नैना का मुंह बोला बाप।"

"बाप! वो भी मुंह बोला। मुंह बोला भाई सुना है, बेटा सुना है. ..पर बाप भी होता है?"

"होता है बेटी, होता है। अब तो लड़कियां मुंह बोला पति भी बनाने लगी है। जब तक दिल किया मुंह से बोला। फिर धक्का देकर बाहर निकाल दिया।"

"हैं!" श्यामा आंटी की आंखें फटीं"नैना कहां है?"

"अरे वो और मैं...हरिद्वार जा रहे हैं। उसकी मां की बरसी है आज। वो बस अड्डे पर खड़ी है। उसका कुछ सामान यहां रह गया है। वही लेने आया हूं।"

"हे भगवान! नैना की मां भी थी। मुझे तो बताया ही नहीं?"

"कैसे बताती। मुंह बोली मां थी। सालों पहले ही मर गयी तो अब क्या दिल्ली भर में ढोल बजवाकर मुनादी करवाती...सुनो-सुनो।"

"बस-बस।" श्यामा आंटी फुंफकारी"आप तो सत्य नारायण की कथा बांचने लगे।"

"वो भी अकेली औरत के आगे नहीं बांची जाती। उस कथा में मियां-बीवी का इकट्ठे बैठना जरूरी होता है। अब आज्ञा दो, तो मैं भीतर जाऊं देवी।"

"मैं भी साथ चलूंगी।"

"क्यों?" पंडित हरी नारायण के तिरपन कांपे।

"क्या पता आप कुछ और ही न निकाल लें। कुछ जेवर-शेवर ही न निकाल लें।"

"बेटी! मैं तुझे चोर दिखता हूं। चाबी मेरे हाथ में देख क्या लगता नहीं कि नैना ने ही मुझे चाबी दी है?"

"चोरों के माथे पर क्या स्टैंप लगी होती है। क्या पतानैना से आपने जबरन चाबी हथिया ली हो। उसे बेहोश करके चाबी आपने छीन ली हो...मैं अभी पुलिस को बुलाती हूं।" कहती श्यामा आंटी अपने फ्लैट की ओर बढ़ी।

"देवी! पुलिस-शुलिस को बुलाने की जरूरत नहीं है...तुझे मुझ पर यकीन नहीं तो ये चाबी-शाबी तू ही रख।" इस बार पंडित हरी नारायण ने चाबी 'की-होल' से निकाली और उसकी तरफ बढ़ाई"मैं चलता हूं। कह दूंगा नैना को कि तेरी पड़ोसन-शड़ोसन तो जरूरत से ज्यादा ही वफादार है।"

"नहीं।" श्यामा आंटी डमरू की तरह हाथ इंकार में नचाती बोली"नैना चाबी मुझे कभी नहीं दे जाती...अब क्यों लूं।"

"तो तू ही मेरे साथ भीतर चल। मैं तेरे सामने ही कपड़े निकालता हूं।"

"हैं!" श्यामा आंटी का हाथ शर्म से मुंह पर पड़ा"आप इस उम्र में मेरे सामने ही कपड़े निकालेंगे (उतारेंगे)। अभी-अभी तो आप मुझे बेटी...!"

"हे भगवान! औरतों में दिमाग डाल तो दिया, उसे इस्तेमाल करने की विधि भी बता देता...तो क्या बिगड़ जाता तेरा।"

"ऐ-ऐ!" श्यामा चिंघाड़ी"बक क्या रहा है बुढ़ऊ...दिमाग नहीं है मेरे में।" वो अभी और कुछ कहती कि

'ऊं...ऊं...' तभी भीतर से किसी के कराहने की आवाज गूंजी।

"कौन है भीतर?" श्यामा की आंखें फटीं।

पंडित हरी नारायण का चेहरा भी आतंक से सफेद हुआ।

'खट...खटाक...छन।' फिर भीतर से उठापटक और चूड़ियों की

छनछनाहट सुनाई देने लगी।

'धड़ाक...धड़ाक...ऊं...ऊं।' फिर लकड़ी के दरवाजे के पीछे कोई अपना जिस्म पटकने लगा।

"हे भगवान! नैना अंदर है।"

"है तो।" पंडित ने गहरी सांस उगली।

"और चाबी तुम्हारे पास है; यानि तुम्हीं ने ही नैना को उसके फ्लैट के अंदर बंद कर रखा है। कैद कर रखा है।"

"हांतो?"

"ब...।" श्यामा आंटी अभी 'बचाओ' पूरा बोलती कि पंडित हरी नारायण का हाथ उसके मुंह पर ढक्कन की तरह पड़ा और फिर वो पूरा ही श्यामा से जा भिड़ा।

श्यामा पीठ के बल फर्श पर गिरी और पंडित हरी नारायण उसके ऊपर चढ़ गया।

"नहीं...मैं गर्भवती हूं।"

"तो मैं क्या करू? मेरा क्या कसूर?" कहते पंडित हरी नारायण ने पास पड़ा एक गमला उठाया और दोनों हाथों से सिर से ऊपर ले जाने लगा।

"नहींऽऽ...बचाओऽऽ।" श्यामा चिंघाड़ी।

'धड़ाकऽऽ' पंडित ने उसी पल गमला श्यामा आंटी के सिर पर पटक दिया और बुदबुदाया"देवी! सात कत्ल यह विक्षिप्त हत्यारा कर चुका है जिसे शकुंतला शर्मा काली शर्मा की करतूत बताती रही और कानून अर्जुन की करतूत समझता रहा। आठवां कत्ल तेरा है। नौवां शकुंतला का होगा और दसवां नैना का। और हांराखी और अर्चना का कत्ल मैंने नहीं किया। वो दोनों कत्ल अर्जुन नागपाल ने ही किए और उन्हीं कत्लों की बदौलत ही जमाना उसे विक्षिप्त हत्यारा समझता चला गया। अब वो मेरे किए तमाम कत्लों की सजा भुगतेगा. ..तू पूछेगी कि मैंने ऐसा क्यों किया?"

पर बेहोश या मर चुकी श्यामा आंटी ने कुछ न पूछा।

"...तो जवाब है...पांच साल पहले 2003 में जब मैंने काली को कब्र से निकाला था तो उस वक्त दुनिया में मुझे सिर्फ एक ही औरत से नफरत थी और वो थीमेरी बहू शकुंतला शर्मा। पर उस नफरत को मैं काली की परवरिश में भुला बैठा। फिर समय बीतने लगा। मैं अर्जुन के करीब जाने लगा। उसे अपना बेटा मानने लगा। वो कम्बख्त नैना के इश्क में पागल होने लगा और नैना उसका मजाक उड़ाने लगी...छह महीने पहले वो अर्जुन की जिंदगी से, उसकी नौकरी से

इस्तीफा दे गयी...बस तभी से ही मुझे औरत जात से नफरत हो गयी। शकुंतला के बाद नैना का रूप देखकर मेरे अंदर के खून में उबाल आया और मैं चुन-चुन कर उन्हीं लड़कियों का कत्ल करने लगा जो प्रेम के नाम पर अभिशाप थीं...बदनुमा दाग थीं। मैंने अपना यह अभियान गुड़गांवा से ही शरू किया...क्योंकि शकुंतला की कहानी गुड़गांवा से ही शुरू हुई थी। सो शकुंतला के खात्मे के बाद मैं अपना अभियान दिल्ली में शुरू करना चाहता था...मगर इत्फाकन ही मेरा काली, अर्जुन का शिकार हो गया...और विक्षिप्त हत्यारे का सारा खेल आम हो गया...खैर, मुझे क्या...फंसेगा तो अर्जुन फंसेगा...वो भी क्यों फंसेगा...मैं जानता हूं कि वो कानून को अच्छी तरह से गच्चा दे जाएगा। फिर मैं उससे काली की हत्या का इंतकाम लूंगा। फिर मैं अकेला ही बेवफा और चरित्रहीन प्रेमिकाओं और पत्नियों की हत्या करता रहूंगा...तू तो बेचारी खामखाह ही मारी गयी। जबान भी तो कैंची की तरह चलती थी तेरी...अब बोल भी चुप क्यों है।" पंडित हरी नारायण श्यामा का चेहरा दाएं-बाएं हिलाता बिफरा"लगता है मर गयी है। ये तोहोना ही था। होनी के आगे किसका कसूर! किसका जोर!"

फिर पंडित उठा और उसने गेट खोला।

फिर पीछे वाले लकड़ी के दरवाजे का ताला खोला और दरवाजे को जोरदार ठुड्ड मारा।

पीछे दरवाजे से भिड़ती नैना खुलते दरवाजे के साथ ही दूर उछलती चली गयी।

उसमें मुंह पे पट्टी बंधी पड़ी थी और हाथ-पैर एक साथ बंधे पड़े थे। पता नहीं पंडित के शब्द उसने सुने थे या नहीं।

वो नैना कम और गठरी ज्यादा नजर आ रही थी।

"शीः।" हरी नारायण मुंह पर उंगली रखता भीतर घुसा"तुझे बांधा किसलिए था मैंने, ताकि तू उछलकूद करे।" फिर पंडित नीचे झुका और उसने बाहर पड़ी श्यामा आंटी की लाश को पैरों से पकड़कर भीतर खींच लिया।

"आऊ!" नैना के होठों से यही निकला और आंखें डर से फटती चली गयीं।

पंडित ने लाश घसीटकर अंदर की और फिर दरवाजे बंद किए।

"सोचा, बोर होती होगी अकेली। इसलिए तेरी सहेली साथ ले आया। दोनों रम्मी खेलना अब। ये मम्मी बनेगी और तुझे तो मां बनने का अरमान रहा नहीं अब...क्यों, तुझे तो अर्जुन की बेवा बनने का

ही शौक चर्राया है अब...खैर, मैं तेरी यह मुराद भी जरूर पूरी करूंगा।" इस बार पंडित उसके पहलू में बैठा और उसके मुंह पर बंधी पट्टी खोलने लगा।

साथ ही उसने रिवॉल्वर निकालकर नैना की कनपटी पर लगा दी"अगर अर्जुन को मेरा नाम पता लगा न, तो तू गयी...तू मारी जाएगी। फिर तेरे बेवा बनने से पहले ही अर्जुन रंडवा बन जाएगा। समझी?"

नैना की आंखों में लाचारगी के आंसू आ गए।

वो सपने में भी न सोच सकती थी कि जप-तप में लीन रहने वाला पंडित हरी नारायण शर्मा इतना हिंसकइतना कमीना निकलेगा।

"त...तुमने इसे क्यों मार डाला?" मुंह आजाद होते ही नैना रोई।

"कान खा रही थी बाहर खड़े-खड़े...पर सब तेरा ही कसूर है. ..इसे मैंने नहीं तूने मरवाया...न तू भीतर से उछलकूद मचाती...न इसे पता चलता कि तू (नैना) भीतर है और तुझे मैंने ही कैद कर रखा है...।" इस बार पंडित ने हाथ-पैर खोले नैना के।

नैना की आंखों से विवशता और बेबसी झर-झर करके बहने लगी।

"अब जरा टसवे कम बहा...और फोन लगा अर्जुन को।" नाल उसकी कनपटी पर रखता फुंफकारा पंडित"बुला उसे यहां...फिर मैं तुम दोनों का जनाजा आगे-पीछे उठाता हूं यहां से। एक साथ उठाता हूं 'जहां' से...जल्दी...शाबाश...शाबाश...और सुन अर्जुन को कैसे यहां बुलाना है।" फिर पंडित नैना को समझाने लगा।

फिर नैना अर्जुन का नम्बर मिलाने लगी।

"शकुंतला रानी, अब समझी उस विक्षिप्त हत्यारे की हकीकत. ..अब देख तुझे मेरे कहर से कौन बचाता है।" रिवॉल्वर नैना की कनपटी पर लगाए पंडित हरी नारायण अभी भी फुंफकार रहा था।

दोहपर के ग्यारह बज चले थे।

❑❑❑

ए०सी०पी० चड्ढा अब तक शकुंतला शर्मा को पुलिस हैडक्वार्टर के लॉकअप में डालकर आर्मी हॉस्पिटल में पहुंच चुका था। उसने शकुंतला के इरादे पहुंचते ही देवसिंह के आगे बयान कर दिए थे।

अर्जुन नागपाल इस समय होश में अपने बिस्तर पर बैठा उन दोनों के उल्टे-सीधे सवालों का जवाब दे रहा था।

देवसिंह अभी भी अर्जुन नागपाल को कोस रहा था। जबकि अर्जुन नागपाल का वहीं जवाब था कि उसे कुछ नहीं पता कि उसने

कब और किस वजह से राधा के कत्ल की धमकी दी थी।

फलस्वरूप माहौल उस घड़ी बेहद तनावग्रस्त हो चला था।

उधर दूसरे वार्ड में जिंकी के सिरहाने बैठी राधा उसका माथा सहला रही थी। अपने नौनिहाल की इस अनोखी ताउम्र लंबी बीमारी से ग्रसित देख राधा के आंसू थम ही नहीं रहे थे।

अब जब तक जिंकी ने जिंदा रहना था, तब तक उसका खून बदली होते रहना था। यानि देवसिंह और राधा के लिए हर वक्त ब्लड देने वाले का इंतजाम करना जरूरी हो गया था।

अब तक डॉक्टरों ने राधा और देवसिंह का भी ब्लड ग्रुप जांच लिया था, पर बदकिस्मती से किसी का भी ब्लड जिंकी के ब्लड ग्रुप से मैच नहीं किया था।

अतः वो मियां-बीवी चाहकर भी अपने जिंकी को अपना खून नहीं दे सकते थे। हाल-फिलहाल वो जिंकी उस खून का तलबगार था जो अर्जुन नागपाल की रगों में दौड़ रहा था।

वो अर्जुन नागपाल जो आज की तारीख में एक विक्षिप्त हत्यारा साबित हो चुका था।

कहीं ऐसी कोई और मजबूरी सामने आ जाती कि जिंकी को उम्र भर अर्जुन का ही ब्लड माफिक आना थाऔर किसी शख्स का नहीं, तो देवसिंह की तकलीफें और बढ़ जातीं। उसे अपने बेटे को जिंदा रखने के लिए अर्जुन को जिंदा रखना पड़ता जो कि अब ज्यादा लंबे समय तक हो नहीं सकता था।

एक विक्षिप्त हत्यारा भला कानून या अपने दुश्मनों के हमलों से कब तक जिंदा रह सकता था।

लिहाजा अर्जुन की मौत के साथ-साथ जिंकी की मौत अपने आप ही हो जानी थी।

यह वो कटु सत्य था जिसका हाल-फिलहाल किसी के भी पास जवाब न था।

अभी भी डॉक्टर लोग अर्जुन और जिंकी में पाए गए रक्त का परीक्षण कर रहे थे उन्हें कोई नया नतीजा निकलने की उम्मीद थी।

वो नतीजा जिंकी के हक में भी जा सकता था और खिलाफ भी।

बहरहाल अर्जुन अपने वार्ड में सिर के पीछे दोनों हथेलियां बांधे, आंख बंद किए सोचों में मग्न था। उसे अभी तक विश्वास न हो रहा था कि हर आठ घंटे के बाद वो अपना वजूद भूल जाता है और विक्षिप्त हत्यारा बन जाता है। फिर अपने सामने मौजूद किसी भी औरत को वो...12-40, 8-40 तक की मियाद देने लगता है। उसकी

हत्या की घोषणाएं करने लगता है।

राखी शाह को कब उसने 12-40 पर खत्म करने की चेतावनी दी? कैसे उसे खत्म किया? यह उसे याद नहीं आ रहा था।

अर्चना चड्ढा को कब उसने चेतावनी दी। कब उसे मार डाला? यह भी उसे याद नहीं था।

जब देवसिंह और सुमंत चड्ढा ने बताया कि वो सिटी नर्सिंग होम में जब घुसा था तो विक्षिप्त हत्यारा बनकर ही घुसा था, तो अर्जुन को यही लगा कि उस घड़ी उसे इसलिए कुछ याद नहीं था, क्योंकि तब वो खुद को अर्जुन समझकर नहीं घुसा था।

"सोच क्या रहा है अब?" काफी देर बाद देवसिंह फुंफकारा।

"ऊ हूं। कुछ नहीं।" अर्जुन ने यकायक आंखें खोलीं।

"जरूर यही सोच रहा होगा कि मेरी मौजूदगी में राधा का तू कत्ल कैसे करे?"

"तू तो पागल है देवसिंह! मैं भला राधा का कत्ल करूंगा...क्यों करूंगा, अब... ।"

'ट्रिन...ट्रिन... ।' तभी वहीं खड़े सुमंत चड्ढा का मोबाइल बजा तो अर्जुन के शब्द मुंह में ही रह गए।

"अर्जुन तुम्हारा मोबाइल बजा है।" सुमंत चड्ढा जेब से मोबाइल निकालता बोला"ये तभी से ही हमारे पास है जब से तुम नालापुर थाने से भागे थे।"

"और भागकर टमाटरों में गिरे थे।" देवसिंह भुनभुनाया।

"पता नहीं। मेरे को तो कुछ याद नहीं कि मैं कब टमाटरों में गिरा था।"

"तू इस वक्त अर्जुन है। जाहिर है जब टमाटरों में गिरा था तो तब तो तू ताजा-ताजा राखी शाह का कत्ल करके ही हाथ आया था। यानि तू उस समय विक्षिप्त हत्यारा था। तभी तुझे याद नहीं आ रहा कि उस वक्त तू कौन था।"

"यानि तू मानता है न कि मैं सही कह रहा हूं।"

"मैं नहीं मान रहा, बल्कि तू मनवाना चाहता है मुझसे। हम से। कानून से, कि तेरी दिमाग की बत्ती हर आठ घंटे बाद गुल हो जाती है। फिर तेरे दिमाग में गियर पड़ता है और तू खुद को कुछ और समझने लगता है... ।"

'ट्रिन...ट्रिन... ।' घंटी अभी भी बदस्तूर बज रही थी।

"लाओ। मुझे मोबाइल दो।" एकाएक देवसिंह ने ए०सी०पी० से मोबाइल लिया और स्क्रीन पर नंबर देखने लगा।

"अरे! यह तो नैना का नंबर है।" कॉलिंग स्विच दबाता देवसिंह हड़बड़ी में बोला"हैल्लो!"

"देवसिंह भैया!"

"हां बोल नैनाकहां है तू? तुझे तो हरी नारायण ने कैद कर रखा था न...कहां पर?"

"व्हाट?" अर्जुन चिहुंका"नैना को पंडित हरी नारायण ने कैद कर रखा था! क्यों?"

"वो कहां है?" उधर से नैना हकबकाई।

"कौन?"

"अ...अर्जुन।"

"यहीं पर है। उससे बात करनी है। उसी को ही बताएगी कि पंडित की कैद से तू कैसे निकली? कैसे अपने फ्लैट में पहुंची? और अब इसीलिए उसे फोन कर रही है...।"

तभी अर्जुन ने झपट्टा मारा और देवसिंह से मोबाइल छीनकर कान से लगाया।

"बोल!" फिर वो संक्षिप्त खुरदुरे स्वर में बोला।

"पहचाना?" उधर से नैना की बजाय पंडित हरी नारायण का स्वर आया।

"पंडितजी आप!" अर्जुन नागपाल की हैरानी बढ़ी।

"मेरे कब्जे में है नैना।" पंडित हरी नारायण सीधा मुद्दे पर आया"अगर उसे जिंदा देखना चाहता है तो खुद का मुर्दा देखने के वास्ते मेरे पास आ।"

"व्हाट! आप मेरा कत्ल करेंगे। अपने अर्जुन का।"

उसके लफ्जों पर चड्ढा और देवसिंह के चेहरे हकबकाकर खुले।

"खामोश।" उधर से पंडित चिंघाड़ा"मुझे जज्बाती करने की कोशिश मत कर। तब याद नहीं आयी थी जब मेरे काली शर्मा को तूने अपनी गाड़ी के नीचे रौंद डाला था...।"

"पंडितजी, वो महज एक एक्सीडैंट था...उस वक्त मेरी आंखों के आगे...।"

"खबरदार! जो मुझे बहलाने की कोशिश की तो। एक घंटा है मेरे पास। एक घंटा है तेरे पास। अगर इस दौरान तू नैना के फ्लैट में नहीं पहुंचा तो...नैना जिंदा नहीं मिलेगी तुझे।"

"पंडितजी।" अर्जुन चिंघाड़ा।

"एक घंटा। सिर्फ एक घंटा। तेरी और नैना की मौत के बीच सिर्फ इतना ही फासला है अब। तू आया तो नैना नहीं मरेगी। तू नहीं

आया तो नैना नहीं बचेगी।"

"आप ऐसा नहीं कर सकते।"

"खबरदार! जो किसी को बताने की कोशिश की तो।" पंडित हरी नारायण अपनी ही हांके जा रहा था"और उस दरोगा को तो साथ लाने की सोचियो भी मत। मेरी नजर हर घड़ी नीचे सड़क पर ही होगी। अगर तू मुझे अकेला आता न दिखा न...तो मैं तेरे ऊपर पहुंचने से पहले ही, नैना की लाश नीचे फैंक दूंगा।"

तभी देवसिंह ने अर्जुन से फोन छीन लिया और फोन पर गुर्राया

"क्या बोल रहा है पंडित...मुझसे बात कर।"

उसी पल पंडित ने मोबाइल नैना को थमा दिया और नैना की आवाज आई

"देवसिंह भैया! मैं नैना हूं।"

"फोन पंडित को दे।"

"पंडित? कौन पंडित? यहां कोई पंडित नहीं है। आपको गलतफहमी कैसे लगी कि यहां पंडित है?"

"नैना! मुझे बहला मत। क्या चाहता है पंडित...फोन उसे दे।"

"समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं। अरे! यहां कोई पंडित नहीं है।"

"व्हाट!" देवसिंह उछला"अर्जुन तो अभी पंडित से बात कर रहा था।"

"नहीं। वो मुझसे बात कर रहा था। पंडित का भला मेरे घर में क्या काम?"

"हैं! तो अर्जुन झूठ बोल रहा था। जानबूझकर मुझे यही जता रहा था कि वो पंडित हरी नारायण से बात कर रहा है।" देवसिंह ने अर्जुन को घूरा।

"अब मैं क्या कहूं!"

"तेरे तो घर पर ताला लगा था पिछली रात।"

"तभी तो फोन किया, ताकि आपको बता सकूं कि पंडित हरी नारायण ही पिछली रात मुझे मेरे ही फ्लैट में बंद कर गया है। ये तो अब मौका लगा और फोन तक पहुंची, ताकि अर्जुन को उस पंडित की चाल से अवगत करा सकूं। अर्जुन को बता सकूं कि पंडित हरी नारायण उसकी जान का दुश्मन बना बैठा है।"

"यानि इस समय पंडित नहीं है तुम्हारे पास?"

"नहीं तो।"

देवसिंह दांत भींचता अर्जुन को घूरने लगा फिर फुंफकारा

"साले। वहां तो पंडित है ही नहीं। तू किस से बात कर रहा था?"

अर्जुन ने जवाब देना मुनासिब न समझा।

'टूं-टूं।' उधर से नैना ने संबंध विच्छेद कर दिया तो देवसिंह के कान में टूं-टूं गूंजने लगी।

"समझ गया। तू जानबूझकर हमें बरगला रहा है। यही जता रहा है कि तु नैना के फ्लैट में पंडित बुला रहा है। तुझे वहां जाना होगा. ..नैना की जान खतरे में है।" देवसिंह अर्जुन पर चढ़ दौड़ा।

"भई! मैं ऐसा क्यों करूंगा?"

"ताकि हम तुझे नैना के यहां गया समझ लें। और तू...आसानी से अपना काम कर सके।"

"काम? कैसा काम?"

"राधा के कत्ल वाला काम। हम तुझे और पंडित को वहां नैना के फ्लैट में ढूंढते रहें और तू...आसानी से हमें गुमराह करके राधा का कत्ल कर सके...पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा जासूस राज।"

"पता नहीं क्या कहे जा रहा है।" अर्जुन ने उसकी तरफ हाथ किया"मेरे बारे में सारे अंदाजे खुद ही लगाता है। फिर खुद ही सारे नतीजे निकाल लेता है।"

देवसिंह तय न कर पाया कि नैना सच बोल रही थी या अर्जुन? पंडित नैना के फ्लैट पर था या नहीं?

"चड्ढा साहब! आप यहीं रहेंगे।" एकाएक देवसिंह ए०सी०पी० की तरफ मुड़ा"ये यहां से निकलना नहीं चाहिए।"

"देवसिंह! तुम मुझे ऑर्डर कर रहे हो?"

"सॉरी सर! निवेदन कर रहा हूं।" देवसिंह हाथ जोड़ता बोला"मैं नैना के फ्लैट पर धावा बोलता हूं। आप चाहें तो आप नैना को बचा लाइए। मैं यहां रुक जाता हूं।"

"नहीं। तुम ही जाओ।" ए०सी०पी० नर्म पड़ा"दिल्ली के रास्तों से तुम अच्छी तरह वाकिफ हो। मैं यहीं रुकता हूं।"

"नहीं।" अर्जुन एकाएक चीखा"कोई नहीं जाएगा, नैना के यहांवो उसे मार देगा। मुझे ही पहुंचना होगा वहां पर...पंडित ने एक घंटे का अल्टीमेटम दिया है।"

"पंडित जब था ही नहीं तो कैसा अल्टीमेटम...अब बंद भी कर हमें बेवकूफ बनाना।" देवसिंह ने हाथ नचाया।

"देवसिंह! वो मार देगा नैना को। उसने मुझे अकेला आने को

कहा हैऔर मैं अकेला ही जाऊंगा।"

"ईनफ। नाओ शटअप।" देवसिंह उसकी तरफ उंगली तानता गुर्राया"तू कहीं नहीं जाएगा। यहीं रहेगा। नैना के फ्लैट में मैं जाऊंगा।"

"बेवकूफ। पंडित ने साफ कहा है कि अगर उसने तुम्हेंखासकर तुझे नैना के फ्लैट की तरफ आता देखा तो नैना को फ्लैट से ही नीचे फेंक देगा।"

"नैना ने ऐसा कुछ नहीं कहा मुझे?"

"कैसे कहती! वो गन प्वॉइंट पर है। वो वही बोल रही थी जो पंडित उससे बुलवा रहा था।"

"पंडित ने भी मुझे ऐसा कुछ नहीं कहा।" देवसिंह ढीठ की तरह बोला।

"यही तो गेम खेल रहा है वो बुड्ढा। तुझे यही जता रहा है कि वो नैना के फ्लैट में मौजूद नहीं है। और मैंउसकी मौजूदगी की बाबत तेरे आगे झूठ बोल रहा हूं।"

"बंद कर बकवास। मैं नैना के यहां जा रहा हूं।"

"तो सुन ले।" इस बार अर्जुन ने उसकी तरफ उंगली तानी"अगर नैना को कुछ हो गया नतो तेरी राधा भी यहीं मरी मिलेगी।"

"अब आया न लाईन पर...यानि कबूल ही बैठा कि राधा के कत्ल करने की धमकी तूने दे रखी है।"

"ओफ्फो! अब कैसे समझाऊं तुझे।" अर्जुन दोनों हाथों में सिर लेकर बैठ गया।

"जरूरत नहीं है।" देवसिंह यकायक मुड़ा और ए०सी०पी० को इशारा किया उसने।

ए०सी०पी० सुमंत चड्ढा ने उसे अर्जुन की तरफ से बेखबर रहने को कहा।

देवसिंह निकल गया जबकि ए०सी०पी० चड्ढा रिवॉल्वर अर्जुन की तरफ तानकर एक कुर्सी पर ही बैठ गया।

इस बार वहशी चमक उसके होठों पर नाच उठी।

अब वो अर्जुन नागपाल को आसानी से गोली मार सकता था और पूछे जाने पर कह सकता था कि अर्जुन भागने की कोशिश कर रहा था।

और उसने ऐसा ही करना था। कुदरत ने सुनहरा मौका उसकी झोली में अचानक ही डाल दिया था।

तभी तो उसकी वहशी चमक पल-प्रतिपल बढ़ती चली जा रही

थी।

'धड़ाक...।' उधर देवसिंह बाहर निकला तो दरवाजा बंद हुआ।

"अर्जुन! अब तुझे कौन बचाएगा...हरामजादे...मेरी अर्चना के हत्यारे....मरने के लिए तैयार हो जा।"

अर्जुन का हाथों में छिपा चेहरा तेजी से ए०सी०पी० चड्ढा की तरफ उठा।

❑❑❑

देवसिंह की खोपड़ी लाचार हो चली थी।

पता नहीं जिंकी की बीमारी ने उसका मस्तिष्क कुंद कर दिया था या फिर राधा की मौत की घोषणा से वो ठस्स हो चला था।

नैना के यहां जाने का एक गलत फैसला आगे तीन गलत नतीजे निकालने जा रहा था।

पहलापंडित हरी नारायण ने नैना को मार डालना था।

दूसराअर्जुन पीछे राधा की हत्या आसानी से कर सकता था।

तीसराए०सी०पी० चड्ढा अर्जुन की हत्या करने के बाद आसानी से उसे मुठभेड़ का नाम दे सकता था।

देवसिंह अभी हॉस्पिटल के गलियारे से निकलता लिफ्ट की तरफ बढ़ रहा था। अर्जुन पांचवीं मंजिल पर था जबकि जिंकी पहली मंजिल पर। देवसिंह राधा को होशियार, खबरदार रहने की सलाह देना चाहता था। वो लिफ्ट में घुसा और नीचे पहली मंजिल पर पहुंचा।

फिर वो वार्ड में पहुंचा और जिंकी तथा राधा को दिलासा देने लगा। साथ ही साथ वो राधा को कुछ समझाने-बताने लगा।

फिर राधा को अपना मोबाइल देते बोला

"कोई खास बात हो तो मैं तुम्हें फोन करूंगा। या तुम ही मुझे फोन कर देना। वैसे मैंने बाहर पुलिस फोर्स लगा रखी है।"

"पर आप कैसे बात करेंगे? आप अपना मोबाइल तो मुझे देकर जा रहे हैं।"

"मेरे पास अर्जुन वाला मोबाइल है।" देवसिंह अर्जुन का मोबाइल दिखाता बोला"और हां खबरदार, इस कमरे से बाहर निकली तो।"

"मैं कहा जाऊंगीअपना लाल छोड़कर।" कहती राधा अपने जिंकी से ही लिपटती चली गयी।

देवसिंह ने जिंकी के माथे पर हाथ फेरा कि पलकें बंद किए पड़े जिंकी की आंखे फड़ाक से खुलीं।

वो देवसिंह को घूरने लगा। फिर अपनी छाती पर पड़ी रोती-सिसकती मां को देखने लगा।

"हैरान हो रहा है बेचारा!" देवसिंह उसे पुचकारता मुड़ा और दरवाजे की तरफ निकला।

"मेरा बच्चा...मेरा जिंकी...शुक्र है तूने आंखे तो खोलीं।" दरवाजे तक पहुंचे देवसिंह के कानों में राधा की ममतामयी आवाज पड़ी।

"चुप साली...।" एकाएक जिंकी के मुंह से गुर्राहट निकली।

"...कुतिया! मैंने आंखें इसलिए नहीं खोलीं कि तेरी नौटंकी देख सकूं...मैं तुझे मार डालूंगा डायन...तूने मेरी जान ली है...तूने बलबीर शर्मा की जान ली है...मेरे देवी शर्मा की जान ली है।" एकाएक ही जिंकी राधा के जिस्म पर चढ़ा, फिर नन्हें हाथों से राधा का गला दबाने लगा।

"ज...जिंकीऽऽ!" राधा जमाने भर की हैरत लिए उसे देख रही थी।

तभी दरवाजे पर डॉक्टरों का तांता लग गया। वार्ड में खड़ी दो नर्सें आतंकित निगाहों से नन्हें जिंकी को देखने लगीं।

"जिंकीऽऽऽ!" देवसिंह बादलों की तरह गरजता जिंकी की तरफ भागा।

"याद रख।" राधा पर चढ़ा जिंकी फटी आंखों से गुर्रा रहा था"8-40। आज रात 8-40 तक मैं तेरी हत्या जरूर कर दूंगा। हर हाल कर दूंगा।"

देवसिंह के दिमाग में सांय-सांय होती चली गयी।

यही शब्द, यही टाईमिंग अर्जुन नागपाल ने कही थी।

"नोऽऽ। डॉक्टर, ये सब क्या है?" देवसिंह जिंकी को राधा के शरीर से हटाता चिंघाड़ा।

"देवसिंह!" एकाएक डॉक्टर कोचर भीतर घुसता बोला"खून अपना असर दिखाने लगा।"

"मतलब?" देवसिंह जिंकी को अपने सीने में भींचते चिंघाड़ा।

"उस विक्षिप्त हत्यारे का खून तुम्हारे नन्हें के शरीर में क्या पहुंचा कि अपना असर दिखाने लगा। ये भी अब वही सब करने लगा जो कि अर्जुन नागपाल करता आया है...पर एक बात तो सच है।"

"क्या?"

"यही कि अर्जुन नागपाल सच बोल रहा था। उसे जब विक्षिप्तता का दौरा पड़ता है तो उसे कुछ याद नहीं रहता। उम्मीद है जिंकी को भी कुछ याद न रहेगा।"

"मैं उस हरामजादे को जिंदा नहीं छोडूंगा। उसने मेरे तीन साल

के बच्चे को अपनी मां का दुश्मन बना दिया...मेरा बेटा ही अपनी मां की हत्या करने पर उतारू है...संभालिए इसे।" कहते देवसिंह ने जिंकी डॉक्टर को थमाया और अर्जुन के कक्ष की तरफ भागा।

"डॉक्टर्स!" कोचर एकाएक जिंकी की बाबत घोषणा करता बोला"हो न हो, खून में ही गड़बड़ है। उस खून में जो अर्जुन की रगों से इसकी रगों में चढ़ा है...इस बच्चे के खून की, दिमाग की मुकम्मल जांच करो। तमाम टैस्ट करोऔर फिर बच्चे को 24 घंटे की ऑबजर्वेशन में रखो।"

डॉक्टर्स बेचारे यह नहीं जानते थे कि अर्जुन की रगों में खून उस बच्चे का दौड़ रहा है जिसका नाम था काली शर्मा।

यानि पंडित हरी नारायण के विक्षिप्त परिवार का खून अब अर्जुन के साथ-साथ जिंकी की रगों में भी दौड़ने लगा था। वो खून जिसको खून करने की खानदानी आदत थीबीमारी थी।

उस बीमारी का शिकार, उस आदत का शिकार, पंडित हरी नारायण था। बलबीर शर्मा था। काली शर्मा था और बहू शकुंतला शर्मा भी हो चुकी थी।

डॉक्टर्स बाहर निकले और उन्होंने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया।

भीतर सदमे में पड़ी राधा बैड पर सिसकती फफकती रही।

तभी खिड़की से अर्जुन नागपाल भीतर गिरा'धप्प।'

रोती राधा का चेहरा मुड़ता हुआ खिड़की की तरफ घूमा और अगले ही पल वो आतंक से चीखती चली गयी।

"देवसिंहऽऽ!"

❑❑❑

इससे कुछ देर पहले

"अर्जुन! अब तेरा खेल खत्म।" रिवॉल्वर तानता ए०सी०पी० चड्ढा गुर्राया"कोई नहीं कह सकेगा कि मैंने तेरा शूट आऊट जानबूझकर किया।"

'ठक...ठक...ठक।' तभी बाहरी बंद दरवाजा खटखटाया गया।

ए०सी०पी० चड्ढा की गर्दन एक पल के लिए पीछे घूमी कि

तभी अर्जुन का जिस्म बिस्तर से उछलता उसके ऊपर आ गिरा और चड्ढा की रिवॉल्वर वाली बाजू अर्जुन के हाथ में आती, छत की तरफ खड़ी होती गयी।

'धांय' की आवाज गूंजी और गोली छत की तरफ गयी।

'छनाक' अगली आवाज छत पर लगी एक फ्लड लाइट के बल्ब

की गूंजी। गोली लगने की वजह से बल्ब चूर-चूर हो गया था।

'धड़ाक' इसी दौरान ही तीसरी आवाज के साथ ए०सी०पी० चड्ढा के सिर का पृष्ठ भाग फर्श से टकराया।

साथ ही रिवॉल्वर उसके हाथ से निकलकर फर्श पर फिसलता चला गया।

अर्जुन ने ए०सी०पी० के ऊपर से गोता खाया और फिसलता रिवॉल्वर अपने कब्जे में ले लिया।

'धड़ाक...धड़ाक।' अगले ही पल अर्जुन पूरी दुर्दांतता से दस्ते का वार ए०सी०पी० की कनपटी पर करता चला गया।

"आऽऽ।" ए०सी०पी० चड्ढा की चीखें गूंजने लगीं।

"हैल्प...हैल्प।" बाहर दरवाजा खटखटाती नर्स की चीखें गूंजी और वो गलियारे में भागती चली गयी।

एकाएक उसे कुछ सूझा और वो दरवाजे की तरफ वापिस लौटी।

'खट...।' उसने अगले ही पल दरवाजे को बाहर से सांकल चढ़ा दी।

अब अर्जुन कक्ष से बाहर नहीं निकल सकता था।

और पूरे हॉस्पिटल में आर्मी के जवान वैसे ही मंडरा रहे थे।

इधर ए०सी०पी० चड्ढा रिवॉल्वर की मार से बेहोश हुआ। उधर अर्जुन नागपाल रिवॉल्वर सहित उसके बेहोश शरीर से उठा।

फिर वो तेजी से सोचने लगा। उसकी निगाहें चारों तरफ घूमने लगीं।

एक दीवार पर उसे एक खिड़की नजर आई पर वो इतनी सख्ती से बंद हो रखी थी जैसे बरसों से ही खुली न हो।

आई०सी०यू० का वो वार्ड पूरी तरह वातानुकूलित था, अतः खिड़की सख्ती से बंद हो रखी थी।

अर्जुन तेजी से खिड़की की तरफ झपटा।

उसने काफी मुश्किलों से जंग लगी सिटकनी खोली और पल्ला बाहर की तरफ खोला।

जाम पल्ला नहीं खुला।

अर्जुन चार कदम पीछे हटा। अगले ही पल वो दायीं किक उठाता पल्ले पर झपटा।

'धड़ाक' से किक बंद पल्ले पर पड़ी और खिड़की का एक पल्ला बाहर की तरफ खुलता चला गया।

दूसरा पल्ला अभी भी चौखट के साथ फिक्स हो रखा था।

अर्जुन ने खुले पल्ले से नीचे झांका तो पांच मंजिल नीचे सड़क

पर दौड़ता ट्रैफिक नजर आया।

वो वहां से फरारी का उपाय सोचने लगा।

उसने गर्दन बाहर निकाली तो ऐसा कोई पाइप, कोई छज्जा न नजर आया जिसके रास्ते नीचे उतरा जा सके।

"ओपन द डोर!" तभी बाहरी दरवाजे पर कोई आर्मी ऑफिसर दस्तक देने लगा।

अर्जुन दरवाजे के पास पहुंचा। उसने दरवाजे के भीतर लगी सांकल चढ़ा दी। सिटकनी पहले ही लगी हुई थी।

अगले ही पल वो वहां से निकलने का उपाय सोचने लगा।

तभी उसकी निगाह अपने बैड पर जा टिकी।

वो तेजी से बैड की तरफ झपटा और उसने बैड पर पड़ा गद्दा पलट दिया।

बैड निवाड़ द्वारा बुना गया थाऔर निवाड़ उसके काम आ सकती थी।

तभी उसने निवाड़ का एक सिरा खींचकर तोड़ा और अगले ही पल बैड की सारी निवाड़ इकट्ठी करने लगा।

दो ही मिनट में निवाड़ का ढेर फर्श पर जमा होने लगा।

"ठक-ठक...दरवाजा खोलो अर्जुन!" बाहर से दरवाजा खटखटाती आवाजें आईं"तुम यहां से बचकर नहीं जा सकते।"

अर्जुन खामोशी से अपना काम करता रहा। उसने कोई जवाब देना भी उचित नहीं समझा।

वो जानता था कि बाहर खड़े लोगों को पता है कि अर्जुन बिना दरवाजे से बाहर निकले, नीचे नहीं पहुंच सकता। तभी लापरवाह भी रहेंगे। वो भीतर आने की कोई कोशिश न करेंगे।

अब तक बैड की सारी निवाड़ इकट्ठी हो चुकी थी।

उसने निवाड़ का एक सिरा पकड़ा और उसे बांधने के लिए कोई चीज ढूंढने लगा।

उसे दरवाजे का भीतरी हैंडल ही नजर आया।

नहीं। हैंडल सिर्फ दो पेंचों पर टिका है लिहाजा उसका वजन बर्दाश्त नहीं कर सकता।

अगले ही पल उसकी निगाह बेहोश चड्ढा पर पड़ी।

"इसका वजन मुझसे ज्यादा है। पूरा सांड है।" पता नहीं क्या सोच वो निवाड़ के दो-चार 'बल' बेहोश चड्ढा के जिस्म पर लपेटने लगा। अंततः उसने लपेटी निवाड़ को गांठ भी लगा दी।

"सर!" तभी बाहर से आवाज आई"वो खिड़की के रास्ते नीचे

उतर सकता है सड़क पर।"

"पर कैसे?"

"सर, चादर से रस्सी बना सकता है। और हां...पलंग की निवाड़ भी तो है।"

"फौरन सड़क पर पहुंचो।" आर्मी ऑफिसर चिंघाड़ा"खिड़की से उतरता देखो तो वहीं से ही गोली मार देना।"

'धप्प-धप्प' अगले ही पल जाते जूतों की गूंज सुनाई पड़ने लगी।

'ठक-ठक-ठक...।' आर्मी ऑफिसर वहीं खड़ा दरवाजा बजाता रहा।

"ऑफिसर! जब तक तेरे फौजी नीचे पहुंचेंगे तब तक तो मैं कहीं-का-कहीं पहुंच चुका होऊंगा।" अर्जुन निवाड़ की लम्बाई का अंदाजा लगाता, उसे एक जगह इकट्ठा करता जा रहा था।

निवाड़ का दूसरा सिरा बेहोश पड़ी लाश के भारी बदन से बंधा था।

"हो गई होगी40 फुट।" एकाएक अर्जुन ने निवाड़ का एक हिस्सा पकड़ा और खिड़की की तरफ भागता चला गया।

अगले ही पल उसका शरीर हवा में तैरता खिड़की के खुले पल्ले से बाहर निकला और नीचे गिरता चला गया।

भीतर इकट्ठी हो रखी निवाड़ तेजी से खुलती कम होने लगी।

अर्जुन ने 40 फुट नीचे हवा में फ्री जम्प ही ले ली थी।

वो हवाई गोताखोर की तरह नीचे सड़क की तरफ पहुंच रहा थाऔर निवाड़ का एक सिरा उसके हाथ में था।

उसे फेफड़े भीतर को सिकुड़ते महसूस हुए। बाल हवा में खड़े हो गए। दिल एकाएक पंचर होता महसूस हुआ। जिस्म का सारा खून मानो चेहरे पर ही आ गया और चेहरा लाल सुर्ख हो गया। चेहरे की मांसपेशियां फूलकर बाहर निकल आईं।

नीचे सड़क पर आता-जाता ट्रेफिक हॉर्न देता रुकने लगा और चालक गाड़ियों से बाहर निकलकर उस हवाई करतब को देखने लगे।

निवाड़ पकड़े अर्जुन का जिस्म अभी भी हवा में था और निवाड़ खिड़की से बाहर भागती नजर आ रही थी।

'फिच्च' तभी अर्जुन के हाथ में थमी निवाड़ को खिंचाव पड़ा तो वो समझ गया कि कमरे में ढेर हुई निवाड़ खत्म हो चुकी है। पूरी खुल चुकी है।

इधर अर्जुन का जिस्म हवा में लहराता दीवार की तरफ बढ़ा और...

उधर कमरे में पड़ा चड्ढा का जिस्म खिड़की की तरफ सरकने लगा।

अर्जुन का वजन उसके भारी जिस्म को खींच रहा था, पर भारी होने की वजह से वो धीरे-धीरे ही खिड़की की तरफ जा रहा था।

नीचे अर्जुन का जिस्म पहली मंजिल से कुछ ऊपर ही था। वो दीवार के साथ हवा में लटक गया। फालतू की निवाड़ अभी भी नीचे सड़क पर लटक रही थी।

फिर अर्जुन धीमे-धीमे नीचे आने लगा जैसे रस्सी के सहारे इंसान उतरता है।

तभी आर्मी हॉस्पिटल के जवान सड़क पर पहुंचने लगे और उसकी दिशा में अपनी गनें तानने लगे।

फौरन ही अर्जुन ने पीछे की तरफ उछाल ली और अगले ही पल उसका जिस्म हवाई गति से पहली मंजिल की खुली खिड़की की तरफ झपटा।

'धांय...धांय...।' नीचे से फौजियों ने फायरिंग शुरू कर दी और अर्जुन ने खिड़की से चार-छः फुट पहले ही निवाड़ छोड़ दी और उसका जिस्म उड़ता हुआ खिड़की की तरफ उड़ा।

'धप्प।' अगले ही पल अर्जुन अपनी भाभी राधा के कमरे में जा गिरा।

उसके जबड़े में रिवॉल्वर दबा था, जैसे बिल्ली के मुंह में चूहा दबा हो।

"जयसिंह...!" राधा की चीख लम्बी होकर गूंजी।

"कोई फायदा नहीं।" रिवॉल्वर तानता अर्जुन गुर्राया"अब तुम मुझे यहां से मुक्ति दिलाओगीऔर मैं तुम्हें 'जहां' से...हरी अप।"

इस बार रिवॉल्वर राधा की गुद्दी पर आ टिकी और अर्जुन नगपाल ने उसे बाहर की तरफ खदेड़ा।

फिर उसने दरवाजा खोला और राधा को होस्टेज बनाता बाहर निकला।

"अर्जुनऽऽ!" देवसिंह की चिंघाड़ गूंजी।

देवसिंह जैसे ही बाहर निकला था, कि उसे पीछे से राधा के कमरे में राधा की चीख सुनाई दी थी।

वो अभी दरवाजा खड़खड़ाने ही जा रहा था कि अर्जुन राधा को बंदी बनाए खुद ही दरवाजा खोलते बाहर निकल आया था।

"तू गया नहीं देवसिंह अभी तक...राधा के बाद जाएगा। खैर, मुझे क्या एतराज है।"

"छोड़। राधा को छोड़।" देवसिंह रिवॉल्वर तानता गुर्राया"नहीं तो गोली मार दूंगा।"

"हैं।" अर्जुन हँसा"क्या बच्चों-सी बातें करता है, पहले गोली तेरी चली या मेरी, पर तय है कि राधा ही मरेगी।"

"ओह तो तूने अपनी औकात दिखा ही दी।"

"औकात दिखा दी। अब जात भी दिखाऊंगा। मूव...मूव... खबरदार, जो हमारे बीच कोई आया तो...भून के रख दूंगा मैं राधा भाभी को।" अर्जुन राधा को नाल से हुड़काता गुर्राया।

सामने खड़ी भीड़ काई की तरह छंटकर रास्ता देने लगी।

"देवसिंह...मुझे बचा लो।" राधा मिमियाई"ये दरिन्दा मुझे मार डालेगा। 12-40 होने वाले हैं। सिर्फ 40 मिनट ही बचे हैं। मुझे बचा लो।"

"डोंट वरी भाभी! वादे का पक्का है अर्जुन। 40 मिनट पहले ही नैना के यहां पहुंच जाएंगे। फिर मैं इत्मीनान से आपको मार डालूंगा।"

देवसिंह की निगाहें यकायक सिकुड़ीं। पैशानी पर बल पड़े। वो सोच में पड़ गया। जब भी अर्जुन को 12-40 या 8-40 का दौरा पड़ता था तो उससे घंटा-सवा घंटा पहले वो भूल जाता था कि वो अर्जुन नागपाल है। पर इस समय अर्जुन को याद था कि वो अर्जुन ही है। उसे यह भी याद है कि उसने राधा का कत्ल 12-40 पर करना था; अर्थात् अर्जुन वाकई ही एक्टिंग कर रहा था। उन्हें बहका रहा था कि उसे इस वक्फे के दौरान अपना अर्जुन होना ही नहीं याद रहता।

"क्या सोच रहा है? अब रास्ता दे।" अर्जुन चारों तरफ निगाहें दौड़ाता बोला।

देवसिंह उसके सामने से हट गया और दीवार के साथ खड़ा हो गया।

"कोई हमारे पीछे नहीं आएगा।" अर्जुन देवसिंह के सामने से राधा को ले जाता सभी से बोला"इस दरोगा से सबक लेना। जब यह ही अपनी बीवी को बचाने के लिए मेरे पीछे नहीं आएगा तो आप भी क्यों आयेंगे...नहीं आयेंगे। अंडरस्टैंड।"

तत्काल वहां पहुंच चुके फौजियों और ऑफिसर्स की गर्दन सहमति में हिली।

"अर्जुन! अब समझ आया। तू अच्छा भला है...जानबूझ कर भूल जाने की एक्टिंग करता है। दिखावा करता है।" देवसिंह सोच भरे स्वर में बोला।

"मुझे नहीं पता कि तुझे क्या समझ आया और क्या नहीं समझ आया। पर इतना समझ लो...अगर हमारे पीछे कोई भी आया तो राधा अपने वक्त से पहले अपनी आखिरी मंजिल पर पहुंच जाएगी। समझा।" देवसिंह की आंखों में घूरता अर्जुन गुर्राया।

देवसिंह सहमति में सिर हिलाता उसे देखने लगा।

तभी अर्जुन ने आंख झपका दी।

देवसिंह समझ न पाया कि अर्जुन ने उसे आंख क्यों मारी है?

उसकी बेचारगी और लाचारी का मजाक उड़ाया है या फिर कोई खास इशारा किया है?

फिर अर्जुन राधा को लेता पहली मंजिल की लिफ्ट के सामने पहुंचा।

उसने बटन दबाकर लिफ्ट बुलाई और राधा सहित लिफ्ट में घुसता चिल्लाया

"आप जान चुके होंगे कि जब तक राधा मेरे पास है तब तक आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसलिए बेहतर यही होगा कि जहां खड़े हैं वहीं खड़े होकर मातम मनाइए। इज दैट क्लियर?"

जवाब में 'हां' किसी ने जबान से न की। कईयों ने सहमति में गर्दन हिलाई। तो कईयों ने दांत पीसे।

अर्जुन लिफ्ट में घुसा, राधा के साथ।

अगले ही पल लिफ्ट नीचे की ओर जाने लगी।

अर्जुन लिफ्ट से राधा को बाहर लेता, इमारत से बाहर निकला। बाहर कई वाहन पार्क हो रहे थे।

एक अम्बैसडर में उसे चाबी लगी नजर आई तो वो राधा को साथ लिए अम्बैसडर में घुस गया।

"गाड़ी आप चलाएंगी भाभी! और मैं...पीछे बैठूंगा, बंदूक लेकर।"

राधा ड्राइविंग सीट पर बैठी।

अर्जुन पीछे बैठा और अम्बैसडर धीमे-धीमे वहां से बाहर निकलने लगी।

आर्मी हॉस्पिटल से, सरेआम दिनदहाड़े अर्जुन एक अबला को बंदी बनाता निकल भागा था। वो भी उस अबला को, जिसका कत्ल करने का चैलेंज उसने सुबह चार बजे ही दे दिया था।

❑❑❑

"देवसिंह!" पीछे आर्मी ऑफिसर चक्रपाणी बोला"उसने तुम्हें आंख क्यों मारी थी?"

"पता नहीं।" देवसिंह एकाएक जेब से अर्जुन वाला मोबाइल निकालता एक नम्बर मिलाने लगा।

"मुझे तो लगता है वो कोई खास इशारा था। या फिर तुम्हारी रजामंदी से ही उसने राधा को अगवा किया है।" चक्रपाणी शंकित लहजे में बोला।

"ओह शटअप।" देवसिंह गुर्राया"अब जब वो निकल गया तो बेकार के अंदाजे लगने शुरू हो गये।"

"निकल गया...यूं कहो कि तुमने ही उसे निकलने दिया। और जिस तरीके से वो पूरे प्लान के साथ निकला है मुझे नहीं लगता कि वो किसी तरह का पागल है और किसी तरह के विक्षिप्तता के दौरे पड़ते हैं उसे...वो तो अच्छा खासा चैलेंज देता निकला है...पूरी आर्मी फोर्स को धत्ता बनाकर निकला है।"

"उसी बात पर तो मैं हैरान हूं।" देवसिंह चक्रपाणी को जबाव देता एकाएक डॉक्टर कोचर की तरफ मुड़ा"आपको क्या लगा?"

"मुझे तो नहीं लगा कि वो पागल हैऔर सच पूछो तो मुझे वह भी लगा जो कमांडर चक्रपाणी को लगा।"

"व्हाट?" देवसिंह चिहुंका"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"यही कि यहां से फरार करवाने में आपने अर्जुन की मदद की है। अपनी राधा की बदौलत।" चक्रपाणी और कोचर एकसाथ, एक ही आवाज में बोले।

"आपका दिमाग खराब है।" देवसिंह हाथ उनकी तरफ नचाता तेज स्वर में बोला"मैं राधा के सहारे उसकी मदद क्यों करूंगा? यह जानते हुए कि उसकी राधा को उसने 12-40 पर ही मार डालना है?"

"देखना तो यही है कि 12-40 पर आपकी राधा मरती है या नहीं।"

"व्हाट! क्या मतलब है आपका?"

"यही कि राधा अगर 12-40 पर मर गई तो आप अर्जुन की फरारी में शामिल नहीं समझे जायेंगे और अगर राधा बच गई तो फिर तो साफ साबित हो जायेगा कि आप जानते थे कि अर्जुन अच्छा-भला है। वो कोई पागल नहीं है...इसलिए ही आपने फरारी में उसकी मदद की। सच पूछिए तो आपकी सच्चाई और झूठ पर से पर्दा राधा ही उठा सकेगी... अब राधा की जिंदगी और मौत ही उठायेगी पर्दा।"

"आर यू मैड?" देवसिंह की आंखों में पानी उतर आया"मैं उस दरिंदे की मदद करूंगाऔर वो भी राधा को दांव पर लगाकर?"

"देखना तो यही है कि राधा वाकई दांव पर लगाई गई है या

दांव पर लगाने का ढोंग किया गया है।" चक्रपाणी बोला।

"ऐसे थोड़ी न पांचवीं मंजिल पर अर्जुन को अकेले ए०सी०पी० चड्ढा की हिफाजत में छोड़ दिया जाता है। फिर अर्जुन पांच मंजिल से सीधा नीचे कूदता है और ऐन...राधा के ही कमरे में घुसता है।" डॉक्टर कोचर बोला।

"आप कहना क्या चाहते हैं?" देवसिंह कटखने कुत्ते की तरह गुर्राया।

"यही कि आप जानते थे कि अर्जुन आई०सी०यू० में अकेले ए०सी०पी० पर काबू पा लेगाऔर आपने ही अर्जुन को बता रखा था कि नीचे राधा कौन से रूम में अर्जुन को मिलेगी।"

"अरे! वो तो पांचवीं मंजिल का कमरा नंबर 501 था जबकि पहली मंजिल पर राधा के कमरे का नंबर 101 था। और यह बात तो कोई बच्चा भी जान सकता है कि 501 के नीचे ही 101 नम्बर कमरा होगा।"

"अब ऐसी कहानियां बेकार हैं। मैं पुलिस हैडक्वार्टर में आपकी लिखित कंपलेंट भेज रहा हूं।" चक्रपाणी ने घोषणा की।

"माई फुट। भाड़ में जाइए आप।" कहते देवसिंह ने निकलना चाहा।

"पर आप कहीं नहीं जा सकते। भाड़ में भी नहीं।" चक्रपाणी देवसिंह के सामने दीवार की तरह खड़ा हो गया।

"ऑफिसर! मेरी बीवी खतरे में है...और आप मुझे रोक रहे हैं।"

"अरेस्ट हिम।" रोकने की बजाय चक्रपाणी ने हुक्म सुनाया।

तत्काल ही चार आर्मीमैन देवसिंह के चारों तरफ गनें लेकर तैनात हो गए।

"ऑफिसर, अगर राधा को कुछ हो गया न...तो खा जाऊंगा मैं आपको...हटिए। मुझे जाने दीजिए।"

"शटअप।" चक्रपाणी दहाड़ा"आप ही की वजह से आज इंडियन आर्मी की साख खराब हो गई। आप ही की मिलीभगत की वजह से वो अपराधी भाग गया जिसे कानून मुजरिम मानता है पर साबित नहीं कर पाता। बट डोंट वरी...अर्जुन का फैसला अब आर्मी करेगी। और आर्मी दुश्मन को कोर्ट नहीं ले जाती...वो सीधा कोर्ट मार्शल करती है। ऑपरेशन ब्लू स्तर करती है। अर्जुन को अब मौत आर्मी देगी।"

"पर मेरी तो राधा...।"

"अरैस्ट दिस मैन...पकड़ो राधा के इस मोहन को।" चक्रपाणी

दहाड़ा।

फौजियों ने उसी पल देवसिंह को घेरे में ले लिया।

"हे भगवान! हर बार मेरे फर्ज का इम्तिहान लेता है और अर्जुन के मुकद्दर का।" अगले ही पल देवसिंह मोबाइल पर नैना का नम्बर मिलाने लगा।

फिर फौजियों के घेरे में खड़ा उधर बजती घंटी की आवाज सुनता रहा।

"कमाण्डर कौशल...फौरन नैना के यहां आर्मी भेजने की तैयारी करो। उस अर्जुन को जिंदा नहीं छोड़ना है।" तभी चक्रपाणी गरजा।

"यस सर!" तभी कौशल नामक कमाण्डर एड़ियां बजाता मुड़ गया।

"हैल्लो...।" उधर फोन पर देवसिंह को पंडित की आवाज सुनाई दी।

"तू!" देवसिंह के होंठों से निकला"तू वहां है। नैना ने तो बताया था कि पंडित वहां नहीं है।"

"मैं यहीं था। यहीं हूं और यहीं रहूंगा जब तक कि अर्जुन मुझे अकेला आता नहीं दिखाई देगा।"

"भाग जा पंडित! अर्जुन वहां अकेला नहीं मेरी राधा के साथ पहुंच रहा हैऔर पीछे-पीछे आर्मी पहुंच रही है।"

"आर्मी!" पंडित हरी नारायण उछला"मैंने कहा था न अर्जुन अकेला पहुंचना चाहिए और तू मुझे पुलिस की नहीं...आर्मी की धमकी देने लगा देवसिंह!"

"मैं मजबूर हूं पंडित।"

"मैं भी मजबूर हूं देवसिंह! राधा, नैना और अर्जुन का मुर्दा उठाने के लिए आर्मी मुझ तक तभी पहुंचेगी जब तक कि यह तीनों मेरे हाथों ऊपर नहीं पहुंच जायेंगे।"

"नहींऽऽ।" देवसिंह जोर से चीखा"ऐसा मत कर पंडित!"

उधर से पंडित हरी नारायण ने संबंध विच्छेद कर दिया।

देवसिंह अवाक् दृष्टि से टूं-टूं करते मोबाइल को घूरने लगा।

"क्या हुआ?" चक्रपाणी गरजा।

"ऑफिसर! वहां आर्मी नहीं पहुंचनी चाहिए। वरना पंडित उन तीनों को मार डालेगा।"

"किन तीनों को?"

"अर्जुन, नैना और राधा को।"

"तब तो आर्मी जरूर वहां पहुंचेगी। देखते हैं उस पंडित में

कितना दम है!"

"हे प्रभु! अब तेरा ही आसरा।"

❑❑❑

पंडित हरी नारायण शर्मा ने नैना वाला फोन रखा और बेचैनी से हथेलियां रगड़ता ड्राइंगरूम में चहलकदमी करने लगा।

नैना सोफे पर बैठी उसे घूरने लगी फिर फुंफकारी

"पंडितजी! बेहतर यही है कि आप यहां से निकल जाइए। अगर आर्मी आई तो आप भी हमारे साथ मारे जायेंगे।"

"हैं!" पंडित चिहुंका "तुझे अपनी नहीं मेरी चिंता है। क्यों?"

"क्योंकि अर्जुन आपको पिता मानता है अपना। मैं भी। मैं नहीं चाहती कि हमारे बाद हमें रोने वाला भी कोई न बचे। जाइए निकल जाइए।"

"यह जानते हुए कि मैं एक विक्षिप्त हत्यारा हूं। मैं अब तक 8 कत्ल कर चुका हूं। आठवीं लाश तेरी श्यामा आंटी की ही तेरे सामने पड़ी है। फिर भी तू मेरी फिक्र में आधी हुई जा रही है। तुझे अपनी नहीं मेरी फिक्र सता रही है।"

"पंडितजी! आप हत्यारे बने अर्जुन की खातिर। अर्जुन से मेरी बेवफाई की खातिर। पर असलियत यह नहीं है। न ही मैं बेवफा हूंऔर न ही आपने कोई जायज कदम उठाया है। अगर आपको हत्यारा बनना ही था तो तब बनते। पांच साल पहले बनते। उस दिन, जिस दिन आपने रमैया और काली को जिंदा कब्र से निकाला था। तब करते अपनी उस शकुंतला रानी का कत्ल...तब तो आप चुप बैठे रहे...तब तो आपने उस हत्यारिन को जिंदा छोड़ दिया जिसने आपके पूरे खानदान को ही खा डाला...तब तो आपने कुछ न किया...और फिर जब आपको मेरी बेवफाई का पता लगा। जब आपको पता लगा कि अर्जुन मेरे बिना नहीं रह सकता और मैं अर्जुन को हासिल नहीं हो सकती तो आप हत्यारे बन गए। मेरी वजह से ही आप हत्यारे बन गए। मैं इतनी बड़ी गुनहगार निकली आपकी नजरों में, कि आप खून पर खून करते चले गए। पर तब भी आपने शकुंतला से कोई बदला नहीं लिया...अभी भी आपने उस शकुंतला से बदला नहीं लिया। अभी भी वो दनदनाती फिर रही है...आप आज नहीं तो कल मारे जायेंगे। अर्जुन के हाथों नहीं तो कानून के हाथों मारे जायेंगे। फिर तो राज करेगी आपकी बहू...।"

"उस हरामजादी को तो मैं भी जिंदा नहीं छोड़ना चाहता।" पंडित दांत पीसता चला गया।

"और उसके लिए आपका जिंदा रहना जरूरी है। अभी आर्मी आई तो आप जिंदा नहीं रहेंगे...फिर कौन लेगा शकुंतला से इंतकाम।"

"चुप।" पंडित हाथ झटकता बोला"भड़काती है मुझे। चाहती है मैं यहां से निकल भागूं और अर्जुन मेरे हाथों से बच जाए। नहीं। मेरे काली का हत्यारा मेरे हाथों से अब नहीं बच सकता।"

"खूब!" नैना विष भरी हँसी हँसी"पंडितजी, बुढ़ापे में सठिया जाते हैं लोग। आप भी सठिया गए हैं। यहां से निकल भागे तो जिंदगी में कई मौके आयेंगे अर्जुन को खत्म करने के...पर यहीं मर गये तो फिर न तो अर्जुन को मार पायेंगे...न ही अपनी शकुंतला को।"

"नहीं। मैं नहीं जाऊंगा। कहीं नहीं जाऊंगा।"

"ये क्यों नहीं कहते कि शकुंतला को आप मारना ही नहीं चाहते। शायद मार ही नहीं सकते। ये कैसा इंसाफ है आपका...उस अर्जुन की हत्या आपके लिए जरूरी है जिसके हाथों काली दुर्घटनावश मरा। अरे! काली की आई थी सो आ गई...अर्जुन की गाड़ी से टकराना लिखा था। उसकी गाड़ी से टकरा गया...वो न टकराता तो कोई और टकरा जाता...पर होनी ने उसी काली का ही खून अर्जुन की रगों में पहुंचाने के लिये, यह बहाना बनाया था। तभी तो होनी ने यह सब किया...तभी तो अर्जुन भी विक्षिप्त हत्यारा जा बना...तभी तो उसने राखी और अर्चना का खून किया...मैंने बेवफाई की। मैं आपकी नजर में गुनहगार हूं...आपके सड़े खून ने अर्जुन को हिंसक बनाया पर आप गुनहगार नहीं...ये कैसा इंसाफ है आपका!"

"नैनाऽऽ।" पंडित हरी नारायण एकाएक नैना के बालों पर झपटा"खबरदार, जो मेरे खून को गाली दी तो।"

"गाली।" बाल खिंचे होने की वजह से नैना का चेहरा पंडित की तरफ उठा और वो फुंफकारी"थूऽऽ। अरे मैं तो थूकती हूं आप पर। आपके गंदे खून पर...।"

'तड़ाक।' पंडित का थप्पड़ पड़ा नैना के चेहरे पर।

"कितनी बेगुनाह लड़कियों को मार डाला आपने। अर्जुन को दौरे पड़ते हैं...वो तो भूल जाता है खुद को...पर आप तो अच्छे-भले हैं. ..आपको तो कोई दौरे नहीं पड़ते...फिर भी आप बेकार के ही कत्लेआम में लगे हैं। और वजह मेरी बेवफाई ढूंढी है आपने। सच तो यह है कि आपके विक्षिप्त खून को ही खून करने का चस्का लगा है। बिना हत्या किए आपको खाना हजम नहीं होता। मुझे तो लगता है कि आपके खून में भी कीड़े हैं जो आपको एकाएक वहशी बनने पर मजबूर कर देते हैं।"

"चुप साली...'तड़ाक'...खबरदार, जो अब बोली कुछ तो।" पंडित रिवॉल्वर की नाल हिलाता बिफरा"ग...गोली मार दूंगा मैं।"

"तो मारी क्यों नहीं अब तक। आते ही आंटी के सिर पर गमला दे मारा। इस गर्भवती को मार डाला आपने...मुझे क्यों जिंदा रखे हैं अब तक...चलाइए गोली।"

पंडित हरी नारायण का रिवॉल्वर वाला हाथ कांपने लगा।

"मैंने अर्जुन से दूर जाने का नाटक जरूर किया ताकि वो मुजरिमों के कत्ल करने बंद कर दे...पर मुझे क्या पता कि मेरा ससुर ही इसे मेरी बेवफाई समझ बैठेगाऔर इस कदर भड़केगा कि मासूम लड़कियों के ही कत्ल करने लगेगा। वाह तकदीर तो देखो मेरी... महबूब मिला तो वो खूनी...ससुर मिला तो वहशी खूनी...लगता है अर्जुन की पत्नी बनकर फिर कोई नई शकुंतला जन्म लेगी मेरे भीतर। फिर मैं पहले अपने ससुर का खून करूंगी। और बाद में अपने अर्जुन का...फिर बैठकर चाटूंगी मैं अर्जुन का फ्लैट। खाऊंगी पंडित हरी नारायण की हवेली...।"

"नहीं-नहीं।" पंडित हरी नारायण दोनों हाथ कानों पर रखता चिंघाड़ा"बस कर। बस कर नैना! मैं नहीं हूं...मैं नहीं हूं विक्षिप्त हत्यारा।"

"क्या!" नैना का मुंह खुला।

पंडित भागकर रसोई में गया और एक बोतल पानी की उठा लाया।

"नैना! मैंने तो आज तक मक्खी भी नहीं मारी। फिर भला कत्ल क्या करूंगा।"

"व्हाट?" नैना अपने पास पड़ी श्यामा आंटी की लाश देखती चिंघाड़ी"क्या ये लाश नहीं है? ये खून अपने नहीं किया-क्या?"

"नैना! मैं तो सात कत्लों का जुर्म इसलिए कबूल रहा हूं ताकि अपने काली के जुर्म छिपा सकूं। अपने अर्जुन को बचा सकूं। अपने गंदे खून को छिपा सकूं।"

"नहींऽऽऽ!" नैना की चीख निकली।

"हां बेटी! यही सच है" पंडित हरी नारायण सहमति में सिर हिलाने लगा।

❑❑❑

दिल्ली कैटोनमैंट में बने आर्मी हॉस्पिटल से अर्जुन राधा को लेता मोती बाग की तरफ निकला जहां नैना का फ्लैट था।

"अर्जुन!" तभी गाड़ी चलाती राधा फुंफकारी"मुझे उम्मीद नहीं

थी कि तुम ऐसे निकलोगे।"

"तो कैसा निकलूंगा?" अर्जुन बोला।

राधा दांत भींचती फुंफकारी

"तुमने जो किया...ठीक नहीं किया, बल्कि यूं समझो कि देवसिंह को हमेशा-हमेशा के लिए अपना दुश्मन बना लिया। अब देवसिंह तुम्हें किसी सूरत नहीं छोड़ेगा।"

"ऐसा कभी नहीं होगा, क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता।"

"मतलब?"

"मतलब ये कि वो घड़ी आएगी ही नहीं, कि देवसिंह मेरी हत्या कर पाए। इससे पहले मैं ही देवसिंह की हत्या कर डालूंगा।"

राधा रियर-व्यू-मिरर में दांत चबाती अर्जुन को घूरने लगी। उसकी गीली आंखों से उसी पल आंसू टपक-टपक कर गालों पर लुढ़कने लगे।

अर्जुन वहशियत से मुस्कराता राधा की हालत पर आनन्दित होता रहा।

"तू तो मेरी अयोध्या का लक्ष्मण था रे। कर दी न थू-थू आज रामायण पर भी तूने। उसी राम की ही अयोध्या उजाड़ डाली जो तेरी खातिर बीवी-बच्चों को भीं कुर्बान कर देने का जज्बा रखता है।"

"प्लीज-प्लीज। आप अब रामलीला शुरू न करें।" हाथ जोड़ता अर्जुन बोला।

राधा की आंखे और जोर से बरसने लगीं।

"कमीने मैं तेरे हाथों बचूंगी नहींऔर जिंकी तेरी वजह से अब किसी लायक रहा नहीं। देवसिंह भी जी कर क्या करेगा! किसकी खातिर जिएगा वह!"

"अब जिंकी को मैंने क्या किया है?"

"पता नहीं किस मनहूस घड़ी में तेरा लहू उसके जिस्म में पहुंचा और वो मुझ पर चढ़ दौड़ा। मेरा खून ही कर डालने की घोषणा उसने 8-40 पर कर डाली।"

"क्या?" अर्जुन का मुंह खुला"जिंकी नेउस तीन साला ने अपनी मां का खून करने की धमकी दी?"

"धमकी नहीं चैलेंज दिया कमीनेऔर ऐसा तभी हुआ, जब तेरा खून चढ़ने के बाद वो होश में आया।"

"नहींऽऽ!" अर्जुन उसी पल दूर तक सोचता चला गया।

उसे पता था कि काली शर्मा का खून उसे चढ़ा था और उसके बाद से ही उसने राखी और अर्चना की हत्याएं कर डालीं पर उसे याद

कुछ नहीं था। हर आठ घंटे के बाद उस पर विक्षिप्ता का दौरा पड़ता था, पर ऐसा पुलिस कहती थी। डॉक्टर कहते थे पर उसे याद कुछ नहीं आता था। पुलिस उसे उसका ढोंग समझती है जबकि वो सच कह रहा होता था। पर अब इस समय वो खुद को अर्जुन ही समझ रहा था जबकि इस वक्त टाइम वही था जब उसे दौरे में होना चाहिए था; यानि 12-40 वाले पीरियड में। पर वो बिल्कुल ठीक था; जबकि उसे तो इस वक्त विक्षिप्तता का दौरा पड़ा होना चाहिए था। क्या मतलब हुआ इसका? वो सोच में पड़ गया।

"हे भगवान!" एकाएक उसका दिमाग कुंद होने लगा"कहीं ऐसा तो नहीं कि उसके जिस्म में मौजूद काली का खून नन्हें जिंकी के जिस्म में पहुंच गया हो और वो (अर्जुन) ठीक हो गया हो। जिंकी विक्षिप्त हो गया हो।" पता नहीं यह सोचते ही उसकी आंखों में नमकीन कतरे झिलमिलाने लगे।

राधा ने मिरर से अर्जुन की भीगी आंखें देखीं तो उसकी भी हैरानी बढ़ी। उसे लगा कि अर्जुन का जमीर जाग रहा है और अब वो शर्मिंदगी महसूस कर रहा है। अभी वो कुछ कहती कि...

"अर्जुन! हमारा पीछा हो रहा है।" अपनी अंबैसडर के पीछे लगी एक ओमनी देख राधा चिल्लाई।

अर्जुन की गर्दन पीछे मुड़ी तो उसे ओमनी के दाएं-बाएं के दरवाजों से रिवॉल्वरें निकाले दो हाथ दिखाई दिए।

ओमनी अनवर ड्राइव कर रहा था और गोगा, सिकंदर हाथों में गनें लिए दिख रहे थे।

बीच में बच्चू तिवारी बैठा अपनी बायीं मूंछ उमेठ रहा था।

"भाभी! ये आर्मी हैडक्वार्टर से ही हमारे पीछे लगे हैं। और हमें खबर न लगी।" अर्जुन के होठों से निकला।

"क्या फर्क पड़ता है...मुझे तो मरना ही है। तेरे नहीं, तो इनके हाथों...या फिर जिंकी के हाथों।"

'धांय-धांय...फटाक' उसी पल पीछे से गोलियां चलीं और उनका टायर ब्रस्ट होता चला गया।

अम्बैसडर डगमगा उठी।

❑❑❑

तभी पंडित हरी नारायण ने पानी की ठंडी बोतल श्यामा आंटी पर उडेलनी शुरू कर दी।

सर्दी के मौसम में ठण्डा पानी श्यामा आंटी पर पड़ा तो वो कुनमुनाने लगी।

फिर एकाएक उसका बदन कुनमुनाया और वो ठंड से कांपती उठ खड़ी हुई।

नैना फटी आंखों से श्यामा आंटी को देखने लगी।

"हां बेटी! मैंने गमला मिट्टी की तरफ से उठाकर इसके सिर पर मारा था ताकि यह बेहोश हो...मरे नहीं। मैं और करता भी क्या. ..इसने कान में बैठकर कैं-कैं लगा रखी थी...इसे बेहोश न करता तो यह पुलिस को बुला लेती यहां पर...फिर सारा भेद खुल जाता कि मैंने ही अपनी नैना को फ्लैट में कैद कर रखा है।"

"पर आपने ऐसा क्यों किया?"

"अभी बताता हूं। जाओ श्यामा बेटी।" पंडित हरी नारायण शर्मा श्यामा आंटी की तरफ हाथ जोड़ता बोला"तुम्हारे सिर पर चोट की। उसके लिए हो सके तो इस बूढ़े को क्षमा कर देना। फिर भी एक नसीहत देता हूं। हो सके थोड़ा बोलो। सोच-समझ कर बोलो। नहीं तो हर बार गमला बेहोश करने के लिए ही सिर पर नहीं पड़ेगा।"

"बुड्ढेऽऽ!" श्यामा आंटी तिलमिलाती उठ खड़ी हुई।

"आंटी प्लीज।" नैना ने हाथ जोड़े"इनकी कोई मजबूरी रही होगी जो ऐसा करना पड़ा। अगर आप सामने न पड़ती तो भला ऐसा क्यों होता!"

"ठीक है।" श्यामा आंटी हरी नारायण को घूरती वहां से निकली और पंडित ने दरवाजा बंद किया।

ससपैंस की मारी नैना ने आंखें फाड़कर हरी नारायण को देखा।

❑❑❑

पंडित ने कहना शुरू किया"काली दिल्ली में पढ़ने लगा। धीरे-धीरे उसके भीतर मेरा हिंसक खून सर चढ़कर बोलने लगा। वो कभी-कभी शकुंतला को खत्म करने की भी बात करता था। वो स्कूल जाने लगा। तब भी मुझे यही डर लगा रहता कि कहीं स्कूल में ही किसी के सामने घोषणा न कर दे कि शकुंतला का खून वो करेगा। खैर, समय बीतता गया। काली 14 साल का हुआ कि क्लास की लड़की ईशा से दिल लगा बैठा जैसा कि लड़कपन में लड़के करते हैं. ..वो दिखने में बच्चा जरूर था पर अंदर से परिपक्व मस्तिष्क था उसका। वो सब बलबीर की ही वजह से था। उसी ने एक दिन ईशा के सामने अपने प्रेम का इजहार कर दिया...ईशा ने काली का आमंत्रण स्वीकार नहीं किया बल्कि काली की खिल्ली उड़ायी। काली बिदक गया और तब 14 साल की उम्र में ही काली ने पहला खून किया।"

"व्हाट?" नैना उछली।

"हां बेटी!" पंडित हरी नारायण संजीदगी से हांमी भरता बोला"काली एक दिन ईशा को स्कूल की छत पर ले गया और फिर उसने ईशा को नीचे फैंक दिया।"

"फिर?" नैना की आवाज कांपी।

"स्कूल वालों ने तो उसे महज एक हादसा समझा पर काली ने घर आकर बता दिया कि उसने ईशा को मार डाला। फिर पुलिस घर आई...क्योंकि किसी बच्चे ने ईशा के साथ काली को छत पर देखा था। पुलिस आई तो काली घर से ही भाग गया।"

"क्यों?"

"पुलिस तफ्तीश करना चाहती थी जबकि काली अंदर से डरा बैठा था। मैं भी पर्दे में हो गया। पुलिस ने काली को यशोदा की संतान समझा और काली का नाम वैसे ही कृष्ण मुरारी हो चुका था। लिहाजा मेरे सिवा कोई नहीं जानता था कि ईशा का हत्यारा मेरा काली शर्मा है। पुलिस ने ईशा की मौत को दुर्घटना मान लिया। बस फिर काली घर नहीं लौटा। फिर दो-चार महीने और बीते कि गुड़गांवा में हत्याएं होने लगीं। उन हत्याओं को शकुंतला काली की करतूत बताने लगी क्योंकि वो काली को पुलिस की नजरों में अब तक जिंदा ही रखे थी, जबकि अपनी नजरों में वो काली को पांच साल पहले ही जिंदा दफन कर चुकी थी। फिर मैं भी जान गया कि गुड़गांवा में हो रही हत्याएं मेरा सिरफिरा, दिलजला 14 साल का आशिक पौता काली ही कर रहा है, पर मेरे पास भी चुप रहने के सिवाय कोई चारा न था। मैं जमाने को नहीं बता सकता था कि वो विक्षिप्त हत्यारा मेरा ही खून हैऔर तो औरमैंने काली को ढूंढने की भी कोशिश नहीं की और उसे रब के हवाले छोड़ दिया।"

"आगे?"

"आगे जमाना जानता है। कुछ दिन पहले ही काली की मौत दुर्घटनावश हुई और उसका खून अर्जुन के सिर मढ़ा गया। फिर अर्जुन ने जब विक्षिप्त बनकर हत्याएं कीं। मैं समझ गया कि काली का खून उसकी रगों में हड़कंप मचा रहा है। वही यह सब करवा रहा है। अब जमाने को मेरे खानदानी खून का रहस्य समझ आ जाना था। सो मुझे यही सूझा कि काली शर्मा द्वारा की गई तमाम हत्याएं अपने सिर ले लूं। मैंने यही किया। इससे फायदा यही था कि अर्जुन को कानून जिन सात हत्याओं का जिम्मेदार समझ रहा है, वे हत्याएं उस पर साबित नहीं होनी थींऔर काली शर्मा पर भी उन सात हत्याओं का जुर्म साबित नहीं होना था। सो न मेरा काली बदनाम होता न मेरा अर्जुन।"

"पर अर्जुन तो दो खून का अभी भी जिम्मेदार है।"

"बस। यहां मैं कुछ नहीं कर सकता। पर मुझे उम्मीद है कि अर्जुन अपने आपको इन खूनों से आजाद जरूर करा लेगा। न कर सका तो भी कानून उसे कोई सजा न दे पाएगा, क्योंकि वो खून अर्जुन ने अपने होशो-हवास में नहीं, बल्कि अपनी रगों में दौड़ते काली के खून की बदौलत किए थे।"

"पंडितजी! मेरा ख्याल है आपको अब निकलना चाहिए। आर्मी आती ही होगी।"

"हां। तुम ठीक कहती हो।" पंडित हरी नारायण दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"पंडितजी! अभी भी आप अंदर से रहमदिल शख्स हैं, तो आप अर्जुन को यहां क्यों बुलाना चाहते हो?"

"ताकि तुम दोनों को मिला सकूं। शायद मेरी मौत तुम्हें और अर्जुन को एक-दूसरे के कुछ करीब ला सके। कुछ और करीब ला सके।" पंडित जाता-जाता मुड़ा।

"मतलब?" नैना की आंखें फटीं।

"यहां तुम्हारी जान जाती देख अर्जुन मेरी हत्या करता। फिर शायद तुम्हारी और उसके बीच की गलतफहमियां दूर हो जातीं पर ऐसा शायद होगा नहीं।"

"बिल्कुल नहीं होगा। मेरे और अर्जुन के रास्ते अलग-अलग हैं। वो अपनी फितरत छोड़ नहीं सकता और मैं उस फितरतन हत्यारे के साथ जिंदगी गुजार नहीं सकती।"

"खैर, तुम्हारी मर्जी। जो खुदा को मंजूर।" कहता पंडित हरी नारायण दरवाजे की तरफ बढ़ा।

फिर उसने दरवाजा खोला और बगुले की गति से बाहर निकल गया। जाते वक्त उसकी आंखों में धूर्त मुस्कान नाच रही थी जिसे भोली नैना भांप न सकी।

नैना आगे बढ़कर दरवाजे पर खड़ी उस देवता को देखती रही जो बिना कोई कत्ल किये खुद को कातिल बता रहा था, पर नहीं जानती थी कि यही देवता अब कत्ल करने जा रहा है।

उसने जो कहा था, अपनी किसी चाल के तहत ही कहा था।

❑❑❑

टायर बर्स्ट होते ही राधा की गाड़ी बेकाबू हो गई और बेलगाम बैल की तरह दाएं-बाएं भागती चली गई।

'धड़ाक्' इसी दौरान ही उसका सिर स्टेयरिंग से टकराया और

वहीं ठहर गया। वो बेहोश हो गई।

'टूंऽऽऽ...।' अंबैसडर का हॉर्न स्वतः ही बजता चला गया।

"भाभी संभालो खुद को।" पिछली सीट पर अर्जुन चिल्लाया।

'धांय-धांय...।' पीछे ओमनी से अभी भी फायर किए जा रहे थे।

इसी दौरान अंबैसडर धौला कुआं रोड पर बने एक पुलिस बीट बॉक्स की तरफ बढ़ी।

'धड़ाक्' अंबैसडर लकड़ी के बीट बॉक्स में घुसी और उसे अपने ही साथ खदेड़ती हुई भागती चली गई।

अर्जुन बेचारा सोच भी न पाया कि उसे क्या करना चाहिए?

उधर बीट बॉक्स के बाहर खड़ा इंस्पैक्टर अपना बीट बॉक्स गाड़ी के साथ जाता देख हरकत में अभी आता कि

'आऽऽ।' पीछे से ओमनी से आती गोली उसकी छाती में धंसी और वो वहीं सड़क पर ही गिरा।

बच्चू तिवारी की ओमनी उसकी बगल से होती अंबैसडर के पीछे लगी।

"बचना नहीं चाहिए साड़ा।" बच्चू तिवारी चिंघाड़ा"साथ में वाकी लुगाई भी मार डालो।"

"सर जी! वो औरत अर्जुन की औरत नहीं है।" गोगा बोला।

"नहीं है तो भी अर्जुन के साथ तो है ही न। मार डालो ससुरी को, हमार भी साड़ी कोण लगत है।"

"वो औरत आर्मी हॉस्पिटल से किडनैप की गई है। उसी के सीना पर बंदूक रखकर अर्जुन साड़ा हॉस्पिटल से लिकड़या है...धांय-ध ांय।" गोलियां दागता गोगा चीखा।

'धड़ाक्' तभी आगे जाती अंबैसडर धौला कुआं राउंड अबाऊट की पटरी से टकराई फिर ऊपर चढ़ती चली गई।

अगले ही पल वो सर्कल की रेलिंग तोड़ती भीतर बने बगीचे में घुसती चली गई और फिर एक जगह जाकर थम गई।

बीट बॉक्स अंबैसडर के ऊपर झोंपड़ी की तरह छा रखा था।

'चींऽऽ' ओमनी उसी पल पटरी के पास रुकी।

फिर उसके दरवाजे से गोगा, सिकन्दर और अनवर रिवॉल्वर थामे भागे और रेलिंग फांदते बगीचे में घुसते चले गये।

पैसेंजर सीट पर बैठा बच्चू तिवारी एकाएक स्टार्ट खड़ी ओमनी की ड्राइविंग सीट पर पहुंच गया।

"पता नहीं अपणा चड्ढा कहां मर गया...न सुसरे का कोई

फोनवा आया...न ही कोई खबर लागी। यो तो शुक्र है कि मैं सीधा आर्मी हॉस्पिटल पहुंच गयो...।"

'धांय...धांय' पार्क के भीतर फायरिंग करते गोगा, अनवर और सिकंदर उस अंबैसडर के नजदीक पहुंचे।

लकड़ी का बीट बॉक्स टूटकर अंबैसडर की पिछली तरफ आ गया था अत: अंबैसडर का पिछला हिस्सा उसी बीट बॉक्स में ही छिप गया था गायब हो गया था। अंबैसडर का दरवाजा खुल गया था।

'कड़-कड़।' लकड़ियां हटाते सिकंदर फुसफुसाया "ध्यान से, वो छोरा गाड़ी में ही छिपा हो सकता है।"

फिर दो तरफ से लकड़ियां हटाते गोगा और अनवर घुसे जबकि सिकंदर दूर से ही पहलू काटता अंबैसडर के आगले हिस्से में पहुंचा।

विंडस्क्रीन के पीछे उसे राधा स्टेयरिंग पर सिर रखे नजर आई।

आगले ही पल उस दरिन्दे के होंठों पर कातर मुस्कान नाची और रिवॉल्वर वाला हाथ राधा के सिर की दिशा में तना।

इधर पिछली तरफ से लकड़ियां हटाते गोगा और अनवर पिछले दरवाजे की तरफ पहुंचे।

उन्होंने एकाएक दरवाजे खोले और भीतर झांका।

अर्जुन उन्हें भीतर नजर न आया।

वो अभी हैरान होते कि

'धांय।' तभी सिकंदर की गोली चली तो उनकी दृष्टि उधर मुड़ी।

उन्हें सिकंदर का रिवॉल्वर धुआं छोड़ता तो नजर आया पर यह पता न चला कि गोली कहां गई।

गोली उन्हें विंडस्क्रीन तोड़ती राधा के सिर में घुसती न दिखाई पड़ी न सुनाई पड़ी।

"गोली शायद आसमान में गई है।" गोगा अनवर से बोला।

"मने भी ईसा ही दीखे है...अब इस लुगाई की तो मुंडी खोल।" दांत चबाते अनवर ने अपनी नाल राधा की गुद्दी के पीछे टिकाई।

"अऽऽ।" तभी विंडस्क्रीन के बाहर खड़ा सिकंदर उन्हें डकार मारता नजर आया।

अगले ही पल वो दोनों हाथ हवा में उठाता आगे की तरफ गिरने लगा कि पीछे से उन्हें एक शख्स उठता नजर आया।

अनवर ने नाल राधा की गुद्दी से खींची और बाहर की दिशा में तानता कि...

धड़ाम से सिकंदर के दोनों हाथ बोनट पर गिरे और वो बोनट

पर ही फैल गया। उसी पल सिकंदर की पीठ पर कोहनी टिकाता अर्जुन का रिवॉल्वर गरजा।

'धांय-धांय।' गोली विंडस्क्रीन तोड़ती अनवर के माथे में घुसी और वो राधा के पीछे ही पिछली सीट पर ढेर हो गया।

गोगा उसी पल मुड़ा और भागा।

"ठहर प्रसाद तो लेता जा...धांय।" अर्जुन हँसा और रिवॉल्वर गरजा।

गोली सीधी गोगा के कूल्हों में घुसी और वो दोनों हाथ उठाए आगे की ओर गिरता चला गया।

"ओ साड़ो इतनी गोलीबारी क्यों कर रहे हो।" बगीचे के बाहर ओमनी में बैठा बच्चू तिवारी गरजा।

अर्जुन उसी पल सिकंदर की पीठ के पीछे से निकला और ड्राइविंग सीट की तरफ पहुंचा।

फिर उसने राधा के बेहोश शरीर को कंधे पर डाला और बाहर खड़ी ओमनी की तरफ बढ़ा।

इससे पहले...

बगीचे में गाड़ी घुसते ही अर्जुन खुले दरवाजे से बाहर निकला था और अंबैसडर के नीचे घुस गया था। फिर नीचे से ही वो अंबैसडर के अगले हिस्से में सरक रहा था कि तभी वहां सिकंदर पहुंच गया। सिकंदर अभी राधा पर निशाना लगाता कि नीचे से निकलते अर्जुन ने सिकंदर का निशाना लगा दिया।

लिहाजा सिकंदर की डकार गूंजी और उसकी चलाई गोली आसमान की तरफ निकल गई, जबकि अर्जुन की गोली ने उसे आसमान में पहुंचा दिया।

फिर अर्जुन सिकंदर की गिरती लाश के पीछे ही खड़ा होता चला गया और उसने अनवर की हत्या की और आखिरकार गोगा को जन्नत नशीन किया।

क्यारियों में होती खड़खड़ देख बाहर रोड पर मौजूद बच्चू तिवारी हर्षित हुआ। उसे कंधे पर राधा को लादे अपना ही कोई गुर्गा नजर आया।

"वाह रे मेरे शेर! हमारे वास्ते लुगाई ले आया...पीछे अर्जुनवा भी आ रिया होगा।"

तभी क्यारियां हटीं और बच्चू तिवारी को अर्जुन नजर आया।

"नहीं...बचाओ।"

पर अर्जुन की रिवॉल्वर वाली बांह उसकी दिशा में सीधी होती

गई।

स्टेयरिंग पर बैठा बच्चू तिवारी आतंकित चेहरे से दोनों हाथ इंकार में हिलाने लगा। अपनी जिन्दगी की भीख मांगने लगा, मगर.

'धांय...धांय।' पहली गोली चली और विंडस्क्रीन टूटी और...

"आऽऽ!" अन्ततः बच्चू तिवारी की आखिरी चीख गूंजती चली गई।

अर्जुन से भीख में जिंदगी मांगने वाले बच्चू तिवारी को भी मौत मिली।

"भाभी को छूना तो दूर देखना भी गुनाह है...ये मेरे यार की अमानत है...और मेरी तो दुर्गा, काली, अम्बे, जगदम्बे सब यही है.. .इसकी पूजा तो मैं हर घड़ी कर सकता हूं पर हत्या...कभी नहीं... कभी अंजाने में भी नहीं...पागल होकर भी नहीं...विक्षिप्त होकर भी नहीं...।"

पर उसकी देवी, उसकी दुर्गा, पूजा कंधे पर बेहोश ही पड़ी थी।

अर्जुन ने पिछली सीट पर राधा को शीशे की गुड़िया समझ कर लिटाया। उसके पैरों पर श्रद्धा से हाथ रखे।

"एक तू है...एक वो है। तू वफा की मूरत...वो बेवफाई की सूरत।"

फिर उसने बच्चू तिवारी की लाश बाहर फैंकी और ड्राइविंग सीट पर जा बैठा।

अगले ही पल ओमनी बैक होती पता नहीं कहां भागी जा रही थी।

उसने घड़ी देखी तो 12-50 हो रहे थे।

यानि दस मिनट पहले ही 12-40 पर उसने राधा को नई जिंदगी दी थी। उसे सिकंदर की गोली से बचाया था, पर दुनिया उसे अब भी बेरहम कातिल का नाम देती थी।

❑❑❑

देवसिंह घायल शेर की तरह हॉस्पिटल के ही एक लॉकअप में मंडरा रहा था।

उसकी आंखों में आंसू थे।

12-40 हो चुके थे। अर्जुन के दिए वक्त के मुताबिक उसकी दुनिया उजड़ चुकी थी। उसकी राधा दुनिया छोड़ चुकी थी।

उसने इसी तसदीक की ही खातिर मोबाइल निकाला और नंबर मिलाया। वो मोबाइल अर्जुन का ही था।

'ट्रिन...ट्रिन।' राधा के पास देवसिंह वाला मोबाइल था, पर

जवाब कोई न आया।

"उठा राधा फोन उठा। मेरी कॉल सुन।" देवसिंह का स्वर भीगा।

"हैल्लो।" उधर से अर्जुन की सर्द आवाज आई।

"राधा को दे फोन।" देवसिंह संक्षिप्त मगर जहर बुझे स्वर में बोला।

"ले।" उधर अर्जुन गाड़ी में बेहोश राधा की तरफ मोबाइल बढ़ाता बोला।

राधा ने क्या जवाब देना था सो न दिया।

"मार डाला न तूने उसे।" राधा का जवाब न सुन देवसिंह कांपा।

"बस इतना ही भरोसा है यार पर।" अर्जुन मोबाइल पर बोला।

"मतलब?"

"पगला!" अर्जुन का स्वर भीगा।

"यानि?"

"तूने यह मान कैसे लिया कि अर्जुन राधा भाभी का मर्डर कर सकता है?"

"त...त...तो?" देवसिंह के मन में सैंकड़ों वीणा एक साथ बजीं"राधा ज...जिंदा है?"

"बिल्कुल, पर बेहो़श है। वो भी इसलिए कि बच्चू तिवारी ने हमला बोला था। मरा पड़ा है अपने गुर्गों के साथ।" फिर वो देवसिंह को सब बताता गया। इस बार उसका दिल न किया कि देवसिंह की भावनाओं का मजाक उड़ाए।

"ओह माई गॉड!" आखिरकार देवसिंह की हर्षित आवाज गूंजी"राधा ठीक है। तू ठीक है। अब कहां जा रहा है तू?"

"पंडित हरी नारायण के पासनैना के पास।"

"मत जा। वहां खतरा है।"

"खतरा कहां नहीं है?"

"बेवकूफ वहां आर्मी पहुंच रही है। वो तुझे जिंदा नहीं छोड़ेगी।" फिर देवसिंह उसे अपने साथ बीता घटनाक्रम बताने लगा।

"ओह!"

"तू मत जा वहां अर्जुन!"

"अब तो जाना और जरूरी है देवसिंह! मैं नहीं जाऊंगा तो पंडित नैना को मार डालेगा और आर्मी पंडित को मार डालेगी। और तू जानता है मैं दोनों ही की मौत बर्दाश्त नहीं कर सकता। एक तरफ महबूबा है और दूसरी तरफ बाप है।"

"तुझे अभी भी उस सूअर से हमदर्दी है।" देवसिंह फुंफकारा।

"वो सूअर ही बाप है मेरा। बाप सूअर निकल आया तो मैं भी सूअर बन जाऊं क्या?"

"यानि तू ठीक था। शुरू से ही ठीक था फिर तूने राखी, अर्चना का खून क्यों किया? वो 12-40...8-40 वाला खेल क्यों खेला?"

अर्जुन ने जवाब न दिया। क्यों देता। कैसे कहता कि वो खेल उसकी रगों में दौड़ते काली के खून ने खिलाया। वो तो अब ठीक हो चुका है पर कुदरत अब वो खेल उसके बेटे जिंकी से ही खेलने जा रही है। अर्जुन की रगों में दौड़ता जहरीला रक्त इत्तफाक से जिंकी की रगों में पहुंच गया है।

"जवाब दे। मैं कुछ पूछ रहा हूं।"

"जवाब नहीं दे सकता...तू बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।"

"क्या?" देवसिंह का मुंह खुला"तूने देवसिंह को इतना कमजोर समझ रखा है जो...।"

"देवसिंह!" तभी डॉक्टर कोचर का स्वर अर्जुन और देवसिंह दोनों के ही कानों में पड़ा"जिंकी के खून में कीड़ा पाया गया है।"

"क्या?" उधर फोन पर अर्जुन बोला। इधर प्रत्यक्षतः देवसिंह उछला।

"हां देवसिंह!" सलाखों के बाहर खड़ा कोचर संजीदगी से बोला"आओ मेरे साथ।"

"न...न...नहीं!" देवसिंह घबराया।

"देवसिंह!" उधर से अर्जुन चीखा"हौसला रख दोस्त...मैं पहुंच रहा हूं वहां।"

"ननहीं, मेरे जिंकी के खून में कीड़ा पाया गया है। भला खून में भी कीड़े होते हैं क्या...!" देवसिंह सामने खड़े डॉक्टर से बोला।

"हां देवसिंह! और वो कीड़े दिमाग के सोचने वाले पहलू में जब पहुंचते हैं तो आदमी वहशी हो जाता है।"

"नहींऽऽ! ये झूठ है।" देवसिंह चिंघाड़ा।

"ये सच है दोस्त! एक तजुर्बा मुझे हुआ और आगे के तजुर्बे हमारे जिंकी को होंगे। पर तू घबराना नहीं...हम खोज लेंगे कोई न कोई हल। कोई उपाय सोच लेंगे।" उधर फोन पर अर्जुन ने ढांढस बंधाया।

'खड़ाक' तभी फोन देवसिंह के हाथ से निकला और फर्श पर लुढ़कता चला गया। और देवसिंह घबराई मुद्रा में पीछे दीवार से जा लगा।

❑❑❑
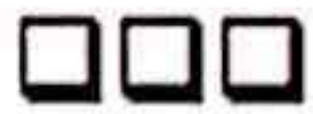
सब-इंस्पैक्टर अधिकारी ने लॉकअप का दरवाजा खोला और पंडित हरी नारायण से अदब से बोला

"जाइए पंडितजी! मिल लीजिए। पर याद रखिए...आपके पास इस मुलाकात के लिए सिर्फ पंद्रह मिनट हैं।"

"धन्यवाद बेटा!" पंडित हरी नारायण लॉकअप में घुसता बुदबुदाया"पता नहीं शकुंतला के पास अब पंद्रह मिनट भी है या नहीं।"

उसकी बुदबुदाहट अधिकारी सुन न पाया और लॉकअप का सलाखों वाला दरवाजा बंद करके बाहर ताला लगाने लगा।

पंडित को लॉकअप के बीचो-बीच एक आधी दीवार नजर आई जिसके पीछे शकुंतला शर्मा लकड़ी के तख्त पर लेटी पड़ी थी। उसका एक हाथ आराम की मुद्रा में आंखों पर ओट किए पड़ा था।

दरवाजा खुलने की आहट सुनते ही वो चिहुंकी थी और अधलेटी मुद्रा में उठने का उपक्रम कर ही रही थी कि उसे दीवार के दूसरी तरफ पंडित हरी नारायण नजर आया।

"लेटी रहो बहू! लेटी रहो।" पंडित पीछे सलाखों से बाहर देखता बोला।

सलाखों वाले दरवाजे के बाहर दो पुलिसकर्मी उसकी तरफ पीठ किए सावधान मुद्रा में खड़े थे।

"आप!" शकुंतला शर्मा तेजी से तख्त पर से उठती चली गई।

"हां बेटी!" पंडित हरी नारायण शर्मा दीवार के बीच बना खाली स्थान लांघता शकुंतला के पास पहुंचा।

वो आधी दीवार उस लॉकअप को दो पार्टीशन में बांट रही थी। दीवार के इस तरफ एक बैंच पड़ा था जहां कैदी बैठ सकता था और दूसरी तरफ वो तख्त था जहां कैदी लेटकर आराम फरमा सकता था। दीवार होने की वजह से तख्तपोश वाले स्थान पर सूरज की रोशनी नहीं पहुंचती थी। अतः पीछे अंधेरा ही रहता था सो कैदी के आराम में कोई खलल नहीं पहुंचाता था।

लॉकअप के बाहर दरवाजे से, दीवार के पीछे तख्त पर लेटा कैदी नजर नहीं आता था, क्योंकि सात फुट ऊंची दीवार यही काम करती थी।

"आप यहां कैसे?" शकुंतला शर्मा अपनी साड़ी का आंचल सीने पर ठीक करती बोली।

"तुम्हारी जमानत के वास्ते।" पंडित हरी नारायण तख्त के पास

पड़ा एक स्टूल अपने बैठने के लिए खींचता बोला। स्टूल तख्त के नीचे पड़ा था।

"रियली?" शकुंतला शर्मा को यकीन न हुआ।

"हां ब...बहुत सोचा। काफी विचारविमर्श किया, तो दिमाग में यही ख्याल आया कि हमें अब अपनी आपसी लड़ाइयां बंद कर देनी चाहिए। कोई फायदा नहीं तुम मुझे दोषी समझती रहो और मैं तुम्हें दोष देता रहूं।"

"अच्छा!" शकुंतला मुस्कुराई"इस परिवर्तन की वजह भी तो समझ आए?"

"वजह यही है।" पंडित हरी नारायण एक-एक शब्द भूमिका बांधकर बोल रहा था"कि तुम अगर कैद में रहीं। तुम्हें अगर सजा होने की आशंका दिखाई देगी तो तुम फिर से हमारे खून का रोना रोने लगोगी। कभी मुझे दोष दोगी। कभी बलबीर को, कभी देवी को तो, कभी काली को। इसलिए सोचा, क्यों न तुम्हें इस कैद से आजाद करा दूं। तभी मेरे परिवार की बदनामी होने से बचेगी।"

"चलो।" शकुंतला चहकी"देर से ही सही। बुढ़ापे में ही सहीआपको अक्ल तो आई।"

"हां।" पंडित हरी नारायण ने सहमति में सिर हिलाते दीवार के उस पार देखा तो उसे जंगले वाले दरवाजे की ऊपरी सलाखें ही नजर आईं।

बाहर पहरा देते हवलदारों का सिर भी दिखाई न दिया।

वो जान गया कि हवलदार उसे नहीं दिख रहे हैं तो उसे भी नहीं देख सकेंगे।

"तो आप मेरी रिहाई का इंतजाम करने आए हैं।" दोनों बांहें कैंची की तरह बांधती शकुंतला तेजी से मुस्कुराई।

"हां कमिश्नर नारंग से मिलातुम्हारी जमानत की अर्जी लगाई है। थोड़ी कागजी कार्यवाही हो रही है। उसके बाद तुम तमाम झंझटों से आजाद हो जाओगी।" पंडित ने उसे मौत का इशारा किया।

"क...कैसे?" बेवकूफ शकुंतला अभी भी न समझी।

"तुम नहीं समझोगी। तभी समझोगी जब समझने लायक ही न रहोगी।"

"क्या मतलब?" शकुंतला ने तुनककर आंखें निकालीं।

"मेरा मतलबजमानत होने के बाद भी केस तो तुम पर चलता ही रहेगा...फिर फैसला दस-बारह साल बाद ही होगा और तब तक तुम समझने लायक कहां रहोगी।" पंडित ने तत्काल बात बदली।

"ओह!" शकुंतला हँसी"अभी मैं 48 की हूं। 10-12 साल बाद 60 की हो जाऊंगी। बुढ़िया हो जाऊंगी तो फिर कहां समझूंगी कि कानून ने मेरे केस का क्या फैसला दिया है। सठिया जो जाऊंगी, क्यों?"

पंडित हरी नारायण ने सहमति में गर्दन हिलाई।

"खैर, आपने रास्ते में कहा था कि उस विक्षिप्त हत्यारे की कुछ और हकीकत है। वो अर्जुन नहीं है...क्या मतलब था उस बात का?"

"यही बताने तो आया हूं बहू।"

"मतलब?" शकुंतला ने आंखें तरेरीं।

"एक मिनट।" हरी नारायण उठा"पहले जरा इन पहरेदारों को गायब कर आऊं। फिर समझाता हूं।"

"जरूर कोई राज की बात है। तभी ससुर जी हवलदार को फुटाने जा रहे हैं?" शकुंतला शर्मा ने अपने दिमाग से नतीजा निकाला।

वो तो ख्वाब में भी न सोच सकी कि पंडित हरी नारायण शर्मा फुलप्रूफ योजना के तहत उसका मर्डर करने लॉकअप में घुसा है।

"सुना भैया!" पंडित अपनी जेब से सौ का नोट निकाल बाहर खड़ कांस्टेबल से बोला"दो ठंडे ला। एक काले वाला। एक सफेद वाला।"

"नहीं।" हवलदार सौ का नोट देखता बोला।

"तुम ला दो भैया।" नोट फड़काता हरी नारायण दूसरे हवलदार से बोला"एक काले वाला। एक सफेद वाला।"

"न...।" वो हवलदार भी 'नहीं' कहता कि 100 का नोट फड़फड़ाते पंडित बोला"बाकी तुम्हारे।"

"हैं! बीस रुपये के कोल्डड्रिंक। 80 रुपये सुलेमान के।" पहले वाले हवलदार की आंखें फटीं।

उसने कड़ाक से सौ का नोट पंडित से खींचा और दूसरे हवलदार के नोट पकड़ने से पहले ही ठंडे लाने चल दिया।

"बाबाजी आपने नोट उसे क्यों दे दिया?" दूसरा हवलदार भुनभुनाया।

"भैया! उसने खींच लिया।" पंडित हरी नारायण मुड़ा और शकुंतला की तरफ बढ़ा।

दूसरा हवलदार 80 रुपये का नैट घाटा देख पंडित को घूरने लगा।

"अरे हां! उसे बोल एक 502 का बंडल और माचिस भी लाएगा।" एकाएक पंडित सोचता हुआ मुड़ा कि उसने दूसरा हवलदार

भी गायब पाया।

पंडित मुस्कुरा उठा। वो जानता था कि हवलदार इसलिए गायब हुआ है ताकि बंडल माचिस के बहाने अपने पार्टनर से आधी रकम वसूल सके। उसने जाकर पहले हवलदार को यही कहना था कि बाबाजी ने बीड़ी-माचिस भी मांगा है और बाकी पैसे आधे-आधे बांटने को बोला है।

अब लॉकअप के बाहर कोई नहीं था। कोई भी नहीं।

हवलदार तो क्या कोई भी सोच नहीं सकता था कि पंडित ने अपनी बहू का कत्ल करने के वास्ते ही हवलदारों को भगाया है।

हवलदारों से भी पूछा गया तो उन्होंने आकर यही जवाब देना था कि उन्हें क्या पता था कि लॉकअप में कत्ल हो जाएगा। वो तो महज बाप समान बूढ़े की सेवा करने की नीयत से ठंडे लाने गए थे।

"ससुर जी आप तो बड़े चालाक निकले। सही भगाया उन्हें।" शकुंतला मुस्कराई "अब बताइए क्या है उस विक्षिप्त हत्यारे की हकीकत?"

"ये है।" इस बार पंडित ने बैंच पर बैठते ही पाजामे में से रिवॉल्वर निकाल लिया।

"क्या!" शकुंतला डरकर पीछे हटी।

"क्या नहीं।" पंडित संजीदगी से बोला "मैं ही हूं वह विक्षिप्त हत्यारा। और मैं आठवां कत्ल करने जा रहा हूं, मुझे उम्मीद है कि तुम्हें कोई ऐतराज न होगा।"

"नहीं! आप हत्यारे नहीं हो सकते। आप मेरा कत्ल नहीं कर सकते। भरेपूरे पुलिस मुख्यालय में आप मेरी हत्या नहीं कर सकते। कर गए तो आप कैसे बचेंगे? बाहर ताला है और पैरों में आपके इतनी शक्ति नहीं कि आप यहां से भाग सकें।"

"वो सब तू छोड़। जब मर जायेगी, तब तो यकीन कर ही लेगी कि मैं ही हूं वो विक्षिप्त हत्यारा जिसने कत्ल किया है और फिर जब तू मुझे पुलिस से बचता देखेगी तो यकीन कर ही लेगी कि मुझे कानून ने कैसे छोड़ दिया? किस बिनाह पर छोड़ दिया?" पंडित रिवॉल्वर दाहिने हाथ में घुमाता बोला।

शकुंतला शर्मा की जबान मारे हैरत और डर से तालू से जा चिपकी। उसके होंठ फड़फड़ाए पर शब्द कोई न निकले।

"वो क्या है मैं अभी-अभी नैना को मूर्ख बनाकर आया हूं। तेरी ही तरह भोली जो है...मैंने उसके यहां अर्जुन को बुलाया ताकि उसकी हत्या करूं...पर यकायक ही अर्जुन को छोड़ आया। नैना समझी कि

मैं देवता हूं...भगवान हूं...और भगवान तो कत्ल कर ही नहीं सकता न?"

"क...क्यों छोड़ दिया आपने अर्जुन को?"

"ताकि वो मुझे बचा सके। कानून से बचा सके। अब कानून उसे राखी और अर्चना की हत्याओं की सजा देगा। तो ऐसे में मैं कबूल करूंगा कि पहले वाली सातों हत्याएं मैंने की हैं। तब अर्जुन मुझे देवता समझता, भगवान समझता मेरे द्वारा की हत्याएं भी अपने सिर कबूल लेगा। वो हमेशा ऐसा ही करता है। कुछ कत्ल खुद करता है और उसमें जब फंस जाता है तो बाकी कत्लों के गुनहगारों को बचाने के वास्ते वाकी कत्ल भी कबूल लेता है। फिर वो भला मुझे न बचाएगा. ..क्यों न बचाएगा। जरूर बचाएगा। देख लेना। मेरा अर्जुन है ही ऐसा।"

"पर इससे आपको क्या फायदा होगा?"

"फायदा ही फायदा होगा। अर्जुन कानून के हाथों मर जाएगा और मेरा इंतकाम पूरा हो जाएगा। मैं काली की मौत का इंतकाम भी ले लूंगाऔर कानून की नजर में विक्षिप्त हत्यारा भी न समझा जाऊंगा। फिर मेरा फ्लैट भी मेरा। अर्जुन का फ्लैट भी मेरा। और काली हवेली तो तेरे बाद है ही मेरी...मैं फिर से धन्ना सेठ। फिर से राजा हरी नारायण।"

"मुझे यकीन नहीं आ रहा कि आप इतने बड़े धूर्त हो सकते हैं।" उसके होंठों से निकला।

"जमाने ने बना दिया। तुम औरतों ने बना दिया। तू बलबीर से बेवफाई न करती। न नैना अर्जुन से बेवफाई करती। न मैं इतना धूर्त बनता...चल शाबास...अब मरने के लिए तैयार हो जा।"

"ब...।" तभी शकुंतला शर्मा ने बचाओ कहने के लिए चिल्लाना चाहा, कि पंडित हरी नारायण ने एकाएक नाल उसके मुंह में घुसेड़ दी।

शकुंतला शर्मा की आंखों के सामने तत्काल ही लूका की मौत का दृश्य आ गया।

कुछ इसी ही तरह उसने लूका को मरने पर मजबूर किया था।

"एक शर्त पर छोड़ सकता हूं तुझे। नाल उसके मुंह में हिलाता पंडित मुस्कुराया।"

"ब...खड़...खड़...ब...बोला।" खड़खड़ाती नाल की आवाज के दौरान ही शकुंतला बोली।

"अगर तू चीखे नहीं...और अपने सारे गुनाह कबूल कर ले।"

शकुंतला ने उसी घड़ी सहमति में गर्दन हिलाई।

पंडित ने उसी पल नाल निकाली।

शकुंतला आंखें बद किए लम्बी चैन की सांस लेती चली गई। फिलहाल जान बचाने का यही तरीका था कि पंडित की हां में हां मिलाती जाए मगर...यह तरीका भी उसे रास न आया।

एकाएक ही उसकी कनपटी पर नाल टिकी और आवाज गूंजी'धांय।'

शकुंतला का तब पता चला जब गोली कनपटी में घुसती चली गई।

उसकी आंखें तब खुलीं, जब आंखें बंद होने का ही वक्त आ गया।

उसकी हैरत शुदा आंखें खुलीं और शरीर तख्त पर ही लुढ़कता चला गया।

गोली की आवाज पूरी इमारत में बम के विस्फोट की तरह गूंजती चली गई।

"मजबूरी थी बहू! तेरी चीख न निकले इसलिए तुझे बहलाना जरूरी था। बहाना जरूरी था। कुर्सी की चमक और दौलत की दमक ने तुझे डंक मारने वाली वो नागिन बना दियाजिसका जिंदा रहना खतरनाक था। जिंदा रहकर तू पता नहीं किस-किस को और डसती।" पंडित हरी नारायण रिवॉल्वर चौकस करता हरकत में आ गया।

अब उसने इस हत्या से बच निकलने का इंतजाम करना था।

उसके शब्दों और हरकतों ने साबित कर दिया था कि वही विक्षिप्त हत्यारा है जो नैना को शीशे में उतारकर आया था, ताकि नैना अर्जुन को अपने रंग में रंगेऔर अर्जुन उसे देवता-भगवान मानता इन सब हत्याओं से बचा सके।

अगले ही पल हैडक्वार्टर में हाहाकार मच गया।

पंडित एकाएक रिवॉल्वर पर मौजूद अपने फिंगरप्रिंट कुर्ते के कपड़े से पोंछने लगा।

फिर उसने एक साधारण-सी हरकत की और दीवार की तरफ भागा।

उसी पल लॉकअप के नजदीक भागते कदमों की आवाजें सुनाई देने लगीं।

"खून...खून।" पंडित चिल्लाने लगा।

❑❑❑

देवसिंह से बात करने के बाद अर्जुन ने बच्चू तिवारी वाली

ओमनी वापिस हैडक्वार्टर की तरफ मोड़ ली।

राधा बेहोश अभी भी पिछली सीट पर पड़ी थी।

अर्जुन ने उसी पल नैना के घर का नम्बर मिलाया।

"हैल्लो...देवसिंह भैया!" दूसरी तरफ आई०डी० कॉलर पर देवसिंह का मोबाइल नंबर देख नैना हड़बड़ी में बोली"वो कम्बख्त कहां है?"

"वो कम्बख्त ही बोल रहा हूं।" अर्जुन आहत मन से बोला।

"अर्जुन तुम!" नैना हर्षित आवाज में चहकी।

"पंडित वहीं है।" अर्जुन उसकी खुशी नजरअंदाज करता बोला।

"पंडितजी नहीं हैं। तुम भी मत आना! आर्मी पहुंच रही है यहां पर...वो तुम्हें मार डालेगी।"

"जानता हूं। मर भी जाऊंगा तो किसी को फर्क थोड़े न पड़ जाना है।" स्टेयरिंग कैंटोनमेंट एरिया की तरफ घुमाता अर्जुन बोला।

"पड़ेगा अर्जुन, फर्क पड़ेगा। तुम्हारी मौत कोई नहीं चाहता न मैं...न पंडित।"

"फोन पंडित को दे। जरा उसका मुर्गा बांधूं।"

"बोला न वो नहीं है यहां पर...और पंडित को लेकर तुम्हारे दिमाग में जो शक-शुबा है...उसे दफा करो...पंडितजी भले आदमी हैं। वो हमें मिलाना चाहते थे। तभी तुम्हें यहां बुला रहे थे।"

"क्या बकती है?"

"सही बक रही हूं...पंडितजी ने कोई कत्ल-वत्ल नहीं किया। सब कत्ल उनके पौते काली शर्मा ने किए। उसे बचाने की खातिर, छिपाये रखने की खातिर पंडितजी अपने आपको विक्षिप्त हत्यारा साबित करने में लगे हैं।"

"क्या बकती है, वो 14 साल का बच्चा भला जवान लड़कियों की हत्या क्यों करेगा?"

"वो इसलिए क्योंकि वो बच्चा नहीं है...उसमें बलबीर शर्मा यानि अपने बाप की आत्मा थी...उसे शकुंतला शर्मा से नफरत थी. ..उसे औरत जात से नफरत थी।"

"सही नफरत थी। औरत जात है ही इसी काबिल। खैर, मैं नहीं मानता ये आत्मा-वात्मा का चक्कर।"

"तुम अपनी हांकोगे तो मैं फोन रखती हूं।" नैना भुनभुनाई।

"तो रख। यहां कौन-सा फर्क पड़ जाना है।"

"सुनो...पूरी कहानी सुन लो। वो आत्मा का नहीं, खून का चक्कर है। पंडितजी कहते हैं उनके परिवार के खून में कोई खतरनाक

कीड़े हैं...।"

"मैं जानता हूं...वो कीड़ा जिंकी के दिमाग में भी पहुंच चुका हैऔर मेरे खून से निकल चुका है। खैर, आगे?"

फिर नैना पंडित से हुआ वार्तालाप अक्षरशः बताने लगी।

तभी ओमनी की पिछली डिग्गी से अर्जुन को कोई हलचल सुनाई दी।

उसकी निगाहें सामने रियर-वियू-मिरर की तरफ उठीं।

"हैंड्सअप हरामजादे।" तभी पीछे से आवाज गूंजी।

"गाड़ी कब्जानी हो तो पहले उसकी मुकम्मल तलाशी ले लिया कर।" दूसरी आवाज गूंजी।

अर्जुन की निगाहें फटी-की-फटी ही रह गयीं।

पिछली डिग्गी में रिवॉल्वर ताने जगदीश मुखी और मनीराम शंकर दिखाई पड़ रहे थे।

"गाड़ी कहीं नहीं जाएगी।" मनीराम दांत किटकिटाता बोला।

"गाड़ी सीधी पुलिस हैडक्वार्टर जाएगी।"

"नहीं तो पहले राधा गोली खाएगी...फिर राधा का देवर गोली खाएगा।"

"ये कौन है?" उधर नैना फोन पर बोली।

"तू फोन चालू रख। ऐसे गधे आए दिन मेरे पीछे लगे रहते हैं।"

नैना ने अपना वार्तालाप जारी रखा।

"तुम यहां कैसे?" अर्जुन ने दोनों से पूछा।

"वो बच्चू तिवारी जी दिल्ली जा रहे थे हम भी साथ आ निकले। सोचा, तुझसे कुछ हिसाब ही चुकता कर लें।" जगदीश मुखी फुंफकारा।

"सोचा अपनी रिवॉल्वर ही वापिस ले लूं जिससे महा बदौलत ने अर्चना जी को मारा था।" मनीराम गुर्राया।

"ये क्या बोल रहे हैं?" नैना की आवाज सुनाई दी।

"बोल नहीं भौंक रहे हैं। कुत्ते भौंकते ही तो हैं। देवसिंह का फोन आए तो उसे बता देना कि अर्जुन सीधा हैडक्वार्टर जा रहा है। हॉस्पिटल नहीं आ रहा है। और पंडितजी को हौसला देना। जब तक अर्जुन है उन्हें कुछ नहीं होगा।"

"कमीने! अपनी फिक्र कर। साले जान सूली पर है और दूसरों की फिक्र में मरा जा रहा है।" मनीराम शंकर दहाड़ा।

"जो दूसरों के लिए मरते हैं वो अपनी मौत नहीं मरते...हिम्मत है तो चलाओ गोली।" अर्जुन मुस्कुराया।

"हम क्यों चलाएं। अरे हमने तो रंगे हाथ तुम्हें बच्चू तिवारी और उसके गुर्गों की हत्या करते देखा हैऔर अब तू हमारे रहमोकर्म पर है। हम तुझे गिरफ्तार करायेंगे...हमारी प्रमोशन होगी।"

"बच्चू तिवारी को नहीं मारता तो वो मुझे मार देता...अपनी जान बचाने के लिए जान लेना जरूरी है। मजबूरी है। रही बात तुम्हारीतो तुम बेशक कमिश्नर बनो...मुझे कोई ऐतराज नहीं।"

"ऐतराज करके तो दिखा। राधा को खत्म न कर दें तो हम भी. ..।"

"तभी तो ऐतराज नहीं कर रहा। राधा की खातिर ही तुम्हारे साथ जा रहा हूं। वरना तुम्हारे जैसे गधे तो मैं हर रोज हांकता हूं...बिना डंडे के हांकता हूं।"

"खामोश।" मनीराम शंकर डिग्गी से निकलकर राधा की सीट पर आ गया।

जगदीश मुखी भी कूदकर उसकी पीठ के पीछे पहुंचा और उसने गन अर्जुन की गुद्दी पर टिका दी।

"अफसोस तो हो रहा होगा...कि तूने क्यों न पूरी ओमनी की तलाशी ली? क्यों नहीं हम तुझे दिखे?"

"मुझे समझ नहीं आता।" अर्जुन नेवीकट सुलगाता गाड़ी चलाता बोला"जब तुम गाड़ी में ही थे तो डिग्गी में क्यों छिपे रहे?"

"क्योंकि बच्चू तिवारी ने ऐसा कहा था हमें। वो बोला था कि मुमकिन है अर्जुन ओमनी तक पहुंच जाए। तुम डिग्गी में छिप जाओ ताकि मौका मिलने पर उस पर कब्जा कर सको। बस...हम छिप गए।"

"अच्छा किया। सामने नजर आते तो बच्चू तिवारी की बगल में ही पड़े होते। सड़क के किनारे-किनारे। आते-जाते लोग हैरान हो रहे होते...च...च...च करते निकल रहे होते, तुम्हारी लाशों की बगल से।"

"चुप...चुप, और बोला तो मैं राधा को गोली मार दूंगा।"

"ऐ!" अर्जुन ने उसी पल मुड़कर मनीराम का गला पकड़ लिया"राधा का नाम दोबारा जबान पर आया तो यहीं टेंटुआ दबा दूंगा। चल रहा हूं...तुम्हारे साथ। बोला नचल रहा हूं।"

मनीराम जैसे सांड की घिग्घी बंध गयी।

❑❑❑

कमिश्नर नारंग अपने मातहत अधिकारी के साथ जिस समय लॉकअप में घुसा तो पंडित दीवार से लगा थर-थर कांप रहा था।

उसके हाथ दाएं-बाएं उछल रहे थे और निगाहें सामने शकुंतला के तख्तपोश पर थीं।

वो सदमे की सी हालत में था और कभी भी दिल का दौरा पड़ सकता था।

कमिश्नर नारंग ने निगाह तख्तपोश की तरफ फेरी।

शकुंतला शर्मा तख्त पर चित लेटी थी और उसके एक हाथ में रिवॉल्वर का रुख उसकी कनपटी की तरफ था। नाल में से अभी भी धुआं निकल रहा था। कनपटी से अभी भी खून निकल रहा था। साफ साबित हो रहा था कि शकुंतला शर्मा ने खुदकुशी की है।

यही हरकत पंडित हरी नारायण शर्मा ने की थी। रिवॉल्वर पर से अपने फिंगरप्रिंट्स साफ करके रिवॉल्वर शकुंतला शर्मा के हाथ में थमा दिया था ताकि मामला आत्महत्या का ही बन जाए।

"ओह माई गॉड!" कमिश्नर नारंग के होंठों से निकला।

पंडित हरी नारायण अभी भी कांपता ही रहा। उसके होंठ फड़फड़ाए पर शब्द न निकले।

उधर दोनों कांस्टेबल पैप्सी और लिमका लेकर हाजिर हुए। दूसरे के हाथ में बंडल-माचिस था।

कमिश्नर नारंग उन्हें खा जाने वाली निगाहों से घूरने लगा, पर बोला कुछ नहीं। क्या बोलता...उसके महकमे की लापरवाही की ही वजह से भरेपूरे हैडक्वार्टर में इतना बड़ा हादसा हो गया था।

अब उसने यह मामला दबाना भी था, नहीं तो महकमे की बदनामी होती और पत्रकार लोग सवाल-जवाब करते।

"कैसे हुआ यह सब?" नारंग होंठ भींचे पंडित की तरफ मुड़ा।

"व...वो...वो...!" पंडित शकुंतला की तरफ हाथ नचाता फड़फड़ाया और फिर उसके घुटने मुड़ने लगे।

"अधिकारी! इन्हें ले जाओ। कहीं ऐसा न हो, एक डैडबॉडी और उठानी पड़े।"

"ज...जी।" अधिकारी पंडित की तरफ मुड़ा और पंडित हरी नारायण को सहारा देकर उठाने लगा।

"बहू...ब...हू।" पंडित हरी नारायण की यकायक रामलीला शुरू हो गयी।

"चुप।" नारंग मुंह पर उंगली रखता दबी आवाज में चीखा"खबरदार, जो शोर किया तो।"

"अरे क्यों!" पंडित हरी नारायण शर्मा एकाएक स्प्रिंग वाले खिलौने की तरह अधिकारी की गिरफ्त से निकला"क्यों न शोर डालूं

मैं। हैडक्वार्टर में बहू ने अपने पास पिस्तौल रख रखा थाऔर आपको खबर नहीं...क्यों...।"

"शकुंतला जी के पास कोई रिवॉल्वर नहीं था।" अधिकारी गरजा।

"नहीं था तो ये सब क्या है? कैसे हो गया? रिवॉल्वर उड़कर आ गया बहू के पास...अब आप कहेंगे कि ये मेरी शकुंतला नहीं है। मेरी बहू की लाश नहीं है। क्यों।" पंडित हरी नारायण ने फिर हाथ नचाया।

"पंडितजी रिवॉल्वर आप छिपाकर लाए थे।" कमिश्नर नारंग फुसफुसाया।

"तो मेरी तलाशी लेते। क्यों न ली...अरे वाह...देखा भाइयों!" पंडित हरी नारायण दरवाजे के बाहर पुलिसकर्मियों की ओर देखता चिंघाड़ा"लापरवाही पुलिस की...और मुजरिम मुझे बताया जा रहा है। भला मैं रिवॉल्वर छिपाकर लाऊंगा। क्यों?"

सभी पुलिसकर्मी पंडित को खा जाने वाली निगाहों से घूरने लगे।

कमिश्नर नारंग फिर भी कुछ न बोला। दूसरा अहम सवाल जो आ खड़ा हुआ था कि मुख्यालय में पंडितजी की तलाशी क्यों नहीं ली गयी? यह बात भी खुलती तो बतंगड़ बनताऔर हैडक्वार्टर की सुरक्षा-प्रणाली पर प्रश्नचिन्ह लगता।

"और तुम क्यों गए थे बाहर?" अधिकारी एकाएक हवलदारों की तरफ घूमा।

"जी...वो बाबा ने...ये मंगाए थे।" ठंडे दिखाता सुजान सिंह बाबा की तरफ घूमा।

"ये भी मंगाया था।" दूसरे हवलदार ने बंडल-माचिस दिखा दिया।

"तो दो हवलदार ही क्यों गए...पूरा हैडक्वार्टर साथ ले जाते।" नारंग दांत पीसता फुंफकारा।

"जी वो गलती हो गयी साहब जी!"

नारंग ने कातर निगाह पंडित हरी नारायण की तरफ फैंकी।

"मैंने मंगाए थे ठंडे। बहू की जमानत कराने आया था। घबराई पड़ी थी बेचारी। तभी ठंडे मंगाए थे। उसे तसल्ली देने के लिए मंगाए थे।"

"तसल्ली देने के लिए मंगाए थे ठंडे या उसे ठंडा करने के लिए।"

"देख रहा हूं, देख रहा हूं।" पंडित हरी नारायण उंगली दिखाता

गरजा"अब बहू के कत्ल का शक मुझ पर किया जा रहा है। मैं अभी बुलाता हूं प्रैस को। अभी बुलाता हूं अर्जुन को। वही पूछेंगे तुमसे कि...।"

"किसी को नहीं बुलाएंगे आप...ले जाओ इन्हें।" नारंग ने उसे देखते हुए तीखे स्वर में कहा।

अधिकारी हरी नारायण को बबुए की तरह धकेलता बाहर ले गया।

"अधिकारी को कहा।" पीछे नारंग सुजान सिंह से बोला"बाबा जी को दिल्ली से इतनी दूर ले जाए कि उन्हें दिल्ली वापिस पहुंचते-पहुंचते हफ्ता लगे। तब तक शकुंतला का पंचनामा और क्रियाक्रम पुलिस ही कर देगी। कोई नहीं मुंह खोलेगा कि बुड्ढा यहां जमानत के वास्ते आया था। कोई कागज नहीं मिलेगा यहां से। बुड्ढा साबित करते-करते मर जाएगा...और हमारे पास ऐसे मामलों से निबटने के रटेरटाए जवाब होते ही हैं।"

सुजान सिंह तत्काल बाहर निकल गया, अधिकारी के कान भरने। वो क्या जानते थे कि बुड्ढा तो चाहता ही यही है।

वो बुड्ढे को नहीं बुड्ढा उन्हें...बनाकर निकल रहा है।

"सर, इस मौत को क्या मामला बनाया जाए?" दूसरा इंस्पैक्टर शरण शर्मा बोला।

"लिख दो कि शकुंतला ने यकाएक तुम्हारी सर्विस रिवॉल्वर छीनी और आत्महत्या कर ली। अब बुलाओ प्रैस रिपोर्टर्स को। यही बयान दो। तभी जान छूटेगी प्रैस से।"

"जी सर!" शरण शर्मा एड़ियां बजाता बोला"बुड्ढा जब तक गाना गायेगा तब तो तो फिल्म ही पिट चुकी होगी।" लाश की तरफ इशारा किया गया।

नारंग सहज भाव से लॉकअप से बाहर निकल गया।

फिर शकुंतला शर्मा की लाश से ताल्लुक रखती आखिरी औपचारिकताएं पूरी होने लगीं।

इस हत्या से एक नतीजा तो निकला ही था कि पुलिस हैडक्वार्टर में हत्या करना सबसे सुरक्षित और आसान तरीका है।

पुलिस बाकायदा कातिल को इतनी दूर छोड़ आती है कि हकीकत खुलते-खुलते इतनी पुरानी हो जाए कि पता नहीं चले कि हकीकत है क्या।

❑❑❑

नारंग अभी गलियारा लांघता अपने विशिष्ट कक्ष में घुसता कि

उसे हैडक्वार्टर के मुख्य फाटक पर अर्जुन नागपाल नजर आया।

उसके हाथों में हथकड़ियां थीं और जगदीश मुखी तथा मनीराम शंकर अर्जुन को दाएं-बाएं से धकेलते भीतर घुस रहे थे।

नारंग की आंखों में उसी पल चालाक लोमड़ी की सी चमक जागी और वो तत्काल अपने कक्ष में भागा।

उसने इंटरकॉम का बटन दबाया और गेट पर सिक्योरिटी के लिए खड़े पुलिसकर्मी को फोन किया।

"यस सर!" उधर पुलिसकर्मी ने फोन उठाया।

"बाहर अर्जुन नागपाल तुम्हारे पास पहुंच रहा है।" खिड़की से पर्दा हटाता नारंग चहका"उसे जरा रोककर रखना। दस मिनट बाद ही भीतर आने देना।"

"जी सर!" सिक्योरिटीमैन बोला।

नारंग ने खिड़की से देखा कि अर्जुन नागपाल गुड़गांवा पुलिसकर्मियों के साथ गेट लांघता सिक्योरिटी वाले के पास पहुंच ही रहा है।

फिर पुलिसमैन मनीराम शंकर और जगदीश मुखी के साथ बातें करने लगा।

यह दृश्य देखते हुए नारंग ने अपना मोबाइल उठाया और सब-इंस्पैक्टर शरण शर्मा का नम्बर मिलाया।

"जी सर!" उधर से शरण शर्मा तत्परता से चहका।

"भुई! मुर्गा आ रहा है। सोच रहा हूं कि शकुंतला शर्मा का हत्यारा उसी को ही बना दिया जाए महकमा भी बदनाम होने से बच जाएगा। कोई कह तो न सकेगा कि हैडक्वार्टर में भी लोग आत्महत्या कर लेते हैं।"

"सर...सर! लोग फिर भी तो कहेंगे कि हैडक्वार्टर में ही लोगों की हत्या हो रही हैं।"

"अरे तुम अर्जुन को नहीं जानते। वो पहले भी ऐसा कांड कर चुका है, इस बार और कर देगा तो क्या फर्क पड़ जाना है। वो तो पहले ही विक्षिप्त हत्यारा घोषित हो चुका है। ऐसे में वो अपनी कट्टर दुश्मन शकुंतला की हत्या कर भी देगा तो पुलिस की कौन-सी मूंछ टेढ़ी हो जायेगी।"

"ओह! यानि मुर्गा अर्जुन नागपाल है। आपका कट्टर दुश्मन।"

"ये सब छोड़ो...अब सुनो कि तुम्हें क्या करना है...ताकि शकुंतला का कातिल अर्जुन बन जाए।" फिर कमिश्नर नारंग शरण शर्मा को फुसफसाकर समझाता चला गया।

शरण शर्मा हूं-हां करता समझता चला गया।

यूं अर्जुन के ताबूत में एक कील और ठुकी। वो कील थी वो रिवॉल्वर जिससे शकुंतला का खून हुआ था। वो रिवॉल्वर अर्जुन का ही था और जिसे अर्जुन के ही फ्लैट से पंडित ने चुराया था।

इस बार उस पिंजरे से अर्जुन की फरारी मुश्किल थी।

मगरमच्छों के जबड़े से मछली का निकल भागना मुकद्दर की ही बात होती हैऔर वो तो पैदाइशी मुकद्दर से फक्कड़ था।

नारंग की मुस्कान गाढ़ी हो गयी, जब अर्जुन उसे दोनों इंस्पैक्टरों के साथ अपनी दिशा में बढ़ता नजर आया।

कमिश्नर नारंग सहजता से अपनी कुर्सी पर बैठा और सिगार सुलगाने में मशगूल हो गया। फिर उसने चेहरा एक फाईल में धंसा लिया।

"में आई कम इन सर?" दो मिनट बाद मनीराम शंकर की आवाज गूंजी।

"कम इन।" उसने चेहरा उठाया।

उसे हथकड़ियों में जकड़ा अर्जुन दोनों अधिकारियों के साथ घुसता नजर आया।

"तुम!" नारंग ने चिहुंकने का खूबसूरत अभिनय किया।

अर्जुन के होंठों पर जहरीली मुस्कान उभरी, पर जवाब जगदीश मुखी ने दिया।

"सर, ये भगोड़ा धौला कुआं रोड पर मंडरा रहा था। हम यहां आ रहे थे कि धौला कुआं क्रॉसिंग पर ही हाथ लग गया। हम यहां ले आए। आपकी नगरी में। आपके चरणों में। धौला कुआं पर इसने बच्चू तिवारी सहित तीन गुर्गे उड़ा दिये।"

"अच्छा किया। आर्मी हॉस्पिटल से इसके निकल भागने की खबर मुझे मिल चुकी है। मुखी साहब आपने ईनाम के काबिल काम किया।"

"हं...हं...हं।" मुखी और मनीराम धूर्तता से हँसने लगे।

अर्जुन के होंठों पर मुस्कान कातर हो उठी।

फिर वो तीनों बैठे और कमिश्नर नारंग ने कुछ कागजी कार्यवाही पूरी की। फिर टेबल-बैल बजायी तो शरण शर्मा हाजिर हुआ।

"इस मुजरिम को ले जाओ। लॉकअप में डालो।"

"जी सर!" शरण शर्मा, मनीराम और जगदीश मुखी उठे और अर्जुन को लॉकअप के भीतर ले जाने लगे।

"अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे।" अपनी पुश्त पर धंसता, पीछे झुकता, नारंग चहका"तुम यहीं रुको गुड़गांवावासियों! शरण अपना

काम कर लेगा।"

"जी सर!" मनीराम तथा मुखी झेंपते हुए कमिश्नर की तरफ लौटे"कोई खास बात है?"

"भई तुम्हारे दस्तख्त लेने हैं ताकि तुम्हारी सिफारिश ऊपर पहुंचा सकूं। अब इतना बड़ा तीतर पकड़ा है तुम दोनों ने, तो प्रमोशन तो होगी ही। तरक्की जरूरी है।"

"हीं...हीं...हीं।" मनीराम उन्हें मूर्खों की तरह देखने लगा।

उधर दरवाजे से अर्जुन बाहर निकल पड़ा था जबकि उसकी हथकड़ी का कड़ा थामे शरण शर्मा उसके पीछे मुड़ा।

कमिश्नर नारंग ने उसी पल आंख झपका दी।

शरण सिंह सहमति में सिर हिलाने लगा।

कमिश्नर को आंख झपकाते सामने बैठे जगदीश मुखी ने तो देख लिया पर दरवाजे से बाहर निकला अर्जुन न देख पाया।

फिर शरण सिंह अर्जुन को लेकर निकला।

जगदीश मुखी ने पैनी निगाहों से कमिश्नर नारंग को देखा कि नारंग उनकी तरफ दो कोरे कागज बढ़ाता बोला

"तुम लोग इस कोरे कागज पर साइन करो और निकलो यहां से। बाकी की सिफारिश मैं कर दूंगा तुम्हारी। रिपोर्ट मैं खुद ही लिख लूंगा कि कितनी बहादुरी से तुमने अर्जुन नागपाल को पकड़ा।"

"जी।" मनीराम हर्षित अंदाज में बोला जबकि जगदीश मुखी ने अर्थपूर्ण निगाहों से सहमति दर्शायी।

उसे मामला कुछ रहस्यमयी नजर आ रहा था, पर पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बहरहाल उन दोनों ने हस्ताक्षर किए और वहां से जाने के लिए उठे।

तभी कमिश्नर का फोन बजा।

"यस!" कमिश्नर फोन पर बोले।

"सर!" कहीं से कमिश्नर का पी०ए० बोला"संजय चुग का फोन है, आपसे बात करना चाहता है।"

"संजय, वो चीफ रिपोर्टर। दोलाइन दो।"

"जी सर।" फिर दूसरी तरफ से लाइन ट्रांसफर की गयी।

दोनों की छाती फूलकर कुप्पा हो गयी।

"गुड नून सर!" दूसरी तरफ से यकायक संजय चुग की अदब भरी आवाज सुनाई दी"कैसे हैं?"

"नून...नून।" सिर हिलाता कमिश्नर बोला"बढ़िया हैं। कहिए

कैसे याद किया?"

"सर, पता चला कि अर्जुन आर्मी हॉस्पिटल से भाग निकला है। कुछ खबर लगीकहां है?"

"मिस्टर संजय! आपके लिए अच्छी खबर है। शायद न भी हो. ..क्योंकि मैं जानता हूं कि आप अर्जुन के अच्छे दोस्तों में से हैं।"

"खबर क्या है सर!" उधर से संजय दो टूक बोला।

"भई अर्जुन गिरफ्तार हो गया हैं। धौला कुआं क्रॉसिंग पर हत्याएँ करते उसे रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया है और गिरफ्तार करने वाले हमारे गुड़गांवा पुलिस के दो आदमी हैं। दोनों यहीं हैं, आप चाहें तो उनका इन्टरव्यू ले सकते हैं।"

जगदीश मुखी और मनीराम शंकर खुश हुए, पर जगदीश मुखी को दाल में काला लग रहा था।

"रियली! अर्जुन गिरफ्तार हो गया। हैडक्वार्टर में है, मैं अभी आया सर!"

"आओ...आओ। हो सके तो बाकी की बिरादरी को भी लेते आओ। मैं चाहता हूं कि गुड़गांवा पुलिस की वाहवाही हर न्यूज चैनल पर दिखाई जाए।"

"ठीक है बाकी न्यूज चैनल भी पहुंच रहे हैं सर! थैंक्स फॉर कोऑपरेशन।"

कमिश्नर ने रिसीवर पटक दिया।

फिर उसके अधरों पर धूर्त मुस्कान नाची और उसने दमदार कहकहा लगाया।

"सर, कुछ जल्दी ही रिवॉर्ड मिलने जा रहा है हमें।" जगदीश मुखी एकाएक बीच में ही बोल पड़ा"पता नहीं क्यों...मुझे विश्वास नहीं हो रहा।"

"ऐसा ही होता है। शोहरत अचानक ही मिलती है और अचानक ही छिनती है।"

'ट्रिन...ट्रिन।' तभी कमिश्नर के मोबाइल की घंटी बजी।

"हैल्लो।" कमिश्नर तत्काल स्क्रीन पर नम्बर देखता बोला"कहो।"

"सर, अर्जुन को अभी कमरे में बद कर दिया है। लॉकअप में कब ले जाऊंप्रैस वाले कब आ रहे हैं?"

"अरे प्रैस वालों का ही तो अभी फोन आया था। वो आ ही रहे हैं। जब बाहर पार्किंग में प्रैस वालों की गाड़ियां पार्क होती देखोतब ले जाना उसे।"

"लॉकअप में न?"

"और क्या, जानते नहीं, यहां गुड़गांवा के मेहमान मौजूद है।"

"सॉरी सर! समझ गया कि गुड़गांवा वालों के सामने आप खुल के नहीं बात कर रहे हैं। ऐनी हाओ...सर! आगे का प्लान तो वही है न...जो आपने समझाया था।"

"ऑफकोर्स। शरण...शरण...क्या हो गया है तुम्हें? एक बार में तुम्हें बात समझ क्यों नहीं आती?"

"पता नहीं, क्यों लग रहा है कि अर्जुन शकुंतला के कत्ल में रंगे हाथ पकड़ा नहीं जायेगा।"

"क्यों नहीं जाएगा। अरे भई, हम किसलिए प्रैस वालों को बुला रहे हैं। इसीलिए तो। अरे कोई फोटो खिंचवाने का शौक थोड़े ही न है हमें...फोटो तो अपने गुड़गांवा वालों के ही खिचेंगे...और...।" कमिश्नर यकायक चुप हो गया।

"अर्जुन तमाशा बन जाएगा। शकुंतला जी के कत्ल में रंगे हाथ धर लिया जायेगा।" ऊपर से शरण शर्मा ने कमिश्नर के शब्द पूरे किये।

कमिश्नर ने हांमी भरते मोबाइल ऑफ कर दिया।

❑❑❑

'टूं...टूं।' दस मिनट बाद ही कई न्यूज चैनलों की गाड़ियां हैडक्वार्टर की पार्किंग में पहुंचने लगीं और पार्क होने के लिए जगह तलाश करने लगीं।

उन्हें कमिश्नर या अर्जुन तक पहुंचने में पांच-दस मिनट लग सकते थे।

कमरे में बैठे अर्जुन ने भी यह आवाजें सुनीं तो सोच में पड़ गया।

तभी दरवाजा खुला और शरण शर्मा घुसा और अर्जुन की हथकड़ी का कड़ा पकड़ता बोला

"चलो।"

अर्जुन खड़ा हो गया। उसे शरण शर्मा कुछ हड़बड़ी में नजर आया।

शरण शर्मा अर्जुन को उस कॉरीडोर में ले जाने लगा जहां पर चार लॉकअप बने हुए थे। शरण शर्मा हड़बड़ी में आगे भाग रहा था जबकि अर्जुन नागपाल उसके पीछे स्वतः ही खिंचता हुआ भाग रहा था।

"बात क्या है इंस्पैक्टर? आज हैडक्वार्टर में मुझे कुछ अजीब-सी बू महसूस हो रही है?" अर्जुन पीछे खिंचता-खिंचता चहका।

"प्रैस वाले आ गए हैं।" शरण शकुंतला वाले लॉकअप के बाहर

पहुंचता हुआ हड़बड़ाया"अब तुम्हारा भगवान ही मालिक है। मैं तुम्हें बचा नहीं पाऊंगा दोस्त।"

"मतलब?" अर्जुन की खोपड़ी घूमी।

तब तक शरण शर्मा लॉकअप का ताला खोलता अर्जुन को भीतर धकेल चुका था। फिर वो बाहर से लॉकअप की सांकल को ताला लगाने लगा।

एकाएक उसने ताले की चाबी जेब में डाली और पिछली जेब से दूसरी चाबी निकाली और अर्जुन की हथेली में थमा दी।

"ये क्या है?" अर्जुन चाबी देखता बोला।

"इसी ताले की दूसरी चाबी है। स्टोर रूम से चुराने गया था। इसीलिए तुम्हें कुछ देर कमरे में बद करना पड़ा। पर प्लीज...यह बात किसी को पता न चले कि मैंने तुम्हें दस मिनट के लिए कमरे में बंद रखा था। न पुलिस को, न प्रैस वालों को। मेरी नौकरी चली जाएगी।"

"ओह!" चाबी देखता अर्जुन बोला"यानि तुम मुझे लॉकअप से फरार करना चाहते हो।"

"हां, बशर्ते कि तुम हो पाओ।"

"पर दोस्त!" अर्जुन उसकी हथेली थपथपाता बोला"इस मेहरबानी की वजह?"

"मैं जानता हूं। तुम देवसिंह के दोस्त होऔर देवसिंह मेरा आदर्श। तुम निर्दोष हो। इसलिए हो सके तो यहां से निकल भागो। अगर पकड़े गए तो यही कहना कि तुम पहले से ही लॉकअप में बंद हो। वरना मेरी नौकरी...।"

"कुछ नहीं होगा तुम्हारी नौकरी को। मेरा विश्वास रखो।" अर्जुन ने उसका हाथ थपथपाया। यकायक उसकी आंखें भीगीं"देवसिंह की दोस्ती ने मुझे कितना कुछ दिया है पर मैं बदनसीब...उसके लिए कुछ न कर सका। कभी उसके काम न आया।"

"ये वक्त जज्बाती बातों में बरबाद करने का नहीं है। उधर पर्दे के पीछे रिवॉल्वर मौजूद है। तुम्हारे काम आयेगी।"

अर्जुन ने पीछे चेहरा मोड़ा तो पार्टीशन वाली दीवार के बीचो-बीच एक पर्दा टंगा नजर आया।

"पहले से ही जैसे मेरी फरारी का इंतजाम किए बैठे हो।" अर्जुन ने उसका हाथ कृतज्ञता से सहलाया।

उधर कॉरीडोर में अब तक भागते रिपोर्टरों के कदम पड़ने लगे। अपने वीडियो कैमरे उठाए वो तेजी से बढ़ रहे थे।

"नहीं। तुम्हारी फरारी का इंतजाम तभी किया जिस दौरान तुम्हें

10 मिनट के लिए कमरे में बद रखा। ओ०के०।" उसका हाथ थपथपाता शरण निकला"अपना ख्याल रखना दोस्त।"

"वाह रे देवसिंह!" शरण शर्मा को कॉरीडोर से दूसरी तरफ भागता देख वो भीगे गले से बोला"तुझे खुदा मानते लोग हमारे जैसे मुजरिमों की भी मदद करने लगते हैं।"

फिर उसने तेजी से डुप्लीकेट चाबी द्वारा बाहर लगा ताला खोला और चाबी जेब में डाल ली। उसने ताला सांकल पर ही लटका रहने दिया।

अगले ही पल वो मुड़ा और पर्दे की तरफ भागा।

उसने पर्दा खींचा तो वो कहीं फंसा नजर आया।

उसने आहिस्ता से पर्दे को अपनी तरफ खींचा कि पर्दे के पीछे से ही एक जिस्म उसके ऊपर गिरता नजर आया।

अगले ही पल अर्जुन पीठ के बल गिराऔर वो जिस्म पर्दे के पीछे से निकलता उसके ऊपर गिरा।

'धांय...।' जोरदार झटके की बदौलत शकुंतला शर्मा के हाथ में फंसे रिवॉल्वर से स्वतः ही फायर हो गया और नाल धुआं छोड़ने लगी।

"नहींऽऽ।" लाश के नीचे दबा अर्जुन अपने ऊपर यह हाहाकार देखकर हड़बड़ा उठा।

उसने उसी पल लाश को अपने ऊपर से उछाला और उठ खड़ा हुआ।

शकुंतला की लाश उसके ऊपर से उलटती नीचे जा गिरी और छत की तरफ देखने लगी। रिवॉल्वर शकुंतला के हाथ से निकलकर फर्श पर जा गिरा।

"ये तो मेरा रिवॉल्वर है।" अगले ही पल रिवॉल्वर पर नजर पड़ी। उसने रिवॉल्वर उठाया"ये यहां कैसे पहुंचा?"

इस तरह उसके फिंगरप्रिंट रिवॉल्वर पर आ गये।

"ओ माई गॉड! मुझे फंसाया गया है जानबूझकर। प्रैस वालों के सामने।"

अगले ही पल वो दरवाजे की तरफ भागा।

"अरे देखो। चार नम्बर लॉकअप में गोली चली है।" बाहर से कोई चीखा।

फिर भागते कदमों की आवाजें आने लगीं।

अर्जुन ने सांकल में फंसा ताला निकालना चाहा पर वो सांकल में ही अटक गया।

ताले का गोल कुण्डा सांकल में शायद टाइट था या फिर वो

किसी ऐंगल विशेष से ही घुमाने पर बाहर निकलता था। या उसे जानबूझकर फंसाने के लिए ऐसा ताला लगाया गया था, जो मुश्किल से सांकल में फंसता और निकलता था।

'धांय-धांय।' तभी दो पुलिस इंस्पैक्टर उसकी तरफ अपनी रिवॉल्वरें ताने चले आए। एक जाना-पहचाना था, थोड़ी देर पहले ही अजीब-सी उससे पहचान हुई थी।

"हैंड्सअप।" उसी पल शरण शर्मा की फुंफकार गूंजी।

तभी प्रैस रिपोर्टरों का जमावड़ा वहां पहुंचता चला गया।

अगले ही पल सीखचों पर धुआं छोड़ती नाल के साथ अर्जुन खड़ा था और रिपोर्टर उसे आतंकित निगाहों से घूर रहे थे।

"क्या हो रहा है?" कहीं से नारंग की दहाड़ गूंजी।

नारंग की गेम शत-प्रतिशत सफल रही थी, पर मुस्कान उसकी गायब थी।

"ओह गॉड! ये औरत कौन है?" संजय की आंखें सींखचों के अंदर लाश पर पड़ीं।

"शकुंतला शर्मा। इसकी कट्टर दुश्मन।" नारंग बोला।

"और आपने मुझे मेरी कट्टर दुश्मन के ही चैम्बर में इसलिए डाल दिया ताकि मैं उसकी हत्या कर सकूं।" अर्जुन हँसा"वो भी इतनी आसानी से।"

सभी पत्रकारों ने नारंग को घूरकर देखा।

"वो इसलिए कि हम एक केस से संबंधित कैदी एक ही चैम्बर में रखते हैं।"

"हं!" अर्जुन हँसा"और बाकायदा उस कैदी पर इतनी नजरे-इनायत करते हैं कि वो रिवॉल्वर लेकर लॉकअप में घुसता है, जैसे कि मैं घुसा।"

"शटअप।" नारंग दहाड़ा।

"कमिश्नर जवाब दीजिए।" संजय सख्ती से बोला"लॉकअप में डालने से पहले हर कैदी की जामा तलाशी का कानून है। क्या आपने अर्जुन नागपाल की तलाशी ली?"

"व...वो जल्दबाजी में हम भूल गये। वैसे भी अर्जुन को मनीराम और जगदीश मुखी पकड़कर लाए थे।"

"और आपने उनके लाए मुजरिम को ऐसे ही लॉकअप में डाल दिया। उस मुजरिम को, जो घंटा पहले धौला कुआं क्रॉसिंग पर हत्याकांड कर रहा था। गोलियां बरसा रहा था।" संजय बोला"आपका फर्ज था कि तलाशी के बाद ही अर्जुन को लॉकअप में डालें। वो भी

अलग लॉकअप में न कि शकुंतला वाले लॉकअप में।"

"व...वो...वो।" कमिश्नर नारंग को जवाब न सूझा।

"गधा कितनी भी कोशिश कर ले, गधा ही रहता है। घोड़ा कभी नहीं बन सकता।"

"यू मीन मैं गधा हूं मैं...मैं।" कमिश्नर नारंग बोला।

"मैंने फाटक पर ही तुम्हें खिड़की से झांकता देख लिया था। तेरे सिक्योरिटी अफसर ने मेरी अच्छी तरह तलाशी ली थी। जब रिवॉल्वर उसे नहीं मिला तो यहां कैसे पहुंच गया? लॉकअप में कैसे पहुंच गया?"

"अब मैं क्या बताऊं कैसे पहुंच गया?" नारंग की अपने जूनियरों के सामने अच्छी खिंचाई होने लगी थी। एक तरफ संजय था और दूसरी तरफ अर्जुन।

"नारंग सर! शकुंतला की हत्या आपके पुलिस हैडक्वार्टर में पहले से ही हो रखी थीआप अभी इससे छुटकारा पाने की सोचते कि आपको दरवाजे पर मैं खड़ा नजर आ गया। आपने खड़े पैर मुझे ही बकरा बना डालाऔर अब खुद फंस गए। वो कहते है न सयाना कौवा हमेशा बीट पर ही बैठता है।"

"य...ये झूठ है। इसका फैसला अदालत में होगा।"

"मैं खड़े पैर साबित कर सकता हूं कि यह खून मैंने नहीं किया और अदालत में इस बार मेरी नहीं आपकी पेशी होगी। उसके बाद आपकी वर्दी उतरेगी। बर्खास्तगी होगी।"

"अर्जुनऽऽ।" नारंग ने गला फाड़ा।

"चिल्लाओ मत।"

"तुम कैसे साबित कर सकते हो अर्जुन?" संजय बोला।

"कितने बजे गोली चलने की आवाज सुनी आपने?" अर्जुन ने संजय से पूछा।

"अभी कोई दस मिनट पहले। ढाई बजे के करीब।" कलाई घड़ी देखता संजय बोला।

"यानि ढाई बजे हत्या हुई है तो पोस्टमार्टम में यह रिपोर्ट सामने आ ही जाएगी कि शकुंतला जी कितने देर पहले मरी है।"

"जाहिर है। टाईम का अंदाजा बतायेगा कि शकुंतला ढाई बजे मरी या उसके कुछ देर पहले।" संजय ने दिमाग लड़ाया।

कमिश्नर की छाती फूलकर कुप्पा हो गयी।

"देखा, कमिश्नर साहब फूलकर कुप्पा इसलिए हो रहे हैं क्योंकि वो जानते हैं कि पोस्टमार्टम में आदमी के मरने की कनफर्म टाईमिंग

नहीं पता लग पाती। आध-पौने घंटे का फर्क निकल ही आता है।"

"ओह! यानि 'शकुंतला की मौत कब हुई' वाली वजह तुम्हारे काम न आ पायेगी।"

"हां, पर और वजह है मेरे पास, जो कमिश्नर की छाती पिन लगे गुब्बारे की भांति पंचर कर देगी।"

संजय सख्ती से कमिश्नर नारंग को घूरता बोला।

अब तक तमाम पत्रकार यह तफसील लिखने लगे थे।

"अगर हत्या अभी-अभी मैंने की है तो खून निकल-निकलकर बहना चाहिए। पर वो खून सूख चुका है।" इस बार अर्जुन लाश के आगे से हटा।

सभी पत्रकार भीतर का मुआयना करने लगे।

"और कुछ दिखा संजय?" एकाएक अर्जुन रहस्यभरे अंदाज में मुस्कराया।

"दिखा।" एक जगह निगाह पड़ते ही संजय वाकई हँस पड़ा फिर बोला"खून वाकई तुमने नहीं किया अर्जुन।"

कमिश्नर नारंग, सहित सभी लोग भीतर देखने लगे।

नारंग के चेहरे का रंग यकायक उड़ता चला गया।

"क्या है? हमें तो कुछ नजर नहीं आ रहा।" एक अन्य पत्रकार बोला।

"बेवकूफों, वो दीवार के कोने के पास एक इस्तेमाल हो रखी गोली पड़ी है।"

"हां पड़ी है। पर उससे क्या साबित होता है?"

"यही कि हम सब ने फायर की एक ही आवाज सुनी थी; यानि एक ही गोली चली थी। अब जब एक गोली शकुंतला की कनपटी में घुसी तो दूसरी फर्श पर कहां से आ गई? आप फंस गए कमिश्नर। अब आप बताएंगे कि हैडक्वार्टर में शकुंतला का खून क्यों हुआ, कैसे हुआ, किसने किया?"

नारंग उसी पल जेब से रूमाल निकालता पसीना पोंछता चला गया।

"हम चलें सर?" तभी मनीराम बोला"आपकी शोहरत आपको मुबारक। हमें पहले ही शक था कि दाल में कुछ काला है। यहां तो दाल ही काली है। अब समझ आ गया कि शकुंतला की कनपटी में पहले ही गोली डाली जा चुकी थी। दूसरी हवा में चली जिससे सभी ने यही समझा कि गोली अर्जुन ने शकुंतला को मारी है। आप वाकई ही फंस गए सर। हमें इजाजत दीजिए।"

फिर जगदीश मुखी ने भी पत्रकारों को बताना शुरू किया कि क्यों उसे कमिश्नर पर शक हो रहा था।

"नारंग सर! देख लीजिए। आपके सभी पत्ते उलटे पड़ गएऔर अब आपके ही मोहरे आपक विरुद्ध चालें भी चल रहे हैं।"

कमिश्नर की हवा खुश्क हो गयी।

"दरअसल ये बचकाना चाल इन्होंने यह सोचकर चली थी कि मैं पर्दे के पीछे लाश से रिवॉल्वर हासिल कर लूंगा और उसी रिवॉल्वर की बिनाह पर ही मैं यहां से भागने की कोशिश करूंगा। पर इनका ये रिवॉल्वर लाश के नीचे गिरते ही खुद-ब-खुद चल गया और गोली दीवार से टकराती फर्श पर जा गिरी। यहां इनकी चाल फेल हो गई। एक फायर से दो नतीजे भला कैसे साबित किए जा सकते थे? या तो गोली शकुंतला की कनपटी में दाखिल हो सकती थी या दीवार में। नतीजा आपके सामने कमिश्नर, कि गधा...गधा ही रहता है।"

"सर!" संजय सख्ती से बोला"आपको कुछ कहना है।"

"मैं अपनी गलती कबूल करता हूं कि अर्जुन को फंसाने की खातिर मैंने यह चाल जरूर चली थी। दरअसल शकुंतला ने आत्महत्या की थी।"

"उनके पास अर्जुन का रिवॉल्वर कहां से आया?"

"घड़ी भर पहले ही पंडित हरी नारायण शर्मा उससे मिलने आए थे। शायद वही शकुंतला को रिवॉल्वर दे गये।"

"हां ये मुमकिन है।" अर्जुन ने पैरवी की हरी नारायण की"हरी नारायण जी के पास मेरी चाबी रहती है। जरूर उन्होंने मेरे ही फ्लैट से मेरा रिवॉल्वर चुराया हो सकता हैऔर अपनी एक मात्र इकलौती बहू को यहां से भाग निकलने के लिए रिवॉल्वर दिया होगा उन्होंने. ..पर शकुंतला जी भागने की बजाय खुदकुशी कर बैठीं।"

अर्जुन हरी नारायण के प्रति इतना नर्म दिल इसलिए हो रहा था क्योंकि नैना ने उसे बता दिया था कि पंडितजी देवता स्वरूप आदमी है।

"शेम ऑन यू कमिश्नर।" एकाएक संजय अदब से बोला।

कमिश्नर नारंग की गर्दन अपराध बोध से झुकती चली गई।

एक विक्षिप्त बूढ़ा कत्ल करके निकल गया था। दूसरा पुलिस को ही फंसा गया था। लिहाजा कमिश्नर नारंग की नौकरी चली जानी थी।

अर्जुन नागपाल लॉकअप में ही बंद था।

❑❑❑

पत्रकारों ने नारंग का बयान पूरी तरह कलमबद्ध कर लिया था।

वो अभी वहां से निकलते कि एकाएक देवसिंह राजपूत कॉरीडोर में आता दिखाई दिया। उसके पीछे-पीछे डॉक्टरों की फौज तेज कदमों से चल रही थी।

सभी की निगाहें उनकी तरफ उठीं।

"कमिश्नर साहब! अर्जुन नागपाल को लॉकअप से आजाद कीजिए।" एक डॉक्टर एकाएक बोला।

"क्यों, ये यहीं रहेगा। इसने अर्चना और राखी के कत्ल किये हैं।"

"वो कत्ल इसने नहीं किए। हमारे पास प्रूफ है। सभी पत्रकार लोग साथ चलेंगे। आप भी चल सकते हैं।" डॉक्टर कोचर बोला।

"कहां चलना है?" संजय बोला।

"आर्मी हॉस्पिटल। वहां इस विक्षिप्त कहानी का विक्षिप्त मरीज मौजूद है जो आपकी शंका-आशंका का निवारण करेगा।"

देवसिंह को अर्जुन की खबर नैना की मार्फत लगी थी।

तभी राधा भी पीछे-पीछे आती दिखाई दी।

"ये यहां कैसे?" देवसिंह ने चिहुंक कर अर्जुन की तरफ देखा।

"ओमनी में बेहोश थी। होश में आते ही यहां चली आई।"

देवसिंह ने राधा को पूरी भावुकता से गले लगाया।

उसके बाद अर्जुन सहित सारा काफिला आर्मी हॉस्पिटल निकला।

❑❑❑

सात बज चुके थे।

स्पेशल मजिस्ट्रेट कोठारी को भी रहस्यमयी कहानी का नतीजा दिखलाने के लिए हॉस्पिटल में बुला लिया गया था।

सभी ओ०टी० में थे।

जिंकी बेहोश पड़ा था और एक बड़ी-सी विशेष स्क्रीन पर उसके जिस्म के अंदर दौड़ते खून का नक्शा स्क्रीन पर दिखाई पड़ रहा था। उसी स्क्रीन पर ही उसके दिमाग के एक हिस्से में मौजूद वो काला-सा धब्बा नजर आ रहा था।

"फ्रैन्ड्स!" तभी डॉक्टर कोचर शुरू हुआ"आप शायद जानते हैं कि हमारे शरीर का खून दिल के रास्ते से पूरी बॉडी का दौरा करता है, दिल खून को पम्प करता है और खून जिस्म के प्रत्येक हिस्से में पहुंचता है। प्रत्येक हिस्से में खून पहुंचाने वाली नसों को 'आर्टरीज' कहा जाता है जबकि प्रत्येक हिस्से से खून वापिस दिल तक ले जाने वाली नसों को 'वीन्स' कहा जाता है। तात्पर्य यह कि खून का

आवागमन करने वाली नसों में ही हर वक्त खून दौरा करता है। इसी खून के दौरे को ही हम ब्लड प्रैशर कहते हैं। खैर, सीधे मुद्दे पर आकर मैं संक्षिप्त में आपको समझाता हूं कि यह जो काला धब्बा देख रहे हैं न आप।" डॉक्टर एक नोकदार छड़ी स्क्रीन पर नजर आते काले धब्बे पर टिकाता बोला"ये 'ब्लड वर्म' हैं यानि खून में ही पैदा होने वाला और मर जाने वाला कीड़ा।"

"क्या!" कई लोगों के मुंह से सिसकारी निकली।

"जी। यह कीड़ा खून के साथ ही दौरा करता है जब दिल में पहुंचता है तो आदमी का दिल करता है कि वह कोई कत्ल करे। कोई जुर्म करे। ऐसा ही अर्जुन के साथ हुआ। उसने राखी और अर्चना को मारने की चेतावनी दी। फिर यह कीड़ा दिल से निकला 'आर्टरीज' के सहारे दिमाग में पहुंचा तो अर्जुन का दिमाग उस हत्या की बाबत सोचने लगा और अंततः उसने वो हत्याएं कर भी डालीं। वैसे यह कीड़ा 'मैडिकल साइंस' के लिए शोध का विषय है, इसकी मुकम्मल जांच होगी। पर यहां मुख्तसर में जानना जरूरी है कि यही कीड़ा ही इंसान को हैवान बनाने की भूमिका निभाता है और इसी दौरान इंसान अपना असली वजूद भूल जाता है और वही समझने लगता है जो कीड़े का ब्लड होता है।"

"ये क्या बात हुई। कीड़े का कोई अलग ब्लड होगा। वह तो जिसके भी खून में मिलेगा, उसी में ही मिल जाएगा।"

"नहीं।" इस बार डॉक्टर ने अपनी छड़ी जिंकी से संबंधित ब्लड ले जाती नसों पर रखी।

नसों के भीतर खून का दौरा दो भागों में हो रहा था। जो खून दिमाग में पहुंचा हुआ था, वो गहरे भूरे रंग का था। बाकी नीचे दिखता ब्लड लाल रंग का था।

तात्पर्य यह कि दोनों खून ही आपस में मिक्स नहीं हो रहे थे।

"आप देख रहे हैं कि यह भूरे रंग का खून कीड़े वाला खून है। यानि वो खून जो कभी काली के जिस्म में था। काली से वो अर्जुन के भीतर पहुंचा और अर्जुन से जिंकी के बदन में। आप देख सकते हैं कि यह खून मरीज के बाकी या पहले वाले खून में मिक्स नहीं होता. ..बल्कि अपना अलग ही...पार्टीशन में ही दौरा करता रहता हैऔर जब यह खून दिल या दिमाग में पहुंचता है तो मरीज हिंसक प्रवृत्ति का हो जाता है। यह कीड़ा दिमाग के उसी पहलू पर अटैक करता है जो सोचने की क्षमता रखता है। उदाहरण के लिए समझिए कि यह एक गोल दायरा है। जिसका एक-चौथाई भाग काला है और तीन-चौथाई

लाल। जब दायरा घूमेगा तो काला हिस्सा अलग नजर आएगा और लाल अलग। काला हिस्सा काम अपना करेगा और लाल हिस्सा अपना। यूं समझो कि कीड़े वाला खून अपना काम करता है और उस खून के दिल-दिमाग से निकल जाने के बाद, लाल वाला साधारण खून अपना काम सामान्यतः करने लगता है।"

"हूंऽऽ।" कई लोगों ने हुंकारे मारे।

"इससे सिद्ध होता है कि काली के जिस्म में दौड़ता विक्षिप्त खून ही पहले अर्जुन को हत्यारा बनाता गया और अब जिंकी इस खून की चपेट में है।"

"हम कैसे मान लें?"

"जिंकी ने 8-40 पर अपनी मां राधा को मारने की धमकी दी है। यदि 8-40 पर जिंकी ऐसा करता है तो आप जरूर मान लेंगेऔर अगर आप स्क्रीन पर देखें तो आपको जिंकी के खून में नजर आता धब्बा दिमाग के नजदीक पहुंचकर गिजबिजाता नजर आएगा। फड़फड़ाता नजर आएगा। तब आप खुद ही मान लेंगे कि हकीकत क्या है।"

सभी हैरत से उस काले धब्बे को देखने लगे।

"अर्जुन के हर चैलेंज में आठ घंटे का फर्क इसलिए है क्योंकि कीड़ा दिल से दिमाग तक पहुंचने में लगभग छः घंटे लगाता था। छह घंटे बाद वो दिमाग के इसी खूनी पूल में आकर धागे का रूप ले लेता था और अर्जुन चेतावनी देता था, चैलेंज देता था। जैसे-जैसे कीड़ा कुलबुलाता जाता था, अर्जुन का हिंसक मस्तिष्क अपने शिकार को खत्म करने का प्लान सोचता जाता था।"

"फिर तो यह जिंकी के जिस्म में भी हर आठ घंटे के बाद सिर उठाएगा।"

"जिंकी का जिस्म छोटा है। कीड़ा आठ घंटे बाद भी कुलबुला सकता है और 10 घंटे बाद भी। समझिए कि छोटे शरीर में कीड़ायुक्त खून जल्दी दिमाग पर भी अटैक कर सकता हैऔर देर से भी कर सकता है। यह सब जिंकी के ब्लड प्रैशर पर निर्भर है।"

"वो देखो कीड़ा कुलबुला रहा है।" तभी कोई चिल्लाया।

सभी कम्प्यूटर स्क्रीन पर देखने लगे।

स्क्रीन पर नजर आता धब्बा एकाएक गोल रोल होता खुलने लगा और उसका छोटा-सा शरीर धनुष की तरह लम्बा होने लगा।

"नहींऽऽ।" राधा की चीख निकली।

देवसिंह ने तत्काल उसे बांहों में भरा और आतंकित निगाहों से स्क्रीन पर देखने लगा।

कीड़ा खून के पूल में नहाया अपने डंक फड़फड़ा रहा था।
सभी के शरीर झुरझुराने लगे। टांगे कांपने लगीं।
नींद की बेहोशी में पड़े जिंकी के शरीर में एकाएक खलबली मची और उसके अंग-प्रत्यंग फड़फड़ाने लगे।
एकाएक ही उसका नन्हा शरीर बैड पर उछलकूद करने लगा।
"द...देव...बचाओ मेरे नन्हें को...।"
"राधा! खुदा की करतूत है यह...उसी के पास जाकर ही हिसाब मांगना होगा।"
"हौसला...हौसला।" अर्जुन एकाएक देवसिंह के कंधे दबाते बोला।
देवसिंह ने अर्जुन के सीने में सिर छिपा लिया।
तभी जिंकी बैड पर उठ बैठा और उसकी गर्दन चारों तरफ घूमने लगी।
उसकी आंखें शून्य में टकटकी बांधे एक-एक पर टिकतीं। फिर गर्दन घूमती चली जाती।
एकाएक ही उसकी निगाह राधा परआ टिकी।
"राधा!" जिंकी के मुंह से पहली बार खूंखार मर्दाना आवाज निकली"टाईम देख। 8-40 हो गए, तेरा वक्त पूरा हो गया।"
"जिंकीऽऽ!" राधा डर से कांपती चीखी।
"मैं काली हूं। काली शर्मा।" गुर्राते हुए जिंकी ने एकाएक राधा पर छलांग लगा दी"तू शकुंतला है। मेरी मां। तूने मेरे पिता को मार डाला। तूने मेरे देवी भैया को मार डाला। आज भी तेरी करतूतों की वीडियो कैसेट तेरे सेफ में मौजूद है। तूने मुझे भी दफना डाला था, पर रमैया आंटी बचा गई...मैं तुझे नहीं छोडूंगा शकुंतला..." 'फच्च'।" अगले ही पल जिंकी का मुंह खुला और उसके दांत राधा की गर्दन पर धंस ही जाते कि
अर्जुन ने अपनी हथेली जिंकी के जबड़ों के आगे कर दी
जिंकी अर्जुन की हथेली जबड़ों में भींचता-भंभोड़ता चला गया।
अर्जुन ने हथेली खींची तो जिंकी उसकी हथेली पर ही लटकता अर्जुन के पास चला आया।
"चना...चबा मेरे बच्चे! चबा मुझे।" अर्जुन उस नन्हें राक्षस को सीने में भींचता बोला"आज तूने मुझे बचा लिया। मैं लाख कहता रहतामैं बेगुनाह हूं पर कोई नहीं मानता। पर तेरी वहशत ने मुझे बेगुनाह साबित कर डाला। चबा मुझे...।"
"हूं-हूं।" जिंकी के जबड़े भिंचते चले गए और अर्जुन की हथेली

खून से रंगती चली गई।

फिर खून टप-टप करके फर्श पर गिरने लगा।

उधर स्क्रीन में नजर आता कीड़ा जिंकी के दिमाग में अभी भी डंक मारता नजर आ रहा था। फड़फड़ाता नजर आ रहा था।

"मेरा ख्याल है इस हादसे ने साबित कर दिया कि पहले सात कत्ल काली शर्मा ने किये थे। उसके बाद दो कत्ल अर्जुन ने किए और दसवां कत्ल मेरा नन्हा करने की कोशिश कर रहा है।" देवसिंह भरे गले से अपने ही बच्चे को चमगादड़ की तरह खींचता बोला।

बड़े-बड़े दिलों की आंखें इस मार्मिक दृश्य को देख भीग गईं।

"डॉक्टर इस कीड़े का कोई इलाज?"

"फिलहाल तो यही तरीका है कि ये विक्षिप्त खून इसके बदन से निकालकर दूसरा चढ़ाया जाए।"

"और वो खून मैं दूंगा ही। अपनी जान (जिंकी) बचाने के वास्ते मैं दूंगा ही।" अर्जुन जिंकी को भींचे-भींचे बोला।

उसकी एक हथेली अभी भी जिंकी के जबड़ों में भिंची पड़ी थी और देवसिंह के खींचने पर भी जिंकी अलग न हो रहा था।

उधर स्क्रीन में नजर आता कीड़ा यकायक धागे का रूप लेने लगा फिर वो सांप समान लहराता किसी 'वीन' (नस) में घुसा और गायब हो गया।

इसी दौरान ही जिंकी का बदन धम्म से फर्श पर गिरा।

"अब कीड़ा सामान्य होकर नस में सफर करके नीचे दिल तक पहुंचेगाऔर जिंकी का फिर दिल करेगा कि कोई हिंसक प्लान बनाए। किसी को चुनौती दे। फिर कीड़ा दिमाग में पहुँचेगा और दिमाग सोचता हुआ वारदात करेगा।"

"नहीं।" अर्जुन दांत भींचकर बोला"ये कीड़ा...इसे बाहर निकालिए मेरे जिंकी से, डॉक्टर! अभी और इसी वक्त। भले ही मेरी नस से एक-एक कतरा खून निचोड़ लो।"

"बेटा तुमने अभी सुबह ही तो खून दिया है।"

"नहीं। कोई कुछ नहीं बोलेगा। कोई नहीं रोकेगा। न आदमी. ..न खुदा।" अर्जुन जिंकी को उठाता बोला"ये बच्चा मेरा खून है अब...मेरा खून।"

"अर्जुन!"राधा भीगे स्वर में कह उठी"तू भी तो मेरा ही खून है।"

डॉक्टर खून चढ़ाने की तैयारियों में जुटे और नारंग जमीन में गड़ा शर्म से ही डूब मरा।

और फिर जिंकी ठीक हो गया।

THE END